प्रस्तावना

ये विश्व-नाटक पुरुषार्थ और प्रालब्ध, कर्म और फल का एक बड़ा सुन्दर खेल है, जिसका राज़ ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको अभी संगमयुग पर बताया है, जो इस राज़ को समझ लेता है, वह साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखता है और ट्रस्टी बनकर पार्ट बजाते हुए इसके परम आनन्द को अनुभव करता है और परम सुख को पाता है। पुरुषार्थ और प्रालब्ध के राज़ को ज्ञान सागर परमात्मा ने समय-समय पर स्पष्ट किया है और श्रेष्ठ पुरुषार्थ करने के लिए प्रेरणा भी दी है तो आज्ञा भी दी है। इस पुरुषार्थ और प्रालब्ध के राज़ को समझने वाला ही यथार्थ रीति पुरुषार्थ कर सकता है और यथार्थ पुरुषार्थ करने वाला ही यथार्थ प्रालब्ध को पा सकता है। जो आत्मा इस राज़ को समझकर यथार्थ रीति पुरुषार्थ करता है, वह इस विश्व-नाटक के परमानन्द और परम सुख को अनुभव करता है। इस परमानन्द और परमसुख के राज़ को यथार्थ रीति समझने और अनुभव करने के लिए ही यहाँ पर कुछ विचार किया गया है। हम सबके अति प्रिय, हम सबके शुभ-चिन्तक, मार्ग-दर्शक, हमारे इस ब्राह्मण जीवन के आदर्श ब्रह्मा ने भी जो पुरुषार्थ किया, जिससे उन्होंने सम्पूर्णता को पाया है, वह उन्होंने अपना अनुभव जब वे साकार में थे, तब समय-समय पर हमको सुनाया है, जिसको हम फॉलो करके यथार्थ पुरुषार्थ करके यथार्थ प्रालब्ध का अनुभव कर सकेंगे।

''महारथियों की बुद्धि में बहुत प्वाइन्ट्स होंगी। लिखते रहें तो अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स अलग करते रहें। प्वाइन्ट्स का बज़न करें।... अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स निकाल कर अलग रखते होंगे। ... इतनी मेहनत नहीं करेंगे तो उछल नहीं खायेंगे। तुम्हारा बुद्धियोग और-और तरफ भटकता रहेगा।... बाबा भी सवेरे दो बजे उठकर लिखते थे, फिर पढ़ते थे। प्वाइन्ट भूल जाती थी तो फिर बैठ देखते थे, तुमको समझाने के लिए।''

सा.बाबा 23.05.09 रिवा.

विषय सूची

प्रस्तावना
पुरुषार्थ और प्रालब्ध
परिभाषा
पुरुषार्थ की परिभाषा
प्रालब्ध की परिभाषा
पुरुषार्थ और प्रालब्ध का राज़
Q. अब प्रश्न उठता है कि पुरुषार्थ बड़ा या प्रालब्ध ?
पुरुषार्थ और ज्ञान
Q. यथार्थ पुरुषार्थ क्या है और कब होता है ?
पुरुषार्थ और योग
पुरुषार्थ और धारणा
पुरुषार्थ और ईश्वरीय सेवा
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और संगमयुग
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और निश्चय एवं निश्चिन्त स्थिति
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और कर्मभोग, कर्म-बन्धन, कर्म-सम्बन्ध, हिसाब-किताब
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और विचार-सागर मन्थन
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और परमात्मा
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और आत्मा
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और आत्मिक शक्ति
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और विश्व-नाटक
Q. जब ये विश्श-नाटक अनादि-अविनाशी है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, तो पुरुषार्थ का क्या महत्व है अर्थात् हम पुरुषार्थ क्यों करें और क्या करें ?
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और कल्प-वृक्ष एवं त्रिलोक
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और अन्न
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और साकार ब्रह्मा बाबा
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और फॉलो मदर-फादर
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और स्वाध्याय अर्थात् पठन-पाठन

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और मुरली
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और विघ्न, निर्विघ्न स्थिति एवं विघ्न-विनाशक स्थिति
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और व्यवहार
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और कर्म-सिद्धान्त
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और धर्मराज
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और भाग्य एवं भाग्य-विधाता
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और भक्ति-मार्ग
ज्ञान मार्ग के पुरुषार्थ और भक्ति मार्ग के पुरुषार्थ का तुलनात्मक अध्ययन
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और परीक्षा
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और विनाश एवं विनाश की प्रक्रिया
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और माया
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और सुखद जीवन, सुखद मृत्यु एवं सुखद जन्म
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और मृत्यु पर विजय
पुरुषार्थ और प्रालब्ध अर्थात् पुरुषार्थ की सफलता
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और निराकार एवं फरिश्ता स्वरूप का अभ्यास
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और आत्मिक स्वरूप की ड्रिल
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और अचानक एवं एवर-रेडी का पाठ
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और गीत-कवितायें एवं चित्र
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और श्रीमत
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और स्वमान-वरदान
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और चार्ट एवं चेकिंग
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और पवित्रता
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और ब्रह्मचर्य
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और एकाग्रता
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और समर्पणता
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और राजतन्त्र
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और साक्षी एवं ट्रस्टी स्थिति
पुरुषार्थ-प्रालब्ध और स्वर्ग-नर्क

प्रश्नोत्तर

Q. पुरुषार्थ क्या है ?

Q. देह से न्यारे होने का पुरुषार्थ करना आवश्यक क्यों ?

Q. माया, कमभोग, कर्म-बन्धन, विघ्नों में क्या मूलभूत अन्तर है ?

Q. कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस कीन्ह तासु फल चाखा और बनी-बनाई बन रही, अब कछु बननी नाहि, चिन्ता ताकी कीजिये जो हनहोनी होये - दोनों में क्या समन्जस्य है ?

Q. बनी-बनाई बन रही, अब कछु बननी नाहि, चिन्ता ताकी कीजिये जो हनहोनी होये और ड्रामा हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, फिर भी परमात्मा को भाग्य विधाता कहा जाता है, तो इसका रहस्य क्या है ?

पुरुषार्थ और विविध ईश्वरीय महावाक्य

साकार बाबा के द्वारा उच्चारे

अव्यक्त बापदादा के द्वारा अव्यक्त पार्ट के आदि में उच्चारे

अव्यक्त बापदादा के द्वारा वर्तमान समय में उच्चार

पुरुषार्थ और प्रालब्ध

श्रेष्ठ पुरुषार्थ करके श्रेष्ठ प्रालब्ध पाने के लिए तथा पुरुषार्थ और प्रालब्ध के राज़ को समझने के लिए दोनों की परिभाषा को अच्छी रीति समझना अति आवश्यक है। दोनों की परिभाषा और यथार्थ राज़ को समझने के बाद ही श्रेष्ठ पुरुषार्थ करके श्रेष्ठ जीवन बनाया जा सकता है, श्रेष्ठ प्रालब्ध बनाई जा सकती है।

पुरुषार्थ की परिभाषा

साधारण रूप में पुरुषार्थ शब्द का अर्थ है प्रयत्न परन्तु ये शब्द मुख्यता आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रयोग किया जाता है, इसलिए पुरुषार्थ की परिभाषा करें तो पुरुषार्थ अर्थात् पुरुष अर्थात् आत्मा के अर्थ किया गया कर्म अर्थात् प्रयत्न।

जो आत्मा अपने को रथी समझता है और इस देह को रथ समझकर इससे कर्म कराता है अर्थात् स्वयं को करावनहार समझकर कर्मेन्द्रियों से कर्म कराता है, वह है सच्चा पुरुषार्थी।

''पुरुषार्थ अर्थात् मैं पुरुष इस रथ द्वारा कर्म कर रहा हूँ। ... पुरुष बन इस रथ द्वारा कर्म कराना, इसको कहा जाता है पुरुषार्थ। ... पुरुषार्थ का अर्थ ये नहीं कि बार-बार गलती करके पुरुषार्थ को अपना सहारा बनाओ। यथार्थ पुरुषार्थी अर्थात् स्वभाव भी स्वभाविक हो, अति सहज हो। अभी मेहनत को किनारे करो।'' अ.बापदादा 14.04.94

प्रालब्ध की परिभाषा

आत्मा के वर्तमान में या भूतकाल में किये गये कर्मों का फल ही प्रालब्ध है। ये अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक कर्म और फल, पुरुषार्थ और प्रालब्ध पर आधारित एक घटना चक्र है, जो अनादि काल से चलता आ रहा है और अनन्त काल तक चलता रहेगा। इसमें आत्मा मन्वा-वाचा-कर्मणा जो भी कर्म करती है, उसका उसको फल अवश्य मिलता है। प्रालब्ध अर्थात् आत्मा ने जो कर्म किया, उसका फल अर्थात् भाग्य।

भूतकाल में किये गये कर्मों का फल ही वर्तमान में प्रालब्ध के रूप में आत्मा को प्राप्त होता है और वर्तमान में किये गये कर्मों का फल ही भविष्य में प्रालब्ध बन जायेगी अर्थात् वर्तमान के कर्मो का फल ही भविष्य में प्रालब्ध के रूप में प्राप्त होगा।

पुरुषार्थ और प्रालब्ध का राज़

ये विश्व एक नाटकशाला है, जहाँ कर्म और फल, पुरुषार्थ और प्रालब्ध का नाटक चलता है। वास्तविकता को देखें तो पुरुषार्थ ही जीवन है और पुरुषार्थहीनता ही मृत्यु है। संगमयुग पर पुरुषार्थ भी प्रालब्ध है अर्थात् पुरुषार्थ में भी परमसुख है क्योंकि संगमयुग पर परम पुरुष परमात्मा पुरुष, पुरुष अर्थात् आत्मा के साथ होता है और आत्माओं को पुरुषार्थ और प्रालब्ध का राज़ बताकर यथार्थ पुरुषार्थ कराता है। यथार्थ पुरुषार्थ है ही देह और देह की दुनिया को भूलकर अपने मूल स्वरूप अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का। आत्मिक स्वरूप सच्चिदानन्दमय अर्थात् परमानन्दमय है। जब आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है तो परमानन्द का अनुभव करती है। यह परमानन्दमय स्थिति और परमसुख आत्मा इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही अनुभव करती है, जब आत्मा को परमात्मा से अपने सत्य आत्मिक स्वरूप और इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान मिलता है और परमात्मा, आत्माओं को अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने के लिए राजयोग की शिक्षा देते हैं।

सतोप्रधान पुरुषार्थ की प्रालब्ध भी सतोप्रधान होती है। रजोप्रधान पुरुषार्थ की प्रालब्ध भी रजोप्रधान होती है और तमोप्रधान पुरुषार्थ की प्रालब्ध भी तमोप्रधान होती है और उसी अनुसार समय पर मिलती है, यह राज़ भी ज्ञान सागर परमात्मा ने अभी बताया है, जिस राज़ को जानने वाला पुरुषार्थी ही सतोप्रधान पुरुषार्थ करके सतोप्रधान प्रालब्ध का अधिकारी बनता है।

''बच्चों को दिल अन्दर समझना चाहिए कि बाबा हमारे लिए स्वर्ग नई दुनिया स्थापन कर रहे हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार स्वर्ग की स्थापना हो रही है, जिसमें तुम बच्चे ही आकर राज्य करते हो। ... बुद्धि में आना चाहिए कि इन लक्ष्मी-नारायण ने यह राज्य-भाग्य कैसे पाया? ... अभी तुम बच्चे बाप की याद से राजाई लेते हो, कोई मानें या न मानें।''

सा.बाबा 26.12.09 रिवा.

''जब तक साक्षात् साकार रूप नहीं बने हैं, तब तक साक्षात्कार नहीं हो सकता है। ... जितना समीप, उतना ही स्वयं भी स्पष्ट और दूसरे भी उनके आगे स्पष्ट दिखाई देंगे। जितना-जितना जिसका पुरुषार्थ स्पष्ट होता जाता है, उतना ही उसकी प्रालब्ध स्पष्ट होती जाती है।''

अ.बापदादा 2.4.70

''तुम्हारा पार्ट तो बहुत ऊंच है, तुम्हारे जितना सुख कोई देख न सके, इसलिए अच्छी रीति पुरुषार्थ करना चाहिए। करते भी रहते हैं। कल्प पहले भी तुमने पुरुषार्थ किया था, अपने

पुरुषार्थ अनुसार प्रालब्ध पाई थी। पुरुषार्थ बिगर तो प्रालब्ध पा न सके। इसलिए पुरुषार्थ जरूर करना है। बाप कहते हैं - यह भी ड्रामा बना हुआ है। तुम्हारा पुरुषार्थ भी चल पड़ेगा। ऐसे तो प्रालब्ध मिल न सके। तुमको पुरुषार्थ तो जरूर करना पड़े। पुरुषार्थ बिगर थोड़ेही कुछ होना है। ... (ड्रामा समझ पुरुषार्थहीन हो जाना) यह भी माया विघ्न डालती है। बच्चे पढ़ाई को ही छोड़ देते हैं, इसको कहा जाता है - माया से हार।''

सा.बाबा 29.06.09 रिवा.

''अभी आत्माभिमानी बनना है और वापस घर जाना है। मैं आत्मा अविनाशी हूँ, यह शरीर विनाशी है। ... आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है, यह नॉलेज बाप ही देते हैं। ... बस यही पुरुषार्थ करते रहो कि हम आत्मा हैं, अब हमको परमात्मा के साथ योग लगाना है।''

सा.बाबा 10.04.09 रिवा.

''तदबीर कराने वाला एक ही बाप है परन्तु किसकी तकदीर में नहीं है तो तदबीर भी कर नहीं सकते। इसमें कोई की पास-खातिरी भी नहीं हो सकती है। न बाप किसको एक्स्ट्रा पढ़ाते हैं। ... यह तो सभी को एकरस पढ़ाते हैं। ... यहाँ तो जास्ती कुछ पढ़ने की बात ही नहीं है। बाप तो एक ही महामन्त्र देते हैं - मन्मनाभव। ... बाप पतित-पावन है, उनको याद करने से ही हम पावन बनेंगे।''

सा.बाबा रात्रि क्लास 11.04.09 रिवा.

''तुम बच्चों को यह निश्चय है कि बाप ही हमको पढ़ाते हैं, यह ब्रह्मा भी पढ़ते हैं। जरूर यह सबसे अच्छा पढ़ते होंगे। ... हमारे पास तो कुछ धन है नहीं। बच्चे ही धन देते हैं और लेते हैं। दो मुट्ठी देते हैं और भविष्य में महल लेते हैं। कोई के पास कुछ भी धन नहीं है तो कुछ देते नहीं हैं परन्तु अच्छा पढ़ते हैं और अच्छी सर्विस करते हैं तो भविष्य में अच्छा पद पाते हैं।''

सा.बाबा 31.01.09 रिवा.

Q. सतोप्रधान पुरुषार्थ क्या है, उसके गुण-धर्म और विशेषतायें क्या हैं?

सतोप्रधान पुरुषार्थ है अपने को बिन्दुरूप आत्मा समझकर, परमात्मा को भी बिन्दुरूप में याद करना और उनकी श्रीमत पर यथार्थ रीति चलना। जो आत्मा सतोप्रधान पुरुषार्थी है, वह सदा निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल्प होकर पुरुषार्थ करेगा और पुरुषार्थ में भी अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करेगा। वह सदा ही शुभ चिन्तन में रहेगा और सर्व के लिए शुभ-चिन्तक होगा अर्थात् शुभ-चिन्तन और शुभ-चिन्तक उसका स्वभाव होगा। वह सदा एक बाप की अव्यभिचारी याद में रहेगा। अपने मूल स्वरूप में स्थित होने के कारण उसकी निर्णय शक्ति यथार्थ होती है, इसलिए उसको हर कार्य में सफलता मिलती है। उसको पूरा नशा रहेगा और मन-बुद्धि सदा

निशान अर्थात् आत्मा पर केन्द्रित रहेगी। वह संकल्प करते ही जैसी स्थिति में स्थित होना चाहे, हो जायेगा। उसकी स्थिति इच्छा मात्रम् अविद्या की होगी। सतोप्रधान पुरुषार्थी को कब किसी बात में संशय नहीं होता है क्योंकि उसकी बुद्धि सदा परमात्मा के साथ होती है, इसलिए उसको सभी बातें समयानुसार स्पष्ट होती रहती हैं। सतोप्रधान पुरुषार्थ के सिम्बल तो ब्रह्मा बाबा ही है, जिन्होंने यथार्थ पुरुषार्थ करके सम्पूर्णता को पाया है और वे ही सारे कल्प और सारे विश्व में प्रथम मानव हैं, जो पुरुषार्थ करके सम्पूर्ण बनें अर्थात् फरिश्ता बनें।

''जितना-जितना अपनी देह से न्यारे रहेंगे, उतना समय बातों से भी न्यारे रहेंगे। जैसे वस्त्र उतारना और पहनना सहज है, इस रीति जब न्यारे होंगे तो शरीर के भान में आना और शरीर के भान से निकलना भी सहज होगा। ... जब यह मुख्य पुरुषार्थ करेंगे तब मुख्य रतनों में आयेंगे।''

अ.बापदादा 5.4.70

''जो अच्छी रीति पुरुषार्थ करेंगे, वे ही पास होंगे। जो पुरुषार्थ नहीं करेंगे, वे प्रजा में चले जायेंगे। प्रजा में भी कोई बहुत साहूकार बनते हैं, कोई कम। यह राजधानी बन रही है। ... श्री श्री शिवबाबा की मत पर श्री लक्ष्मी-नारायण वा देवी-देवता बनते हैं।''

सा.बाबा 9.05.09 रिवा.

''कोई-कोई पूछते हैं - पुरुषार्थ बड़ा या प्रालब्ध बड़ी ? अब पुरुषार्थ बिगर तो प्रालब्ध मिलती नहीं है। पुरुषार्थ से ही प्रालब्ध मिलती है ड्रामा अनुसार। ... सारी दुनिया में जो भी एक्ट चलती है, सारा बना-बनाया ड्रामा है। आत्मा में पहले से ही आदि से अन्त तक का पार्ट नूँधा हुआ है। जैसे तुम्हारी आत्मा में 84 का पार्ट है। हीरा भी बनती है तो कौड़ी जैसा भी बनती है।''

सा.बाबा 10.12.09 रिवा.

Q. अब प्रश्न उठता है कि पुरुषार्थ बड़ा या प्रालब्ध ?

वास्तव में पुरुषार्थ और प्रालब्ध एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, जो साथ-साथ ही रहते हैं और दोनों एक, दूसरे पर आधारित हैं। पुरुषार्थ के बिना प्रालब्ध नहीं मिल सकती है और प्रालब्ध के रूप में किसी आत्मा को कोई प्राप्ति हुई है, तो उसके पीछे उसने कोई न कोई पुरुषार्थ अर्थात् कर्म अवश्य किया है। क्योंकि कर्म के बिना फल हो नहीं सकता, ये इस विश्व-नाटक का अटल विधि-विधान है। पुरुषार्थ ड्रामा अनुसार ही होता है, जो ड्रामा में पूर्व निश्चित है।

यथार्थ पुरुषार्थ है अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का अर्थात् देही-अभिमानी बनने का। जिसके लिए ही ज्ञान सागर परमात्मा ने सारा ज्ञान दिया है। इसलिए आत्मिक स्वरूप का यथार्थ पुरुषार्थ करने के लिए ज्ञान की अच्छी धारणा भी चाहिए और उस धारणा के लिए ज्ञान के गुह्य रहस्यों की समझ चाहिए। उस समझ को धारण करने के लिए भी पुरुषार्थ

करना ही होगा। इसके लिए ही बाबा रोज़-रोज़ मुरली में कहते हैं ज्ञान का चिन्तन करो, स्वदर्शन चक्र को फिराओ। गुणों और शक्तियों की धारणा के लिए भी बाबा कहते हैं - एक-एक गुण और शक्ति के विषय में गहराई से मनन करो। जो यह पुरुषार्थ करते हैं, उनको धारणा होती है और वे उस अनुसार कर्म करके अपनी श्रेष्ठ प्रालब्ध बनाते हैं, जिसके आधार पर जीवन में सुख-शान्ति पाते हैं।

पुरुषार्थ और प्रालब्ध के राज़ को समझने के लिए ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको जो चार विषयों का ज्ञान दिया है और हमको उनका विधि-विधान पढ़ा हैं, उनके विषय में भी जानना अति आवश्यक है। वे चार विषय हैं - ज्ञान, योग, धारणा और सेवा।

''निर्विघ्न बने ... क्या यह समझते हो कि यह बात भी अचानक होनी है। चलो अचानक भी हो जाये लेकिन बापदादा ने कहा है कि बहुत समय का अभ्यास चाहिए, तब ही बहुतकाल का अधिकार प्राप्त करेंगे।... अभी लगन की अग्नि को जलाओ।''

अ.बापदादा 15.12.09

''किसकी तकदीर में नहीं है तो तदबीर भी क्या करे। तदबीर कराने वाला तो एक बाप ही है। बाप पढ़ाते हैं। इसमें किसकी पास-खातिरी तो हो नहीं सकती। ... यह तो सभी को एक जैसा पढ़ाते हैं। सबको एक ही महामन्त्र देते हैं - मन्मनाभव। ... पुरुषार्थ करना तुम बच्चों के हाथ में है। जितना याद करेंगे, उतना पावन बनेंगे। सारा मदार हर एक के पुरुषार्थ पर है।''

सा.बाबा 8.12.09 रिवा.

''भल नौकरी तो वहाँ भी होती है। दास-दासियां आदि नौकर ही तो होते हैं ... इसलिए बाबा कहते हैं - अच्छी रीति पढ़ो तो तुम यह बनेंगे। पढ़े के आगे अनपपढ़े भरी ढोयेंगे। ... अच्छी रीति नहीं पढ़ते तो बाप को इतना रिगार्ड से याद नहीं करते हैं।''

सा.बाबा 4.11.09 रिवा.

''यह पढ़ाई बहुत सहज है, इसमें कुछ भी खर्चा नहीं लगता है। तुम्हारी मम्मा को एक पाई का भी खर्चा नहीं लगा। बिगर कौड़ी खर्चा पढ़कर कितनी होशियार नम्बरवन हो गई। मम्मा जैसी राजयोगिनी कोई भी नहीं निकली है।''

सा.बाबा 26.09.09 रिवा.

''ऐसे भी जंगली ख्यालात वाले बहुत होते हैं, जो कहते हमारी तकदीर में होगा तो पुरुषार्थ जरूर चलेगा।... पूछते हैं - पुरुषार्थ बड़ा या प्रालब्ध बड़ी ? अब बड़ी तो प्रालब्ध होती है परन्तु पुरुषार्थ को बड़ा रखा जाता है, जिससे प्रालब्ध बनती है।''

सा.बाबा 14.08.09 रिवा.

''हर एक मनुष्य मात्र को पुरुषार्थ से ही सब कुछ मिलता है।... यहाँ बाप बच्चों को कितना

पुरुषार्थ कराते हैं। रात-दिन समझाते रहते हैं। ... पहले बुद्धि सतोप्रधान थी, फिर सतो, रजो, तमोप्रधान बन जाती है। ये सब बातें बाप ही आकर समझाते हैं।''

सा.बाबा 14.08.09 रिवा.

''हर एक अपने पुरुषार्थ और तकदीर अनुसार वर्सा पाते हैं। सारा मदार पुरुषार्थ और तकदीर के ऊपर ही होता है। पुरुषार्थ से पता लग जाता है कि इनकी तकदीर में क्या है, ये क्या पद पायेंगे। ... अगर गृहस्थ व्यवहार का बन्धन नहीं है तो जाकर अन्धों की लाठी बनो, सत्य नारायण की कथा सुनाने जरूर जाना है।''

सा.बाबा 14/15.12.08 रिवा.

''अच्छे कर्म वालों को अच्छा जन्म मिलेगा, योगबल से। पुरुषार्थ नहीं करते हैं तो कम पद पायेंगे - ऐसे-ऐसे विचार करने से खुशी होगी। ... यह बना-बनाया खेल है। अभी बच्चों का कर्मों पर ध्यान देना है।''

सा.बाबा 11.01.69

पुरुषार्थ के प्रकार और उनकी प्रालब्ध

देश-काल-स्थिति के अनुसार पुरुषार्थ के अनेक प्रकार हैं और उस अनुसार उसके अनेक विधि-विधान हैं, जिनके अनुसार उनकी प्रालब्ध आत्मा को मिलती है अर्थात् देश-काल-स्थिति के अनुसार जीवात्मायें अपने आत्म कल्याण के लिए अनेक प्रकार के पुरुषार्थ करती हैं और उसके अनुसार उनको प्रालब्ध मिलती है।

काल-चक्र के अनुसार सतयुग-त्रेता की प्रालब्ध आत्माओं को संगमयुग पर परमात्मा द्वारा यथार्थ ज्ञान पाकर उनकी श्रीमत पर यथार्थ रीति किये गये पुरुषार्थ के आधार पर मिलती है। फिर द्वापर से आत्मायें यथार्थ ज्ञान की अनुपस्थिति में अपनी आत्मिक शक्ति के आधार पर अपने आत्म कल्याण के लिए पुरुषार्थ करती हैं और उस अनुसार उसकी प्रालब्ध मिलती है, जिसको भक्ति मार्ग कहा जाता है। जिसके लिए परमात्मा ने कहा है - भक्ति में आत्मायें जो पुरुषार्थ करती है, उसका उनको अल्पकाल के लिए फल मिलता है, परन्तु संगमयुग पर यथार्थ ज्ञान पाकर परमात्मा की श्रीमत पर जो पुरुषार्थ करती हैं, उसका फल उनको आधे कल्प के लिए मिलता है।

इस प्रकार हम देखें तो दो प्रकार के पुरुषार्थ हैं -

एक है भक्ति मार्ग का पुरुषार्थ और दूसरा है ज्ञान मार्ग का पुरुषार्थ

पुरुषार्थ के विधि-विधान और प्रालब्ध पर विचार करें तो इस दो प्रकार के पुरुषार्थ में एक है उतरती कला का पुरुषार्थ और दूसरा है चढ़ती कला का पुरुषार्थ।

1. **उतरती कला का पुरुषार्थ** - भक्ति मार्ग में भी आत्मायें अपने आत्म-कल्याण के संकल्प से ही भक्ति आदि करती हैं परन्तु भक्ति मार्ग में जो पुरुषार्थ करते हैं, उससे अल्प काल का फल तो मिलता है परन्तु उससे आत्मा की और समग्र विश्व की उतरती कला ही होती है।

2. **चढ़ती कला का पुरुषार्थ** - संगमयुग पर परमात्मा के द्वारा यथार्थ ज्ञान मिलता है, तब जो आत्मायें परमात्मा की श्रीमत पर जो पुरुषार्थ करते हैं, उससे आत्मा की और समग्र विश्व की चढ़ती कला होती है। वास्तव में यही सच्चा पुरुषार्थ है क्योंकि इससे ही पुरुष अर्थात् आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है और समग्र विश्व का नव-निर्माण होता है।

भक्ति मार्ग का पुरुषार्थ

वास्तव में भक्ति मार्ग का पुरुषार्थ ज्ञान मार्ग में परमात्मा के द्वारा सिखाये और कराये गये पुरुषार्थ की यादगार मात्र होता है। क्योंकि द्वापर से वाम मार्ग में जाने के कारण जब आत्मायें विकारों के वशीभूत होकर दुखी-अशान्त होती है तो उनको संगमयुग पर किये गये पुरुषार्थ की याद आती है और उस याद में अनेक प्रकार से पुरुषार्थ करती हैं।

1. परमात्मा शिव की भक्ति और फिर देवताओं की भक्ति होती है, जिसमें मन्दिर बनाना, शिव की या देवताओं की मूर्ति की पूजा, अर्चना, भजन-कीर्तन आदि करते हैं।
2. आत्म-कल्याण के लिए तीर्थ, व्रत, आदि करते हैं।
3. हठयोग के द्वारा आत्म-कल्याण का पुरुषार्थ करते हैं, जिसमें तत्व-योग, सांख्य-योग, पतन्जलि-योग आदि-आदि
4. वेद-शास्त्रों का पठन-पाठन, हवन-यज्ञ आदि करना।

ज्ञान मार्ग का पुरुषार्थ

ज्ञान मार्ग में साकार में आये निराकार परमात्मा शिव को पहचानकर निश्चयबुद्धि होकर उनकी श्रीमत पर पुरुषार्थ करते हैं, जिसमें -

1. अपने बिन्दुरूप आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर बिन्दुरूप परमात्मा को याद करना।

2. नियमानुसार मुरली का पठन-पाठन और धारणा करना।
3. परमात्मा के प्रति प्यार - सच्ची दिल से साकार रूप में परमात्मा को याद करना।
4. परमात्म प्यार में उनकी श्रीमत अनुसार दिनचर्या अनुसार चलना।
5. निश्चयबुद्धि होकर कदम-कदम पर साकार में आये ज्ञान सागर निराकार परमात्मा की मत लेना और उस अनुसार व्यवहार करना।
6. ज्ञान की धारणा के लिए ज्ञान की यथार्थ समझ अति आवश्यक है, उसके लिए ज्ञान-गुण-शक्तियों का मनन-चिन्तन करना।
7. ईश्वरीय सेवा
अ. तन से
ब. मन से
स. धन से

ये सब ज्ञान मार्ग के पुरुषार्थ हैं परन्तु कोई विरला ब्रह्मा बाबा, मातेश्वरी के समान तन-मन-धन, मन्सा-वाचा-कर्मणा सभी प्रकार से पुरुषार्थ करता है और उसको परमात्मा पिता का सम्पूर्ण वर्सा प्रालब्ध के रूप में मिलता है। कोई एक प्रकार का भी पुरुषार्थ करता है तो भी उसको वर्सा अवश्य मिलता है अर्थात् वह स्वर्ग में आता है परन्तु अपने पुरुषार्थ अनुसार प्रालब्ध पाता है।

ज्ञान मार्ग में जो पुरुषार्थ करते हैं, उसमें भी दो प्रकार के पुरुषार्थी हैं।

1. जो सच्ची दिल से पुरुषार्थ करते हैं अर्थात् सच्ची दिल से परमात्मा को याद करते हैं और अपने आत्म-कल्याण और विश्व-कल्याण का सच्ची दिल से संकल्प रखते हैं। उनको आत्माओं की और परमात्मा की विशेष दुआयें मिलती हैं, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है और भविष्य में भी अच्छा फल मिलता है। उनको अपनी भी दुआयें मिलती हैं अर्थात् आत्म-सन्तुष्टि होती है।
2. जो देहाभिमान वश दिखावे का झूठा पुरुषार्थ करते हैं अर्थात् जिनको अपने आत्म-कल्याण और विश्व के कल्याण का इतना संकल्प नहीं रहता है, जितना अपने मान-सम्मान का रहता है। उनको अल्प काल के लिए तो मान-सम्मान मिलता है परन्तु सत्यता कब छिपती नहीं है, इसलिए कहाँ न कहाँ वह असत्यता प्रगट हो ही जाती है। उनको अपना दिल स्वयं ही खाता रहता है, इसलिए उनको कब आत्म-सन्तुष्टि नहीं होती है। उनको आत्माओं और परमात्मा की दुआयें भी नहीं मिलती हैं क्योंकि उनका वायब्रेशन आत्माओं को आता ही है।

पुरुषार्थ और ज्ञान

सच्चा पुरुषार्थ करने के लिए आत्मा को ज्ञान परमावश्यक है। बाबा ने यथार्थ पुरुषार्थ क्या है, उसका भी ज्ञान दिया है और यथार्थ पुरुषार्थ करने के लिए आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, विश्व-नाटक, कर्म-सिद्धान्त आदि ज्ञान के विभिन्न विषयों का भी ज्ञान दिया है। उनको समझने के लिए भी आत्मा को पुरुषार्थ करना ही पड़ता है। उसके लिए क्या पुरुषार्थ करना है, वह भी बताया है। जो आत्मा उसके अनुसार पुरुषार्थ करती है, उसको ही धारणा होती है और वे अपने पुरुषार्थ में सफल होते हैं। इस तरह हम देखते हैं कि ज्ञान की यथार्थ धारणा के लिए भी पुरुषार्थ अति आवश्यक है। बिना पुरुषार्थ के ज्ञान की यथार्थ धारणा नहीं हो सकती है और जब ज्ञान की यथार्थ रीति धारणा नहीं होगी, तब तक कर्मों में श्रेष्ठता आ नहीं सकती और जब तक कर्मों में श्रेष्ठता नहीं है तब तक आत्मा को इस ब्राह्मण जीवन का सच्चा सुख अनुभव नहीं होगा। सेवा के लिए भी ज्ञान की धारणा अति आवश्यक है।

बाप को याद करने से पावन बनेंगे, आत्मिक शक्ति बढ़ेगी, अन्त में सहज देह का त्याग कर परमधाम जा सकेंगे, याद से आत्मा को परम-शान्ति की अनुभूति होती है । बाप के साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने से अभी परम-आनन्द की अनुभूति होगी और भविष्य में ऊंच पद प्राप्त करेंगे। विश्व नाटक के यथार्थ ज्ञान को धारण कर साक्षी बनने से इस विश्व-नाटक के अवलोकन का परम-सुख अनुभव करेंगे, जो इस संगमयुग की परम-प्राप्ति है क्योंकि सतयुग में तो ये ज्ञान ही नहीं होता है, इसलिए साक्षी होकर इसके अवलोकन के सुख का प्रश्न ही नहीं उठता है। यह इस संगमयुग की परम-प्राप्ति है।

''ये ज्ञान रत्न जो अभी तुम लेते हो, वे फिर सच्चे हीरे-जवाहर बन जाते हैं। 9 रतन की माला कोई हीरे-जवाहरों की नहीं है। इन ज्ञान रत्नों की ही माला है। मनुष्य लोग फिर वे रतन समझ अंगूठियाँ पहल लेते हैं। इन ज्ञान रत्नों की माला इस संगम पर ही मिलती है। ये रतन ही तुमको भविष्य 21 जन्म मालामाल बनाते हैं।'' सा.बाबा 10.1.69

''सदैव यह स्मृति रखकर कदम उठाना है कि विजय तो हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। अधिकारी बन कर्म करने से विजय अर्थात् सफलता का अधिकार अवश्य ही प्राप्त होता है। ... मालूम नहीं विजय होगी या नहीं होगी ? मास्टर नॉलेजफुल के मुख से यह 'ना मालूम' शब्द निकलना नहीं चाहिए।'' अ.बापदादा 05.03.71

Q. यथार्थ पुरुषार्थ क्या है और कब होता है ?

यथार्थ पुरुषार्थ है ही यथार्थ को समझ कर उस स्थिति में स्थित रहने का। आत्मा परमात्मा के वंश की है और अपने मूल स्वरूप में ईश्वरीय गुण और शक्तियों से सम्पन्न है इसलिए आत्मा और परमात्मा दोनों को सच्चिदानन्द स्वरूप से जाना जाता है। समयान्तर में आत्मा विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार सतोप्रधान से तमोप्रधान बन जाती है अर्थात् यथार्थ ज्ञान की अनुपस्थिति में देहभान और फिर देहाभिमान के वश होकर अपने मूल गुणों और शक्तियों को भूलकर विकर्मों में प्रवृत्त होकर दुखी हो जाती है। कल्पान्त के संगमयुग पर परमात्मा आकर यथार्थ ज्ञान देते हैं, आत्मा को उसके मूल स्वरूप का अनुभव कराते हैं और पुन: अपने मूल गुणों और शक्तियों को धारण करने का विधि-विधान आत्माओं को बताते हैं, जिसको ही सहज ज्ञान और योग कहा जाता है। विश्व-नाटक के विधि-विधान के अनुसार जब आत्मा यथार्थ ज्ञान को धारण कर अपने को आत्मा समझकर परमात्मा को याद करती है तो उसमें अपने अनादि गुणों और शक्तियों अर्थात् ईश्वरीय गुण और शक्तियों की पुन: धारणा होती है और आत्मा स्व-कल्याण और विश्व-कल्याणार्थ कर्तव्य करने में समर्थ होती है। ऐसे ही जब आत्मा अपने आदि स्वरूप अर्थात् दैवी स्वरूप को याद करती है तो आत्मा में दैवी गुणों और शक्तियों की धारणा होती है।

ज्ञान सागर परमात्मा ने जो आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक, कर्म और फल आदि का ज्ञान दिया है, उसकी यथार्थता, उसके विधि-विधान को जानकर, उसकी उपयोगिता को जानकर, अनुभव कर, निश्चय कर उसे जीवन में धारण कर इस विश्व की साधन-सम्पत्ति की अनुपयोगिता को समझकर देह और देह के सम्बन्धों से नष्टोमोहा होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होना या होने का प्रयत्न ही यथार्थ पुरुषार्थ है। आत्मिक स्वरूप सच्चिदानन्दमय है। ज्ञान की यथार्थ रीति धारणा करने वाला ही देह और देह की दुनिया से नष्टोमोहा होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो सकता है।

संगमयुग पर पुरुषार्थ भी प्रालब्ध है अर्थात् संगमयुग में आत्मा जो पुरुषार्थ करती है, उसमें आत्मा को अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है क्योंकि आत्मिक स्वरूप सच्चिदानन्द स्वरूप है, विश्व-नाटक परम-सुखमय है। ये सब ज्ञान संगमयुग पर ही परमात्मा द्वारा मिलता है। यथार्थ पुरुषार्थ है ही अपने सच्चिदानन्दमय आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का और इस विश्व-नाटक की यथार्थता को समझने का और समझकर इस खेल का आनन्द लेने का अर्थात् देव-दुर्लभ अतीन्द्रिय सुख अनुभव करने का, जो और किसी युग में सम्भव नहीं है।

अभी यथार्थ पुरुषार्थ करके विश्व-नाटक के गुह्य रहस्यों को समझकर देह में रहते देह से न्यारा होकर मुक्त जीवन का अनुभव करना है, साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखना

और ट्रस्टी होकर कर्म करते हुए जीवनमुक्ति का अनुभव करना है। ये मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुर-दुर्लभ सुख स्वयं अनुभव करते हुए अन्य आत्माओं को भी उसका रास्ता बताना है, सतयुगी नई दुनिया के योग्य बनने के लिए दैवी गुणों को धारण करना और श्रेष्ठ कर्म करके श्रेष्ठ कर्मफल का खाता जमा करना है। सारे कल्प पार्ट बजाने के लिए आत्मिक शक्ति को संचित करने के लिए पुरुषार्थ करने का अभी ही समय है। जो आत्मा इस पुरुषार्थ मे सफलता प्राप्त कर लेती अर्थात् महारथ प्राप्त कर लेती है, वह इस दुख-अशान्ति की दुनिया में रहते भी मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम-सुख अनुभव करती है और कर सकती है। इसके लिए ही परमात्मा ने अपना, आत्मा का और विश्व-नाटक का ज्ञान दिया है और इस गुह्य रहस्य का रहस्योद्घाटन किया है कि मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है। इस सत्य ज्ञान को समझकर परमात्मा को याद करने वाला ही इस पुरुषार्थ को कर सकता है और अभीष्ट पुरुषार्थ करके अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। ये अभीष्ट पुरुषार्थ अभी इस संगमयुग पर ही होता है, और तो सारे कल्प आत्मायें जो भी पार्ट बजाती हैं, उससे उनकी आत्मिक शक्ति का ह्रास ही होता है। सारे कल्प पार्ट बजाने के लिए हर आत्मा आत्मिक शक्ति का संचय करने का पुरुषार्थ अभी इस संगमयुग पर ही करती है।

मुख्य पुरुषार्थ है अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का, आत्मिक स्वरूप में स्थित होने के लिए परमात्मा से प्राप्त सत्य ज्ञान का मनन-चिन्तन करके उसको धारण करने का पुरुषार्थ करना होता है, परमात्मा को याद करने का पुरुषार्थ करना होता है। भविष्य के लिए खाता जमा करने के लिए प्रयत्न करना भी पुरुषार्थ है। गुण-शक्तियों को धारण करने के लिए, उनका मनन-चिन्तन करना भी पुरुषार्थ है।

बाबा ने मुरली में जो भी महावाक्य उच्चारण किया है, उसमें कोई न कोई रहस्य भरा हुआ है, उसमें हमारा हित समाया हुआ है, उस हित और रहस्य को समझने, अनुभव करने और जीवन में लाने, व्यवहार में लाने का प्रयत्न भी पुरुषार्थ है।

''अभी हम कारून के खज़ाने के मालिक बनते हैं। अपने से आपही बात करने से ही खुशी होती है। ... अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो इन लक्ष्मी-नारायण जैसा हर्षितमुख बनने के लिए। इनमें तो ज्ञान भी नहीं है, तुमको तो अभी ज्ञान सागर बाप से ज्ञान मिला है तो तुमको कितनी खुशी रहनी चाहिए। अभी तुम देवताओं से भी ऊंच हो।''

सा.बाबा 6.11.09 रिवा.

''सहज और सरल रीति एक सेकेण्ड में आवाज़ में आना और एक सेकेण्ड में आवाज़ से परे हो जाना, यह सम्पूर्ण स्टेज की निशानी है। इस स्थिति में सर्व पुरुषार्थ सरल होगा। पुरुषार्थ में

सभी बातें आ जाती हैं। याद की यात्रा और सर्विस दोनों ही पुरुषार्थ में आ जाते हैं।''

अ.बापदादा 2.4.70

''जो आत्माभिमानी होकर बैठे हैं, उनको ही महावीर कहा जाता है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना।... तुमको अन्दर में खुशी होती है कि हम आत्मा हैं, हम सब आत्माओं का बाप हमको पढ़ाते हैं।... फट से कोई महावीर नहीं बन सकते हैं, धीरे-धीरे महावीर बनना है। इसमें ही मेहनत है।''

सा.बाबा 15.10.09 रिवा.

''अभी सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में है। स्वदर्शन चक्रधारी तुम्हारी ही महिमा है। तुम ब्राह्मण ही मेहनत कर मनुष्यों को आप समान बनाकर स्वर्गवासी देवी-देवता बनाते हो। ... जब तुम देवता बन जाते हो तो तुमको पास्ट, प्रजेन्ट, फ्युचर का कोई ज्ञान नहीं रहता है।''

सा.बाबा 10.10.09 रिवा.

''मेरी नेचर है - यह कहना शक्तिहीनता की निशानी है। पुरुषार्थ शब्द, पुरुषार्थ शब्द से यूज़ नहीं करते परन्तु पुरुषार्थ शब्द पुरुषार्थ से छुड़ाने का साधन बना दिया है।...कोई गुम्बज में जो आवाज करता है, वह लौटकर अपने पास ही आ जाता है। ... यह भी अपनी स्थिति का रिटर्न है।''

अ.बापदादा 22.1.71

''यथार्थ पुरुषार्थ का अर्थ ही है कि वहाँ ही पुरुषार्थ और वहाँ ही प्राप्ति। इस संगमयुग को विशेष वरदान है प्रत्यक्ष फल प्राप्त कराने का। ... एक सेकण्ड का भी फल अगर प्राप्त नहीं किया तो फुल नहीं कहेंगे, फेल की लिस्ट में आ जायेंगे।''

अ.बापदादा 11.07.70 पार्टी

''इस समय मुख्य पुरुषार्थ कौनसा चल रहा है। अभी पुरुषार्थ है विस्तार को समाने का। जिसको विस्तार को समाने का तरीका आ जाता है, वे बापदादा के समान बन जाते हैं। ... जिसको समेटना आता है, उसको समाना भी आता है। बीज में कौनसी शक्ति है? वृक्ष के विस्तार को अपने में समाने की।''

अ.बापदादा 5.4.70

''किसी आत्मा का प्यारा नहीं बन पाते हो, उसका कारण यही होता है कि उस आत्मा के संस्कार और स्वभाव से न्यारे नहीं बनते। ... पुरुषार्थ प्यारे बनने का नहीं, न्यारे बनने का करना है। न्यारे बनने की प्रालब्ध है प्यारा बनना। यह अभी की प्रालब्ध है।''

अ.बापदादा 5.4.70

''समझो इनसे कोई भूल हो जाती है बाप उसको अभूल कराये ठीक कर देते हैं। यह भी कदम-कदम श्रीमत पर चलते रहते हैं। कब नुकसान हो जाता है तो समझते हैं ड्रामा में था। ... भूल की तो उसकी एवज़ में फिर बहुत सर्विस में लग जाना चाहिए, पुरुषार्थ बहुत करना

चाहिए। किसका जीवन बनाना, यह है पुरुषार्थ।''

सा.बाबा 20.12.08 रिवा.

अपनी शान्त स्थिति में रहेंगे तो जो सुनाना होगा, वह आपही आयेगा और उसको सुनने वाले भी रुचि से सुनेंगे। ... आप सब सफेद लाइट होते ही हलचल में क्यों आ जाते हो

दादी जानकी 29.10.08

अभी साइन्स के अनेक साधन निकले हैं, जिनसे सब कार्य सहज हो गये हैं। पहले पैदल दूर तक चले जाते थे ... अभी मोटर गाड़ी चाहिए, उसके बिगर जाना मुश्किल लगता है क्योंकि साधनों के अधीन हो गये हैं। हमको परमात्मा ने किसकी अधीनता से मुक्त रहना सिखाया है। बाबा ने कहा है - तुमको अपनी कर्मेन्द्रियों के भी अधीन नहीं रहना है, सदा स्वतन्त्र उड़ता पंक्षी रहना है। पंक्षी कभी बोझा नहीं उठाता है, इसलिए सदा स्वतन्त्र होकर उड़ता है।

दादी जानकी 29.10.08

जब तक यह बुद्धि में नहीं आया कि मैं आत्मा, परमात्मा की सन्तान हूँ, तब तक पुरुषार्थ हो नहीं सकता। पुरानी बातों से अपने कान बन्द कर लो। ... दुख देने वाला ज्यादा याद आता है, सुख देने वाले बाबा को भूल जाते हैं। सुखदाता बाप याद होगा तो कब दुख फील हो नहीं सकता। दुख देने वाले की याद आयेगी नहीं।

दादी जानकी 29.10.08

''बच्चों को लहरों में लहराना आता है लेकिन तले में जाना नहीं आता है। उसका सहज साधन पहले सुनाया कि यह प्रैक्टिस करो। अभी-अभी आवाज़ में आये और फिर मास्टर सर्वशक्तिवान बन अभी-अभी आवाज़ से परे हो जाये।... कभी सागर की लहरों में और कभी सागर के तले में यह अभ्यास करो।''

अ.बापदादा 2.4.70

Q. क्या ज्ञान सागर परमात्मा ने सारा ज्ञान दे दिया है?

हाँ, परमात्मा ने सारा ज्ञान 18.1.69 तक ही दे दिया था, तब ही ब्रह्मा बाबा ने उस ज्ञान को धारण कर सम्पूर्णता को पाया है।

पुरुषार्थ और योग

योग क्या है और योग के लिए क्या पुरुषार्थ करना है, उसका विधि-विधान भी परमात्मा ने बताया है। परमात्मा पिता ही आकर राजयोग सिखाते हैं, जिससे ही आत्मा पावन बनती है। राजयोग अर्थात् परमात्मा की स्नेहयुक्त याद, जिस याद से आत्मा के जन्म-

जन्मान्तर के विकर्म भस्म होते हैं और आत्मा पावन बनती है। राजयोग के सफल अभ्यास के लिए इस विश्व-नाटक के राज़ को जानकर देह और देह की दुनिया से उपराम होकर अपने मूल स्वरूप अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को देखना और पार्ट बजाने का पुरुषार्थ भी अति आवश्यक है। उसके लिए यथार्थ ज्ञान की धारणा और परमात्मा की याद ही एकमात्र साधन और साधना है, उसका यथार्थ रीति पुरुषार्थ करना है। परमात्मा की यथार्थ रीति याद के लिए परमात्मा ने जो ज्ञान, गुण, शक्तियों का ज्ञान दिया है, उसका मनन-चिन्तन करके अनुभव करने का पुरुषार्थ अति आवश्यक है। इस सब पुरुषार्थ में आत्मा के सामने अनेक प्रकार की बाधायें आती हैं, उनको कैसे पार करें, उसके लिए भी पुरुषार्थ करना होता है, वह भी बाबा ने बताया है।

परमात्मा के द्वारा बताये गये इस याद के विधि-विधान को ही भक्ति मार्ग में यथार्थ ज्ञान की अनुपस्थिति में हठयोग के रूप में जाना जाता है परन्तु यथार्थ ज्ञान न होने के कारण आत्मा हठयोग से वह प्राप्ति नहीं कर पाती है, जो योग के द्वारा होनी चाहिए। परमात्मा के द्वारा बताये गये इस योग के पुरुषार्थ की यादगार में ही पातन्जलि योग में अष्टांग योग अर्थात् यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का विधि-विधान है। परन्तु वहाँ आत्मा को अपने सत्य स्वरूप और परमात्मा के सत्य स्वरूप का ज्ञान न होने के कारण जीवात्मा भृकुटी में ज्योति की परिकल्पना करके ध्यान लगाते हुए निर्संकल्प और निर्विकल्प समाधि के लिए पुरुषार्थ अवश्य करती है। उसमें भी निर्संकल्प समाधि आत्मा के अनादि स्वरूप का अर्थात् ईश्वरीय वंश का और निर्विकल्प समाधि आत्मा के आदि स्वरूप अर्थात् दैवी जीवन का परिचायक शब्द है।

योग के पुरुषार्थ से ही आत्मा में ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा होती है, आत्मा और प्रकृति पावन बनती है और विश्व का नव-निर्माण होता है। योग से ही आत्मिक शक्ति का विकास होता है और आत्मा में आगे सारे कल्प में पार्ट बजाने के लिए शक्ति संचित होती है।

''योगबल से कर्मेन्द्रियों को वश करना है, इसलिए भारत का प्राचीन राजयोग गाया हुआ है। ... तुम्हें इन विकारी कर्मेन्द्रियों पर योगबल से जीत पाने का पुरुषार्थ करना है। भल सम्पूर्ण तो पिछाड़ी में होंगे।'' सा.बाबा 2.05.09 रिवा.

''बहुत करके वेस्ट थॉट्स की रिजल्ट में सभी ने अटेन्शन अच्छा दिया है। ... अभी इस ड्रिल (निराकारी और फरिश्ता स्थिति) से सभी को सदा के लिए अपने पुरुषार्थ की गति तीव्र करनी है क्योंकि बहुत काल चाहिए। मानो पीछे कर भी लेंगे लेकिन बहुत काल का भी सम्बन्ध है, इसलिए सभी अटेन्शन दें कि कोई करे न करे लेकिन मुझे करना है, मुझे एवर-रेडी बनना ही

है।''
अ.बापदादा 15.12.09

''बाप से प्यार है, तो प्यार का रिटर्न क्या होता है? प्यार का रिटर्न होता है समान बनना, सम्पन्न बनना, सम्पूर्ण बनना। तो अभी बापदादा एक ड्रिल बताता है ... ब्रह्मा बाप और शिव बाप दोनों से प्यार है ना! ... दोनों के समान बनना चाहते हो। ... शिव बाप है निराकारी और ब्रह्मा बाप है फरिश्ता। कल से नहीं लेकिन अभी से यह अभ्यास करो - कभी अपने को निराकार बाप समान निराकारी स्थिति में और कभी फरिश्ता बनकर ... फरिश्ता स्थिति में स्थित रहो।''
अ.बापदादा 15.12.09

''अभी तुम्हारी बुद्धि में है कि जो हमको नई दुनिया में ले जाते हैं, उनको याद करना है। बाप की याद से ही तुम पवित्र बनते हो। ... अभी तुम बच्चों को सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का भी ज्ञान मिला है। तुम यह भी जानते हो कि जिन्होंने कल्प पहले पढ़ा है, वे ही अब पढ़ेंगे, जिन्होंने कल्प पहले पुरुषार्थ किया है, वे अभी भी करने लगेंगे।''
सा.बाबा 12.12.09 रिवा.

''अभी तुम ज्ञान सहित कहते हो कि हम यह याद की यात्रा कल्प-कल्प करते हैं। यह यात्रा बाप स्वयं ही आकर सिखलाते हैं। ... यह यात्रा है डेड साइलेन्स की। साइलेन्स में एक बाप को ही याद करना है, उनकी याद से ही पावन बनना है।''
सा.बाबा 8.12.09 रिवा.

''तुम बच्चे अभी समझते हो कि हम बेहद की पढ़ाई पढ़ रहे हैं। सृष्टि-चक्र की भी पढ़ाई पढ़ते हो, 84 जन्मों की भी पढ़ाई पढ़ते हो और फिर पवित्र भी बनना है।... अपने दिल से सच-सच पूछो कि हम यहाँ बैठे कितना समय बाप की याद में बैठे थे और कितना समय माया रावण बुद्धि को और तरफ ले गई। बाप ने कहा है - मामेकम् याद करने से ही पाप कटेंगे।''
सा.बाबा 27.11.09 रिवा.

''एक है दिमाग़ से नॉलेज के आधार पर सम्बन्ध को याद करना और दूसरा है दिल से उस सम्बन्ध के स्नेह में, लव में लीन हो जाना। ... उस सम्बन्ध को स्नेह से, दिल से अनुभव करो तो मेहनत भी नहीं लगेगी और बोर भी नहीं होंगे। सदा मनोरंजन रहेगा।''
अ.बापदादा 18.02.94

''बापदादा हर एक के पत्र का मुरली में जबाब देता है।... मुरली में उत्तर भी देते हैं और याद-प्यार भी देते हैं। अगर कोई भी क्वेश्चन उठता है या कोई भी समस्या सामने आती है तो मुरली से रेस्पान्स अवश्य मिलता है। ... दूसरे दिन की मुरली उस विधि से देखो कि मैंने जो पत्र बापदादा को लिखा, उसका उत्तर क्या है?''
अ.बापदादा 18.02.94

''कल्प पहले जिसने जो पुरुषार्थ किया है, वह अभी भी करते हैं।... सारा मदार याद पर है। बाप से बच्चों को यह अखुट खज़ाना मिलता है। ... जो पूरा पुरुषार्थ करते हैं, वे पूरा स्वर्ग का वर्सा पाते हैं। बुद्धि में रहना चाहिए कि हम बाप से स्वर्ग का वर्सा पाते हैं।''

सा.बाबा 9.11.09 रिवा.

''अभी तुम बच्चों को अन्दर में बड़ी खुशी होनी चाहिए क्योंकि तुम जानते हो - बाबा आया हुआ है, यह पुरानी दुनिया तो जरूर बदलेगी। जितना-जितना जो पुरुषार्थ करेंगे, उतना पद पायेंगे। ... आज दुनिया में अपरमअपार दुख हैं, फिर कल अपरमअपार सुख होंगे। हम योगबल से अथाह सुख वाली दुनिया स्थापन कर रहे हैं।''

सा.बाबा 20.10.09 रिवा.

''तीसरे, जो स्नेह में समाये हुए हैं, उन आत्माओं के नयनों में, मुख में, संकल्प में, हर कर्म में सहज और स्वत: स्नेही बाप का साथ सदा ही अनुभव होता है। बाप उनसे जुदा नहीं और वे बाप से जुदा नहीं। वे हर समय बाप के स्नेह के रिटर्न में प्राप्त हुई सर्व प्राप्तियों में सम्पन्न और सन्तुष्ट रहते हैं। इसलिए किसी भी प्रकार का सहारा उनको आकर्षित नहीं कर सकता है।''

अ.बापदादा 16.12.93

''एक बाप के सिवाए कोई तरफ बुद्धियोग न जाये। और सब तरफ से बुद्धियोग टूट जाये, ये बड़ी मेहनत की बात है। ... अपनी यह देह भी याद न आये।... जितना तुम याद में रहेंगे, उतना तुम्हारी कमाई होगी।''

सा.बाबा 15.10.09 रिवा.

''तुम्हारा स्नान होता है याद की यात्रा से। सिवाए एक बाप की याद के तुम्हारी आत्मा पावन बन ही नहीं सकती है। ... ज्ञान को स्नान नहीं समझना है, योग का स्नान है, जिससे पाप कटते हैं। ज्ञान तो पढ़ाई है, जिससे कमाई होती है। ज्ञान और योग दो चीजें हैं, ज्ञान और विज्ञान। ज्ञान माना पढ़ाई और विज्ञान माना योग।''

सा.बाबा 15.10.09 रिवा.

''अभी तुमको ज्ञान मिलता है। ज्ञान सहित याद में रहने से पाप कटते हैं। यह ज्ञान और कोई को है नहीं। मनुष्य थोड़ेही समझते हैं - हम आत्मा शान्त स्वरूप हैं, हमको शरीर से डिटैच होकर बैठना है। ... कैसे अपने को आत्मा समझकर शरीर से डिटैच होकर बैठो, वह भी बाप समझाते हैं।''

सा.बाबा 5.09.09 रिवा.

''बाप सब राज़ समझाते हैं, फिर भी कहते हैं - मीठे-मीठे बच्चो, बाप को याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पापों का बोझा उतर जायेगा। पढ़ाई से पाप नहीं कटेंगे। मुख्य है बाप की याद।''

सा.बाबा 10.08.09 रिवा.

''तुम्हारा जन्म-जन्मान्तर से पापों का घड़ा भरा हुआ है, तो इस याद की यात्रा से ही तुम

पापात्मा से पुण्यात्मा बन जायेंगे। ... इसमें पूरा पुरुषार्थ करना है बाप को याद करने का। जितना याद करते रहेंगे, उतना सतोप्रधान बनते जायेंगे। पुरुषार्थ करके अवस्था ऐसी जमानी है, जो तुमको पिछाड़ी में सिवाए एक बाप के कुछ भी याद न आये।''

सा.बाबा 11.08.09 रिवा.

''सब एकरस याद नहीं करेंगे। यह बहुत सूक्ष्म बात है। अपने को आत्मा समझ दूसरे को भी आत्मा समझें, यह अवस्था जमाने में टाइम लगता है। ... ये बातें बहुत गुह्य और महीन हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है।''

सा.बाबा 16.07.09 रिवा.

जो परमात्मा को प्यार से याद करता है, अच्छा कर्म करता है, अपने को चेन्ज करता है, परमात्मा उसकी बहुत मदद करता है। मेरे को ऐसे अनेक अनुभव हैं। ... हमको किसको बुरा समझ कर उसको चेन्ज करने का संकल्प नहीं रखना है, वह चेन्ज हो, ऐसा संकल्प भी नहीं रखना है। हमको अपने को चेन्ज करना है, फिर वे चेन्ज होंगे। हमारे कहने से कभी चेन्ज नहीं होंगे।

दादी जानकी 19.06.09

''हमारा बाप ऐसा है, हमारा परिवार ऐसा है, जब तक बुद्धि में ये है, तब तक बाप की याद बुद्धि में ठहर नहीं सकती। ... बाप की याद है तो सब कुछ भूल जाता है।''

दादी जानकी 16.2.09

''स्वच्छ बुद्धि होगी, साफ बुद्धि होगी ... तो समय पर जो करना है, वह जरूर याद आयेगा, बाबा टच करेगा, टच होगा ... परमात्मा का बल अनेक कार्य आपही कराता है।''

दादी जानकी 16.2.09

''तुम्हारे ऊपर जन्म-जन्मान्तर की कट चढ़ी हुई है, उसको निकालने के लिए यह योग अग्नि है, इसमें सब पाप भस्म हो जायेंगे। ... बाबा खाद निकालने की युक्ति बहुत अच्छी बताते हैं - मामेकम् याद करो। ... अपने को आत्मा समझ भाई-भाई को देखो तो तुम्हारे सब क्रिमिनल ख्यालात निकल जायेंगे। ... शरीर ही नहीं जो भान आये या मोह जाये।''

सा.बाबा 7.02.09 रिवा.

''माला फेरते, राम-राम जपते ... यह सब हुआ भक्ति मार्ग। यह फिर भी और बातों से ठीक है क्योंकि उतना समय कोई पाप नहीं होगा। पापों से बचाने के लिए ये युक्तियाँ हैं। यहाँ माला फेरने की बात नहीं है परन्तु स्वयं माला का दाना बनना है।''

सा.बाबा 11.12.08 रिवा.

''योग से ही हमारे जन्म-जन्मान्तर के विकर्म भस्म होते हैं। कृष्ण को कोई दिन-रात याद करे तो भी विकर्म कदापि विनाश नहीं हो सकते। ... बच्चों को पुरुषार्थ कर पूरा योग में रहना

है।''

सा.बाबा 11.12.08 रिवा.

''कई बच्चों में ज्ञान बल तो है परन्तु योगबल नहीं होता तो गिर पड़ेगा। जैसे पूछा जाता है - पुरुषार्थ बड़ा या प्रालब्ध, तो कहते हैं पुरुषार्थ बड़ा। ऐसे ही ज्ञान और योग में कहेंगे कि योग बड़ा क्योंकि योग से ही पतित से पावन बनते हैं।''

सा.बाबा 26.02.10 रिवा.

पुरुषार्थ और धारणा

बहुधा अधिकांश पुरुषार्थी दैवी गुणों की धारणा को ही धारणा समझते हैं परन्तु बाबा ने जो भी बातें बताई हैं, ज्ञान-गुण-शक्तियों का ज्ञान दिया है, उन सबको जीवन में अपनाने का अर्थ धारणा है। जो उन सबकी धारणा करता है, वह पुरुषार्थी ही इस ज्ञान मार्ग में सफल होता है। इन सब धारणाओं का आधार ज्ञान है क्योंकि ज्ञान की धारणा के आधार पर ही आत्मा की और विश्व की चढ़ती कला होती है। विचारणीय है कि सतयुग के आदि में आत्मायें सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण थे, फिर भी उन आत्माओं और विश्व की उतरती कला होती गई। चढ़ती कला संगमयुग पर ही होती है, जब ज्ञान सागर परमात्मा पिता आकर सत्य ज्ञान देते हैं। बाबा ने हमको जो ज्ञान दिया है, उसमें अनेक बातें हैं, उन सबकी धारणा करना अति आवश्यक है। यथा ज्ञान की धारणा, ईश्वरीय और दैवी शक्तियों की धारणा, ईश्वरीय और दैवी गुणों की धारणा, आदि आदि। इन सब प्रकार की धारणा के लिए बाबा ने पुरुषार्थ की अनेकानेक विधियाँ बताई हैं। जो पुरुषार्थी उन विधियों का अच्छी रीति जीवन में अपनाने का पुरुषार्थ करते हैं, उनके जीवन में सहज ही ज्ञान, गुण-शक्तियों की धारणा होती है और वे इस जीवन सच्चा सुख अनुभव करते हैं।

इस ज्ञान मार्ग में सच्ची सफलता प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य व्रत की धारणा अति आवश्यक है। बिना ब्रह्मचर्य की धारणा के कोई इस ज्ञान मार्ग में चल ही नहीं सकता है परन्तु किसी-किसी को ये धारणा सहज हो जाती है, किसको इसके लिए पुरुषार्थ करना होता है। परन्तु जो इस जीवन में चलने का दृढ़ संकल्प रखते हैं और यथार्थ रीति पुरुषार्थ करते हैं, वे इसको धारण करने में अवश्य सफल होते हैं। उनको बाबा की मदद भी अवश्य मिलती है। ''परमात्मा की बुद्धि में सारी नॉलेज है, तुम्हारी बुद्धि में भी यह सब बैठना चाहिए। यह सब नॉलेज बुद्धि में धारण करनी है। ... अभी बाप जो बुद्धि देते हैं, वह 5 हजार वर्ष के बाद बदलकर पत्थरबुद्धि हो जाती है, फिर बाप आकर बुद्धि का ताला खोलते हैं। ... नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही सबकी बुद्धि का ताला खुलता है।'' सा.बाबा 12.12.09 रिवा.

''जो विश्व को झुकाने वाले हैं, वे किसके आगे झुक नहीं सकते। उस अथॉरिटी की खुमारी से किसी भी आत्मा का कल्याण कर सकते हो। ऐसी खुमारी को कभी भी भूलना नहीं। बहुत समय से अभुल बनने से ही भविष्य में बहुत समय के लिए राज्य भाग्य प्राप्त करेंगे।''

अ.बापदादा 24.05.71

''तुम्हारी स्थिति इच्छामात्रम् अविद्या की होनी चाहिए। अगर कोई इच्छा रखी तो मरा। बर्थ नॉट ऐ पेनी बन जाते हैं। ... कितनी डर्टी दुनिया है, इससे कभी दिल नहीं लगानी है। ... बाप आये हैं सबको घर वापस ले जाने के लिए। बाप के बिगर तो कोई वापस घर ले जा न सके।''

सा.बाबा 26.11.09 रिवा.

- विश्व-नाटक में हर आत्मा का पार्ट निश्चित है, उस अनुसार समय पर हर आत्मा कर्म करने के लिए बाध्य है। साथ ही सतयुग-त्रेमा में जो राजाई चलती है, उसमें अनेक प्रकार के पद होंगे और दो युगों तक आत्मा के पार्ट में अनेक प्रकार के परिवर्तन होंगे, उतार-चढ़ाव होगा क्योंकि सदा काल एक जैसा पार्ट किसका भी नहीं रहेगा। तो उस उतार-चढ़ाव के लिए वह आत्मा अभी वैसा ही पुरुषार्थ करेगी, इसलिए हमको किसके पार्ट को देखकर या सुनकर आश्चर्य नहीं खाना है और न ही किसको दोष देना है और न ही किससे घृणा आदि करनी है। हमको हर एक का पार्ट और हर दृश्य साक्षी होकर देखना है और अपना अभीष्ट पुरुषार्थ करना है और सबके प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना रखनी है।

''बाप भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार याद प्यार देते हैं। अच्छा पढ़ने वाले को जरूर टीचर जास्ती प्यार करेंगे। ... बच्चों को धारणा ऐसी करनी है, जो एक बाप के सिवाए और कोई की तरफ बुद्धि न जाये।... बाबा सावधान भी करते हैं कि माया घड़ी-घड़ी बुद्धियोग तोड़ देगी।''

सा.बाबा 25.11.09 रिवा.

''अभी बच्चों को इस देह से और पुरानी दुनिया से इतना वैराग्य नहीं आया है। ... शरीर होते भी शरीर से कोई ममत्व नहीं होना चाहिए। अन्दर यही तात लगी रहे कि हम आत्मायें पावन बनकर अपने घर जायें। फिर यह भी दिल होती है कि ऐसे बाबा को हम कैसे छोड़ें! ऐसा बाबा तो फिर सारे कल्प में नहीं मिलेगा।''

सा.बाबा 14.11.09 रिवा.

''बाप है ज्ञान का सागर। ज्ञान सागर अब तुमको अविनाशी ज्ञान रतनों की थालियाँ भरकर देते हैं। बाप तुमको मालामाल बनाते हैं। जो ज्ञान को धारण करते हैं, वे ऊंच पद पाते हैं। जो नहीं धारण करते हैं, वे कम पद पायेंगे। ... जरूर जो स्थापना में मदद करेंगे, वे ही ऊंच पद पायेंगे। ... नई दुनिया में भी सब नहीं आयेंगे, कोई 25 परसेन्ट पुरानी दुनिया हो जायेगी, तब आयेंगे।''

सा.बाबा 11.11.09 रिवा.

''अभी तुम इन आंखों से जो कुछ देखते हो, उसको भूल जाना है। यह है बेहद का वैराग्य। ... बाप कहते हैं - यह पुरानी दुनिया भस्म होनी है, अब इस पुरानी दुनिया से दिल नहीं लगानी है। इस दुनिया में रहते सारा पुराना हिसाब-किताब चुक्तू करना है और नये आधा कल्प के लिए सुख का खाता जमा करना है।'' सा.बाबा 10.11.09 रिवा.

''इस ज्ञान की आवश्यक बातें हैं, वे ही इसेन्स हैं। अगर वे आवश्यक बातें धारण कर लो तो सर्व आवश्यकतायें पूरी हो जायेंगी। अभी कोई न कोई आवश्यकतायें हैं। लेकिन इन आवश्यकताओं को सदा के लिए पूर्ण करने के लिए दो आवश्यक बातें हैं, वे हैं आकारी और अलंकारी।'' अ.बापदादा 5.4.70

''ये बड़ी वण्डरफुल बातें हैं। जो अच्छी रीति समझकर धारण करते हैं, उनको खुशी का पारा चढ़ता है। पुरुषार्थ अच्छी रीति करना चाहिए। आप समान भी बनाना है। ... बाप लिबरेटर है और गाइड भी है। जब तुम वहाँ से आते हो तो बाप गाइड नहीं बनता है। बाप अभी ही गाइड बनता है। ... तुम भी गाइड हो, सबको रास्ता बताते हो।''

सा.बाबा 3.01.09 रिवा.

''रुहानी बच्चे अच्छी तरह से जानते हैं कि हम मुसाफिर हैं, यह हमारा देश नहीं है। यह बेहद का नाटक बड़ा माण्डवा है। ... हम सब एक्टर्स हैं और नम्बरवार अपने पार्ट अनुसार पूरे टाइम पर आते हैं, यहाँ पार्ट बजाने। ... यह अच्छी तरह से समझने और धारण करने की बात है।'' सा.बाबा 5.01.09 रिवा.

''आत्मा में ही बुद्धि है। शरीर आत्मा से बिल्कुल अलग है।... कैसे शरीर बनता है, आत्मा केसे उसमें प्रवेश करती है, हर चीज वण्डरफुल है। ... बाप कहते हैं इन सब बातों को अच्छी तरह बुद्धि में धारण करना है। बाप और राजधानी को याद करते रहो।''

सा.बाबा 5.01.09 रिवा.

''पुरुषार्थ में फलीभूत वही हो सकता है, जिसमें ज्ञान और धारणा के फल लगे हुए हों। ... वह तब होगा, जब मनन और मगन दोनों का अनुभव करेंगे। ... आपकी चलन और चेहरे से ईश्वरीय नशा और नारायणी नशा दिखाई दे। आपका चेहरा ही आपका परिचय दे। ... अपनी धारणाओं को और प्राप्ति को प्रत्यक्ष रूप में दिखाओ, तब प्रत्यक्षता होगी।''

अ.बापदादा 19.04.71

''कोई यह ज्ञान सुनकर, धारण कर औरों को सुनाते हैं, उनको कहा जाता है महारथी। वे सुनकर फिर धारण करते हैं और दूसरों को भी रुचि से समझाते हैं। ... कमाई में कब झुटका नहीं आता है। झुटका खाते रहेंगे तो धारणा कैसे होगी।'' सा.बाबा 8.10.09 रिवा.

''तुम अच्छी रीति बाप को याद और स्वदर्शन चक्रधारी बनो। बच्चों को ये बातें अच्छी रीति सुनकर, फिर उगारना है, सुमिरण करना है।... स्वर्ग में ऊंच पद पाना है तो ये सब बातें सुनकर अच्छी रीति धारण करो और दूसरों को भी रास्ता बताते रहो। बाप रास्ता तो बहुत सहज बताते हैं।'' सा.बाबा 1.10.09 रिवा.

''जिनको पढ़ाता हूँ, वे ही फिर आकर अपनी प्रालब्ध भोगते हैं। अपनी कमाई करते हैं, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार धारणा कर चले जाते हैं। कहाँ? नई दुनिया में। ... आत्मा तो अविनाशी है। आत्मायें पवित्र बन फिर पवित्र दुनिया में आती हैं।''

सा.बाबा 28.08.09 रिवा.

''कलियुग और सतयुग में रात-दिन का फर्क है। सतयुग में दुख की बात होती नहीं। नाम ही है सुखधाम। ... सुख-दुख आत्मा ही भोगती है परन्तु शरीर के द्वारा। ... बाप बार-बार समझाते हैं - अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह तो बाबा जानते हैं कि सभी नम्बरवार धारणा करते हैं।'' सा.बाबा 22.08.09 रिवा.

बाबा ने कहा है - अपनी कमाई करनी है, कब दूसरे की कमाई में आँख नहीं जानी चाहिए। ... जो दूसरे की कमाई में कब ऑख नहीं रखते हैं, उनमें न ईर्ष्या होगी और न घृणा होगी अर्थात् उनमें न अहंकार होगा और न हीनता होगी। वह सदा अपनी कमाई करने का पुरुषार्थ करेगा और अपनी कमाई में सदा खुशी का अनुभव करेगा।

''जितना दैवीगुण धारण करेंगे और करायेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे। बाप आते ही हैं पतितों को पावन बनाने। तो तुमको भी यह सर्विस करनी है। ... जब सभी पूरे पतित बन जाते हैं तब ड्रामा के प्लैन अनुसार बाप आते हैं।'' सा.बाबा 18.04.09 रिवा.

''दूसरों की भूलों को देखने वाला कभी अभूल नहीं बन सकता है। अभूल वह बनेंगा, जो अपनी भूलों को चेक करेगा और चेन्ज करेगा।'' दादी जानकी 10.4.09

''तुम झरमुई-झगमुई की बातें न सुनो, अपने कान बन कर लो। सबको शान्तिधाम और सुखधाम का रास्ता बताते रहो। जितना जो बहुतों को रास्ता बताते हैं, उतना उनको फायदा होता है। कमाई होती है।'' सा.बाबा 14.04.09 रिवा.

''बाप ने एक जैसा दिया है लेकिन धारण करने में हर एक का अपना-अपना पुरुषार्थ रहा है क्योंकि खज़ाने को धारण करने के लिए एक तो अपने पुरुषार्थ से प्रालब्ध बना सकते हो, दूसरा सदा स्वयं सन्तुष्ट रह और सभी को सन्तुष्ट करना अर्थात् सन्तुष्टता की विशेषता से खज़ाना जमा कर सकते हो।'' अ.बापदादा 24.03.09

''बाहर से मुँह हटा हुआ हो तो धारणा भी हो। ... यह है शिवशक्ति सेना। यह शक्ति सेना

क्या करती है ? श्रीमत पर नई दुनिया की स्थापना। ... इसमें स्तुति-निन्दा सब सहन करना पड़ता है। ... समय ऐसा आना है जो अनाज भी नहीं मिलेगा। तो सब कुछ सहन करने का अभ्यास होगा तब पास हो सकेंगे।'' सा.बाबा 26.03.09 रिवा.

''तुम यह प्रतिज्ञा करो कि कोई भी मरे हमको रोना नहीं है। तुम अपने बाप को याद करो और सतोप्रधान बनो। ... पुरुषार्थ से जो चाहो सो बन सकते हो। बाप तो समझते हैं कि जितना जिसने कल्प पहले पुरुषार्थ किया होगा, वही करेंगे। ... यहाँ आशीर्वाद या कृपा मांगने की कोई बात नहीं है। भक्ति मार्ग में आशीर्वाद माँगते हैं।'' सा.बाबा 7.02.09 रिवा.

''विश्वपति बनने के लिए बापदादा ताज, तख्त और तिलक लाये हैं। इन तीनों को धारण करने की हिम्मत है ? ... इसको धारण करने के लिए त्याग, तपस्या और सेवा करनी होगी। तिलक को धारण करने के लिए तपस्या, ताज को धारण करने के लिए त्याग और तख्त पर विराजमान होने के लिए जितनी सेवा करेंगे, उतना अब भी तख्तनशीन रहेंगे और भविष्य में भी तख्तनशीन बनेंगे।'' अ.बापदादा 11.06.70

''अपनी धारणा को अविनाशी बनाने के लिए वा सदा कायम रखने के लिए दो बातें याद रखनी हैं। वे कौनसी ? ... सिम्पुल रहना है और अपने को सेम्पुल समझना है। जैसे आप सेम्पुल बन दिखायेंगी, वैसे ही अनेक आत्माये भी यह सौदा करने के लिए पात्र बनेंगी। ... अच्छे सेम्पुल पर छाप लगाई जाती है। आप कौनसी छाप लगाकर जायेंगी, जो कभी मिटे नहीं ? शिवशक्तियाँ और ब्रह्माकुमारियाँ।'' अ.बापदादा 11.6.70

''हटना कमजोरों का काम है। शिवशक्तियाँ अपने को मिटाती हैं, न कि हटती हैं। ... इस ग्रुप से देखेंगे कितनों का सम्पूर्ण समर्पण का समारोह होता है। ... जितना बापदादा के स्नेही हो, उतना फिर सहयोगी भी बनना है। सहयोगी तब बनेंगे, जब अपने में सर्वशक्तियों को धारण करेंगे। ... सर्व शक्तियाँ अपने में भरकर जायेंगे तब हिसाब-किताब चुक्तू कर सकेंगे।''
अ.बापदादा 11.06.70

''जो जितना पुरुषार्थ करते हैं, वे उतना फरमानबरदार हैं। याद कम करते हैं तो कम फरमानबरदार हैं। फरमानबरदार पद भी ऊंच पाते हैं। बाप का फरमान है - एक तो मुझ बाप को याद करो, दूसरा नॉलेज को धारण करो। ... मुझे याद करो और स्वदर्शन चक्र फिराओ अर्थात् ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानो।'' सा.बाबा 17.11.08 रिवा.

''जो देही-अभिमानी नहीं बनते हैं, उन्हें धारणा भी नहीं होती है। सारा कल्प देह-अभिमान चला है। सतयुग में भी परमात्मा का ज्ञान नहीं रहता है। ... परन्तु वहाँ दुख की बात नहीं है।''
सा.बाबा 17.11.08 रिवा.

पुरुषार्थ और ईश्वरीय सेवा

ईश्वरीय सेवा इस संगमयुगी जीवन का एक मुख्य विषय है। सेवा ही नये विश्व के निर्माण का, नये विश्व में आत्माओं के अनेक सम्बन्धों का आधार है। इस जीवन में भी सेवा से आत्मा को खुशी और प्राप्ति की अनुभूति होती है। ईश्वरीय सेवा करना भी एक पुरुषार्थ है, जो इस जीवन में सुख-शान्ति-आनन्द की अनुभूति और भविष्य प्रालब्ध का आधार है। सेवा से ही पुरुष अर्थात् आत्मा का अपना भी कल्याण होता है और सेवा से ही आत्मा अन्य आत्माओं का भी कल्याण करती है। ज्ञान की सेवा करने वाले को ज्ञान की धारणा भी अच्छी होती है। संगमयुग पर ही जब परम पुरुष परमात्मा आकर यथार्थ ज्ञान देते हैं और विश्व कल्याण की सेवा स्वयं भी करते हैं और आत्माओं को भी साथी-सहयोगी बनाते हैं, तब जो आत्मायें सेवा की निमित्त बनती हैं, उससे उन आत्माओं का और विश्व का कल्याण होता है।

बाबा ने सेवा के अनेकानेक प्रकार के विधि-विधान बताकर ईश्वरीय सेवा के लिए पुरुषार्थ करने की प्रेरणा भी दी है और श्रीमत भी दी है। जो बाबा की उस श्रीमत पर चलकर ईश्वरीय सेवा का यथार्थ रीति पुरुषार्थ करते हैं, उनको बाबा की भी दुआयें मिलती हैं और अन्य आत्माओं की भी दुआयें मिलती हैं, जो उनके पुरुषार्थ में तीव्रता भी लाती है और सहयोगी बनती हैं। बाबा ने अनेक बार कहा है कि जो ज्ञान की सेवा करते हैं, उनको ज्ञान का मनन-चिन्तन अच्छा चलता है और मनन-चिन्तन से ज्ञान की धारणा अच्छी होती है, जिससे सेवा में सफलता सहज होती है।

''अभी रावण को जलाते हैं ते इससे सिद्ध है कि अभी रावण राज्य है। ... यह नई दुनिया है या पुरानी दुनिया, उसका क्लीयर कन्ट्रॉस्ट बताना है, ऐसा युक्ति से लिखना चाहिए जो मनुष्य अपने आपसे ही पूछें कि यह नई दुनिया है या पुरानी दुनिया। ... ये सब विचार सागर मन्थन करने की बातें हैं।'' सा.बाबा 28.01.09 रिवा.

''तुमको बार-बार कहा गया है कि तुम अपने को आत्मा समझ भाई-भाई को यह ज्ञान सुनाओ। बुद्धि में रहे - बाबा की नॉलेज हम भाइयों को सुनाते हैं। ... तुमको अभी जो ये ज्ञान रतन मिलते हैं, ये अविनाशी रतन बन जाते हैं।'' सा.बाबा 5/8.02.09 रिवा.

''जिसने जितना पढ़ा है, वे उतना ही पढ़ा सकते हैं। सबको टीचर भी जरूर बनना है। ... तुम मुरलीधर बाप के बच्चे हो तो तुमको मुरलीधर जरूर बनना है। जब औरों का कल्याण करेंगे, तब तो नई दुनिया में ऊंच पद पायेंगे।'' सा.बाबा 23.12.09 रिवा.

''जितना जो पुरुषार्थ करते हैं, उनकी चलन से साक्षात्कार होता रहता है। ... तुम्हारा फर्ज़ है

सबको बाप का परिचय देना। अभी सभी निधन के बन गये हैं। ये बातें भी कल्प पहले वाले कोटों में कोई ही समझेंगे। ... योग में रहने वालों को बाबा मदद भी देते हैं, आपही ऑख खुल जायेगी।''
सा.बाबा 22.12.09 रिवा.

''यह पढ़ाई है। पढ़ाई में पेपर भी होते हैं और कोई बड़ा जाँच भी करता है। यहाँ तुम्हारे पेपर्स की कौन जाँच करेगा ? तुम खुद ही अपने पेपर की जाँच करेंगे। खुद पढ़कर जो चाहिए सो बनो। जितना बाप को याद करेंगे, दूसरों की सर्विस करेंगे, उतना ही फल मिलेगा। ऊंच पद पाने वालों को सदा सर्विस की फिक्र रहेगी कि राजधानी स्थापन हो रही है तो प्रजा भी तो चाहिए ना।''
सा.बाबा 8.12.09 रिवा.

''हर एक को अपने दीपक की आपही सम्भाल करनी है। अन्त तक पुरुषार्थ चलना ही है। ... रोज़ दीपक में योग और ज्ञान का घृत डालना पड़ता है। योगबल की ताक़त नहीं है तो दौड़ नहीं सकते हैं। ... स्थूल सेवा की सब्जेक्ट भी बहुत अच्छी है, बहुतों की आशीर्वाद मिलती है। कोई बच्चे ज्ञान की सर्विस करते हैं। दिन प्रतिदिन सर्विस की वृद्धि होती जायेगी।''
सा.बाबा 9.12.09 रिवा.

''अन्त में सबको पता चलेगा कि हमारा ज्ञान सागर बाबा आया हुआ है, वह अविनाशी ज्ञान रतनों से झोली भरते हैं। फिर बहुत बच्चे आयेंगे। रात को भी फुर्सत नहीं मिलेगी। तुम ज्ञान और योग की सर्विस करते हो। जो ज्ञान-योग की सर्विस नहीं कर सकते हैं तो फिर कर्मणा सर्विस की भी मार्क्स है। सभी की आशीर्वाद मिलेगी।''
सा.बाबा 9.12.09 रिवा.

''तुम अखबार में लिख सकते हो - जो आकर रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देवे, उनके लिए हम आने-जाने का प्रबन्ध करेंगे, अगर रचता और रचना का सही परिचय दिया तो। ... ऐसी एडवारटाइज़ और कोई कर न सके। ... तुम्हारी बुद्धि में ये सब बातें आनी चाहिए। ऐसी-ऐसी तुम चेलेन्ज दो। जो इन बातों को अच्छी रीति समझते हैं, वे ही ऐसी चेलेन्ज देंगे।''
सा.बाबा 21.11.09 रिवा.

''पहली बार आये हैं ... फिर भी समाप्ति के पहले पहुँच गये, नया जन्म ले लिया, उसकी मुबारक हो। ... अभी बहुत समय बीत गया, बहुत थोड़ा रहा है, इसलिए पुरुषार्थ तीव्र करना है। तीव्र पुरुषार्थी आगे बढ़ेंगे। चलना नहीं लेकिन उड़ना है। ... उड़ती कला का पुरुषार्थ करेंगे तो देर से आते हुए भी बाप के वर्से का अपना पुरा हक़ ले सकते हो। हर सेकेण्ड खुश रहना और सभी को पैग़ाम देना, सन्देश देना।''
अ.बापदादा 15.11.09

''तुम बच्चे सर्विस का अच्छी रीति शौक रखो तो बाप की भी याद रहे। योग में पूरा रहकर किसको कुछ भी कहेंगे तो उसको कोई विचार नहीं आयेगा। योग वाले का तीर पूरा लगेगा।

... पहले अपने अन्दर देखो कि हमारे में कोई माया का भूत तो नहीं है। माया के भूत वाले थोड़ेही सर्विस में सक्सेस हो सकते हैं।''

सा.बाबा 14.11.09 रिवा.

''अभी तुम बच्चों की इस छी-छी दुनिया से दिल हट जानी चाहिए, गुल-गुल बनना चाहिए। ... इस काम विकार को जीतने से ही तुम विश्व का मालिक बनेंगे। ... अभी तुम्हारी बुद्धि में अच्छी रीति है कि पैराडाइज़ कैसे स्थापन होता है। तो अब तुमको यही लात और तात लगी रहनी चाहिए कि किसको कैसे बाप का परिचय दें, और सब बातें भूल जानी चाहिए।''

सा.बाबा 6.11.09 रिवा.

''बच्चों को ये सब बातें भूलनी नहीं चाहिए, परन्तु बच्चे भूल जाते हैं क्योंकि नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही राजधानी में पद पायेंगे। हर एक के पुरुषार्थ से पता पड़ जाता है कि यह क्या पद पाने वाला है। ... सारा मदार सर्विस पर है। बाप भी आकर सर्विस करते हैं।''

सा.बाबा 22.10.09 रिवा.

''बाप रोज़-रोज़ समझाते रहते हैं नशा चढ़ाने के लिए। परन्तु समझते सब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही हैं। जो समझते हैं, वे सर्विस में लगे रहते हैं। जो सर्विस में लगे रहते हैं, वे ताज़े रहते हैं। ... अभी तुम समझते हो कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है।''

सा.बाबा 19.10.09 रिवा.

''जितना नॉलेजफुल, उतना ही पॉवरफुल और सक्सेसफुल होना चाहिए। नॉलेजफुल की निशानी है कि उनका एक-एक शब्द पॉवरफुल होगा और हर कर्म सक्सेसफुल होगा। ... तपस्या क्या करनी है, सेवा कहाँ तक करनी है, इनकी महीनता का अनुभव करना है। ... पुरुषार्थ में फलीभूत वही हो सकता है, जिसमें ज्ञान और धारणा के फल लगे हुए हों।''

अ.बापदादा 19.04.71

''आजकल के अधूरी नॉलेज प्राप्त करने वालों को भी अल्पकाल के लिए सफलता की प्राप्ति का अनुभव होता है तो सम्पूर्ण श्रेष्ठ नॉलेज से प्रत्यक्ष प्राप्ति का अनुभव भी अभी ही करना है। ऐसे नहीं समझना कि इस नॉलेज की प्राप्ति भविष्य में होनी है। नहीं, वर्तमान समय में ही नॉलेज से प्राप्ति का अनुभव अपने पुरुषार्थ की सफलता और सेवा में सफलता से होता है। उस सफलता के आधार पर अपनी नॉलेज की धारणा को जान सकते हो।''

अ.बापदादा 19.04.71

''आप लोगों द्वारा अपने भक्तों में भी भक्ति के अर्थात् भावना के संस्कार अभी ही भरने हैं। यह बहुत ऊंचे हैं, सिर्फ इस भावना के संस्कार भरने से भक्त बन जायेंगे।... जैसे-जैसे आपकी स्थिति प्रत्यक्ष होती जायेगी, वैसे-वैसे आपके वारिस अर्थात् रॉयल फेमिली, प्रजा और

भक्त तीनों ही प्रत्यक्ष होते जायेंगे। ... अपनी तीनों कालों की प्रालब्ध को अभी ही स्पष्ट देख सकेंगे। दिव्य दृष्टि से नहीं लेकिन प्रत्यक्ष साक्षात्कार करेंगे।''

अ.बापदादा 18.04.71

''जो अपने मित्र-सम्बन्धियों को ही याद करते रहते हैं, वे इतना खुशी में नहीं रह सकते हैं, वे ऊंच पद भी नहीं पा सकते। ... जो अच्छे पुरुषार्थी हैं, उनके अन्दर इतनी खुशी रहती है, जो बात मत पूछो। खुशी है तो औरों को भी खुश करने का पुरुषार्थ करते हैं।''

सा.बाबा 24.09.09 रिवा.

''बाप आकर तुम्हारी बुद्धि का ताला खोलते हैं। जिनका ताला खुलता जाता है, वे जाकर सर्विस करते हैं, औरों का भी ताला खोलते हैं। बाप कहते हैं - जाकर सर्विस करो, जो गटर में पड़े हैं, उनको निकालो। ... तुम नम्बरवर पुरुषार्थ अनुसार अपना भी कल्याण करते हो और दूसरों का भी कल्याण करते रहते हो।'' सा.बाबा 12.09.09 रिवा.

''भाषण द्वारा भाषा से भी परे स्थिति में ले जाने का अनुभव कराओ। अभी भाषण की तैयारी ज्यादा करते हो लेकिन रुहानी आकर्षण स्वरूप की स्मृति में रहने की तैयारी पर अटेन्शन कम देते हो। ... हर एक के दिल पर बाप के सम्बन्ध के स्नेह की छाप लगाना है।''

अ.बापदादा 11.02.71

''स्पीच के साथ-साथ अगर पुरुषार्थ की स्पीड भी है तो ऐसे स्पीच करने वाले के प्रभाव से विश्व का कल्याण हो सकता है। ... स्पीच के साथ जिनकी स्पीड पॉवरफुल है, उनको कहते हैं 'विश्व कल्याणकारी, मास्टर दुखहर्ता, सुखकर्ता'।'' अ.बापदादा 11.02.71 टीचर्स

''बेहद का बाप ही यह बेहद की पढ़ाई पढ़ाते हैं। अब जो जैसा पढ़ेगा, ऐसा पद पायेगा। बाप तो पुरुषार्थ कराते हैं। ... टीचर स्टूडेण्ट्स को समझाते हैं - जब दूसरों को आप समान बनायेंगे, तब मालूम पड़ेगा कि ये अच्छी रीति पढ़ते और पढ़ाते हैं।''

सा.बाबा 13.08.09 रिवा.

''जो स्वयं सरल पुरुषार्थी होता है, वह औरों को भी सरल पुरुषार्थी बना देता है। ... सर्व बातों में सेम्पुल बनने से पास विद् ऑनर बन सकते हैं। ... आलराउण्डर बनना दूसरी बात है, यह हुई कमाई परन्तु आलराउण्ड एग्जॉम्पुल बनना दूसरी बात है। हर बात में सेम्पुल बनकर औरों के आगे दिखाना।'' अ.बापदादा 19.07.09 रिवा.

''ज्ञान का सागर एक परमात्मा ही है। तुम अपने को ज्ञान सागर नहीं कहेंगे। .. अविनाशी ज्ञान रतनों का धन तो बच्चों को देना ही है। बच्चे नम्बरवार पुरुषार्थ उठाने वाले हैं। जो जास्ती उठाते हैं, वे ही अच्छी सव्रिस कर सकते हैं।'' सा.बाबा 16.07.09 रिवा.

''एक सेकेण्ड में आकारी और एक सेकेण्ड में साकारी बन सकते हो ? यह भी आवश्यक सर्विस है। जैसे सर्विस के और अनेक साधन हैं, वैसे यह प्रैक्टिस भी अनेक आत्माओं के कल्याण के लिए एक साधन है। इस सर्विस से कोई भी आत्मा को सहज आकर्षित कर सकते हो।'' अ.बापदादा 27.07.70

''सब तरफ बुद्धि को हटाकर अन्तर्मुखी होकर मेरे को याद करने का पुरुषार्थ करो। ... सर्विस से सबका पुरुषार्थ का मालूम पड़ जाता है। सर्विस करने वालों को सर्विस की खुशी रहती है। जो अच्छी सर्विस करते हैं, उनकी सर्विस का सबूत भी मिलता है।''

सा.बाबा 10.04.09 रिवा.

''स्व-पुरुषार्थ, ... सन्तुष्टता ... तीसरा सेवा से भी खज़ाना जमा करते हो। क्योंकि सेवा से सर्व आत्माओं को खुशी की प्राप्ति होती है, तो खुशी का खजाना भी प्राप्त कर सकते हो। अपना पुरुषार्थ, सर्व को सन्तुष्ट करने का पुरुषार्थ और सेवा का पुरुषार्थ इन तीनों प्रकार से खज़ाने जमा कर सकते हो।'' अ.बापदादा 24.03.09

''जिन्होंने कल्प पहले बाप को जाना है, वे ही अभी जानते हैं, वे ही अब पुरुषार्थ कर रहे हैं। यह पुरुषार्थ भी बाप के बिना कोई करा नहीं सकता।... इन बातों को मानेंगे भी वे ही, जिन्होंने कल्प पहले माना होगा। तुम्हारा फर्ज है जो भी आये, उनको बाप का फरमान बताना।''

सा.बाबा 10.02.09 रिवा.

''स्व पुरुषार्थ और सेवा का पुरुषार्थ और तीव्र गति से लाओ।... जैसे आपने बाप का प्यार अनुभव किया, ऐसे अन्य आत्माओं को भी बाप के प्यार का अनुभव कराओ। कोई वंचित न रह जाये क्योंकि आप विश्व-कल्याणी हो। ... हर एक अपना फर्ज समझे कि जैसे हम तृप्त हुऐ हैं ऐसे अन्य आत्माओं को भी तृप्त बनायें।'' अ.बापदादा 15.11.08

''अपनी आत्मा की लाइट की परख से एक तो अपने पुरुषार्थ का मार्ग स्पष्ट होगा अर्थात् लाइन क्लियर देखने में आयेगी, दूसरी बात अपना भविष्य स्टेटस भी स्पष्ट देखने में आयेगा। तीसरी बात जिन्होंकी सर्विस करते हो तो जितनी खुद की रोशनी पॉवरफुल होगी, उतना ही उन्होंको इतना ही सहज और स्पष्ट मार्ग दिखा सकेंगे और वे भी सहज ही अपने पुरुषार्थ में चल पड़ेंगे।'' अ.बापदादा 2.2.70

''अपने पुरुषार्थ और अपनी सर्विस से अपनी आत्मा की लाइट की परसेन्टेज देख सकते हो कि जिन्हों की सर्विस करते हो, उनको मार्ग स्पष्ट होता है ? अगर मार्ग स्पष्ट नहीं होता है तो अपनी लाइट की परसेन्टेज की कमी है।'' अ.बापदादा 2.2.70

''जब निशाना ठीक होता है तो एक धक से किसको भी मरजीवा बना सकते हो। ... अगर

अपनी स्थिति का निशाना और दूसरे की सर्विस करने का निशाना ठीक होगा और साथ-साथ नशा भी सदैव एकरस होगा तो सर्विस में सफलता ज्यादा पा सकते हो।''

अ.बापदादा 2.2.70

''सर्विस में सफलता पाने के लिए विशेष दो बातें ध्यान में रखनी हैं - एक है नशा और दूसरा है निशाना। ...जिसमें जितना खुद नशा होगा, उतना ही निशाना ठीक लगा सकेंगे।''

अ.बापदादा 2.2.70

''वारिस समझते हैं, वर्सा लेने वाले हैं, तो वर्सा लेने वालों को दूसरों को वर्सा दिलाने के लिए रहम आना चाहिए ना। रहम क्यों नहीं आता है? बेहद का वैराग्य और रहम आना चाहिए। ... अभी हे बापदादा के सिकीलधे पदम-पदम वरदानों के वरदानी बच्चे! अभी संकल्प को दृढ़ करो ... अपना कृपालु-दयालु, दुख हर्ता, सुख दाता स्वरूप इमर्ज करो।''

अ.बापदादा 15.03.10

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और संगमयुग

यथार्थ पुरुषार्थ का समय कल्प का संगमयुग ही है, जिसको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है क्योंकि इस कल्प के संगमयुग पर ही आत्मायें पुरुषार्थ करके पुरुषोत्तम बनती हैं। इस कल्प के संगमयुग पर ही ज्ञान सागर परमात्मा इस धरा पर आते हैं और आत्माओं को सत्य ज्ञान देते हैं और आत्म-कल्याण के योग सिखाते हैं। बाबा ने ये भी बताया है कि बाबा तुमको ज्ञान-योग के द्वारा 21 जन्म का वर्सा देता है अर्थात् जो उनकी श्रीमत पर पुरुषार्थ करते हैं, उससे उनको 21 जन्म के लिए श्रेष्ठ प्रालब्ध ईश्वरीय वर्से के रूप में मिलती है। जिसमें बाबा बताया है कि 8 जन्म सतयुग मे और 12 जन्म त्रेता में होते हैं तथा एक जन्म संगमयुग पर होता है। इसलिए ये संगमयुग का एक जन्म भी हमारा प्रालब्ध का ही जन्म है अर्थात् इसमें भी हमको परमात्मा का वर्सा मिलता है। वास्तव में परमात्मा पिता का सच्चा वर्सा हमको संगमयुग पर ही मिलता है क्योंकि संगमयुग के वर्से पर ही सतयुग-त्रेता का वर्सा आधारित है या ऐसा कहें कि सतयुग-त्रेता का वर्सा संगमयुग के वर्से की परछाई है। बाबा ने भी कहा है कि जब बाप संगमयुग पर मिला है तो वर्सा भी तो संगमयुग पर ही देगा। संगमयुग पर ही परमात्मा पिता से ज्ञान-गुण-शक्तियों का वर्सा मिलता है और जो आत्मायें उस वर्से को पाकर यथार्थ रीति पुरुषार्थ करते हैं, वे उसकी प्रालब्ध आनन्द या अतीन्द्रिय सुख को प्रालब्ध के रूप में अनुभव करते हैं।

संगमयुग पर भले हम पुरुषार्थ करते हैं परन्तु अभी का पुरुषार्थ भी प्रालब्ध के समान

या उससे भी श्रेष्ठ सुख देने वाला है, इसलिए अभी जो सुख आत्मा को मिलता है, वह अतीन्द्रिय सुख अर्थात् आनन्द कहलाता है। सारे कल्प में आत्मा को स्थूल सुख के अनेकानेक साधन-सम्पत्ति मिलेगी परन्तु उससे आनन्द की अनुभूति नहीं होगी। अभी हमको सारे कल्प का ज्ञान है, आत्मा-परमात्मा का ज्ञान है और परमात्मा का साथ है, इसलिए उससे जो सुख प्राप्त होता है, वह अद्वितीय है। इसीलिए कहा गया है कि संगमयुग पर पुरुषार्थ भी प्रालब्ध है।

''अगर वैल्यू है, महिमा है तो इन देवी-देवताआओं की। अभी तुम यह बनने का पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम्हारी महिमा वास्तव में इन देवताओं से भी जास्ती है। तुमको अभी बाप पढ़ा रहे हैं। कितनी ऊंच पढ़ाई है। ... भगवान पढ़ाकर कितना ऊंच बनाते हैं। बाप खुद कहते हैं - मैं बहुत जन्मों के अन्त में तुम सबको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने आता हूँ।''

सा.बाबा 13.12.09 रिवा.

''यूँ तो तुम्हारे कदम-कदम में पदम हैं परन्तु हर कदम से पदम कैसे होंगे ? देवताओं को ही पदम की निशानी देते हैं। ... भल देवताओं की महिमा की जाती है, फिर भी ऊंच ते ऊंच है एक बाप। बाकी उनकी बड़ाई क्या है। आज राजाई है, कल गधाई होगी। अभी तुम पुरुषार्थ कर यह लक्ष्मी-नारायण बन रहे हो।''

सा.बाबा 8.12.09 रिवा.

''भक्ति आधा कल्प चलती है। ज्ञान आधा कल्प नहीं चलता है, ज्ञान का जो वर्सा मिलता है, वह आधा कल्प चलता है। ज्ञान तो एक ही बार इस संगमयुग पर मिलता है। ... ये सब बातें अच्छी रीति समझकर फिर औरों को भी समझाना हैं। पद का सारा मदार है सर्विस पर। तुम जानते हो अभी हमको पुरुषार्थ कर नई दुनिया में जाना है और धारणा कर दूसरों को भी समझाना है।''

सा.बाबा 4.12.09 रिवा.

''अपने भविष्य के तख्त का भी यहाँ ही अभ्यास कर रहे हो। भविष्य की तैयारी वा पुरुषार्थ अभी ही कर रहे हो। अब का पुरुषार्थ अनेक जन्म का राज्य-भाग्य दिलाने वाला है। इस समय ही अपने राज्य-भाग्य के संस्कार धारण कर रहे हो क्योंकि अब का पुरुषार्थ भविष्य के राज्य का अधिकारी बनाता है।''

अ.बापदादा 15.11.09

''चेक करो कि इस समय अपना पुरुषार्थ यथार्थ है ? जैसे भविष्य में एक राज्य होगा तो अभी चेक करो कि ... एक राज्य के बजाये माया का प्रभाव तो नहीं पड़ता है ? दो राज्य तो नहीं होते हैं ? ... अभी का अभ्यास ही भविष्य में चलता है।''

अ.बापदादा 15.11.09

''एक बार जो कुछ होता है, फिर कल्प बाद वही रिपीट होगा। कितनी अच्छी समझानी है, इसमें बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। ये बातें तुम अभी संगमयुग पर ही सुनते हो। ... तुम जानते

हो - यह हमारा बाप भी है और बच्चा भी है। हम सबकुछ इस बच्चे को वर्से में देकर, बाप से 21 जन्मों के लिए वर्सा लेते हैं।''

सा.बाबा 11.11.09 रिवा.

''अभी के पुरुषार्थ से 21 जन्मों के लिए तुम्हारी आत्मा में घृत पड़ जाता है। फिर आहिस्ते-आहिस्ते कम होते-होते इस समय ज्योति बिल्कुल उझाई है। सारी दुनिया की ज्योति उझाई है परन्तु उसमें खास भारत और आम सारी दुनिया।''

सा.बाबा 24.09.09 रिवा.

''इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही तुम ये सब बातें सुनते हो।... अभी संगमयुग पर आने से तुम अमरलोक में जाने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो।... इस पढ़ाई से तुम बहुत ऊंच पद पाते हो। अभी तुम रोशनी में हो। यह भी सिवाए तुम बच्चों के और कोई को मालूम नहीं है।''

सा.बाबा 3.09.09 रिवा.

''बाप आते ही हैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर। तो समझाने की कितनी मेहनत करनी पड़ती है। ... सभी आत्माओं को एक परमपिता परमात्मा से वर्सा मिलता है। मनुष्य, मनुष्य को जीवनमुक्ति दे न सके। तुम बच्चे यह वर्सा पाने का पुरुषार्थ अभी कर रहे हो।''

सा.बाबा 13.08.09 रिवा.

''खज़ाने जमा करने की बैंक सिर्फ इस समय संगमयुग में है, फिर सारा कल्प जमा करने की बैंक नहीं मिलेगी। जो अब जमा किया, वह काम में लगता रहेगा।... सभी को सन्देश में सुनाते हो 'अब नहीं तो कब नहीं... यह आप को भी याद रहता है क्योंकि संगमयुग का यह जन्म सबसे है छोटा लेकिन अमूल्य जन्म है।''

अ.बापदादा 22.2.09

''सारा दिन बच्चों के अन्दर में विचार चलने चाहिए। जितना याद में रहेंगे, उतना खुशी होगी। ... अभी तुम संगम पर हो, उत्तम पुरुष बनने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। पुरुषार्थ बहुत अच्छी रीति करना है। पढ़ाई से कब रूठना नहीं है। ... बाप संगमयुग पर ही राजयोग सिखाते हैं। तुम कल्प-कल्प यह बनते हो।''

सा.बाबा 15.01.09 रिवा.

ड्रामा को भी तुम बच्चे जानते हो कि इस ड्रामा में भी संगमयुग पर पुरुषार्थ कम और प्राप्ति ज्यादा का राज़ रखा हुआ है।... इस भाग्यशाली ब्राह्मण जन्म का कितना महत्व है, इस महत्व को सदा स्मृति में रखो तो पुरुषार्थ में सदा सहज सफलतामूर्त बन ही जायेंगे।

सन्देश 14.10.08

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और निश्चय एवं निश्चिन्त स्थिति

Q. पुरुषार्थ में निश्चय की क्या भूमिका है ?

''पहले-पहले तो यह निश्चय पक्का रहना चाहिए कि यह हमारा बेहद का बाप है, उनसे वर्सा लेना है। निश्चय बिगर पुरुषार्थ भी कैसे करेंगे।'' सा.बाबा 17.10.08 रिवा.

पुरुषार्थ और निश्चय का बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है। जैसा निश्चय होता है, उस अनुसार आत्मा के द्वारा कर्म स्वत: ही होते हैं। ज्ञान मार्ग में यथार्थ रीति सफल पुरुषार्थ के लिए क्या-क्या निश्चय आवश्यक है, उसके सम्बन्ध में भी बाबा ने बताया है। अभी बाबा ने हमको आत्मा-परमात्मा के ज्ञान साथ इस विश्व-नाटक का भी विस्तार से ज्ञान दिया है। वास्तविकता को देखा जाये तो बाबा ने हमको जो भी ज्ञान दिया है, वह सब आवश्यक है और जो उन सब बातों को समझता है और उस पर निश्चय करता है, उसका ही सही रीति पुरुषार्थ चलता है। बाबा ने आत्मा, परमात्मा, ड्रामा, कल्प-वृक्ष, कर्म-सिद्धान्त, पवित्रता, योग आदि आदि का जो ज्ञान दिया है, उनके गुण-धर्म और उसके विषय में विधि-विधान बताये हैं, उन सबका ज्ञान बुद्धि में होगा, उनका अनुभव और उन पर निश्चय होगा, तब ही हमारा पुरुषार्थ यथार्थ होगा और जब पुरुषार्थ यथार्थ होता उससे हमको श्रेष्ठ प्रालब्ध की प्राप्ति अवश्य होगी। इसलिए श्रेष्ठ सतोप्रधान प्रालब्ध के लिए श्रेष्ठ सतोप्रधान पुरुषार्थ आवश्यक है और श्रेष्ठ सतोप्रधान पुरुषार्थ के लिए बाबा ने जिन-जिन तथ्यों का ज्ञान दिया है, उनको विस्तार से अध्ययन करना, उनको अनुभव करने का पुरुषार्थ भी करना ही होगा। इसलिए बाबा ने अनेक मुरलियों में कहा है तुम बच्चों को सब बातों के अनुभव की अथॉरिटी होना चाहिए क्योंकि तुम ज्ञान सागर बाप के डायरेक्ट बच्चे हो और इस कल्प-वृक्ष की जड़ें और तना हो। तुम्हारे ऊपर इस कल्प-वृक्ष का सारा दारोमदार है। जब अपने को पूरा निश्चय होगा, तब ही हम दूसरों को भी सही रीति समझा सकेंगे और उनको भी अनुभव करा सकेंगे। बाबा ने ये भी कहा है कि किसी को ज्ञान बड़े निश्चय, नशे और प्यार से समझाना है। जब सब बातों का निश्चय होगा तो निश्चय वाले को नशा भी होगा और जब निश्चय और नशा होगा तो उसका पुरुषार्थ भी अवश्य ही श्रेष्ठ सतोप्रधान होगा।

''बाप स्वर्ग का रचयिता है, वे हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। जिनको निश्चय नहीं होता है तो समझा जाता है कि उनकी तकदीर में नहीं है। ... तकदीर में नहीं है तो तदबीर भी कैसे कर सके ? ... प्योरिटी थी तो भारत का सितारा चमकता था, अभी तो घोर अन्धियारा है।''

सा.बाबा 28.12.09 रिवा.

''बाप के संग से और ड्रामा का राज़ समझने से फिक्र कम होती जाती है। यह तो ड्रामा बना हुआ है। ... रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को कोई भी नहीं जानते हैं। तुम जानते हो, सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार।'' सा.बाबा 12.05.09 रिवा.

सदा बुद्धि में रहे कि अभी हमको बाप को याद करना है। कल के कर्म का, सेकेण्ड पहले का चिन्तन नहीं और कल की चिन्ता नहीं।... अभी तो बाप को याद करूँ। यह चिन्तन और चिन्ता बाप को याद करने नहीं देगी। दादी जानकी 13.3.09

''जो ड्रामा में नूँध है, वही होता है। बाप भी कुछ नहीं कर सकता। इसको कहा जाता है - ड्रामा की भावी। ... बाप तुमको बेफिकर बनाते हैं। सेकण्ड बाई सेकण्ड जो कुछ होता है, ड्रामा ही समझो। ... भल अभी थोड़ी कच्ची अवस्था है, इसलिए कुछ विचार आ जाता है। ... हर एक को अपना पार्ट बजाना है, फिकर की बात नहीं।''

सा.बाबा 3.03.09 रिवा.

''निश्चय से विजय है और हमारी विजय निश्चित है। जिसको ये निश्चय है, उसकी सदा ही विजय होती है। दोनों चाहिए। ... बाप में निश्चय के साथ-साथ अपने में भी निश्चय होगा, उसकी विजय हुई ही पड़ी है। ... जो समझाने पर भी नहीं समझता है तो बाबा समझ जाता है, इसका ड्रामा में पार्ट नहीं है, पीछे आने वाला है परन्तु बाबा पुरुषार्थ कराने के लिए समझाता जरूर है।'' दादी जानकी 16.2.09

''बाप में निश्चय है लेकिन अपने में भी निश्चयबुद्धि होकर कार्य करो तो फिर विजय ही विजय है। ... विजय के आगे समस्या, समस्या नहीं लगेगी, खेल लगेगी। खेल खुशी से किया जाता है।'' अ.बापदादा 18.6.70

''तुम ऊंच ते ऊंच भगवान की सन्तान हो। दिन प्रतिदिन तुम सॉलवेन्ट होते जाते हो। धन मिलता है ना। खर्चा भी आता जाता है। बाबा कहते हैं हुण्डी भरती जायेगी। कल्प पहले मिसल ही तुम खर्चा करेंगे। कम-ज्यादा ड्रामा करने नहीं देगा। ड्रामा पर अटल निश्चय है। जो पास्ट हुआ सो ड्रामा। ऐसे नहीं कहना चाहिए कि ऐसा होता, यह नहीं करते ... बाबा कहते हैं बीती को चितवो नहीं, आगे लिए पुरुषार्थ करो कि ऐसी भूल फिर न हो।''

सा.बाबा 8.01.09 रिवा.

''जैसे अपने राज्य में लॉ एण्ड ऑर्डर स्वत: ही चलता है। ... बाप के ऑर्डर में चलते हो या कभी माया का भी ऑर्डर चल जाता है ... और लॉ क्या है ? लॉ है बेफिकर बादशाह। कोई फिकर नहीं क्योंकि सर्व प्राप्तियाँ। तो चेक करो - संगम के श्रेष्ठ जन्म में भी सर्व प्राप्तियाँ है, जो बाप ने दी हैं।'' अ.बापदादा 15.12.08

''तुम निश्चय करो - हम बाबा से वर्सा ले रहे हैं, फिर भविष्य में जाकर प्रिन्स-प्रिन्सेज बनेंगे। ... तुम अभी राजाई प्राप्त करने वा भारत का फिर से राज्य-भाग्य लेने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम अपने तन-मन-धन से सेवा करके भारत में स्वर्ग की राजाई स्थापन करते हो।''

सा.बाबा 30.10.08 रिवा.

''अभी से अपने को बाप का बच्चा समझ अपने को एक सेकेण्ड भी बाप से अलग न समझो। सदैव समझो बाप का साथ भी है और बाप के हाथ में मेरा हाथ भी है। अगर किसी बड़े के हाथ में हाथ होता है तो छोटे की स्थिति बेफिक्र और निश्चिन्त रहती है। ... सदैव समझो हमारे इस अलौकिक जीवन का हाथ बाप के हाथ में है।'' अ.बापदादा 4.07.71

''तुम ब्राह्मण जब पक्के निश्चयबुद्धि होंगे, झाड़ जल्दी-जल्दी वृद्धि को पाता रहेगा। माया के तूफान भी पिछाड़ी तक चलेंगे। विजय पा ली, फिर न पुरुषार्थ रहेगा और न माया रहेगी। ... यह राजधानी स्थापन हो रही है। बच्चों को निश्चय है कि हमारी राजाई होगी।''

सा.बाबा 20.01.10 रिवा.

''तुम बच्चे बाप के पास आये हो रिफ्रेश होने के लिए। फिर तुमको जाकर सबको ये समझाना है, रिफ्रेश करना है। ... इस ज्ञान से एक सेकेण्ड में हेल्थ, वेल्थ, हैपीनेस मिल जाती है। बच्चा जन्मा और वारिस हुआ। तुमको भी निश्चय हुआ और विश्व के मालिक बन गये। फिर ऊंच पद पाने का मदार है, पुरुषार्थ पर।'' सा.बाबा 25.01.10 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और कर्मभोग, कर्म-बन्धन, कर्म-सम्बन्ध, हिसाब-किताब

अभी कल्प का संगमयुग है, आत्माओं को पावन कर्मातीत बनकर वापस घर जाना है, इसलिए आधे कल्प के सारे कर्मों के हिसाब-किताब चुक्तू करना होंगे। ये कर्मों के हिसाब-किताबों के फलस्वरूप ही आत्मा को कर्मभोग, कर्म-बन्धन आदि आते हैं। कर्मभोग-कर्मबन्धनों से मुक्त होने, आधे कल्प के विकारी हिसाब-किताब चुक्तू करने के लिए भी पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है और भविष्य के लिए सुखदायी कर्म-सम्बन्ध बनाने के लिए भी अभी संगमयुग पर आत्मा को पुरुषार्थ करना होता है। जो बाबा के बताये हुए महावाक्यों के आधार पर सही पुरुषार्थ करता है, वह सहज ही कर्मभोग पर कर्मयोग के द्वारा विजय प्राप्त कर लेता है। सही ज्ञान होने से सही पुरुषार्थ द्वारा सही दृष्टिकोण अपनाकर कर्म-बन्धन होते भी सुख का अनुभव करता है और कर्म-बन्धनों को भी कर्म-सम्बन्ध में परिवर्तन कर लेता है। अनेक

प्रकार की आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब भी सही पुरुषार्थ के द्वारा सहज चुक्ता हो जाते हैं। अभी संगमयुग पर ही श्रेष्ठ सतोप्रधान पुरुषार्थी भविष्य आधे कल्प के लिए श्रेष्ठ सम्बन्धों का, श्रेष्ठ प्रालब्ध का भी अपने श्रेष्ठ पुरुषार्थ द्वारा निर्माण करता है। इस सम्बन्ध में बाबा ने हमको अनेक प्रकार की शिक्षायें दी हैं और विधि-विधान बताये हैं।

कोई भी कर्मभोग आत्मा को अपने भूतकाल में किये गये कर्मों के फलस्वरूप ही होता है अर्थात् कर्मभोग भी एक प्रकार से प्रालब्ध ही है परन्तु वह दुखदायी प्रालब्ध है, इसलिए उसको कर्मभोग कहा जाता है। कम्रभोग से मुक्त होने के लिए वर्तमान में श्रेष्ठ पुरुषार्थ करने की आवश्यकता है अर्थात् वर्तमान में यथार्थ रीति पुरुषार्थ करने से ही भूतकाल के कर्मभोग पर विजय पायी जा सकती है।

''कभी भी ऐसा नहीं सोचो कि फलाना ऐसे कहता है, तब ऐसा होता है लेकिन 'जो करता है, सो पाता है' - यह सामने रखो। दूसरे की कमाई का आधार नहीं लेना है और न दूसरे की कमाई में ऑख जानी चाहिए। जिस कारण ही ईर्ष्या होती है। ... स्लोगन याद रखो कि 'अपनी घोट तो नशा चढ़े।''

अ.बापदादा 23.10.70

''सदैव बापदादा के गुण और कर्तव्य को निशाना बनाओ। सदैव बापदादा के कर्तव्य की स्मृति रखो कि बापदादा के साथ मैं भी अधर्म के विनाश और सत् धर्म की स्थापना के कर्तव्य अर्थ निमित्त बनी हुई हूँ। जो अधर्म के विनाश अर्थ निमित्त हैं, वे स्वयं फिर अधर्म का कार्य वा देवी मर्यादा को तोड़ने का कर्तव्य कैसे कर सकते हैं!''

अ.बापदादा 23.10.70

''अब बच्चों को ज्ञान समझना और समझाना सहज हैं। दूसरों को सुनायेंगे तो खुशी होगी और पद भी ऊंच पायेंगे। ... आत्मा निर्लेप नहीं है, अच्छे या बुरे संस्कार आत्मा में ही रहते हैं, तब ही कर्मों का भोग होता है। ... तुम बच्चों को रहमदिल, कल्याणकारी बनना है।''

सा.बाबा 5.03.09 रिवा.

''बाबा अपना भी बताते हैं कि मैं भी भूल जाता हूँ। कोशिश करता हूँ, बाबा को कहता हूँ कि बाबा मैं पूरा समय याद में रहूँगा, आप हमारी खाँसी बन्द कर दो, सुगर कम कर दो ... परन्तु मैं खुद ही भूल जाता हूँ, तो खाँसी कैसे कम होगी। जो बातें बाबा के साथ करता हूँ, वे सच सुनाता हूँ। बाबा बच्चों को बता देते हैं, बच्चे बाप को सच नहीं सुनाते हैं। लज्जा आती है।''

सा.बाबा 1.07.09 रिवा.

''बापदादा सब जानते हैं। इशारे से समझ लें... पाप कर रहे हैं तो क्या होगा... अगर जन्तर-मन्त्र किया तो क्या होगा। अच्छे भी हैं।... आपकी इतनी ताक़त होनी चाहिए जो

जन्तर-मन्त्र शिव-मन्त्र में बदली हो जाये। ... ये सब होगा लेकिन आप अपने को बचाकर रखो। अगर थोड़ी कमजोरी होगी तो असर हो जायेगा। आप अपना बचाव करो।''

अ.बापदादा 22.04.09

''जो अभी ईश्वर अर्थ करते हैं, वे जाकर नई दुनिया में पद्मापदमपति बनते हैं। ..हम इस पुरानी छी-छी दुनिया से जाने के लिए तैयारी कर रहे हैं। अपने को ऐसा तैयार करना चाहिए, जो पिछाड़ी के समय कोई भी याद न आये।''

सा.बाबा 10.02.09 रिवा.

''भगवान से पवित्र बनने की प्रतिज्ञा कर फिर तोड़ते हो तो तुम्हारा क्या हाल होगा। ... देहाभिमान में आने से ही वृत्ति खराब होती है, इसलिए बाप कहते हैं - देही-अभमानी भव। ... यह बेहद का ड्रामा है। बनी-बनाई बन रही ... होना ही है, फिर हम चिन्ता क्यों करें ?।''

सा.बाबा 10.02.09 रिवा.

''बाप का बनकर अगर बाप को याद नहीं करेंगे, तो पाप होते रहेंगे और उन पापों का सौगुणा दण्ड बन जायेगा क्योंकि पापात्मा का बनकर तुम मेरी निन्दा कराते हो। ... तुम मुझे याद करो, सृष्टि-चक्र को फिराओ, अभी कोई विकर्म न करो और इन देवताओं जैसे गुण धारण करो।''

सा.बाबा 9.02.09 रिवा.

''माया के बहुत तूफान आते हैं, विकल्प आते हैं। न समझने के कारण लिखते हैं - बाबा, इसमें पाप तो नहीं लगता है ? ऐसे-ऐसे संकल्प-विकल्प आते हैं। देखने से ख्याल आता है - यह करें। इसमें पाप तो नहीं लगता ? बाप कहते हैं - नहीं, पाप तब होगा, जब कर्मेन्द्रियों से विकर्म करेंगे।'' (Q. अब प्रश्न उठता है - देखकर संकल्प-विकल्प आते हैं कि यह करें तो पाप लगता है या नहीं ? अव्यक्त बापदादा ने कहा है - यहाँ भाई-बहनों की एक-दो के प्रति कुदृष्टि जाना महापाप है, वह माफ नहीं हो सकता है।)

सा.बाबा 2.02.09 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और विचार-सागर मन्थन

बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है कि बच्चे बाबा जो सुनाते हैं, उस पर विचार करो, उसका चिन्तन करो। चिन्तन ही ज्ञान की धारणा का और बाबा जो सुनाते हैं, उसको समझने का आधार है। खान-पान, आत्मिक स्वरूप और परमात्मा की याद का अभ्यास, ज्ञान के गुह्य रहस्यों का मनन-चिन्तन कर हर बात को समझने और अनुभव करने का पुरुषार्थ अवश्य करना होता है। जो सही रीति से मनन-चिन्तन करने का पुरुषार्थ करता है, वह ज्ञान के

यथार्थ राज़ों को स्वयं भी अनुभव कर उसका सुख अनुभव करता है और दूसरों के लिए भी सुख अनुभव करने का मार्ग प्रशस्त करता है, जिससे दूसरों की दुआयें भी उसको मिलती है और उन दुआओं से भी उसका पुरुषार्थ और वृद्धि को पाता है। संगमयुग पर पुरुषार्थ भी प्रालब्ध है क्योंकि ज्ञान-योग का हम जो पुरुषार्थ करते हैं, उसमें जो अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है, वह सतयुग के सुख की प्रालब्ध से पद्मपदम गुणा श्रेष्ठ और सुखदायी ह। परन्तु उसको अनुभव करने के लिए उन सब बातों का मनन-चिन्तन करना अति आवश्यक है। वास्तविकता को देखा जाये तो योग कोई मेहनत नहीं है लेकिन योग से आत्मिक शक्ति बढ़ती है और योग में आत्मा को परमानन्द की अनुभूति होती है इसलिए योगानन्द कहा जाता है। परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान के मनन-चिन्तन से भी आत्मा को परम सुख की अनुभूति होती है। ज्ञान को परम-धन कहा जाता है और ये यथार्थ ज्ञान-धन संगमयुग के अतिरिक्त सारे कल्प में नहीं मिलेगा। ऐसे ही ईश्वरीय गुणों और शक्तियों के मनन-चिन्तन से आत्मिक शक्ति बढ़ती है, वह आत्मा को परमसुख की अनुभूति कराती है। संगमयुग पर ही आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर परमधाम की परमशान्ति की अनुभूति करती है और निर्विकल्प स्थिति में स्थित होकर स्वर्ग से भी श्रेष्ठ परम सुख की अनुभूति करती है। आत्मा की यह अनुभूति ही मुक्ति-जीवनमुक्ति की यथार्थ अनुभूति है। परमधाम में मुक्ति की कोई अनुभूति नहीं होगी और सतयुग में सुख-दुख का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण सुख की कोई अनुभूति नहीं होती है, वहाँ आत्मा को कोई दुख नहीं होता है, इसलिए अपने को स्वभाविक सुखी अनुभव करती है।

''अभी हम सतोप्रधान बनने के लिए पुरुषार्थ कर मंजिल पर चढ़ रहे हैं। और सब अंधियारे में हैं, हम रोशनी में हैं। हम ऊपर जा रहे हैं और सब नीचे गिर रहे हैं। ये सब विचार सागर मन्थन तुम बच्चों को करना है। शिवबाबा है सिखलाने वाला। वह तो मन्थन नहीं करेंगे, ब्रह्मा को मन्थन करना होता है।''

सा.बाबा 9.01.09 रिवा.

''बाबा कहते हैं - पुरानी दुनिया को एकदम भूल जाओ। परन्तु बाबा जानते हैं - नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही भूलेंगे क्योंकि राजधानी स्थापन हो रही है। ... अब तुम जितना श्रीमत पर चलेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे।''

सा.बाबा 9.01.09 रिवा.

''तुम बच्चों को उठते-बैठते, चलते-फिरते स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। ... पक्के स्वदर्शन चक्रधारी बन जायेंगे तो फिर विष्णु के कुल के बन जायेंगे। ... तुम फाइनल तब होंगे, जब तुम कर्मातीत अवस्था को प्राप्त करेंगे। शिवबाबा तुमको स्वदर्शन चक्रधारी बनाते हैं।''

सा.बाबा 9.01.09 रिवा.

''ब्रह्मा बाबा अपना अनुभव बताते हैं। कहते हैं - जैसे कर्म मैं करता हूँ, तुम भी करो। तुमको

भी मैं वे ही कर्म सिखाता हूँ, जो मैं करता हूँ। शिवबाबा को तो ये कर्म करना नहीं है। ... विचार सागर मन्थन कर ज्ञान की प्वाइन्ट्स निकालेंगे तो विकर्म भी विनाश होंगे और तन्दुरुस्त भी बनेंगे। जो पुरुषार्थ करेंगे, उनको फायदा होगा, नहीं करेंगे तो उनको ही नुकसान होगा। सारी दुनिया तो स्वर्ग का मालिक बनती नहीं है। यह भी सारा हिसाब-किताब है।''

सा.बाबा 25.12.09 रिवा.

''इसमें खर्चे आदि की कोई बात नहीं है। इसमें तो सिर्फ सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानना है। तुम बच्चों को विचार सागर मन्थन करना है। कर्म करते भी दिन-रात ऐसे पुरुषार्थ करते रहो। विचार सागर मन्थन नहीं करेंगे या बाप को याद नहीं करेंगे, सिर्फ कर्म ही करते रहेंगे तो रात को भी वे ही ख्यालात चलते रहेंगे। ... भल विचार सागर मन्थन करने की रेस्पॉन्सिबुलिटी इन पर है परन्तु पद तो तुमको भी प्राप्त करना है ना।'' सा.बाबा 25.12.09 रिवा.

''आत्मा बिन्दी मिसल छोटी है, जो देखने में भी नहीं आती है, बाप भी बिन्दी है। ... इन बातों पर बच्चों को अच्छी रीति विचार भी करना है। हम आत्मायें ऊपर से आई हैं, शरीर धारण का पार्ट बजाने के लिए। ... अभी जैसे तुमने समझा है, वैसे औरों को समझाना है। यह तो जरूर है कि नम्बरवार जिसने जितना पढ़ा है, वे उतना ही पढ़ा सकते हैं। सबको टीचर भी जरूर बनना है।'' सा.बाबा 23.12.09 रिवा.

''मनन करने में मस्त होंगे तो माया भी सामना नहीं करेगी क्योंकि आप बिज़ी हो ना। ... आप भी मनन करने से अन्दर अर्थात् अण्डरग्राउण्ड चले जाते हो।... अन्तर्मुख रहने से बाहरमुखता की बातें डिस्टर्व नहीं करेंगी।... आपके लिए सेफ्टी का साधन यही अन्तर्मुखता है अर्थात् देहाभिमान से अण्डरग्राउण्ड।... बहुत जन्मों के बाहरमुखता के संस्कार होने के कारण अन्तर्मुखता में कम रह पाते हैं लेकिन रहना निरन्तर अन्तर्मुखी है।''

अ.बापदादा 30.5.71

''विचार करो, बाप ने हमको कहाँ से निकाला है। बाप ने हमको गन्दे नाले से निकाला है। अब हमारी आत्मा स्वच्छ बन रही है। अभी बाप हमारी आत्मा को श्रृंगार कर स्वर्ग में ले जा रहे हैं। अन्दर में बच्चों के ऐसे-ऐसे ख्यालात चलने चाहिए। ... जल्दी-जल्दी शिवालय में जाने का पुरुषार्थ करना चाहिए।'' सा.बाबा 11.12.09 रिवा.

''यहाँ बैठे भी तुमको यह ख्यालात चलाने चाहिए, इसलिए बाबा कहते हैं - बच्चों के लिए फर्स्ट क्लास युनिवर्सिटी बनाओ। कल्प-कल्प बनती है। तुम्हारे ख्यालात बड़े आलीशान होने चाहिए। ... बच्चे उस नशे और रॉयलिटी में नहीं रहते हैं, माया दबाकर बैठी है।''

सा.बाबा 11.12.09 रिवा.

''सिर्फ दो शब्द अलफ और बादशाही याद रखो तो स्थिति ऊपर-नीचे नहीं हो सकती है। ... अपने से बातें करो कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान ... सिर्फ मनन और वर्णन करना है। पहले मनन करो और बाद में वर्णन करो। ... मनन करते-करते ऑटोमेटिकली अवस्था मगन हो जायेगी। जो मनन करना नहीं जानते हैं, वे मगन अवस्था का भी अनुभव नहीं कर सकते।''

अ.बापदादा 24.05.71

''जो टाइम मिले, अपने से ये बातें करनी चाहिए। विनाश तो होने का है, पहले हम अपने घर जायेंगे, फिर सुखधाम में आयेंगे।... कम से कम आठ घण्टा बाप से रूह-रुहान करो और जाकर रुहानी सर्विस करो।... मुख्य है याद की यात्रा। तुम अच्छी रीति याद की यात्रा में रहेंगे तो प्रकृति तुम्हारी दासी बन जायेगी, तुमको आपही सबकुछ मिलेगा, माँगने की भी दरकार नहीं रहेगी।''

सा.बाबा 14.11.09 रिवा.

''महानता लाने के लिए ज्ञान की महीनता में जाना पड़े। जितना-जितना ज्ञान की महीनता में जायेंगे, उतना अपने को महान बना सकेंगे। महानता कम अर्थात् ज्ञान की महीनता का अनुभवी कम। तो अपने को चेक करो। महान आत्मा का कर्तव्य क्या होता है, वह स्मृति में रखो। महान आत्मा उसको कहते हैं, जो महान कर्तव्य करके दिखाये।''

अ.बापदादा 18.4.71

''बाप से ऊंच ते ऊंच पद पाना है तो पुरुषार्थ करना पड़े। पढ़ाई याद होगी तो 84 का चक्र भी याद आ जायेगा। ... अगर यह याद आये तो किसको सुनायें भी जरूर। ... सर्विसएबुल बच्चों का सारा दिन यही ख्याल चलते रहते हैं। सर्विस नहीं करते तो समझा जाता है कि बुद्धि ही नहीं चलती है।''

सा.बाबा 4.08.09 रिवा.

''तुम जब पहले-पहले श्रेष्ठाचारी दुनिया में आये तो सतोप्रधान थे। आत्मा सतोप्रधान थी। कोई के साथ कनेक्शन भी पीछे होगा, जब गर्भ में जायेंगे तब सम्बन्ध में आयेंगे। ... अब हमको वापस घर जाना है। पवित्र बनने बिगर हम जा नहीं सकेंगे। ऐसे-ऐसे अन्दर में बातें करनी चाहिए क्योंकि बाप का फरमान है उठते-बैठते, चलते-फिरते बुद्धि में यही ख्यालात रहे कि हम सतोप्रधान आये थे, अब सतोप्रधान बनकर ही घर जाना है।''

सा.बाबा 9.07.09 रिवा.

''सारा दिन ज्ञान अन्दर में टपकना चाहिए। जैसे बाप की आत्मा में ज्ञान है, वैसे तुम्हारी आत्मा में भी ज्ञान है। ... तुम बच्चों को यह ख्याल करना है कि हम अपनी उन्नति कैसे करें, ऊंच पद कैसे पायें। ... उसके लिए है याद की यात्रा। अपने को आत्मा तो जरूर समझना है।''

सा.बाबा 9.07.09 रिवा.

''बेहद का बाप नॉलेजफुल है, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप, ज्ञान का सागर है। चेतन्य होने के कारण सब कुछ सुनाते हैं। ... पुरानी सृष्टि का विनाश तो होना ही है। यह अनेक बार देखा है और देखते रहेंगे। पढ़ते ऐसे हैं, जैसे कल्प पहले पढ़े थे। राज्य लिया, फिर गँवाया और अब फिर ले रहे हैं। ... बाबा राय देते हैं - ऐसे-ऐसे अन्दर में विचार चलना चाहिए।''

सा.बाबा 20.06.09 रिवा.

''साइन्स वालों की कितनी बुद्धि चलती है। तुम्हारी फिर यह है साइलेन्स। सब चाहते भी हैं कि हम मुक्ति को पायें। तुम्हारी फिर एम है जीवनमुक्ति की। ... ये सब महीन बातें हैं। ऐसी-ऐसी बातों पर तुम बच्चों को विचार करना चाहिए।'' सा.बाबा 20.06.09 रिवा.

''बच्चों को खुशी क्यों नहीं होती है, क्योंकि इन बातों पर चिन्तन नहीं चलता है। जो मोस्ट सर्विसएबुल बच्चे हैं, उनका चिन्तन जरूर चलता होगा। ... तुम्हारी यह ग्रेड बहुत ऊंची हे। अभी तुम बेहद बाप के बच्चे हो। अभी तुम ईश्वरीय परिवार के हो।''

सा.बाबा 8.05.09 रिवा.

''अपनी प्रालब्ध ऊंची बनानी चाहिए। कल्प-कल्पान्तर की बात है। ... बाप समझाते तो बहुत हैं परन्तु कोई समझने वाला ही समझे। कोई तो सुनकर अच्छी तरह विचार सागर मन्थन करते हैं। ... भूतों को निकालने का एक ही उपाय है - बाबा की याद। बाबा की याद से सब भूत भाग जायेंगे।'' सा.बाबा 23.04.09 रिवा.

''ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन करने से तुम बहुत रौनक में आयेंगे। सतयुगी रौनक और कलियुगी रौनक में रात-दिन का फर्क है। ... बाप भी वण्डरफुल, ज्ञान भी वण्डरफुल। इन वण्डर्स को समझने-समझाने वाला भी ऐसा चाहिए, जिसकी बुद्धि इन वण्डर्स में ही लगी रहे।''

सा.बाबा 4.04.09 रिवा.

''अपन को आत्मा समझने से शरीर का भान निकलता जायेगा। बाप की याद से ही विकर्म भी विनाश होंगे। इस बात पर अच्छी तरह से विचार सागर मन्थन कर सकते हो। विचार सागर मन्थन करने बिगर तुम उछल नहीं सकेंगे। यह पक्का होना चाहिए कि हमको बाप के पास जाना है जरूर।'' सा.बाबा 25.02.09 रिवा.

''बाप आया है पावन बनाने के लिए। घर जाकर फिर हमको पावन दुनिया में आना है। यह अन्दर में विचार सागर मन्थन होना चाहिए। और कोई को ऐसे विचार आयेंगे नहीं। तुम समझते हो हम खुद अपनी दिल से यह शरीर छोड़कर अपने घर जाकर फिर नये पवित्र सम्बन्ध में, नई दुनिया में आयेंगे।'' सा.बाबा 10.02.09 रिवा.

''अभी भाई-भाई के सम्बन्ध से भी ऊंच जाना है। सिर्फ रुहानी दृष्टि भाई-भाई की चाहिए। हम

सब आत्मायें भई-भाई हैं। ... इस संगमयुग पर ही भाई-बहन के सम्बन्ध में रहते हैं, जिससे विकार की दृष्टि बन्द हो जाये। वाणी से परे जाना है, इसलिए एक बाप को ही याद करना है। ऐसे-ऐसे अपने साथ बातें करनी हैं।'' सा.बाबा 10.02.09 रिवा.

''जो ब्राह्मण कुल भूषण सर्विस में तत्पर रहते हैं, उनको ये बातें बुद्धि में लानी है कि भारतवासियों को कैसे सिद्धकर बतायें कि शिवजयन्ति सो गीता जयन्ति और गीता से होती है कृष्ण जयन्ति। ... सतयुग में महाभारत लड़ाई आदि तो हो नहीं सकती, तो जरूर वह संगम पर ही हुई होगी। तुम बच्चों को अच्छी तरह इन बातों पर समझाना है।''

सा.बाबा 14.02.09 रिवा.

''किसी को बुरा समझा तो मैं बुरी बन गयी। अपनी घोट तो नशा चढ़े। बाबा ने विचार सागर मन्थन करना सिखाया है ... बाबा की याद में रहते, विचार-सागर मन्थन करते तो श्रेष्ठ कर्म ऑटोमेटिकली होता है।'' दादी जानकी 25.1.09

''विचार सागर मन्थन करना है।... अगर ज्ञान को रत्न के रूप में लेते हैं तो हमारी जीवन भी वैल्यूएबुल बन जाती है।... आपस में भी ज्ञान की ही रूह-रिहान करो।''

दादी जानकी 25.1.09

''बाबा अपना अनुभव बताते हैं - कब-कब और बातों तरफ बुद्धि चली जाती है तो माथा गर्म हो जाता है। फिर उन तूफानों से बुद्धि को निकालकर इस विचार सागर मन्थन में लग जाता हूँ तो माथा हल्का हो जाता है।... इस तरफ बुद्धि लगाने से वह थकावट सारी उतर जाती है, बुद्धि रिफ्रेश हो जाती है।'' सा.बाबा 20.12.08 रिवा.

''बाबा की सर्विस में लग जाते हैं तो योग और ज्ञान का मक्खन मिल जाता है। ... चित्र उठाकर उसी पर ख्यालात करना चाहिए तो माया का तूफान उड़ जायेगा। ... अगर बाबा की याद में रहे तो बुद्धि क्लियर रहे।'' सा.बाबा 20.12.08 रिवा.

''शुद्ध संकल्पों में पहले से ही मन को बिजी रखेंगे तो और संकल्प नहीं आयेंगे। ... इतना अपने को बिजी रखो, जो व्यर्थ संकल्प अपने का स्थान ही न हो। मन को बिजी रखने के तरीके जो मिलते हैं, वे आप पूरे प्रयोग में नहीं लाते हो, इसलिए व्यर्थ संकल्प आ आते हैं।''

अ.बापदादा 26.1.70

''मन्थन करने के लिए तो बहुत खज़ाना है। इसमें मन को बिज़ी रखना है। समय की रफ्तार तेज है वा आप लोगों के पुरुषार्थ की रफ्तार तेज है? ... समय आगे निकल जायेगा और आप पुरुषार्थी रह जायेंगे। ... समय में बीती को बीती करने की तेजी है। उसी बात को समय फिर कब रिपीट करता है?'' (नहीं) अ.बापदादा 26.1.70

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और परमात्मा

परमपिता परमात्मा स्वयं के लिए कोई पुरुषार्थ नहीं करते हैं परन्तु वे आत्माओं को पुरुषार्थ कराते हैं, आत्माओं को पुरुर्षा का विधि-विधान बताते हैं। वास्तविकता को देखा जाये तो परमात्मा का आत्माओं को पुरुषार्थ कराने का कर्म भी एक प्रकार का पुरुषार्थ ही है परन्तु आत्मायें जो पुरुषार्थ करती हैं, उससे उनकी आत्मा प्रभावित होती है अर्थात् उनकी चढ़ती कला होती है, उनको उसका फल मिलता है, इसलिए उसको पुरुषार्थ कहा जाता है परन्तु परमात्मा जो पुरुषार्थ करते हैं, उससे उनकी आत्मा प्रभावित नहीं होती है क्योंकि वे सदा सम्पूर्ण हैं और वे जो पुरुषार्थ करते हैं वह अपने लिए नहीं लेकिन अन्य आत्माओं के कल्यार्थ करते हैं, इसलिए उसे पुरुषार्थ न कहकर उसे सेवा कहा जाता है। परमात्मा जो सेवा करते हैं, वह निस्वार्थ और निष्काम होती है अर्थात् उसमें उनकी अपने लिए प्राप्ति की कोई चाहना नहीं होती है, इसलिए उससे उनकी आत्मा प्रभावित नहीं होती है, जबकि आत्मायें जो भी पुरुषार्थ करती हैं या कार्य करती हैं, उसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कोई न कोई कामना अवश्य होती है। भले ही वह कामना स्वयं को सम्पूर्ण बनाने, मुक्ति-जीवनमुक्ति प्राप्त करने की ही क्यों न हो परन्तु रहती अवश्य है।

परमात्मा आत्माओं को पुरुषार्थ कराते रहते हैं परन्तु वे कब भी उससे थकते नहीं हैं। आत्मायें पुरुषार्थ करें या न करें तो भी वे उससे ऊबते नहीं हैं, वे अपना पुरुषार्थ अर्थात् प्रयत्न बन्द नहीं करते हैं क्योंकि वे ज्ञान के सागर हैं और जानते हैं कि एक न एक दिन आत्मायें उस अनुसार पुरुषार्थ कर सम्पूर्ण बनेंगी ही और सब बनेंगी भी ड्रामानुसार और नम्बरवार ही।

परमात्मा ही आकर आत्माओं को इस विश्व-नाटक का सारा ज्ञान देकर श्रेष्ठ पुरुषार्थ कराते हैं, जिससे आत्मायें पावन बनती हैं और उनकी चढ़ती कला होती है।

''मैं तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ, मैं नहीं बनता हूँ। मैं निष्काम सेवा करता हूँ। स्वर्ग में तुम मुझे याद भी नहीं करते हो। इसको सुख और दुख का खेल कहा जाता है।... अब बाप कहते हैं तुम अच्छी रीति पुरुषार्थ करो, विश्व का मालिक बनकर दिखाओ।''

सा.बाबा 27.12.09 रिवा.

''गाते हैं - प्रभु तेरी लीला अपरमअपार। यह पुरानी दुनिया को बदलने की लीला है। ... बाप तुम बच्चों को ही आकर ये सब बातें समझाते हैं। बाप नॉलेजफुल है, तुमको भी नॉलेजफुल बनाते हैं। तुम सब नम्बरवार बनते हैं। स्कॉलरशिप लेने वाले नॉलेजफुल कहलायेंगे।''

सा.बाबा 10.12.09 रिवा.

''वरदाता बनने के लिए क्या पुरुषार्थ करना पड़े ? वरदाता बनने के लिए मुख्य पुरुषार्थ यही करना पड़े कि बार-बार जो भक्तिमार्ग में गायन किया कि वारी जाऊं। यह गायन प्रैक्टिकल में कर लो तो जिसके ऊपर वारी जाते हो, वह आपको भी सर्व वरदान देकर वरदातामूर्त बना देते हैं। तो हर समय, हर कर्म, हर संकल्प में यह सोचो कि 'वारी जाऊं' का जो वचन लिया है, वह पालन कर रही हूँ। बाप वरदातामूर्त है ना।''

अ.बापदादा 20.5.71

''बाबा ये सब बातें समझाते भी हैं और अन्दर में समझते भी हैं कि कल्प-कल्प यह बच्चे ऐसे ही पढ़ते हैं। सब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही वर्सा लेंगे। फिर भी पढ़ाने वाला टीचर पुरुषार्थ तो जरूर करायेंगे ना। ... कितनी गुह्य-गुह्य समझने की बातें हैं।''

सा.बाबा 21.11.09 रिवा.

''बाप बच्चों को आप समान बनाने का पुरुषार्थ कराते हैं। बाप चाहते हैं - जैसे मैं ज्ञान का सागर हूँ, वैसे बच्चे भी बनें। बाप भी जानते हैं और बच्चे भी जानते हैं कि सब एक समान नहीं बनेंगे, फिर भी हर एक को अपना-अपना पुरुषार्थ तो करना ही होता है। स्कूल में सब स्टूडेण्ट पास विद् ऑनर नहीं होते हैं, फिर भी टीचर पुरुषार्थ तो कराते ही हैं।''

सा.बाबा 4.11.09 रिवा.

''बाप कहते हैं - इन ऑखों से तुम जो कुछ देखते हो, वह सब विनाशी है। अभी तुमको घर जाना है। ... कोई कहते - बाबा हमारा मुख खोलो, कृपा करो। बाप कहते हैं - इसमें बाबा को तो कुछ करने की बात ही नहीं है। तुमको बाप के डायरेक्शन पर चलना है।''

सा.बाबा 22.10.09 रिवा.

''बाप को तो बच्चों पर रहम पड़ता है परन्तु दास-दासियाँ बनने की भी ड्रामा में नूँध है। इसमें खुश नहीं होना चाहिए। ... दास-दासियाँ बनने से तो साहूकार प्रजा बनें तो अच्छा है। साहूकार बनने से दास-दासियाँ रख सकेंगे।''

सा.बाबा 23.10.09 रिवा.

''तुमको ही अभी पास्ट, प्रजेन्ट, फ्युचर का ज्ञान मिलता है। और कोई को यह ज्ञान मिल न सके। तुम बहुत-बहुत भाग्यशाली हो परन्तु माया भुला देती है। ... मैं तो तुमको पढ़ाता हूँ। मैं कोई आशीर्वाद आदि नहीं करता हूँ। मैं अगर आशीर्वाद करूँ तो सब पर आशीर्वाद करूँ। ... इस पढ़ाई से तुमको सब आशीर्वादें मिल जाती हैं।''

सा.बाबा 10.10.09 रिवा.

''यह भी ड्रामा प्लेन अनुसार हर एक का अपना पार्ट है। ऐसे तो नहीं कहेंगे कि हे ईश्वर बुद्धि

दो। सबको एक जैसी बुद्धि हम दें तो सब नारायण बन जायेंगे।... सब पुरुषार्थ कर रहे हैं नारायण बनने का परन्तु बनेंगे तो पुरुषार्थ अनुसार।''

सा.बाबा 25.09.09 रिवा.

''कोई कितनी भी कोशिश करे कि बीज से योग लगाने के सिवाए कोई पत्ते अर्थात् किसी आत्मा से सहयोग प्राप्त हो जाये, यह हो नहीं सकता। इसलिए सर्व के सहयोगी बनने वा सर्व का सहयोग लेने के लिए सहज पुरुषार्थ कौनसा है? बीजरूप से कनेक्शन अर्थात् योग।''

अ.बापदादा 13.3.71

''बाप बच्चों पर वारी जाते हैं। वारिस हैं तो वारी जाना पड़े। तुमने भी कहा था - बाबा, आप आयेंगे तो हम वारी जायेंगे। तन-मन-धन सहित कुर्बान जायेंगे। तुम एक बार कुर्बान जाते हो, बाबा 21 बार कुर्बान जायेंगे। ... सब बच्चे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अपना-अपना भाग्य लेने आये हैं।''

सा.बाबा 24.07.09 रिवा.

''बाप न दुख देते हैं, न सुख देते हैं। सुख का रास्ता बताते हैं। फिर जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, उतना सुख मिलेगा। ... अगर बाप देता हो तो फिर सबको एक जैसा वर्सा मिलना चाहिए। जैसे लौकिक बाप भी वर्सा बाँटते हैं। यहाँ तो जो जैसा पुरुषार्थ करते हैं, वैसा पद पाते हैं।''

सा.बाबा 17.07.09 रिवा.

''मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा मुझे यथार्थ रीति कोई नहीं जानते हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही जानते हैं। ... विचार करना है कि मैं आत्मा बहुत छोटी बिन्दी हूँ, हमारा बाबा भी बहुत छोटा बिन्दी है, ऐसे याद रहता है। ... बाप को यथार्थ रीति याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे।''

सा.बाबा 9.02.10 रिवा.

''जो भी पार्ट चलता है, ड्रामा अनुसार एक्यूरेट चलता रहता है। फिर भी पुरुषार्थ तो करायेंगे ना। जिन बच्चों को नशा है कि हमको भगवान हेविन का मालिक बनाने के लिए पुरुषार्थ कराते हैं, वे पुरुषार्थ करने लग पड़ते हैं, उनकी शक्ल बड़ी खुशनुमः रहती है। बाप आते ही हैं बच्चों को प्रालब्ध के लिए पुरुषार्थ कराने।''

सा.बाबा 9.02.10 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और आत्मा

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और आत्मिक शक्ति

आत्मा को पुरुष भी कहा जाता है, इसलिए आत्मायें अपने आत्म-कल्याण के जो प्रयत्न करती हैं, वह पुरुषार्थ कहा जाता है। आत्मायें ये प्रयत्न करती तो आधे कल्प से हैं

परन्तु यथार्थ रीति पुरुषार्थ संगमयुग पर होता है, जब परमात्मा आकर आत्माओं को इस सृष्टि-चक्र का ज्ञान देते हैं। संगमयुग पर ही आत्मायें पूरे कल्प के लिए आत्मिक शक्ति का संचय करती हैं क्योंकि जमा करने का समय अभी ही है, फिर तो ड्रामानुसार सारे कल्प आत्मिक शक्ति का ह्रास ही होता है, जिससे आत्मा की और सारे विश्व की उतरती कला होती है।

संगमयुग पर ही आत्मा को पुरुषार्थ करके आधे कल्प के अनेक आत्माओं के साथ कर्म-बन्धन के हिसाब-किताब चुक्तू करना होता है और नये कल्प में आधे कल्प के लिए नये कर्म-सम्बन्ध के अर्थात् सुखदायी हिसाब-किताब जमा करना होते हैं।

आत्मओं को परमात्मा की श्रीमत पर ये सब पुरुषार्थ करना होता है और कराना होता है अर्थात् अन्य आत्माओं की सेवा भी करनी होती है। अन्य आत्माओं की सेवा करना अर्थात् पुरुषार्थ कराना भी आत्मा का पुरुषार्थ है, जिससे आत्मा को अन्य आत्माओं की दुआयें मिलती हैं, जो उसके पुरुषार्थ में तीव्रता लाती हैं।

संगमयुग पर किये गये पुरुषार्थ से आत्मा जो आत्मिक शक्ति का संग्रह करती है, वह शक्ति सारे कल्प चलती है। संगमयुग पर आत्मा परमात्मा की याद से, परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान की धारणा से जो अपने को पावन बनाती है, वह पवित्रता भले समयान्तर में कम तो होती है, सतयान्तर में पार्ट बजाते-बजाते आत्मा पर देहाभिमान और विकारों की जंक चढ़ती रहती है, फिर भी आत्मा की संगमयुग पर संचित की हुई शक्ति और उसकी पवित्रता कलियुग के अन्त तक काम करती है। परन्तु संगमयुग पर पुरुषार्थ से श्रेष्ठ कर्म करके पुण्य का जो खाता जमा करते हैं, वह आधे कल्प तक ही चलता है, इसलिए आधे कल्प तक आत्मा को कोई पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता है। आधे कल्प के बाद पुरुषार्थ और प्रालब्ध का विधि-विधान चलता है अर्थात् आत्मायें पुरुषार्थ करती हैं और उसका अल्प काल के लिए प्रालब्ध के रूप में फल पाती हैं।

भक्ति मार्ग में त्याग-तपस्या से आत्मिक शक्ति का ह्रास कम होता है, ह्रास की गति मन्द होती है परन्तु आत्मिक शक्ति का विकास नहीं होता है। यथार्थ ज्ञान और परमात्मा की याद से आत्मिक शक्ति का विकास होता है अर्थात् आत्मा पर चढ़ी देहाभिमान की जंक खत्म होती है, जिससे आत्मा अपने मूल स्वरूप में आ जाती है। भक्ति में भक्ति करते, त्याग-तपस्या करते भी जंक चढ़ती जाती है परन्तु भक्ति से भी जंक चढ़ने की गति मन्द अवश्य होती है।

भक्ति में एकाग्रता से, मौन से, खान-पान और संग के परहेज़ से, स्वाध्याय से संकल्पों का प्रवाह नियन्त्रित होता है, जिससे आत्मिक शक्ति का ह्रास कम होता है अर्थात् आत्मा पर जंक चढ़ने की गति मन्द होती है। इस विधि-विधान और नियम-संयम को अपनाने

से ज्ञान मार्ग में आत्मिक स्वरूप की स्मृति बढ़ती है, आत्मिक शक्ति जाग्रत होती है अर्थात् आत्मिक शक्ति बढ़ती जाती है।

''माया तंग करती है, फिर भी कोशिश कर बाप के साथ लिंक जोड़नी चाहिए। नहीं तो बैटरी कैसे चार्ज होगी। विकर्म होने से बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है। ... बाप तुमको बेहद का वैराग्य दिलाते हैं। सारी पुरानी दुनिया से वैराग्य। बुद्धियोग एक बाप के साथ ही होना चाहिए।''

सा.बाबा 23.11.09 रिवा.

''यहाँ बैठे हुए तुम क्या कर रहे हो ? तुम पैराडाइज़ के श्रृंगार के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। ... तुम अपना टाइम वेस्ट मत करो। तुम अपने ही श्रृंगार में लगे रहो, दूसरा करता है वा नहीं, इसमें तुम्हारा क्या जाता है। ... परचिन्तन आदि में समय वेस्ट करते हो तो और ही श्रृंगार बिगाड़ते हो।''

सा.बाबा 9.09.09 रिवा.

''पहले-पहले यह बहुत-बहुत पक्का करना है कि मैं आत्मा हूँ। अपने साथ बहुत मेहनत करनी है। विश्व का मालिक बनना है तो मेहनत बिगर थोड़ेही बनेंगे।... जब अपने को आत्मा भूल, देहाभिमान में आते हैं तो कुछ न कुछ पाप अवश्य होते हैं। देही-अभिमानी बनने से कभी पाप नहीं होंगे और पुराने पाप कट जायेंगे।''

सा.बाबा 2.06.09 रिवा.

''ऐसे ही समझो बेहद की स्टेज के बीच पार्ट बजा रही हूँ वा बजा रहा हूँ। सारे विश्व की आत्माओं की नज़र मेरी तरफ है। ऐसे समझने से सम्पूर्णता को जल्दी धारण कर सकेंगे। एक श्लोगन याद रखो 'जाना है और आना है', लेकिन जाना कैसे है ? सम्पूर्ण होकर जाना है वा ऐसे ही जाना है।''

अ.बापदादा 5.11.70

''बाप को याद करो तो सतोप्रधान बनेंगे, फिर यह शरीर भी छूट जायेगा। ... बाप को निरन्तर याद करना है। वह निराकार बाप ही ज्ञान का सागर है, वही आकर सबकी सद्गति करते हैं। ... अपने को आत्मा समझ बाप को निरन्तर याद करो तो पाप कटते जायेंगे। देही-अभिमानी बनो।''

सा.बाबा 11.05.09 रिवा.

''अभी तुम ईश्वरीय परिवार के हो। भाई-बहन से भी ऊंच चढ़ा दिया है। अभी अपने को भाई-भाई समझो। यह बहुत प्रैक्टिस करनी है। ... आत्मा बिल्कुल सूक्ष्म है, स्टार मिसल है। इस शरीर में भृकुटी के मध्य में रहती है। ... हम सब आत्मायें शिवबाबा की सन्तान हैं, इसलिए अपने को भाई-भाई समझो।''

सा.बाबा 8.05.09 रिवा.

''आत्मा भाई-भाई हैं, यह पक्का निश्चय कर लो। यह देह तो रहेगी नहीं, फिर विकार की दृष्टि खलास हो जायेगी। यह है बड़ी मंजिल। ... पिछाड़ी में कोई भी चीज़ याद न आये, इसको कहा जाता है कर्मातीत अवस्था। ... आत्मा-आत्मा समझते रहेंगे तो फिर शरीर का भान नहीं

रहेगा। स्त्री-पुरुष की कशिश निकल जायेगी।''

सा.बाबा 4.05.09 रिवा.

''अपने को आत्मा समझो और सब तरफ से दिल हटाते जाओ। ... शान्ति के सागर बाप से तुम शान्ति का, पवित्रता का वर्सा ले रहे हो। ज्ञान भी ले रहे हो। यह ज्ञान बाप के सिवाए और कोई दे न सके। यह है रुहानी ज्ञान।''

सा.बाबा 4.05.09 रिवा.

''यह है ऊंच ते ऊंच पढ़ाई, जिससे तुम्हारी कितनी ऊंच कमाई होती है। ... सतयुग में तुम कितने धनवान बनते हो। तुम्हारी 21 जन्मों के लिए अपरमअपार कमाई होती है। इसमें बहुत मेहनत चाहिए। देही-अभिमानी बनना है। ... बाप को याद कर पावन बनना है। यह क़यामत का समय है। नहीं तो अन्त में सजायें खाकर हिसाब-किताब चुक्तू कर घर वापस चले जायेंगे।''

सा.बाबा 1.02.10 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और विश्व-नाटक

Q. जब ये विश्व-नाटक हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, तो पुरुषार्थ क्यों अर्थात् पुरुषार्थ की क्या आवश्यकता है अर्थात् पुरुषार्थ का क्या महत्व है ?

यथार्थ रीति पुरुषार्थ के लिए ज्ञान सागर परमात्मा ने विश्व-नाटक के गुण-धर्मों (Fact and figures, Cause and effects) का जो ज्ञान दिया है, उसको समझना और उस पर निश्चय होना और उसकी धारणा होना अति आवश्यक है।

विश्व-नाटक की वास्तविकता पर विचार करें तो ये विश्व-नाटक पुरुषार्थ और प्रालब्ध, कर्म और फल का अनादि-अविनाशी खेल है। सारे कल्प में आत्मा जैसा पुरुषार्थ करती है, उस अनुसार फल पाती है। पुरुषार्थ भी आत्माओं से ड्रामानुसार होता है और उसका फल भी ड्रामा अनुसार ही मिलता है। संगमयुग परमात्मा आकर ज्ञान देकर जो पुरुषार्थ कराते हैं, उस पुरुषार्थ की प्रालब्ध अन्य समय की अपेक्षा कई गुणा अधिक मिलती है और आधे कल्प के लिए मिलती है। आधे कल्प के बाद पुरुषार्थ और प्रालब्ध का जो विधि-विधान चलता है, उस पुरुषार्थ से अल्प काल के लिए प्रालब्ध मिलती है। इसलिए संगमयुग पर किये गये पुरुषार्थ का विशेष महत्व है।

बने-बनाये अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक का सारा खेल 'कर्म और फल' अर्थात् 'पुरुषार्थ और प्रालब्ध' पर आधारित है। बिना कर्म के कोई भी आत्मा इस कर्मक्षेत्र पर रह नहीं सकती और आत्मा के द्वारा किया गया कोई भी निष्फल नहीं होता है अर्थात् आत्मा को उसका अच्छा या बुरा फल प्रालब्ध के रूप में भोगना ही होता है। परन्तु पुरुषार्थ शब्द का प्रयोग

आत्मा की चढ़ती कला अर्थात् पुरुष अर्थात् आत्मा के कल्याणार्थ किये गये कर्म के लिए प्रयोग किया जाता है। हम सब इस विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी पार्टधारी हैं और वर्तमान समय इस विश्व-नाटक का चक्र समापन होने जा रहा है, इसलिए परमपिता परमात्मा इस धरा पर आकर हम आत्माओं को यथार्थ ज्ञान देकर आत्मा की चढ़ती कला अर्थात् नये चक्र के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ करा रहे हैं। इस समय के पुरुषार्थ की यथार्थता और महत्व का स्पष्ट ज्ञान हमको होगा, तब ही हम यथार्थ पुरुषार्थ कर सकेंगे, जिससे नये कल्प में हम श्रेष्ठ प्रालब्ध को पा सकेंगे और अपना पार्ट सफलतापूर्वक बजा सकेंगे तथा वर्तमान संगमयुग, जो सृष्टि-चक्र का सर्वोत्तम समय है, उसका सच्चा सुख अनुभव कर सकेंगे।

भले ही बाबा ने हमको इस विश्व-नाटक के हू-ब-हू पुनरावृत्ति का ज्ञान दिया है परन्तु केवल यह कहने मात्र कि ये विश्व-नाटक हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, इससे ही काम पूरा नहीं होता है बल्कि इस विश्व-नाटक को यथार्थ रीति समझने का भी पुरुषार्थ करना होता है।

इस कर्म-क्षेत्र पर कोई भी आत्मा (न केवल मनुष्यात्मायें लेकिन हर योनि की आत्मायें अपने सुख के लिए पुरुषार्थ करती हैं) पुरुषार्थ अर्थात् कर्म के बिना रह नहीं सकती, इसलिए हर आत्मा अपने कल्याण के लिए जाने-अन्जाने पुरुषार्थ करती ही है अर्थात् प्रयत्नशील रहती ही है। अब आवश्यकता है कर्म और फल के अर्थात् पुरुषार्थ और प्रालब्ध के विधि-विधान को जानकर यथाथ्र रीति प्रयत्न करने की।

ये खेल ही पुरुषार्थ और प्रालब्ध का बना हुआ है, इसलिए आत्मा सारे कल्प ही पुरुषार्थ करती है और उसके फलस्वरूप सुख या दुख को भोगती है परन्तु संगमयुग पर पुरुषार्थ करने का विशेष महत्व है। संगमयुग पर पुरुषार्थ भी प्रालब्ध के समान सुखदाई है अर्थात् पुरुषार्थ ही प्रालब्ध है अर्थात् जो आत्मा यथार्थ रीति पुरुषार्थ करती है, वह परमसुख का अनुभव करती है, इसलिए परमात्म जो 21 जन्म की प्रालब्ध या वर्से की बात कहते हैं, उसमें ये जन्म संगमयुग के एक जन्म की भी गणना होती है।

जिसने कल्प पहले पुरुषार्थ किया है, वह अभी भी अवश्य करेगा, उसके अभी के पुरुषार्थ से उसके पूर्व कल्प के पुरुषार्थ और भविष्य कल्प में उसके द्वारा होने वाले पुरुषार्थ का भी साक्षात्कार होता है। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझने वाली आत्मा हर आत्मा के और अपने पुरुषार्थ को साक्षी होकर देखती है, और ये साक्षी स्थिति ही सर्वोत्तम स्थिति है, जिससे आत्मा व्यर्थ संकल्पों से सहज मुक्त होकर श्रेष्ठ सतोप्रधान पुरुषार्थ करने में समर्थ होती है।

''अभी तुम समझते हो कि यह पुरुषोत्तम संगमयुग है ही बिल्कुल अलग। अभी पुरानी दुनिया

का अन्त और नई दुनिया की आदि का समय है। बाप आते ही हैं पुरानी दुनिया को चेन्ज करने। ... हू-ब-हू कल्प-कल्प जैसे स्थापना हुई है, वैसे होती रहेगी। जिन्होंने जो पद पाया है, वही पायेंगे। सब एक जैसा तो पद नहीं पा सकते हैं।''

सा.बाबा 29.11.09 रिवा.

''बाप तुमको वण्डरफुल नॉलेज देते हैं, जिससे तुम मनुष्य से देवता बहुत ऊंच बनते हो। तो इस पढ़ाई पर अटेन्शन भी इतना ही देना चाहिए। परन्तु बाप समझते हैं - जिसने कल्प पहले जितना अटेन्शन दिया है, ऐसा ही अभी देते रहेंगे। बाप को सबके पुरुषार्थ से पता पड़ता है।''

सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''जिन्होंने कल्प पहले पुरुषार्थ किया है, वे अभी भी जरूर करेंगे। और कोई हट्टी तो है नहीं। तुम पुरुषार्थ बहुत करते हो। जिन्होंने कल्प पहले समझा है, वे ही समझेंगे। विनाश होना ही है और सथापना भी होती जाती है। ... अभी हम नई दुनिया में जाते हैं, अपने पुरुषार्थ अनुसार।''

सा.बाबा 25.11.09 रिवा.

''बाप कहते हैं - नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार याद करते-करते जब ड्रामा के चक्र का अन्त होगा अर्थात् पुरानी दुनिया का अन्त होगा, तब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार राजधानी स्थापन हो ही जायेगी। सारा मदार है पुरुषार्थ पर।''

सा.बाबा 16.11.09 रिवा.

''तुमको माया पर विजय पानी है। तुम जानते हो - कल्प-कल्प हम जो कुछ करते आये हैं, बिल्कुल एक्यूरेट वहीं पुरुषार्थ चलता है। तुम जानते हो - अभी हम पद्मापदम भाग्यशाली बनते हैं। बाप भी कल्प-कल्प ऐसे ही समझाते हैं।''

सा.बाबा 13.10.09 रिवा.

''राजाई के संस्कार होते हैं तो ये ज्ञान की पढ़ाई के संस्कार पूरे हो जाते हैं। यह संस्कार पूरे हुए तो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार रुद्र माला में पिरो जायेंगे, फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार आयेंगे पार्ट बजाने।... अभी सारा 84 का चक्र तुम्हारी स्मृति में आया है।''

सा.बाबा 2.09.09 रिवा.

''आगे तुम भी नहीं जानते थे कि यह बेहद का अविनाशी ड्रामा है। गायन है - बनी बनाई बन रही ... जो होना है, वही होता है। कोई नई बात नहीं है। अनेक बार यह ड्रामा सेकेण्ड बाई सेकेण्ड रिपीट होता आया है और होता रहेगा। ... तुम बच्चे इसे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझ गये हो। किसको समझाने में भी मेहनत है।''

सा.बाबा 25.07.09 रिवा.

''अब धीरे-धीरे तुम बच्चे ऊपर चढ़ते जाते हो ड्रामा अनुसार। कल्प-कल्प नम्बरवार कोई सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो बनते हैं। ऐसा ही पद वहाँ मिलता है। इसलिए बाप कहते हैं - बच्चे, अच्छी रीति पुरुषार्थ करो, जो सजायें न खानी पड़ें।''

सा.बाबा 19.02.09 रिवा.

''बाप को याद करने से तुम औरों को लाइट देते हो।... तुम बच्चों को कोई भी बात में मूँझना नहीं है। यह बना-बनाया ड्रामा है, जो रिपीट होता रहता है। तुम्हारी सर्विस भी कल्प पहले मिसल होती है। ड्रामा ही तुमको पुरुषार्थ कराते हैं। वह भी तुम कल्प पहले मिसल करते हो।''

सा.बाबा 26.01.09 रिवा.

''बीती को बीती समझ आगे हर सेकण्ड में उन्नति को पाते जाओ। ... ड्रामा में जो बात बीती, जिस रूप से बीत गई, वह फिर से रिपीट नहीं होगी, फिर 5000 वर्ष के बाद ही रिपीट होगी। ... अगर ये कमजोरियाँ रिपीट न हो तो पुरुषार्थ तेज हो जायेगा।''

अ.बापदादा 26.1.70

''जो अच्छा पुरुषार्थ करते हैं, अनन्य हैं, उनकी पूजा भी जास्ती होगी। तुम जानते हो हम ही पूज्य से पुजारी बन बाबा की और अपनी पूजा करते हैं।... यह बड़ा वण्डरफुल खेल है। जैसे नाटक देखने से खुशी होती है ना, वैसे ही यह भी बेहद का नाटक है। अभी तुम्हारी बुद्धि में ड्रामा का सारा राज़ है।''

सा.बाबा 26.03.10 रिवा.

Q. जब ये विश्श-नाटक अनादि-अविनाशी है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, तो पुरुषार्थ का क्या महत्व है अर्थात् हम पुरुषार्थ क्यों करें और क्या करें ?

ये सृष्टि कर्मक्षेत्र है, जहाँ कोई भी आत्मा कर्म के बिना रह नहीं सकती और ये विश्व-नाटक कर्म और फल, पुरुषार्थ और प्रालब्ध पर आधारित एक खेल है। जो आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर साक्षी होकर इस खेल को देखता है, वह इसके परमसुख को अनुभव करता है। तो आत्मा को अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने और साक्षी होकर देखने के लिए इस नाटक को यथार्थ रीति समझने का पुरुषार्थ तो करना ही होगा। हम इस कल्प-वृक्ष के पूर्वज आत्मायें हैं तो इसके राज़ को स्वयं समझकर औरों को समझाने का भी पुरुषार्थ करना ही होगा क्योंकि परमात्मा पिता ने ये राज़ हमको समझाया है, तो और सबको समझाना हमारा परम कर्तव्य है।

विश्व में कर्म और फल का खेल तो हम सब देख ही रहे हैं, उससे हमको अपनी आँखें बन्द नहीं कर लेनी हैं, अन्यथा हमको बाद में बहुत पछताना पड़ेगा।

हम जितना पुरुषार्थ करते हैं, बाप को याद कर सेवा करते हैं, उस अनुसार परमात्मा

हमको फल नहीं देता है क्योंकि परमात्मा सर्व शक्तियों का अखुट भण्डार है और उसकी शक्तियाँ तो सागर और सूर्य के समान सबके लिए स्वतन्त्र रूप से खुली हैं। परमात्मा आत्माओं से कोई कामना भी नहीं रखते कि वे ये करें तो मैं उनको दूँ क्योंकि वह तो निष्काम है। विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार हर आत्मा अपने पुरुषार्थ अनुसार उसका लाभ उठाते हैं। जितना और उतना का हिसाब प्रकृति के साथ चलता है। जो आत्मा जैसा पुरुषार्थ करती है, उस अनुसार प्रकृति से उसको फल मिलता है।

हम अपनी सूक्ष्म और स्थूल प्राप्तियों पर विचार करें तो परमात्मा ने हमको इतना दिया है, जितना हम ब्राह्मणों के सिवाए और किसको भी संसार में प्राप्त नहीं है और जो हमको मिला है, वह हमको सुख-शान्ति से जीने के लिए पर्याप्त है। फिर भी हमारी अवस्था क्यों नहीं बनती, हम यथार्थ रीति सुख-शान्ति, अतीन्द्रिय सुख को क्यों नहीं अनुभव कर पाते, यथार्थ पुरुषार्थ क्यों नहीं कर पाते - यह हर एक को अपना विचार करना है और विचार करके अभीष्ट पुरुषार्थ करके अतीन्द्रिय सुख को प्राप्त करना है। ब्राह्मणों में भी सब नम्बरवार तो हैं ही। क्योंकि समर्पित जीवन वालों की अपनी विशेष प्राप्तियाँ हैं, प्रवृत्ति वालों की अपनी प्राप्तियाँ हैं।

भूतकाल के कर्मों को तो कोई बदल नहीं सकता है, उसका फल तो हमको भोगना ही पड़ेगा परन्तु यथार्थ पुरुषार्थ करके हम भूतकाल के कर्मों का भोग सहन करने की शक्ति धारण कर सकते हैं और भविष्य में अच्छी प्रापति के लिए पुरुषार्थ कर सकते हैं। भूतकाल का भोग सहज सहन करके पूरा करने के लिए आत्मिक स्वरूप में स्थित होना अति आवश्यक है और भविष्य में श्रेष्ठ प्रालब्ध के लिए श्रेष्ठ कर्म करना अति आवश्यक है क्योंकि श्रेष्ठ कर्म ही श्रेष्ठ प्राप्ति का आधार है।

ये विश्व-नाटक कर्म और फल, पुरुषार्थ और प्रालब्ध पर आधारित है। विश्व-नाटक में सारी घटनायें पूर्व निश्चित होते हुए भी आत्मा को कोई भी सुख या दुख बिना कर्म के हो नहीं सकता। इस सृष्टि को कर्म-क्षेत्र भी कहा गया है और इस कर्मक्षेत्र पर कर्म करना आत्मा का स्वभाव है अर्थात् बिना कर्म के कोई आत्मा एक सेकण्ड भी यहाँ नहीं रह सकती है और आत्मा के द्वारा किया गया कोई भी कर्म निष्फल अर्थात बिना फल के नहीं हो सकता है। इसलिए कहा गया है - Events can't be changed, but we can change our attitude towards events. इस सत्य को समझना और समझकर यथार्थ पुरुषार्थ करना हर आत्मा का कर्तव्य है।

विश्व-नाटक में बहुत गुह्य रहस्य हैं, उनको जानने के लिए भी पुरुषार्थ करना ही होता है।

आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, इसलिए अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को परमानन्द की अनुभूति होती है, उस स्थिति में स्थित होने के लिए भी आत्मा को पुरुषार्थ करना ही होता है।

ये विश्व-नाटक कर्म और फल पर आधारित है, इसलिए पुरुषार्थ अर्थात् कर्म के बिना इस कर्मक्षेत्र पर कोई आत्मा रह नहीं सकती है, इसलिए जब तक हम इस कर्मक्षेत्र पर हैं, तब तक श्रेष्ठ संकल्प रखकर पुरुषार्थ करने वाले को ही श्रेष्ठ प्रालब्ध की प्राप्ति होती है।

जैसे हमने इस विश्व-नाटक के राज़ को जाना है, वह राज़ अपने दूसरे भाई-बहनों को समझाना भी हमारा परम कर्तव्य है और ये समझाना भी एक पुरुषार्थ है, जो ज्ञानी आत्माओं को करना ही है, जिसके लिए बाबा ने हमको श्रीमत दी है।

''ड्रामा में जो कल्प पहले हुआ था, वह फिर रिपीट होता है। ऐसे नहीं कि ड्रामा पर रुक जाना है कि ड्रामा में होगा तो मिलेगा। ... हर एक चीज के लिए मनुष्य को पुरुषार्थ तो करना ही पड़ता है। पुरुषार्थ बिगर तो पानी भी मिल न सके। सेकण्ड बाई सेकण्ड जो पुरुषार्थ चलता है, उस अनुसार प्रालब्ध मिलती है। यह है बेहद के सुख के लिए बेहद का पुरुषार्थ करना।''

सा.बाबा 15.01.10 रिवा.

''विनाश तो जरूर होना है। बॉम्बस न छूटें, विनाश न हो -ऐसा हो नहीं सकता। तुम्हारे लिए नई दुनिया जरूर चाहिए। यह ड्रामा में नूँध है, इसलिए तुमको बहुत खुशी होनी चाहिए।... तुम बच्चों को ड्रामा का ज्ञान होने के कारण तुम हिलते नहीं हो, साक्षी होकर सारा देखते हो।... यह सब विचार सागर मन्थन करना होता है।''

सा.बाबा 4.02.09 रिवा.

''अपने को देखना भी है कि हम कितनी धारणा कर रहे हैं?... देहाभिमान से हम कहाँ तक निकलते जा रहे हैं?... कोई विकारी ख्यालात तो नहीं आये?... टाइम वेस्ट तो नहीं किया? बाप का फरमान है - मामेकम् याद करो। अगर याद नहीं करते तो नाफरमानबरदार हो जाते हो।''

सा.बाबा 4.02.09 रिवा.

''यह बेहद का बड़ा नाटक है। इस ड्रामा में हम सब पार्टधारी हैं। सब नम्बरवार एक्टर्स हैं। ... रचयिता बाप ही आकर अपना और रचना का राज़ समझाते हैं। ... भूख मरना ही पड़ेगा, अनाज-पानी आदि कुछ नहीं मिलेगा। ... इस खेल को तुम बच्चों ने ही समझा है और किसको भी पता नहीं है।''

सा.बाबा 4.02.09 रिवा.

अन्त समय की भयावह परिस्थिति को साक्षी होकर देखने, सहन करने के लिए शक्ति धारण करने का अभी ही पुरुषार्थ करना होता है, उस समय कोई पुरुषार्थ नहीं हो सकेगा।

''तुम जानते हो यह 5 हजार वर्ष का रील है, जो फिरता रहता है। जो कुछ पास हुआ, वह ड्रामा। भूल हुई, ड्रामा। फिर आगे के लिए अपना रजिस्टर ठीक कर देना चाहिए। फिर आगे रजिस्टर खराब नहीं होना चाहिए। मेहनत करेंगे, तब इतना ऊंच पद मिलेगा।''

सा.बाबा 18.12.09 रिवा.

''बाप कहते हैं -जो पुरुषार्थ नहीं करते हैं, उनको भी वर्सा मिलेगा। ब्रह्माण्ड के मालिक तो सब बनेंगे। सब आत्मायें ड्रामा अनुसार निर्वाणधाम में आयेंगी। भल कुछ भी न करें।... तुम जानते हो कि यह बना-बनाया ड्रामा है, इसको रिपीट करना ही है।''

सा.बाबा 18.12.09 रिवा.

''ड्रामा के निश्चय से एक सेकेण्ड में समस्या परिवर्तन हो समाधान रूप बन जाती है। हलचल में नहीं आयेंगे, अचल रहेंगे क्योंकि ड्रामा के ज्ञान से अचल-अडोल बन जाते हैं।... इस पुरुषार्थी जीवन में ड्रामा का निश्चय भी आवश्यक है।''

अ.बापदादा 15.12.09

''सब तो एक समान सतोप्रधान नहीं बनेंगे। कल्प पहले मिसल ही सब पुरुषार्थ करेंगे। परम आत्मा का भी ड्रामा में पार्ट नूँधा हुआ है, जो ड्रामा में नूँध है, वह होता रहता है। इसमें कुछ बदल नहीं हो सकता है। रील फिरता ही रहता है। बाप कहते हैं - आगे चलकर तुमको और भी गुह्य-गुह्य बातें सुनायेंगे।''

सा.बाबा 6.10.09 रिवा.

''यहाँ तुम बाप के सम्मुख बैठे हो। यहाँ यह महसूसता आती है। तुम जानते हो अभी हम पुरुषार्थ कर रहे हैं, पुरुषार्थ कराने वाले को भी खुशी होती है।... जैसे नाटक के एक्टर्स समझते हैं कि अब नाटक पूरा होने वाला है। तुम भी जानते हो अभी बाप आये हैं, हम आत्माओं को वापस घर ले जाने के लिए।''

सा.बाबा 7.10.09 रिवा.

''बाप शिक्षा देते रहेंगे, पुरुषार्थ कराते रहेंगे। भल ड्रामा भी कहते रहेंगे। ड्रामा अनुसार बिल्कुल ठीक ही चल रहा है, फिर आगे के लिए भी समझाते रहेंगे।... बाबा भल जानते हैं कि ड्रामा बिल्कुल एक्यूरेट चल रहा है, परन्तु आगे के लिए तो समझाते रहेंगे ना, पुरुषार्थ कराते रहेंगे।'

सा.बाबा 3.09.09 रिवा.

''इन आंखों से कुछ भी ईविल न देखो, सिविल आंखों से ही देखो।... जिन्होंने कल्प पहले पुरुषार्थ किया है, वे करके ही दिखायेंगे। ठण्डे मत बनो। सिवाए एक बाप के और कोई को याद न करो।''

सा.बाबा 11.08.09 रिवा.

''बच्चों को पुरुषार्थ करना होता है कि हम सबसे जास्ती पद पायें।... ड्रामा अनुसार पुरुषार्थ

जरूर करना होता है। सारा मदार पुरुषार्थ पर है।... ड्रामा पर छोड़ नहीं देना है। यह तो समझ की बात है।''

सा.बाबा 17.07.09 रिवा.

''अच्छा या बुरा जो ड्रामा में था, सो पास्ट हुआ। कोई बात का चिन्तन नहीं करना है। हम आगे बढ़ते रहते हैं। यह बेहद का ड्रामा है। सारा चक्र पूरा होकर फिर रिपीट होगा। जो जैसा पुरुषार्थ करते हैं, ऐसा ही पद पाते हैं। ... भक्ति मार्ग में माँगते ही रहे, यह सब ड्रामा में बना हुआ है, बाप सिर्फ समझाते हैं। कुछ चलता है, वह ठीक है। फिर भी पुरुषार्थ कराते रहते हैं। ... कब-कब बाप भी किसमें प्रवेश कर मदद करते हैं। ... फिर कोई को तो अपना अहंकार आ जाता है। यह मदद करना भी ड्रामा में उनका पार्ट नूँधा हुआ है। ड्रामा बड़ा विचित्र है, इसे समझने में भी बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए।''

सा.बाबा 18.02.09 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और कल्प-वृक्ष एवं त्रिलोक

पुरुषार्थ और कल्प-वृक्ष का गहरा सम्बन्ध है, इसलिए ही बाबा हमको अन्य सब ज्ञान के साथ कल्प-वृक्ष का भी ज्ञान दिया है। ये संगमयुग पुरुषार्थ का समय है। अपने पुरुषार्थ में तीव्रता के लिए कल्प-वृक्ष के ज्ञान की धारणा अति आवश्यक है। कल्प-वृक्ष के ज्ञान की धारणा हमको विश्व-कल्याण की सेवा के लिए प्रेरित करता है क्योंकि हम इस सृष्टि रूपी कल्प-वृक्ष के फाउण्डेशन और तना है अर्थात् सारे वृक्ष का आधार हमारे ऊपर है। वृक्ष का फाउण्डेशन और तना शक्तिशाली होगा, तब वह आने वाले तूफानों को सहन करने में समर्थ होगा और वृक्ष फूलेगा और फलेगा। यह अभिधारणा हमारे पुरुषार्थ में तीव्रता लाती है, हमको शक्तिशाली बनने के लिए प्रेरित करती है।

कल्प-वृक्ष का ज्ञान विश्व-परिवार को प्रत्यक्ष करता है अर्थात् हमको आभास दिलाता है कि यह सारा विश्व एक परिवार है और इस विश्व-परिवार के हम पूर्वज हैं तो जैसे पूर्वजों का सारे परिवार की पालना करना, उनको सुखी-समृद्ध बनाना कर्तव्य होता है, वैसे ही हम पूर्वजों का भी यह परम कर्तव्य है सारे विश्व-परिवार की आत्मायें सुखी-समृद्ध बनें परन्तु जो स्वयं सुखी-समृद्ध होगा, सम्पन्न और सन्तुष्ट होगा, वही तो अन्य आत्माओं को भी सुखी-समृद्ध, सम्पन्न और सन्तुष्ट बना सकता है। तो ये कल्प-वृक्ष का ज्ञान हमको सर्व आत्माओं के साथ के सम्बन्ध का ज्ञान कराता है और सर्वात्माओं के प्रति प्रेम जागृत करता है, अपने को और सर्वात्माओं को सुखी-सम्पन्न बनाने के लिए प्रेरित करता है और ये प्रेरणा हमारे पुरुषार्थ में तीव्रता लाती है। कल्प-वृक्ष का ज्ञान ही हमारे अन्दर विश्व-बन्धुत्व की भावना जागृत करता है, जो भारतीय सभ्यता का प्राण है क्योंकि भारत में ही भगवान आकर इस कल्प-वृक्ष का

ज्ञान देते हैं, इसको नवजीवन प्रदान करते हैं।

अभी इस कल्प-वृक्ष की बीजरूप परमात्मा पिता हमारे द्वारा कलम लगा रहे हैं। हम अपने पार्ट भी कलम लगा रहे हैं और इस सारे कल्प-वृक्ष की कलम लगाने में भी परमात्मा पिता के साथ सहयोगी हैं। जब इस सत्य का ज्ञान हमारी बुद्धि में जागृत होता है तो हमारे पुरुषार्थ में स्वत: ही तीव्रता आती है।

''इस ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानने से तुम यह लक्ष्मी-नारायण बनते हो।... बाप बीजरूप नॉलेजफुल है ... तुम सब भी मुसाफिर हो। सब इकट्ठे तो पार्ट बजाने नहीं आयेंगे।... अब हम आत्माओं को नॉलेज मिली है। हम बीज और झाड़ के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं।''

सा.बाबा 5.01.09 रिवा.

''पहले कितना छोटा बगीचा था, फिर वृद्धि होते-होते कलियुग के अन्त तक कितना बड़ा हो जाता है और 5 विकारों की प्रवेशता के कारण वह कांटों का जंगल बन जाता है। ... अब विनाश सामने खड़ा है, इसलिए अब जल्दी-जल्दी पुरुषार्थ करना है।''

सा.बाबा 11.08.09 रिवा.

''तुम बाप के बनकर बाप से वर्सा लेने का पुरुषार्थ करते हो। तुम्हारी माया के साथ गुप्त लड़ाई चलती है। ... भक्ति और ज्ञान का राज़ अभी तुम बच्चों ने समझा है। सीढ़ी और झाड़ में यह सब समझानी क्लियर है।''

सा.बाबा 4.7.09 रिवा.

''तुम सब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार रुद्र माला में जाते हो। माला अर्थात् झाड़। परमात्मा इस मनुष्य सृष्टि का बीज है। यह तुम बच्चे जानते हो कि यह झाड़ कैसे वृद्धि को पाता है, कैसे पुराना होता है। यह सब बाप ने आकर समझाया है।''

सा.बाबा 4.4.09 रिवा.

''रुहानी बाप कहते हैं - हे रुहानी राही, रुहानी बाप जरूर रूहों को ही कहेंगे कि बच्चे, थक मत जाना।... बाप कहते हैं - हे बच्चे, अब एक मुझ बाप के साथ बुद्धि का योग लगाओ और ज्ञान भी देते हैं।... यह है नर से नारायण बनने की सच्ची कथा। तुम पहले स्वीट होम में जायेंगे, फिर विष्णुपुरी में आयेंगे। इस समय तुम हो ब्रह्मापुरी में।''

सा.बाबा 27.11.08 रिवा.

''वह है निराकारी पियरघर, वहाँ यह सब नॉलेज भूल जाती है। नॉलेज के संस्कार निकल जाते हैं, बाकी प्रालब्ध के संस्कार रह जाते हैं। ... प्रालब्ध मिल गई, फिर ज्ञान खत्म हो जाता है।... वहाँ तुम्हारे संस्कार ही प्रालब्ध के हो जायेंगे, अभी हैं पुरुषार्थ के संस्कार। ऐसे नहीं कि वहाँ पुरुषार्थ और प्रालब्ध दोनों के संस्कार रहेंगे। नहीं, वहाँ यह ज्ञान नहीं रहता है।''

सा.बाबा 27.11.08 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और अन्न एवं संग

पुरुषार्थ और अन्न का गहरा सम्बन्ध है। पुरुषार्थ का अन्न पर गहरा प्रभाव होता है और अन्न का पुरुषार्थ पर गहरा प्रभाव होता है। शुद्ध पदार्थों से बना हुआ, श्रेष्ठ कर्म से अर्जित, श्रेष्ठ वातावरण में परमात्मा की याद में ग्रहण किये हुए अन्न से पुरुषार्थ में तीव्रता आती है और जब पुरुषार्थ अचछा होता है तब ही आत्मा परमात्मा की याद में भोजन बना सकती है अर्थात् पुरुषार्थ का अन्न पर प्रभाव होता है। श्रेष्ठ पुरुषार्थी ही अन्न की श्रीमत अनुसार परहेज़ रख सकती है। श्रेष्ठ पुरुषार्थी का ही इन्द्रियों पर नियन्त्रण होगा और जिसका अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण होगा, वही सन्तुलित अन्न ग्रहण करेगा, जो पुरुषार्थ की सफलता में बहुत सहयोगी होता है।

पुरुषार्थ में मनवांच्छित सफलता प्राप्त करने के लिए जैसे अन्न की परहेज़ आवश्यक है, वैसे ही संग की भी परहेज़ बहुत आवश्यक है। जो अन्न और संग दोनों की अच्छी रीति परहेज़ रखते हैं, उनका पुरुषार्थ सदा अच्छा चलता है और वे ही अच्छी प्रालब्ध के अधिकारी बनते हैं।

''वास्तव में तुमको क्लास में इस तरह बैठना चाहिए, जो अंग-अंग से न लगे।... तुम इस दुनिया का कुछ भी न सुनो और न पढ़ो। उन्हों का संग भी न करो। जो अच्छी रीति पढ़ते हैं, उनका ही संग करना चाहिए।'' सा.बाबा 3.03.09 रिवा.

''खान-पान की आसक्ति भी नहीं होनी चाहिए।... यज्ञ का जो मिले, वह मीठा समझकर खाना चाहिए। जबान ललचायमान नहीं करनी है। योग नहीं होगा तो कहेंगे फलानी चीज़ खानी चाहिए, नहीं तो बीमार पड़ जायेंगे।'' सा.बाबा 10.02.09 रिवा.

''जो प्रैक्टिकल पेपर में पास होते हैं, वे ही पास विद् ऑनर होते हैं। जो पास विद् ऑनर होते हैं, वे ही बापदादा के पास रहने वाले रतन बनते हैं।... यह भी हिम्मत रखनी है और इस हिम्मत को अविनाशी बनाने के लिए एक बात सदैव ध्यान में रखनी है कि कोई भी संगमदोष में अपने को लाने के बजाये, बचाते रहना है।'' अ.बापदादा 11.06.71

''संगदोष कई प्रकार का होता है। ... व्यर्थ संकल्पों वा माया की आकर्षण के संकल्पों में कभी फेल नहीं होना और फिर स्थूल सम्बन्धों के संगदोष... नहीं आना। कोई के वाणी के संगदोष में भी नहीं आना। ... अन्नदोष भी अपने मन को संग के रंग में लगा देता है। ... कर्म का भी संगदोष होता है। (संकल्प, सम्बन्ध-सम्पर्क, वाणी, अन्न और कर्म के संगदोष)''

अ.बापदादा 11.6.71

''अगर संगदोष के पेपर में पास हो गई तो समझो समीप आ सकती हो। अगर संगदोष में आ गई तो दूर हो जायेंगी। फिर न निराकारी वतन में, न अभी संगमयुग में और न भविष्य में पास रह सकेंगी। ... एक संगदोष से बचने से तीनों लोकों, तीनों कालों में बाप के समीप रहने का भाग्य प्राप्त कर सकती हो।''

अ.बापदादा 11.6.71

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और साकार ब्रह्मा बाबा

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और फॉलो मदर-फादर

ब्रह्मा बाबा हमारे पुरुषार्थी जीवन के आदर्श हैं क्योंकि शिवबाबा तो पुरुषार्थ कराने वाले हैं, सदा सम्पूर्ण और सम्पन्न हैं, इसलिए वे कभी कोई पुरुषार्थ करते नहीं हैं परन्तु ब्रह्मा बाबा पुरुषार्थ करते हैं। शिवबाबा की श्रीमत पर कैसे यथार्थ रीति पुरुषार्थ करना चाहिए, उसका आदर्श हैं। एक साकार ब्रह्मा बाप ही हैं, जो पुरुषार्थ करके सम्पूर्ण बने हैं, उनको ही आदर्श रूप में सामने रखना है। जो अभी तक सम्पूर्ण नहीं बनें हैं, उनसे हम गुण तो उठा सकते हैं परन्तु पुरुषार्थ का आदर्श उनको ही बनाना है, जो पुरुषार्थ करके सम्पूर्ण बनें हैं।

परमात्मा है आत्माओं को पुरुषार्थ कराने वाला और ब्रह्मा बाबा है शिवबाबा की श्रीमत पर पुरुषार्थ करके बच्चों को पुरुषार्थ का विधि-विधान सिखाने वाला। ब्रह्मा बाबा अपना अनुभव भी सुनाते हैं कि कैसे मैं पुरुषार्थ करता हूँ।

शिवबाबा है पुरुषार्थ कराने वाला, उनको किसी प्रकार का पुरुषार्थ नहीं करना होता है। उनके अतिरिक्त और सभी को पुरुषार्थ करना पड़ता है, जिस पुरुषार्थ के आधार पर उनको फल मिलता है। यह साकार ब्रह्मा बाबा भी अपने पुरुषार्थ के फलस्वरूप ही नारायण बनते हैं और स्वर्ग में नम्बरवन प्रालब्ध पाते हैं।

मातेश्वरी भी लक्ष्मी अपने पुरुषार्थ से ही बनत्झबा 2.10.09 रिवा.

''मुख्य बात है ही गीता के भगवान की। सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी देवी-देवताओं और ब्राह्मणों का यह एक ही शास्त्र गीता है।... बाप बच्चों को पुरुषार्थ कराते रहते हैं। यह बाबा भी पुरुषार्थी है। पुरुषार्थ कराने वाला शिवबाबा है। इसमें विचार सागर मन्थन करना होता है।''

सा.बाबा 2.10.09 रिवा.

''बाप समझते हैं कि समय आपको परिवर्तन करे, उससे पहले आप पुरुषार्थ से प्राप्ति की प्रालब्ध अभी से अनुभव करो। क्योंकि समय आपको सिखाने वाला नहीं है, समय आपका टीचर नहीं है। ... बाप, शिक्षक और सत्गुरु है। जैसे आपकी जगदम्बा ने किया। दो शब्द में

नम्बर ले लिया। बाप का कहना और जगदम्बा कर करना। ऐसा तीव्र पुरुषार्थ किया और नम्बर ले लिया। तो फॉलो मदर जगदम्बा।''

अ.बापदादा 11.2.10

''गायन है - खुशी जैसी खुराक नहीं। तुमको तो अथाह खुशी में रहना चाहिए। तुम जानते हो हभी हम 21 जन्मों के लिए सदा सुखी बनते हैं। ... बाबा अपना अनुभव सुनाते हैं। बाबा के पास कितने समाचार आते हैं, खिट-खिट चलती है। बाबा को कोई बात का दुख थोड़ेही होता है। सुना, अच्छा यह भी भावी।''

सा.बाबा 6.11.09 रिवा.

''बाबा ने हमारा रथ लोन लिया है, तो बाबा इस रथ की खातिरी करेंगे ना। ... बाबा जब स्नान करते हैं तो समझते हैं - हम भी स्नान करते हैं, बाबा को भी इसे स्नान कराना है क्योंकि उसने भी इस रथ का लोन लिया है। ... बाबा इस रथ को खिलाते हैं परन्तु स्वयं खाते नहीं है। यह सब किस्म-किस्म के ख्यालात चलते हैं।... यह अनुभव की बात है ना।''

सा.बाबा 22.11.08 रिवा.

''ब्रह्मा बाप के ऊपर कितनी जिम्मेवारी थी... ब्रह्मा बाप ने शिवबाबा की मदद से प्रैक्टिकल में दिखाया कि करावनहार करा रहे हैं, हम करनहार बन बाप समान न्यारे और प्यारे हैं। बाप समान बनना चाहते हो तो चेक करो... यह करावनहार का पाठ चलते-फिरते पक्का है। मैं करनहार हूँ, ट्रस्टी हूँ, करावनहार मालिक शिवबाबा है।''

अ.बापदादा 31.12.09

''तुम ब्राह्मण कुल भूषण ही हीरो-हीरोइन का पार्ट बजाते हो। ड्रामा में सबसे ऊंच पार्ट तुम बच्चों का है। ऐसा ऊंच बनाने वाले बाप के साथ बहुत लव चाहिए। ... रात को उठकर बाबा से बातें करनी चाहिए। यह बाबा अपना अनुभव बतलाते रहते हैं। मैं बहुत बाबा को याद करता हूँ, बाबा की याद में आँसू भी आ जाते हैं। हम क्या थे, बाबा आपने हमको क्या बना दिया!''

सा.बाबा 22.12.09 रिवा.

''बाप इस तन में आकर ब्रह्मा रूप से खेलते-कूदते भी हैं, घूमने भी जाते हैं। ... खेल में भी ब्रह्मा बाबा पुरुषार्थ करता है याद करने का। बाबा कहते हैं - मैं इनके द्वारा खेल रहा हूँ। चेतन्य तो है ना। तो ऐसे-ऐसे ख्यालात रखना चाहिए। ऐसे बाप के ऊपर बलि भी चढ़ना है।''

सा.बाबा 18.12.09 रिवा.

''ब्रह्मा बाप इतनी जिम्मेवारी निभाते हुए कार्य में कैसे रहा ? कर्म में भी फरिश्ता रूप रहा ना!... तो कभी फरिश्ता रूप में रहो, कभी निराकार स्थिति में रहो। यह प्रैक्टिस करो। कभी ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता बन जाओ और कभी शिव निराकार बाप को याद कर निराकारी

स्थिति में स्थित हो जाओ।... सारे दिन में कम से कम 12 बारी फरिश्ता बनो और 12 बारी निराकरी स्थिति में स्थित रहो।... ढीला नहीं छोड़ना, दृढ़ निश्चय से करो कि हमको इसमें नम्बरवन होना है।''

अ.बापदादा 15.12.09

''शिवबाबा इनके द्वारा तुम्हारा कितना श्रृंगार करते हैं।... बाप इनके बाजू में बैठा है तो भी इनको अपनी मेहनत करनी होती है, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने का पुरुषार्थ करना पड़ता है।''

सा.बाबा 11.12.09 रिवा.

''गायन है - फॉलो फादर। अब फॉलो किसको करना चाहिए। जैसे यह बाप को याद करते हैं, ये पुरुषार्थ करते हैं, इनको फॉलो करो। पुरुषार्थ कराने वाला तो बाप है। वह तो पुरुषार्थ करते नहीं हैं, वह पुरुषार्थ कराते हैं।... ऊंच पद पाना है तो अच्छी रीति बाप को याद करो, जैसे यह बाप करते हैं। यह फादर ही पुरुषार्थ करके सबसे ऊंच पद पाते हैं।''

सा.बाबा 13.11.09 रिवा.

''बापदादा के दिल की यही आश है कि... आपका चेहरा और चलन प्रत्यक्ष अनुभव कराये कि ये आत्मायें कोई विशेष हैं, न्यारे हैं और परमात्म-प्यारे हैं।... आपके सर्व खज़ाने-सम्पन्न चेहरे से, चलन से आपकी अलौकिकता का दूर से ही साक्षात्कार होगा। तो अभी अपना ऐसा पुरुषार्थ प्रत्यक्ष करो। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा।''

अ.बापदादा 25.10.09

''ब्रह्मा बाप ने अपना हर समय सफल किया, श्वांस-श्वांस, सेकण्ड-सेकण्ड सफल किया। तो बाप समान बनने के लिए इस वर्ष का लक्ष्य क्या रखेंगे ? सफल करना है और सफलतामूर्त बनना ही है। सफलता हमारे गले का हार है, सफलता हमारे बाप का वर्सा है।''

अ.बापदादा 31.12.08

''बच्चे जो सच्ची सर्विस करनी चाहिए, वह नहीं करते हैं। बाकी स्थूल सर्विस में ध्यान चला जाता है। भल ड्रामा अनुसार होता है परन्तु बाप फिर भी पुरुषार्थ तो करायेंगे ना। ... माया भी रुस्तम से रुस्तम होकर लड़ती है। बाबा अपना भी बताते हैं। मैं रुस्तम हूँ, जानता हूँ मैं बेगर टु प्रिन्स बनने वाला हूँ, तो भी माया सामना करती है। माया किसको भी छोड़ती नहीं है।''

सा.बाबा 12.10.09 रिवा.

''बड़ी मन्जिल है। यह युद्ध का मैदान है, इसमें माया बहुत विघ्न डालती है। ... इनके तो बाजू में बाप बैठा है। यह झट सुनते हैं और धारण करते हैं, फिर यही ऊंच पद पाते हैं। ... सबसे जास्ती मेहनत इनको करनी होती है। जितना जास्ती बड़ा पहलवान, उतना जास्ती माया परीक्षा लेती है।''

सा.बाबा 26.09.09 रिवा.

''याद की ही मेहनत है। याद में रहना जैसे तुमको डिफीकल्ट लगता है, वैसे इनको भी लगता है। इसमें कृपा की कोई बात नहीं है। बाप कहते हैं - हमने इनका तन लोन लिया है, उसका हिसाब-किताब दे देंगे। बाकी याद का पुरुषार्थ तो इनको भी करना है।''

सा.बाबा 26.09.09 रिवा.

''जितना श्रीमत पर पुरुषार्थ करेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे। यह ब्रह्मा की मत नहीं है। यह तो पुरुषार्थी है परन्तु इनका पुरुषार्थ जरूर इतना ऊंच है, तब तो नारायण बनते हैं। तो बच्चों को भी यह फॉलो करना है।... आपही अपनी आत्मा की ज्योति जगाना है।''

सा.बाबा 24.09.09 रिवा.

''अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर तुम जितना पवित्र बनेंगे और पढ़ेंगे, उतना सतयुग में ऊंच पद पायेंगे। ..जो सम्पूर्ण बनेंगे, अच्छी रीति पढ़कर औरों को पढ़ायेंगे, ऊंच पद भी वे ही पायेंगे। ... पढ़ाने वाला है शिवबाबा, यह नहीं पढ़ाते हैं। वह इनके द्वारा पढ़ाते हैं। इसको गाया जाता है भगवान का रथ, भाग्यशाली रथ।''

सा.बाबा 19.09.09 रिवा.

''तुमको तो और ही जास्ती तूफान आयेंगे। नहीं तो बच्चों को कैसे समझा सकेंगे। ये सब तूफान तो तुमसे पास होंगे। मैं उनके इतने नज़दीक बैठे हुए भी कर्मातीत अवस्था को पा नहीं सकता हूँ तो फिर दूसरा कौन पायेगा!... भल कोई कितनी भी कोशिश करे और कहे कि बाबा मैं आपसे पहले कर्मातीत अवस्था को पाकर, यह बनकर दिखाते हैं परन्तु हो नहीं सकता। यह ड्रामा बना-बनाया है।''

सा.बाबा 18.08.09 रिवा.

''इनको विष्णु का साक्षात्कार हुआ तो कोई नारायण थोड़े ही हो गया, पुरुषार्थ तो जरूर करना होता है। ... तुम भी उनकी राजधानी में थे, फिर ऐसा बनने का पुरुषार्थ करते हो तो अच्छी रीति फॉलो करना चाहिए।''

सा.बाबा 19.08.09 रिवा.

''पहले नम्बर में तो एक को ही जाना है। यह भी कहते हैं - हमको कितना माथा मारना पड़ता है। माया तो और ही रुस्तम बनकर आती है।... समझता हूँ कि मेरे साथ बाबा है, फिर भी मुझे याद करना पड़ता है।... नहीं, मुझे भी बाबा कहते हैं - निरन्तर याद करो।''

सा.बाबा 18.08.09 रिवा.

''इनको भी पुरुषार्थ तो करना ही होता है, जितना तुम बच्चों को करना पड़ता है। यह जितना नज़दीक है, उतना फिर इनके ऊपर बोझा भी बहुत है।... बाप तो है ही सम्पूर्ण, इनको सम्पूर्ण बनना है। इनको सबकी देखरेख करनी होती है।... भल दोनों इकट्ठे हैं तो भी इनको ख्याल तो होता है ना कि बच्चियों पर कितनी मार पड़ती है तो जैसे कि दुख होता है। कर्मातीत

अवस्था तो पिछाड़ी में होगी, तब तक ख्याल होता है।''

सा.बाबा 29.07.09 रिवा.

''सभी बातों में, कदम-कदम में समानता रखो। लेकिन समानता कैसे आयेगी ? ... साकार में क्या विशेष्ता थी ? एक तो सदैव अपने को आधारमूर्त समझो। सारे विश्व के आधारमूर्त। इससे क्या होगा ? जो कार्य करेंगे, जिममेवारी से करेंगे। ... और दूसरा उद्धारमूर्त बनना है। जितना अपना उद्धार करेंगे, उतना ही औरों का भी उद्धार कर सकेंगे और जितना औरों का उद्धार, उतना अपना भी उद्धार करेंगे।''

अ.बापदादा 6.08.70

''बाबा का इस साधन-सम्पत्ति में कोई मोह नहीं है। इसने अपने पैसे में ही मोह नहीं रखा, सब कुछ शिवबाबा को दे दिया, तो शिवबाबा के धन में मोह कैसे रखेंगे। यह ट्रस्टी है। ... अब तुम बच्चे जानते हो कैसे बेगर बनना है। कुछ भी याद न आये, आत्मा अशरीरी बन जाये। इस शरीर को भी अपना न समझे।''

सा.बाबा 22.05.09 रिवा.

''जैसे साकार रूप के सामने आने से ही हर एक को भावना अनुसार साक्षात्कार वा अनुभव होता था। ऐसे आप लोगों के द्वारा भी... साक्षात्कार होंगे। ऐसे दर्शनीय मूर्त वा साक्षात्कार मूर्त तब बनेंगे, जब अव्यक्त आकृति रूप दिखायेंगे। ... प्रकाशमय रूप दिखाई दे। जब लाइट ही लाइट देखेंगे तो स्वयं भी लाइट रूप हो जायेंगे।''

अ.बापदादा 2.7.70

''यह दादा विश्व का मालिक बनते हैं, तो इनमें जरूर खूबियाँ होंगी। परन्तु कोई की तकदीर में नहीं है तो तदवीर भी नहीं करते। ... बाप यह भी जानते हैं कि सब तो एक जैसे ऊंच नहीं बनेंगे, फिर भी बाप पुरुषार्थ तो करायेंगे। जितना हो सके पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाओ। नहीं तो कल्प-कल्पान्तर नहीं पा सकेंगे।''

सा.बाबा 23.03.09 रिवा.

''तुम आधा कल्प देहाभिमानी रहे हो, अब एक जन्म देही-अभिमानी बनने में ही मेहनत है। इनके लिए तो बहुत सहज है ... बाप की सिर पर सवारी है। उनकी बहुत महिमा करता हूँ। बहुत प्यार से बातें करता हैं - बाबा, आप कितने मीठे हो, हमको कल्प-कल्प कितना सिखलाते हो। ... कल हमारे में कुछ भी ज्ञान नहीं था, अभी आपने सारा ज्ञान दिया है।''

सा.बाबा 2.03.09 रिवा.

''संगमयुग की लास्ट स्टेज फरिश्तेपन के संस्कार इमर्ज करो। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, फॉलो फादर करना है ना। लास्ट में कई बच्चों ने अनुभव किया कि समाचार सुनाने आये लेकिन समाचार से परे, आवाज़ से परे स्थिति का अनुभव ब्रह्मा बाप द्वारा किया। ... क्या

बोलना था, वही भूल जाता था। यह है फरिश्ता अवस्था।''

अ.बापदादा 5.02.09

''रुस्तम से माया भी रुस्तम होकर लड़ती है। बाबा अपना अनुभव भी बतलाते हैं। मैं रुस्तम हूँ, जानता हूँ मैं बेगर टू प्रिन्स बनने वाला हूँ तो भी माया सामना करती है। माया किसको छोड़ती नहीं है। पहलवानों से तो और ही लड़ती है।''

सा.बाबा 27.10.04 रिवा.

''आजकल ब्राह्मण आत्मायें सुनने के बजाये प्रत्यक्ष प्रमाण देखना चाहती हैं।... कौन बना है, सबको देख लिया ... सब चलता है। लेकिन ये अलबेलेपन के बोल हैं, यथार्थ नहीं हैं। यथार्थ क्या है ? फॉलो ब्रह्मा बाप। जेसे ब्रह्मा बाप ने स्वयं सदा अपने को निमित्त एग्जॉम्पुल बनाया, सदा यह लक्ष्य लक्षण में दिखाया।''

अ.बापदादा 2.12.93

''देही-अभिमानी ही ठीक पुरुषार्थ करेंगे, उनको ही धारणा अच्छी रीति हो सकती है। इसलिए कहा जाता है - फॉलो फादर। ... यह कौनसा फादर कहते हैं, सो तुमको थोड़ेही पता पड़ता है क्योंकि बाप-दादा दोनों इस शरीर में हैं। एक जो एक्ट (पुरुषार्थ करते हैं) में आते हैं, उनको फॉलो किया जाता है।'' (ब्रह्मा बाबा को पुरुषार्थ में फॉलो करना है और शिवबाबा को याद करना है)

सा.बाबा 5.11.08 रिवा.

''नॉलेजफुल, रहम-तरस और रुहाब, इन तीनों गुणों में प्रैक्टिकल में समानता है तो फिर सफलता बहुत जल्दी और सहज मिलती है। ... अभी लक्ष्य ये रखना है कि तीनों कर्तव्य (स्थापना, पालना और विनाश) करने के लिए इन तीनों गुणों की मूर्त बनना है।... बाप सर्व गुणों में सम्पन्न है, बच्चों में अभी कोई में कोई और कोई में कोई गुण विशेष है।''

अ.बापदादा 8.06.71

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और स्वाध्याय अर्थात् पठन-पाठन

स्वाध्याय पुरुषार्थ का विशिष्ट स्तम्भ है। स्वाध्याय पर ही पुरुषार्थ का आधार होता है। स्वाध्याय से पुरुषार्थी को दिशा निर्देश भी मिलता है, तो पुरुषार्थ में आने वाले विघ्नों से सावधान रहने की सावधानी भी मिलती है। इसलिए बाबा ने नित्य पढ़ाई पढनें और उसको धारण करने की श्रीमत दी है और हमको क्या पढ़ना चाहिए और क्या नहीं पढ़ना चाहिए, उसका भी ज्ञान दिया है, उसके लिए भी श्रीमत दी है।

''जब खुद पारसबुद्धि बनें, तब तो दूसरों को भी बनायें। पुरुषार्थ अच्छा करना चाहिए। इसमें लज्जा की बात नहीं है। ... जब तक बाप को यथार्थ रीति नहीं पहचाना है, तब तक वह ताक़त

आ नहीं सकती। बाप कहते हैं - वेदों-शास्त्रों आदि को पढ़ने से मनुष्य कुछ भी सुधरते नहीं है, दिन-प्रतिदिन और ही बिगड़ते आये हैं। सतोप्रधान से तमोप्रधान ही बनते जाते हैं।''

सा.बाबा 30.12.09 रिवा.

''यह पढ़ाई का समय है। बुद्धि में ज्ञान का मन्थन चलना चाहिए। तुमको औरों को भी पढ़ाना है। सवेरे उठ विचार सागर मन्थन करना है। सवेरे विचार सागर मन्थन अच्छा होता है। जो समझाने वाले होंगे, उनका ही मन्थन चलेगा। नई-नई टॉपिक्स, प्वाइन्ट्स आदि निकलती रहेंगी।''

सा.बाबा 3.03.09 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और मुरली

बाबा ही आकर यथार्थ पुरुषार्थ कराते हैं और पुरुषार्थ का विधि-विधान बताते हैं, जिस अनुसार पुरुषार्थ करने से आत्मा की चढ़ती कला होती है और सारा विश्व पावन स्वर्ग बनता है। बाबा ये सब बातें मुरली के द्वारा ही बताते हैं, इसलिए गायन है कि मुरली में जादू अर्थात् मुरली के द्वारा बाबा जो पुरुषार्थ के लिए शिक्षा देते हैं, उसको धारण करने, उस पर चलने से हम मनुष्य से देवता बनते हैं। वास्तव में मुरली को यथार्थ रीति पढ़ना-सुनना भी एक विशेष पुरुषार्थ है और उसमें बताये विधि-विधानों की पालना करना भी पुरुषार्थ है। बाबा ने कहा है - मुरली लाठी है, जिससे आत्मा की कमी-कमजोरी सब निकल जाती है।

''इसमें किसकी पूछ पकड़कर पार होने की बात नहीं है। इसमें तो जो करेगा, सो पायेगा। जो पुरुषार्थ करेगा, उसको 21 पीढ़ी की प्रालब्ध मिलेगी।... इसमें तो ज्ञान का नशा चाहिए। बाप रोज़ ज्ञानामृत का प्याला पिलाते हैं। धारण करने के लिए दिन-प्रतिदिन ऐसी प्वाइन्ट्स मिलती रहती है, जो बुद्धि का ताला ही खुल जाता है, इसलिए मुरली कैसे भी रोज पढ़नी-सुननी है।'

सा.बाबा 28.12.09 रिवा.

''हाइएस्ट चार्ट उनका होता है, जो कदम-कदम श्रीमत पर चलते हैं। ... श्रीमत का इतना रिगार्ड नहीं है, मुरली मिलती है, फिर भी नहीं पढ़ते हैं। जो मुरली नहीं पढ़ते हैं, उनको दिल में लगता तो जरूर होगा कि बाबा सच कहते हैं। हम मुरली नहीं पढ़ते हैं तो औरों को क्या सिखलायेंगे।''

सा.बाबा 8.12.09 रिवा.

''सारा मदार पुरुषार्थ पर है। बाप तो हर बच्चे को पुरुषार्थ कराते हैं। कोई तो पुरुषार्थ कर बाप की दिल को जीत लेते हैं, कोई तो पुरुषार्थ करते-करते मर भी पड़ते हैं। ... कोई समय ऐसी गुह्य बातें निकलती हैं, जो पुराना संशय ही उड़ जाता है। इसलिए पढ़ाई कब मिस नहीं करनी चाहिए।''

सा.बाबा 2.12.09 रिवा.

''कोई-कोई बच्चे कहते हमारा तो शिवबाबा से ही कनेक्शन है परन्तु शिवबाबा जो सुनाते हैं, वह भी सुनना है, ना कि सिर्फ शिवबाबा को याद ही करना है।... बहुत हैं, जो मुरली को पढ़ते-सुनते नहीं हैं। मुरली में तो नई-नई बातें निकलती हैं, जो सब बहुत समझने की हैं। बाप की याद में बैठते हो तो यह भी याद आना चाहिए कि वह हमारा टीचर और सतगुरु भी है।''

सा.बाबा 21.11.09 रिवा.

''बाप से मुरली द्वारा ही खज़ाने मिलते हैं। उसमें भी दो प्रकार के बच्चे हैं। एक सुनने वाले और दूसरे हैं समाने वाले। कई बच्चे सुनकर बहुत खुश होते हैं लेकिन सुनना और समाना - दोनों में बहुत फर्क है। समाने वाले अनुभवी बन जाते हैं क्योंकि समाया हुआ समय पर कार्य में लगाते हैं अर्थात् खज़ाने को बढ़ाते रहते हैं। सुनने वाले वर्णन करते हैं - बहुत अच्छा सुनाया, बहुत अच्छी बात बोली बाबा ने, लेकिन समाने के बिना समय पर काम में नहीं ला सकते हैं। तो आप चेक करो - समाने वाले हैं?''

अ.बापदादा 24.03.09

आत्मा जो सुनती है, वह अन्दर ग्रहण होता है, वह याद आता है। जहाँ और सब बातें अन्दर होंगी, वहाँ परमात्मा की बात अन्दर नहीं जाती है।... सच्चा पुरुषार्थी न किसको देखता है और न किसकी बात सुनता है।... मुरली में है जादू, उसका जिसको अनुभव है, वह जादूगर बन जाता है और औरों को भी उसका रास्ता अवश्य बताता है।

दादी जानकी 21.3.09

मीटिंग में सात विशेष टॉपिक्स निकले, जिनमें मुख्य तीन बातें हैं- मुरली पर विशेष ध्यान रखना है, मुरली में सर्व समस्याओं का हल है। दूसरी बात जैसे सेवा के आदि के समय ज्ञान कम स्पष्ट होते भी साइलेन्स की शक्ति थी, जिससे इतने वारिस निकले, ऐसे अभी साइलेन्स की शक्ति बढ़ाने के लिए विशेष ध्यान देना है। तीसरी बात - ऐसी सेवा करनी है, जो विश्व की आत्मा को पता चले कि ब्रह्मा कुमारियों के द्वारा कोई आध्यात्मिक क्रान्ति हो रही है। आध्यात्मिकता का ज्ञान और महत्व उनको अनुभव है।

जयन्ति बहन 16.10.08

''जो सारा दिन इस सर्विस में बिज़ी रहेंगे, वे ही यथार्थ रीति याद भी कर सकेंगे। घड़ी-घड़ी बाप का परिचय देते रहेंगे तो बाप की याद भी रहेगी।... कई ऐसे भी हैं, जो मुरली भी नहीं सुनते हैं। मुरली सुनने का बहुत शौक होना चाहिए।... सारा मदार है योग और पढ़ाई पर। बाप का बनने के बाद हर बच्चे को ख्याल आना चाहिऐ कि हम बाप के बने हैं तो बाप का बनने के बाद स्वर्ग में क्या पद पायेंगे।''

सा.बाबा 8.03.10 रिवा.

''आजकल के जमाने के हिसाब से बातें बहुत बदलती जाती हैं, गवर्मेनट के कायदे भी बदलते हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है, इसलिए हर एक के जीवन में बातें तो आनी ही हैं, व्यर्थ बातें। तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। रोज की मुरली है श्रेष्ठ संकल्प।''

अ.बापदादा 15.3.10

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और विघ्न, निर्विघ्न स्थिति एवं विघ्न-विनाशक स्थिति

पुरुषार्थ और विघ्नों का गहरा सम्बन्ध है। जब आत्मा पुरुषार्थ करना आरम्भ करती है, तब ही माया के विघ्न पड़ते हैं, इसलिए गायन है कि जो चढ़ते हैं, वे ही गिरते हैं, जो चढ़ेंगे ही नहीं तो वे गिरेंगे भी कैसे। ऐसे ही जो पुरुषार्थ करते हैं, उनके सामने ही विघ्न आते हैं परन्तु जो एक बल, एक भरोसे पर रहकर दृढ़ संकल्प से पुरुषार्थ करते रहते हैं, उनके विघ्न सहज समाप्त हो जाते हैं और वे निविघ्न बन जाते हैं, जो विघ्नों से डरते हैं, वे कभी विघ्नों पर जीत नहीं पा सकते हैं और वे कभी निविघ्न स्थिति का अनुभव नहीं करते हैं। इस ब्राह्मण जीवन में विघ्न आना स्वाभाविक हैं अर्थात् विघ्न आना अवश्य सम्भावी हैं क्योंकि अनेक जन्मों अनेक आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब हैं, जो सब अभी पूरे होने हैं। वास्तविकता तो देखें और अपने पुरुषार्थी भाई-बहनों का अनुभव सुनें तो विघ्न ही हमारी स्थिति को पक्का बनाने में सहयोगी बनते हैं। इसलिए अच्छे पुरुषार्थी को कब विघ्नों से घबराना नहीं चाहिए, और ही परमात्मा की याद में अधिक रहने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

जो पुरुषार्थी आत्मा अपने विघ्नों पर विजय प्राप्त कर लेती है तो वह अनुभवी बन जाती है और अपने अनुभव से अन्य आत्माओं के विघ्नों को विनाश करने में सहयोग देती है अर्थात् उसकी स्थिति विघ्न-विनाशक बन जाती है।

जीवन में विघ्न आत्मा को दुखी बना देते हैं। हमारा जीवन सदा विघ्नों से मुक्त, निर्विघ्न कैसे बनें, इसका राज़ भी परमात्मा ने अभी बताया है, जिसको धारण कर हम जीवन को निर्विघ्न बनाकर परम सुख अनुभव कर सकते हैं। इस ब्राह्मण जीवन में विघ्न आना स्वभाविक है क्योंकि ये तमोप्रधान दुनिया है, अभी हमको सारे कल्प का हिसाब-किताब चुक्तू करना होता है। अभी हम माया का पक्ष छोड़कर प्रभु के पक्ष में आते हैं तो माया विघ्न जरूर लायेगी परन्तु इन विघ्नों को सहज कैसे पार करें, उसके लिए बाबा ने विघ्न आने का कारण भी बताया है और उन विघ्नों को पार करने की शक्ति धारण करने का विधि-विधान भी बताया है और उसके लिए श्रीमत भी दी है।

''आज विशेष बापदादा एक तो बेहद के वैराग्य तरफ इशारा दे रहा है। इसके लिए अपने को चेक करके देही-अभिमानी में जो देहाभिमान का विघ्न है ... इसको परिवर्तन करो और दूसरी बात ... बहुत समय का भी अपना सोचो। बहुत समय का अभ्यास चाहिए। बहुत समय का पुरुषार्थ बहुत समय की प्रालब्ध का आधार है।''

अ.बापदादा 7.04.09

''विघ्न पड़ते रहते हैं। यह भी ड्रामा अनुसार पड़ते रहेंगे। तुम जितना पुरुषार्थ करेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे। ... वे ही फिर प्रैक्टिकल में विश्व के मालिक बनें, यह बात तुम बच्चे जानते हो। इसमें अफसोस नहीं किया जाता है। कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। ड्रामा के पट्टे पर अचल-अडोल खड़ा रहना चाहिए, हिलना नहीं है।''

सा.बाबा 26.11.08 रिवा.

''टीचर्स से बापदादा यही चाहते हैं कि आपके फीचर्स से बापदादा वा फ्युचर दिखाई दे। ... निमित्त बने हुए के ऊपर जिम्मेवारी होती है। आपकी शकल एक मास में कभी भी चिन्ता वाली वा व्यर्थ चिन्तन वाली न हो अर्थात् एक मास जो बापदादा चाहते हैं, वैसे ही फीचर्स रहे ... एक मास की रिजल्ट लिखना - नो प्रॉब्लम। ... मधुबन वाले ... भी लिखेंगे। सभी लिखना।''

अ.बापदादा 15.11.08

''पुरुषार्थ में चलते-चलते कौनसा विघ्न देखने में आता है, जो सम्पूर्ण होने में रुकावट डालता है? विशेष विघ्न व्यर्थ संकल्पों के रूप में देखा गया है। इस विघ्न से बचने के लिए - एक तो अन्दर की वा बाहर की रेस्ट न लो। अगर रेस्ट न लेंगे तो वेस्ट नहीं जायेगा। और दूसरी बात अपने को सदैव गेस्ट समझो। अगर गेस्ट समझेंगे तो रेस्ट नहीं करेंगे, तो समय और संकल्प वेस्ट नहीं जायेगा।''

अ.बापदादा 2.2.70

स्वयं में सम्पन्नता और सम्पूर्णता की स्थिति को लाना ही है।... बहुत काल के अभ्यास से समय और संकल्प को सफल कर सफलतामूर्त बन सकते हो। मन्सा वृत्ति द्वारा वायुमण्डल बनाने की सेवा की आवश्यकता है, जिससे हर समस्या समाधान रूप में सहज परिवर्तन हो जायेगी।

सन्देश 14.10.08

Q. ब्राह्मण जीवन की सफलता का क्या साधन और साधना है?

बाबा ने जो ज्ञान दिया है, उसको यथार्थ रीति समझकर, अनुभव करना और उस पर पूरा निश्चय रखकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का सफल पुरुषार्थ करना।

''अभी बुद्धि में सारा ज्ञान है। कैसे यह सब ड्रामा के एक्टर्स हैं, जो पार्ट बजाते रहते हैं। ... ड्रामा में जो कुछ हुआ, विघ्न आदि पड़े, फिर भी पड़ेंगे। ... यह सब बना-बनाया खेल है। यह

ड्रामा का चक्र रिपीट होता है।''

सा.बाबा 20.10.05 रिवा.

''तपस्या वर्ष अर्थात् तपस्या के वायब्रेशन्स विश्व में और तीव्र गति से फैलाओ। ... विघ्नों का आना यह भी ड्रामा में आदि से अन्त तक नूँध है। यह विघ्न भी असम्भव से सम्भव की अनुभूति कराते हैं। ... फुटबाल के खेल में बाल आती है तब तो ठोकर लगाते हो। बाल ही न आये तो ठोकर कैसे लगायेंगे।''

अ.बापदादा 26.10.91

''सदा स्मृति में रखो कि विघ्न का काम है आना और हमारा काम है विघ्न-विनाशक बनना। ... सदा ड्रामा के ज्ञान की स्मृति से हर विघ्न को 'नथिंग न्यू' समझना। ... अगर ड्रामा की प्वाइन्ट बुद्धि में क्लीयर है कि हू-ब-हू रिपीट होता है ... ड्रामा बना हुआ है और बना रहे हैं अर्थात् रिपीट कर रहे हैं। ऐसा निश्चयबुद्धि अचल-अडोल रहता है।''

अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 4

''सदैव यह स्मृति में रखो कि हमारा टाइटिल ही है - 'विघ्न-विनाशक'... सदा अपने मास्टर सर्वशक्तिमान स्वरूप की स्मृति में रहो। ... पाण्डव भगवान की मत पर चले अर्थात् फॉलो किया तो विजय हुई।''

अ.बापदादा 10.12.92 पार्टी 4

''संस्कार से टक्कर नहीं खाना है लेकिन संस्कार मिलाना है। यदि कोई दूसरा गड़बड़ भी करे तो भी आप मिलाओ, आप गड़बड़ नहीं करो। और ही उसको शान्ति का सहयोग दो। समझा - विघ्न-विनाशक आत्मायें हो।''

अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 4

''सदा काल के लिए विघ्न समाप्त। अगर संस्कार संकल्प में इमर्ज भी हो जाये तो वहाँ ही खत्म कर दो। कर्म में, बोल में नहीं आये।''

अ.बापदादा 18.1.06

''विघ्न-विनाशक अर्थात् सारे विश्व के विघ्न-विनाशक।... विघ्न-विनाशक वही बन सकता है, जो सदा सर्व शक्तियों से सम्पन्न होगा। ... सदा स्मृति में रखो कि बाप के सदा साथी हैं और विश्व के विघ्न-विनाशक हैं।''

अ.बापदादा 3.11.92 पार्टी 4

''निर्विघ्न रहना और निर्विघ्न बनाना, यह यथार्थ योग और यथार्थ सेवा की निशानी है। ... यह क्यों हुआ, यह क्या हुआ ... फीलिंग आना माना विघ्न।''

अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 1

''विघ्न-विनाशक टाइटिल है तो विघ्न आयेंगे तब तो विनाश करेंगे। अगर कोई विजयी कहे कि दुश्मन आये ही नहीं लेकिन मैं विजयी हूँ तो कोई मानेगा ? नहीं, विघ्न तो आयेंगे चाहे प्रकृति के, चाहे आत्माओं के, चाहे अनेक प्रकार की परिस्थितियों के, लेकिन आप ऐसे पॉवरफुल डॉयमण्ड हो, जो आप पर कोई दाग़ रूपी प्रभाव न पड़े।''

अ.बापदादा 31.12.95

''विघ्न-विनाशक नाम क्यों रखा है। ... विघ्नों का काम है आना और आपका काम है विघ्न-विनाशक बनना। इसकी परवाह नहीं करो। यह खेल है। खेल में खेल है और खेल देखने में तो मज़ा आता है ना।''

अ.बापदादा 23.2.97

''अपने को रूह समझकर रूह को ही देखना है। रूह, रूह को देखता है तो राहत मिलती है। ... जिसका समय सिवाए सर्विस के अपने विघ्नों आदि को हटाने में नहीं जाता है, उसको कहा जाता है शूरवीर। अपना समय अपने विघ्नों में नहीं लेकिन सर्विस में लगाना चाहिए।''

अ.बापदादा 25.1.70

''प्रकृति पहले से ही सावधानी जरूर देती है। अगर नॉलेजफुल हो तो प्रकृति के विघ्नों से बच सकते हो। ... नॉलेज न होने के कारण पॉवरफुल नहीं और पॉवरफुल न होने के कारण जो विजय की प्राप्ति होनी चाहिए, वह नहीं होती है।''

अ.बापदादा 27.7.71

''जितना-जितना अपनी स्मृति की समर्थी में आते जायेंगे अर्थात् आत्मा रूपी नेत्र को पॉवरफुल बनाते जायेंगे, क्लियर बनाते जायेंगे, उतना-उतना कोई भी विघ्न आने वाला होगा तो पहले से ही यह महसूसता आयेगी कि आज कोई पेपर होने वाला है। ... होशियार होने के कारण विघ्नों में सफलता पा लेंगे।''

अ.बापदादा 27.7.71

''यह पहला पाठ नेचुरल रूप में स्मृति स्वरूप में रहे। देह को देखते भी आत्मा को देखें। ... इस पहली स्मृति की मर्यादा स्वयं को सदा निर्विघ्न बनाती है और औरों को भी इस श्रेष्ठ स्मृति के समर्थपन के वायब्रेशन फैलाने के निमित्त बन जाते हैं, जिससे और भी निर्विघ्न बन जाते हैं।''

अ.बापदादा 27.7.71

''जो अव्यक्त वातावरण व रुहानी अनुभव पहले किये, क्या वही रुहानी स्थिति अभी है? ... अभी ऐसा ही अव्यक्त वातावरण बनाना। एक तरफ वरदान दूसरी तरफ विघ्न। दोनों का एक-दूसरे के साथ सम्बन्ध है। सिर्फ अपने प्रति विघ्न-विनाशक नहीं बनना है लेकिन अपने ब्राह्मण कुल की सर्व आत्माओं के प्रति विघ्न-विनाश करने में सहयोगी बनना है।''

अ.बापदादा 19.4.73

''वैसे भी कोई भी बात, कोई दृश्य, कोई भी चीज परिवर्तन तो होनी ही है। यह ड्रामा ही परिवर्तनशील है।... इस प्रकार हर बात परिवर्तित होनी है लेकिन जिस समय आपके सामने वह बात विघ्नरुप बन जाती है उस समय अपनी शक्ति के आधार से एक सेकण्ड में परिवर्तित कर दिया तो उस पुरुषार्थ करने का फल आपको प्राप्त हो जायेगा।''

अ.बापदादा 24.12.72

''अगर परखने की शक्ति तीव्र है तो भिन्न-भिन्न प्रकार के आये हुए विघ्न, जो लगन में विघ्न रूप बनते हैं, उन विघ्नों को पहले से ही जानकर, उन द्वारा वार होने से पहले ही उन्हें समाप्त कर देते हैं। इस कारण व्यर्थ समय जाने के बदले समर्थ में जमा हो जाता है।''

अ.बापदादा 29.1.75

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और व्यवहार

ये राजयोग मार्ग है, इसमें बाबा ने घर-गृहस्थ में रहते हुए योगी जीवन बनाने का पुरुषार्थ कराया है। जो समर्पित जीवन वाले हैं, वे भी ईश्वरीय सेवा का व्यवहार करते ही हैं अर्थात् कोई न कोई स्थूल या सूक्ष्म सेवा करते हैं, जिससे वे अन्य आत्माओं के सम्पर्क में भी आते हैं। सच्चे पुरुषार्थी का व्यवहार सहज सफल होता है।

व्यवहार शब्द दो प्रकार से प्रयोग किया जाता है। एक व्यवहार माना कार्य-व्यवहार और दूसरा अर्थ है अन्य आत्माओं के साथ लेनदेन अर्थात् बर्ताव। तो जो अच्छे पुरुषार्थी है, वे इस विश्व-नाटक के ज्ञान को सदा बुद्धि में रखते हैं, जिससे उनके व्यवहार में मधुरता रहती है।

''रहना भी अपने घर में है परन्तु बुद्धि से समझना है कि हम शूद्र नहीं हैं, हम ब्राह्मण हैं।... बाबा हमको फिर से अपने राज्य में ले जाते हैं। गृहस्थ व्यवहार में रहते, वह अवस्था जमानी है।''

सा.बाबा 13.07.09 रिवा.

''सारे कल्प में यह अलौकिक मिलन बहुत थोड़े से पद्मापदम भाग्यशाली आत्माओं को ही प्राप्त होता है। ... सम्पर्क के बाद सम्बन्ध में आना है क्योंकि सम्बन्ध से ही श्रेष्ठ प्राप्ति होती है। दो शब्द सदैव याद रखना - एक स्वयं को और दूसरा समय को। अगर स्वयं को और समय को याद रखेंगे तो इस जीवन में अनेक जन्मों के लिए श्रेष्ठ प्रालब्ध पा सकते हैं।''

अ.बापदादा 21.1.71

''व्यवहार में भी डॉयरेक्शन प्रमाण निमित्त मात्र शरीर निर्वाह अर्थ व्यवहार, लेकिन मूल आधार आत्मा का निर्वाह ... व्यवहार करते शरीर निर्वाह और आत्म-निर्वाह दोनों का बैलेन्स हो। नहीं तो व्यवहार माया जाल बन जायेगा।... धन की वृद्धि करते हुए भी याद की विधि भूलनी नहीं चाहिए।''

अ.बापदादा 31.12.70

''सदा व्यक्ति में व्यक्त भाव के बजाए आत्मिक भाव धारण करो। वस्तुओं वा वैभवों में अनासक्त भाव धारण करो तो वैभव और वस्तु तो अनासक्त के आगे दासी के रूप में होंगी और आसक्त भाव वाले के आगे चुम्बक की तरह फँसाने वाले होंगे।... इसलिए व्यक्ति और वैभव को आत्म-भाव और अनासक्त भाव में परिवर्तन करो।''

अ.बापदादा 31.12.70

''बेगर टू प्रिन्स। अभी तुम सब बेगर बने हुए हो। यह ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ भी बेगर्स हैं, इनके पास कुछ भी नहीं है। बेगर अर्थात् जिनके पास अपना कुछ भी न हो। कोई-कोई को हम बेगर नहीं कहेंगे। यह बाबा तो है सबसे बड़ा बेगर। इसमें पूरा बेगर बनना होता है। गृहस्थ व्यवहार में रहते आसक्ति तोड़नी होती है।''

सा.बाबा 22.05.09 रिवा.

''अपनी ही कमजोरियों को मिटाने में बिजी हैं। चुक्तू तो करना ही पड़ेगा। लेकिन एक होता है जल्दी मुक्त करना। ... बीती को संकल्प में भी इमर्ज नहीं करना है। अगर भूल से पुराने संस्कार की विष इमर्ज भी हो जाये तो उसको ऐसा समझो कि यह बहुत पिछले जन्म के संस्कार हैं, अब के नहीं।'' (अपनी देह और आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब को चुक्तू अवश्य करना है, इसलिए उसके विषय में सोचना नहीं है।)

अ.बापदादा 30.7.70

''दो का आपस में कोई अच्छा या बुरा व्यवहार है, वह उनका आपस का हिसाब-किताब है, हमारा उसमें क्या जाता है। हमको ड्रामा को जानकर उसमें जाने की कोई जरूरत नहीं हे। हमको अपना पुरुषार्थ करना है, तब ही हमारा भविष्य अच्छा होगा।'' दादी जानकी 15.2.09

''आज क्या पाठ पढ़ा ? हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ भाव। यह परमात्म परिवार इस एक ही समय होता है। ... तो चेक करना क्योंकि (किसी आत्मा के प्रति शुभ भावना चेन्ज होना) यह भी पुरुषार्थ में विघ्न पड़ता है। तो जब विघ्न-मुक्त होंगे तब ही अनुभवी बन अनुभव की अथॉरिटी द्वारा सभी को अनुभवी बनायेंगे।''

अ.बापदादा 30.1.10

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और कर्म-सिद्धान्त

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और धर्मराज

ये विश्व-नाटक पुरुषार्थ और प्रालब्ध पर आधारित है। इसमें कर्म और फल के निश्चित विधि-विधान हैं, जिनके अनुसार ये नाटक चलता है। कर्म और फल के ये विधि-विधान अटल हैं, जिनके अनुसार हर आत्मा को उसके किये गये कर्मों का अच्छा या बुरा फल प्रालब्ध के रूप में प्राप्त होता है और आत्मा उसके अनुसार सुख या दुख भोगने के लिए बाध्य होती है।

पुरुषार्थ और प्रालब्ध, कर्म और फल के विधि-विधान का बाबा ने समय-समय पर स्पष्ट ज्ञान दिया है, उन सब बातों को ध्यान में रखकर कर्म करने वाला पुरुषार्थी ही यथार्थ रीति

श्रेष्ठ पुरुषार्थ करके अपनी श्रेष्ठ प्रालब्ध बना सकता है। कर्म-सिद्धान्त को सार रूप में विचार करें तो यही कहेंगे कि सुख देंगे तो सुख पायेंगे और दुख देंगे तो दुख पायेंगे। सुख के पुरुषार्थी आत्मा को इस सत्य पर विचार करके ही कोई भी कर्म करना चाहिए।

धर्मराज कौन है और उसका इस विश्व-नाटक में क्या स्थान है, पुरुषार्थ और प्रालब्ध का क्या सम्बन्ध है और उसमें धर्मराज का क्या स्थान है, वह भी बाबा बताते हैं और धर्मराज की सज़ाओं से कैसे बचें, वह भी बाबा बताते हैं।

''यह युद्ध का मैदान है, इसमें डरना नहीं है कि पता नहीं तूफानों में ठहर सकेंगे या नहीं ? जो ऐसा सोचते हैं, उनको कमजोर कहा जाता है, इसमें तो शेर बनना पड़े। पुरुषार्थ के लिए बाप से मत लेते रहना चाहिए। ... उस बाप से तो कुछ छिप नहीं सकता। अच्छे का अच्छा फल और बुरे का बुरा आत्मा को मिलता ही है। ... सतयुग में कुछ भी अच्छा-बुरा, पाप-पुण्य होता नहीं है।''

सा.बाबा 28.12.09 रिवा.

''तुम बच्चे जानते हो - हम ईश्वरीय सर्विस पर हैं। यही सबको बताना है कि बाप कहते हैं - मन्मनाभव अर्थात् अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। जितनी तुम सर्विस करेंगे, उतना तुमको फल मिलेगा। ये सब बातें अच्छी रीति समझने की हैं। ... इसमें ही मेहनत है। मेहनत बिगर फल थोड़ेही मिल सकता है।''

सा.बाबा 15.10.09 रिवा.

''सभी नम्बरवार पुरुषार्थ करते हैं और नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार वहाँ जाकर पद पायेंगे। इतने सब मनुष्य नहीं पढ़ेंगे। अगर सभी पढ़ें तो फिर दूसरे जन्म में राज्य भी पायें। पढ़ने वालों की लिमिट है। सतयुग-त्रेता में आने वाले ही पढ़ेंगे। तुम्हारी प्रजा बहुत बनती रहती है।''

सा.बाबा 17.10.09 रिवा.

''ऐसी अनेक आत्माओं को सन्तुष्ट करने के लिए पहले स्वयं अपने हर कर्म से सन्तुष्ट हो ? सन्तुष्ट आत्मायें ही अन्य को सन्तुष्ट कर सकती हैं। अब ऐसी सर्विस करने के लिए अपने को तैयार करो। ... प्राप्ति की अनुभूति करानी होगी। इसलिए कहा कि अब अपने ब्राह्मणपन के कर्तव्य को सम्पन्न करने के लिए अपने को सम्पूर्ण बनाते रहो।''

अ.बापदादा 21.7.71

''देहाभिमानी से कुछ न कुछ पाप जरूर होगा, वह अन्दर खाता रहेगा।... बाप कहते हैं तुम आत्मा अशरीरी आई थी। ... अब तुमको ऐसा ही अशरीरी बनकर जाना है। बुद्धि में रहे - बस, अब हमको यह पुराना शरीर छोड़कर वापस घर जाना है।... अभी तुमको घर वापस जाना है, इसलिए पुरानी दुनिया और पुराने शरीर का भान उड़ा देना है। कुछ भी याद न

रहे।''
सा.बाबा 10.07.09 रिवा.

''जो टी.वी. देखकर सोते हैं ... ये पाप है ... उनकी क्या गति होगी। तुमको कुछ सोचने की दरकार नहीं है। तुम अपना पुरुषार्थ करो।''
दादी जानकी 16.2.09

''सबसे बड़ा पुण्य है बाप को याद करना। याद से ही पुण्यात्मा बनेंगे।... सबसे जास्ती काम के वश होने से जो जमा हुआ, वह ना हो जाता है। फायदे के बदले नुकसान हो जाता हे। सत्गुरु का निन्दक ठौर न पाये।''
सा.बाबा 27.01.09 रिवा.

''आपही देखना है - हम कितना याद करते हैं, जो पुराना खाता खत्म हो नया जमा हो। ... इस जन्म की जीवन कहानी सुनाने से कोई जन्म-जन्मान्तर के पाप नहीं कट जायेंगे। सिर्फ इस जन्म की हल्काई हो जाती है। बाकी जन्म-जन्मान्तर का पाप का खाता खत्म करने के लिए बहुत मेहनत करनी है।''
सा.बाबा 27.01.09 रिवा.

''जो सेन्टर खोलते हैं, सर्विस करते हैं, उनकी भी कमाई होती है। उनको भी बहुत फायदा मिलता है। ... जो-जो करते हैं, उनका हिस्सा तो आता है ना। मिलकर माया के दुख का छप्पर उठाते हैं तो इसमें जो कन्धा देते हैं, उन सबको उजूरा मिलता है। ... सबकुछ करने का समय यही है।''
सा.बाबा 27.01.09 रिवा.

''बहुत विकर्म होते रहते हैं। ऐसा कोई खाली दिन नहीं, जो विकर्म न होते हों। एक मुख्य विकर्म यह करते हो, जो बाप के फरमान को ही भूल जाते हो। बाप फरमान करते हैं - मन्मनाभव, अपने को आत्मा समझो। यह फरमान नहीं मानते हो तो जरूर विकर्म ही होंगे।''
सा.बाबा 28.01.09 रिवा.

जो पास्ट को याद करता है, वह कब प्रैजेन्ट (वर्तमान) में बाप के सामने प्रैजेन्ट (उपस्थित) नहीं रह सकता है और जो बाप के सामने प्रैजेन्ट नहीं है, वह बाप को क्या याद करेगा और वह श्रेष्ठ कर्म कैसे कर सकता है और जब श्रेष्ठ कर्म ही नहीं करेगा तो वह भविष्य में श्रेष्ठ प्राप्ति कैसे करेगा। जो पास्ट का चिन्तन नहीं करता है और भविष्य की चिन्ता नहीं करता है, वर्तमान में जीता है अर्थात् वर्तमान में बाप को याद कर श्रेष्ठ कर्म करता है, उसका भविष्य निश्चित ही श्रेष्ठ होता है।
दादी जानकी 26.1.09

''तुम बच्चों को मुख्य पुरुषार्थ तो सज़ाओं से छूटने का ही करना चाहिए। उसके लिए मुख्य है याद की यात्रा, जिससे विकर्म विनाश होंते हैं। भल कोई पैसे से मदद करते हैं, समझते हैं हम साहूकार बनेंगे, परन्तु पुरुषार्थ तो सज़ाओं से छूटने का करना चाहिए।... उस समय धर्मराज के सामने काँध नीचे कर हाय-हाय करते रहेंगे।''
सा.बाबा 8.03.10 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और भाग्य एवं भाग्य-विधाता

परमात्मा और ब्रह्मा को भाग्य-विधाता कहा जाता है। वास्तव में परमात्मा भी आत्माओं का भाग्य बनाने का कार्य प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा ही करते हैं क्योंकि निराकार स्वरूप में तो आत्मा कोई कर्म कर नहीं सकती। इसलिए ही परमात्मा और ब्रह्मा दोनों को भाग्य-विधाता कहा गया है।

ये विश्व-नाटक अति विविधतापूर्ण है, इसलिए भाग्य-विधाता परमात्मा तो सबका भाग्य बनाने के लिए पुरुषार्थ कराते हैं परन्तु सभी आत्माओं के पुरुषार्थ में भिन्नता अवश्य होती है, जिसके कारण उनकी प्रालब्ध में भी भिन्नता होती है। सभी आत्मायें नम्बरवार ही पुरुषार्थ करती हैं, और जो जैसा पुरुषार्थ करता है, वैसी उसकी प्रालब्ध बनती है, जो उसको भाग्य के रूप में प्राप्त होती है।

भूतकाल में किये गये पुरुषार्थ अनुसार वर्तमान में हमको जो साधन-सम्पत्ति, सुख या दुख प्राप्त हो रहा है, उसको ही आत्मा भाग्य के रूप में स्वीकार करती है और जो अभी पुरुषार्थ कर रहे हैं, उसके फलस्वरूप हमको भविष्य में भाग्य प्राप्त होगा। आत्मा को कोई भी भाग्य बिना पुरुषार्थ के नहीं मिल सकता है।

इस पुरुषार्थ, भाग्य और भाग्य-विधाता के विधि-विधान को हम ध्यान में रखेंगे तो हमारा अभी पुरुषार्थ भी अच्छा चलेगा और जो हमको भाग्य प्रापत हुआ है, उससे भी हम सन्तुष्ट रहेंगे अर्थात् खुशी से स्वीकार करेंगे और उसके कारण हमारी किसी आत्मा के भाग्य से ईर्ष्या भी नहीं होगी।

''आसार भी देखने में आते हैं। यह वही महाभारत की लड़ाई है। तुमको फिर से देवी-देवता अथवा स्वर्ग का मालिक बनने का पुरुषार्थ करना है। गीता में कोई स्थूल लड़ाई की बात नहीं है। ... जिन्होंने कल्प पहले राज्य-भाग्य लिया होगा, वे ही अब भी लेंगे। ऐसे भी नहीं कि जो ड्रामा में होगा, वह मिलेगा। फिर तो भूख मर जायेंगे। इस ड्रामा का पूरा राज़ अच्छी रीति समझना है।''

सा.बाबा 24.12.09 रिवा.

''यहाँ सिर्फ बाबा से मिलने में कमाई थोड़ेही होगी। बाप को याद करेंगे तो कमाई होगी। ऐसे मत समझो कि बाबा आशीर्वाद करेंगे। कुछ भी नहीं, हर एक को अपना याद का पुरुषार्थ करना है। ... एक बाप कोही याद करो, कोई भी मनुष्य को याद नहीं करो। भक्ति की जो रस्म है, वह ज्ञान मार्ग में हो नहीं सकती।''

सा.बाबा 12.10.09 रिवा.

''जो सचमुच बाप को अपना वारिस बनाते हैं, वे विजय माला में पिरोये जायेंगे। जो सच-सच वारिस बनाते हैं, वे खुद भी वारिस बनते हैं। गायन है ना - सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। ... कोई तो समझते हुए भी बाबा को अपना वारिस नहीं बना सकते क्योंकि माया के वश हैं। ... जो ईश्वर के वश होंगे, वे बाबा को अपना वारिस बना लेंगे।''

सा.बाबा रात्रि क्लास 23.04.09 रिवा.

''चार बातें याद रखना। ... चेक करो चारो ही बातें हैं। सच्चाई तन की, मन की, धन की, सम्बन्ध-सम्पर्क की, दिल की सच्चाई, दिल बड़ी। जब दिल बड़ी होती है तो जो भी इच्छा होती है, जरूरत होती है, वह पूर्ण हो ही जाती है। बाप राज़ी है तो क्या कमी है। तो पुरुषार्थ करो।''

अ.बापदादा 22.2.09

''बाप इतना श्रृंगार करते हैं फिर भी बुद्धि में नहीं बैठता तो कहेंगे उसकी तकदीर में नहीं है, इसलिए तदबीर नहीं करते। ... पढ़ाई में आशीर्वाद, कृपा आदि नहीं चलती है।''

सा.बाबा 21.10.08 रिवा.

''सब बातें भूले हुए हैं, वह भी ड्रामा में नूँध है।... तुम्हारे में भी कई बच्चे कुछ नहीं जानते हैं क्योंकि तकदीर में नहीं है तो पुरुषार्थ क्या करेंगे।... तकदीर पुरुषार्थ अवश्य कराती है।''

सा.बाबा 23.10.08 रिवा.

''जब कोई की तकदीर में होता है तो सरकमस्टाँसेस भी ऐसे बनते हैं, जैसे कि वह लिफ्ट का रूप बन जाता है। यहाँ भी जिसकी कल्प पहले की तकदीर वा ड्रामा की नूँध है, भल अपना भी पुरुषार्थ रहता है लेकिन साथ-साथ यह लिफ्ट भी दैवी परिवार द्वारा मिलती है और बापदादा द्वारा भी गिफ्ट मिलती ।''

अ.बापदादा 29.6.71

''यहाँ भी जो सर्शिस करते हैं, वे ही बाप को प्यारे लगते हैं। भल बाबा समझते हैं कि सभी तकदीर अनुसार ही पढ़ेंगे, फिर भी प्यार किस पर रहेगा ?... शरीर पर कोई भरोसा नहीं है। कोशिश करना चाहिए कि हम पुरुषार्थ कर अपना 21 जन्मों के लिए कल्याण तो कर लेवें। यह लक्ष्मी-नारायण का चित्र साथ में रखो। ... अभी यह राज्य स्थापन हो रहा है, नर्क का विनाश सामने खड़ा है। यह भी जानते हैं कि ड्रामा अनुसार शायद देरी है। बड़ो-बड़ों की तकदीर में अभी नहीं है। फिर भी बाबा पुरुषार्थ कराते रहते हैं। ड्रामा अनुसार सर्विस चल रही है।''

सा.बाबा 12.03.68रिवा.

''ड्रामा बिगर बाप कुछ भी नहीं कर सकते हैं। कई बच्चे कहते हैं - ड्रामा में होगा तो पुरुषार्थ कर लेंगे, वे कभी ऊंच पद पा नहीं सकते। बाप कहते हैं - पुरुषार्थ तो तुमको करना ही है। ड्रामा तुमको पुरुषार्थ कराता है, कल्प पहले मुआफिक। जो ड्रामा पर ठहर जाते हैं कि जो

ड्रामा में होगा... तो समझा जाता है कि इनकी तक़दीर में नहीं है।''

सा.बाबा 23.02.10 रिवा.

''अभी तुम बच्चों को बाप से वर्सा लेने का पूरा पुरुषार्थ करना है। यह है रुहानी नेचर क्योर। ... आत्मा को क्योर करते हैं, इसलिए बाप को अविनाशी सर्जन भी कहते हैं। कैसा अच्छा ऑपरेशन करना सिखलाते हैं। मुझे याद करो तो तुम्हारे सब दुख दूर हो जायेंगे, तुम चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे। ... एक-दो को यही याद दिलाते रहो कि अल्लाह को याद करो तो बे बादशाही मिल जायेगी।''

सा.बाबा 23.02.10 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और भक्ति-मार्ग

भक्ति मार्ग में भी आध्यात्मिक उन्नति का लक्ष्य लेकर आत्मायें जो कर्म करती हैं, उसको भी पुरुषार्थ कहा जाता है क्योंकि आत्मा अपने आत्म-कल्याण का लक्ष्य लेकर ही वह प्रयत्न करती है, फिर भी वहाँ आत्मा की चढ़ती कला नहीं होती है, उतरती कला ही होती है परन्तु उतरती कला की गति मन्द अवश्य होती है। भक्ति मार्ग में भी जो आत्मायें आत्म-कल्याण का लक्ष्य लेकर भक्ति करते हैं, उनकी प्रालब्ध तो श्रेष्ठ होती ही है, वे भी अच्छे घर में जाकर जन्म लेते हैं। जिस जन्म में हैं, उसमें भी उनकी मान्यता रहती है। लोगों की उनके प्रति श्रृद्धा-भावना रहती है। बाबा ने भी कहा है - जो भक्ति मार्ग में मुझे याद करते हैं, मैं उनकी मनोकामनायें पूर्ण करता हूँ और वह पूर्ण करना भी ड्रामा में नूँध है, उस अनुसार उनकी मनोकामनायें पूर्ण होती हैं, साक्षात्कार आदि होता है, जिससे वे खुश हो जाते हैं। ये भी उनको उनके पुरुषार्थ की प्रालब्ध ही है।

''यहाँ एकान्त बहुत अच्छी है। सन्यासी भी एकान्त में चले जाते हैं। सतोप्रधान सन्यासी जो थे, वे बहुत निडर रहते थे। जानवर आदि किससे भी डरते नहीं थे। उस नशे में रहते थे। अभी तो तमोप्रधान बन पड़े हैं। हर एक धर्म जो स्थापन होता है, तो पहले सतोप्रधान होता है, फिर रजो, तमो में आते हैं। ... सन्यासी जब सतोप्रधान थे तो उनमें बड़ी कशिश होती थी, जंगल में ही भोजन मिलता था।''

सा.बाबा 12.10.09 रिवा.

''यह गीता शास्त्र आदि सब हैं भक्ति मार्ग के। ये सब फिर भी ऐसे ही बनेंगे। बाबा भल ड्रामा को जानते हैं फिर भी बाप तो पुरुषार्थ कराते रहते हैं।... जब कोई बड़ा इम्तहान पास करते हैं तो अन्दर में खुशी होती है ना। तुम जानते हो - हम यह इम्तहान पास कर यह (लक्ष्मी-नारायण जैसे देवता) जाकर बनेंगे।''

सा.बाबा 5.10.09 रिवा.

''भक्ति की कितनी ढेर सामग्री है, उसको पढ़ाई नहीं कहेंगे क्योंकि उसमें कोई एम एण्ड आब्जेक्ट नहीं है और भक्ति में नीचे ही उतरते जाते हैं। नीचे उतरते-उतरते तमोप्रधान बन जाते हैं। फिर सबको सतोप्रधान बनना है। तुम पुरुषार्थ कर सतोप्रधान बन स्वर्ग में जायेंगे, बाकी सब सतोप्रधान बनकर शान्तिधाम में रहेंगे।''

सा.बाबा 19.09.09 रिवा.

''जिन्होंने जास्ती भक्ति की है, वे ही आकर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पद पायेंगे। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान है। ... यह एकदम पक्का कर लो कि हम आत्माओं को बाप पढ़ाने आये हैं। इसको कहा जाता है स्प्रीचुअल नॉलेज।... संस्कार आत्मा में रहते हैं, शरीर तो खत्म हो जाता है, आत्मा अविनाशी है।''

सा.बाबा 8.08.09 रिवा.

''अभी तुम बच्चों को भक्ति और ज्ञान का अन्तर पता चला है। इसको समझने के लिए कितनी विशाल बुद्धि चाहिए। अभी तुम्हारी कभी कोई में ऑख नहीं जायेगी। तुम कहेंगे हम क्या इन किंग-क्वीन को देखें। उनको क्या देखना है। दिल में कोई आश नहीं होती। यह सब खत्म होने वाला है। ... बच्चों को खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए।''

सा.बाबा 5.08.09 रिवा.

''ड्रामा अनुसार भक्ति करते कदम नीचे उतरते आये हैं, ऊपर तो कोई चढ़ न सके। अभी यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, जिसका कोई को पता नहीं है। अभी तुम पुरुषोत्तम बनने के लिए पुरुषार्थ करते हो। ... अभी दुनिया 100 परसेन्ट तमोप्रधान है, फिर तुम 100 परसेन्ट सतोप्रधान बन रहे हो। उसकी युक्ति बाप ने बताई है याद की यात्रा की।''

सा.बाबा 16.06.09 रिवा.

''वे सन्यासी तो सिर्फ घरबार का सन्यास करते हैं, तुमको तो गृहस्थ व्यवहार सम्भालते उससे ममत्व मिटाना है। ... बाबा सन्यासियों की भी महिमा करते हैं, वे भी अच्छे हैं जो पवित्र रहते हैं। वे भी भारत को थमाते हैं।... परन्तु अब तो भारत को स्वर्ग बनाना है, इसलिए जरूर घर गृहस्थ में रहते पवित्र बनना पड़े।''

सा.बाबा 1.12.08 रिवा.

''वे समझते हैं - ब्रह्म को ही याद करना है, ज्योति ज्योत में समाना है। निर्वाणधाम जाना है। उनकी डिपॉर्टमेन्ट ही अलग है ... समझते हैं आग-कपूस इकट्ठे रह नहीं सकते। अलग होने से ही हम बच सकते हैं। ड्रामा अनुसार उनका धर्म ही अलग है।... तुम समझते हम आपस में भाई-बहन हो गये, गन्दी वृत्ति नहीं होनी चाहिए। लॉ ऐसा कहता है।''

सा.बाबा 28.11.08 रिवा.

ज्ञान मार्ग के पुरुषार्थ और भक्ति मार्ग के पुरुषार्थ का तुलनात्मक अध्ययन

पुरुषार्थ का अर्थ ही है पुरुष अर्थात् आत्मा के कल्याणार्थ किया गया प्रयत्न। भक्ति मार्ग में भी भक्त आत्म कल्याण अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति के लिए पुरुषार्थ करते हैं परन्तु यथार्थ ज्ञान न होने के कारण उनको मुक्ति जीवनमुक्ति मिलती नहीं है, उनकी चढ़ती कला नहीं होती है। वे नीचे ही गिरते जाते हैं परन्तु उनकी आत्मा की उतरती कला की गति मन्द अवश्य होती है अर्थात् भक्ति मार्ग के पुरुषार्थ से आत्मिक शक्ति के ह्रास की गति मन्द होती है। ज्ञान मार्ग में हमको परमात्मा से सत्य ज्ञान मिलता है, फिर हम जो पुरुषार्थ करते हैं, उससे आत्मा की चढ़ती कला होती है। चढ़ती कला हर ज्ञानी आत्मा की होती है परन्तु उसकी गति उनके पुरुषार्थ पर निर्भर करती है। किसकी चढ़ती कला की गति मन्द होती है तो किसकी तीव्र होती है। इसलिए बाबा कहते हैं - ज्ञान मार्ग में जिसने बाप को पहचाना और थोड़ा भी पुरुषार्थ किया तो वह स्वर्ग में जरूर आयेगा, फिर पद उसको अपने पुरुषार्थ अनुसार मिलेगा।

स्वर्ग के स्वराज्य का अधिकार आत्मा को ज्ञान मार्ग के पुरुषार्थ से मिलता है क्योंकि परमात्मा ज्ञान का सागर है और स्वर्ग का रचयिता है। जो आत्मायें उनकी श्रीमत पर चलकर यथार्थ रीति पुरुषार्थ करती हैं, वे ही स्वर्ग में जाकर ऊंच पद पाती हैं। भक्ति मार्ग में स्वर्ग को याद तो करते हैं परन्तु स्वर्ग में कोई जाता नहीं है।

''भक्ति मार्ग में मनुष्य भक्ति करते हैं घर जाने के लिए परन्तु पूरा ज्ञान नहीं है, इसलिए घर जा नहीं सकते हैं। ... शान्तिधाम, सुखधाम का रास्ता तो बाप ही बताते हैं। पहले-पहले तो जरूर निर्वाणाधाम, वानप्रस्थ में जाना है, जिसको ब्रह्माण्ड भी कहते हैं।''

सा.बाबा 8.01.10 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और परीक्षा

जैसे पढ़ाई में परीक्षा आवश्यक है। परीक्षा ही पढ़ाई में आगे बढ़ने का साधन है। ऐसे ही अभी हम ये रुहानी पढ़ाई पढ़ रहे हैं, जिसका फल हमको 21 जन्म अर्थात् आधे कल्प तक मिलता है। किसको क्या और कितना फल मिलना चाहिए, क्या पद मिलना चाहिए, उसके लिए इस पढ़ाई में भी परीक्षा तो अवश्य होगी। बाबा कई बार हँसी में कहते हैं बाबा माया बेटी को कहते हैं, इनकी खुब परीक्षा लो, देखो पक्के हैं या नहीं। इसलिए हमारी प्रालब्ध का आधार भी इस परीक्षा में अच्छे मार्क्स से पास होना है। परीक्षा न हो तो कैसे समझा जाये कि ये पास है या फल है, इसको क्या पद मिलना चाहिए क्योंकि अपने को हर एक अच्छा ही समझता है। परीक्षा ही स्थिति का दर्पण है और पद या प्रालब्ध का आधा है।

हिम्मतवान को बाप की मदद अवश्य मिलती है और वह निश्चित ही विघ्नों पर जीत पाने में सफल होता है। ब्राह्मण जीवन में विघ्न आना स्वभाविक है क्योंकि विघ्न ही आत्मा को अनुभवी बनाते हैं और आत्मा को अन्तिम परीक्षा में पास होने की शक्ति प्रदान करते हैं। विघ्नों पर कैसे जीत पायें, उसका विधि-विधान भी बाबा ने बताया है और उन पर जीत पाने के लिए श्रीमत भी दी है।

बाबा ने कहा है विघ्न तो आगे जाने के साधन हैं, इसलिए तुमको विघ्नों को विघ्न न समझ आगे बढ़ने का साधन समझना है, परीक्षा का पेपर समझ, उनको पास करना है।। विघ्न ही नष्टोमोहा बनाते हैं और परमात्मा से प्रीतबुद्धि बनने की प्रेरणा देते हैं। विघ्न आत्मा को अनुभवी बनाते हैं और जब स्वयं अनुभवी होंगे तब ही औरों को भी विघ्नजीत बनने का रास्ता बता सकेंगे।

पुरुषार्थ की परीक्षा अवश्य होती है और वह परीक्षा ही प्रालब्ध का निर्णय करती है, इसलिए अच्छे पुरुषार्थी को और अच्छी प्रालब्ध का लक्ष्य रखने वाले को परीक्षा के लिए सदा ही तैयार रहना चाहिए अर्थात् परीक्षा की प्रतीक्षा अवश्य करनी चाहिए। जो परीक्षा से घबराता है, वह कभी अच्छी प्रालब्ध नहीं पा सकता अर्थात् नहीं बना सकता है।

''विघ्न तो आयेंगे, उनको खत्म करने की युक्ति है सदैव समझो कि यह पेपर है। अपनी स्थिति की परख यह पेपर कराता है।... इसमें घबराना नहीं है, उसकी गहराई में जाकर पास करना है।'' अ.बापदादा 24.1.70

''अव्यक्त स्थिति ही मुख्य सब्जेक्ट है। व्यक्त में रहते कार्य करते भी अव्यक्त स्थिति रहे। इस सब्जेक्ट में ही पास होना है। अपनी बुद्धि की लाइन क्लियर रखना है। ... पुरुषार्थ की लाइन में कोई रुकावट हो तो उसको मिटाकर लाइन क्लियर करना है। इस साधन से ही अव्यक्त स्थिति की प्राप्ति होती है।'' अ.बापदादा 25.1.70

''अभी बापदादा यही चाहते हैं कि देश वा विदेश का हर बच्चा एवर-रेडी सदा रहे। जो पढ़ाई में अच्छे स्टूडेण्ट्स होते हैं, वे सदा यही इन्तजार करते हैं कि जल्दी-जल्दी इम्तहान हो (पास होकर अगले क्लास में जायें), ऐसे हर एक बच्चा ऐसा एवर-रेडी हो, जो कल भी कुछ हो जाये तो एवर-रेडी। चारो ही सब्जेक्ट्स में एवर-रेडी। समय आया और पास विद् ऑनर बना।'' अ.बापदादा 30.11.09

''बापदादा कुछ समय से वार्निंग दे ही रहे हैं समय की। हर बच्चे की पढ़ाई की रिजल्ट का समय अचानक आना है। इसके लिए सदा एवर-रेडी। ... अभी समय है उड़ती कला के तीव्र पुरुषार्थ का।... हर सेकण्ड, हर संकल्प चेक करो (व्यर्थ गया, साधारण में गया या समर्थ

रहा)। ... साधारण पुरुषार्थी भी एवर-रेडी बनने में समय लगा देगा और बापदादा ने कहा है कि सेकेण्ड में बिन्दी अर्थात् फुल-स्टॉप।''

अ.बापदादा 30.11.09

''आशीर्वाद माँगने की चीज़ नहीं है। ... अभी तुमको पता पड़ा है - हम ऐसे नीचे आ गये। बाप ही बताते हैं कि ऐसे-ऐसे होगा। कोई कहते हैं - बहुत कोशिश करते हैं परन्तु याद ठहरती नहीं है। इसमें बाप अथवा टीचर क्या करे! ... टीचर आशीर्वाद करे फिर तो सब पास हो जायें।''

सा.बाबा 31.10.09 रिवा.

''यह बेहद का वैराग्य कोई भी प्रकार का, मन के संकल्पों का, आपस में संगठन में माया के विघ्नों को एकदम समाप्त कर देगा। माया के तूफान आपके लिए तोहफा बन जायेंगे। ये जो छोटे-मोटे पेपर आते हैं, ये पेपर नहीं लगेंगे लेकिन अनुभव बढ़ाने की लिफ्ट लगेंगे। गिफ्ट और लिफ्ट।''

अ.बापदादा 25.10.09

''अन्त समय एक बाप के सिवाए और कोई भी याद न पड़े। कल्प पहले भी ऐसे निकले थे, जो विजय माला के दाने बने थे। ... उन ब्राह्मणों की ही रुद्र माला बनती है, जिन्होंने बहुत गुप्त मेहनत की है। ज्ञान भी गुप्त है, बाप भी गुप्त है। बाप तो हर एक को अच्छी रीति जानते हैं।''

सा.बाबा 23.10.09 रिवा.

''लास्ट टाइम की लास्ट एक घड़ी होगी, जिसमें फुल-स्टॉप लगाना पड़ेगा। ... अगर फुल स्टॉप लगाने की आदत नहीं होगी तो अन्त मते सो गति श्रेष्ठ नहीं होगी। ... एक सप्ताह सेकेण्ड में फुल स्टॉप लगाने बार-बार अभ्यास करो और ... 18 जनवरी को सभी को अपनी चिटकी लिखकर बॉक्स में डालना है कि 18 तारीख तक क्या रिजल्ट रही।''

अ.बापदादा 30.11.08

''बापदादा सभी बच्चों की अमृतवेले रूह-रिहान बहुत अच्छी-अच्छी सुनते हैं ... मैंजारिटी यही वायदा करते हैं कि आज से जो भी यह कमजोरी है, वह आगे नहीं आयेगी, लेकिन लक्ष्य को लक्षण में लाने में समय लगा देते हैं, झाटकू नहीं होते। 'सोचा और किया', अब ऐसी रफ्तार बनाओ। सोचना और करना दोनों एक साथ हो।... अचानक कुछ हो जाये तो क्या गति होगी?''

अ.बापदादा 15.11.08

''जब परीक्षायें शुरू हो जायेंगी तो फिर पुरुषार्थ नहीं कर सकेंगे। फिर फाइनल पेपर शुरू होगा। ... पेपर शुरू हो जाता है, फिर गेट बन्द हो जाता है।''

अ.बापदादा 25.1.70

''अच्छी रीति पढ़ो और बाप को याद करो, फिर औरों को भी पढ़ाना है। नहीं तो इतने सबको कौन पढ़ायेगा। बाप का मददगार तो बनेंगे ना।... होशियारी से ही मनुष्य दर्जा पाते हैं।

नम्बरवार तो होते हैं ना। जब इम्तहान की रिजल्ट निकलेगी तो तुमको आपही साक्षात्कार होगा कि हमने कितना पढ़ा।... बाप कहते हैं कोई विकर्म नहीं करो, कोई देहधारी से लागत नहीं रखो।'' सा.बाबा 4.02.10 रिवा.

''पुरुषार्थ करना चाहिए ऊंच पद पाने का। अभी अगर फेल हुए तो कल्प-कल्पानतर फेल होते रहेंगे। फिर कभी ऊंच पद पा नहीं सकेंगे।''

सा.बाबा 6.02.10 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और विनाश एवं विनाश की प्रक्रिया

परमात्मा का अवतरण होता ही है नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश कराने के लिए। परमात्मा ही आकर आत्माओं को नई दुनिया की प्रालब्ध भोगने के योग्य बनाते हैं। बाबा ने श्रीमत दी है - बच्चों को नई दुनिया के योग्य बनने का पुरुषार्थ करना परन्तु वर्तमान समय की परिस्थितियों और कर्मभोग आदि से परेशान होकर विनाश जल्दी हो, इसका संकल्प नहीं करना है। इसके लिए बाबा कहते हैं - तुमको विनाश -लीला का इन्तजार नहीं करना है लेकिन उसके लिए इन्तजाम करना है। यदि आप चाहते हो कि विनाश जल्दी हो तो इसका मतलब आप चाहते हो कि बाबा जल्दी चला जाये। ड्रामा को भी समझते हुए यह स्मृति रखना चाहिए कि विनाश भी अपने समय पर ही होगा, हमारे कहने या सोचने से नहीं होगा।

जो आत्मा आत्माभिमानी होगी, वह निर्भय, निर्वैर, निर्मोही होगा। उसको न तो व्यक्ति का भय, न मृत्यु का भय होगा, आत्मा एक सेकेण्ड में अपने स्व-स्वरूप में स्थित हो, देह से न्यारी हो जायेगी। उसको न यहाँ से जाने की जल्दी होगी और न रहने की इच्छा होगी। वह सदा न्यारा और प्यारा होगा। इसलिए ऐसी स्थिति को धारण करने का पुरुषार्थ करो।

''बाबा ने कहा - मैं ऐसे शुरू नहीं करूँगा, मैंने कहा ना, जो कुछ होगा अचानक होगा। बाबा तो सिर्फ बताते हैं कि आने वाला समय बहुत भयानक होगा। ... उस समय हलचल नहीं चाहिए। बिल्कुल अचल, अडोल, एकरस अवस्था चाहिए क्योंकि उस समय दातापन की स्थिति चाहिए। दाता घबराता नहीं है लेकिन सबको दान देता है।... आप अपनी स्थिति ऐसी अचल-अडोल बनाओ।'' अ.बापदादा 22.9.05 सन्देश मोहिनी बहन

''नेचुरल केलेमिटीज तूफान बड़े जोर से आयेंगे और इस पुरानी दुनिया का विनाश हो जायेगा। ... इस पुरानी दुनिया का विनाश तो होना ही है, बाकी थोड़ा समय है। यह है अन्तिम लड़ाई। यह लड़ाई जब शुरू होगी, फिर रुक नहीं सकती है। यह लड़ाई शुरू ही तब होगी,

जब तुम कर्मातीत अवस्था को पायेंगे, स्वर्ग में जाने के लायक बन जायेंगे।''

सा.बाबा 27.12.09 रिवा.

''अभी बापदादा के दो शब्द याद रखो। माया को इशारा करो कि गेट आउट और अपने को गेस्ट हाउस में अनुभव करो। यह दुनिया आपकी नहीं है, गेस्ट हाउस है। अब तो घर जाना ही है। घर के नज़ारे आपके मन में और बुद्धि में दिखाई दें। तो ऑटोमेटिकली घर याद रहेगा। ... 'अब घर चलना है' - यह लहर हर एक एक अपने जीवन से चाहे भारत, चाहे विदेश में अनुभव करके दिखाओ।''

अ.बापदादा 25.10.09

''जब तक तुम सतोप्रधान नहीं बनें हो तब तक घर वापस जा नहीं सकते हो। लड़ाई का भी इससे कनेक्शन है। लड़ाई तब ही लगेगी, जब तुम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सतोप्रधान बनेंगे। ज्ञान तो एक सेकेण्ड का है।... जब तक सतोप्रधान नहीं बने हो तब तक यह पद पा नहीं सकेंगे। जैसे और पढ़ाई में फेल होते हैं, वैसे इसमें भी फेल होते हैं।''

सा.बाबा 18.08.09 रिवा.

''सबको नम्बरवार स्मृति आई है। जिनको बहुत स्मृति रहती है, वे ऊंच पद पायेंगे। स्मृति रहे तब औरों को भी समझायें।... तुमको रचना के आदि-मध्य-अन्त की, भक्ति आदि की सब स्मृति है। ... अभी तो दुख के पहाड़ गिरने हैं। तुम बच्चों को पुरुषार्थ करना है कि ये गिरने से पहले हम याद की यात्रा से अपने विकर्म विनाश कर लें।''

सा.बाबा 12.08.09 रिवा.

''दो-चार बार भी कोई बात प्रैक्टिकल में लाई जाती है तो प्रैक्टिकल में लाने से प्रैक्टिस हो जाती है। ... तो इस अभ्यास की प्रैक्टिस से अव्यक्त स्थिति नेचुरल और नेचर बन जाना चाहिए। जब यह स्थिति नेचर बन जायेगी फिर क्या होगा? नेचुरल केलेमिटीज आयेंगी। आपकी नेचर न बनने के कारण ये नेचुरल केलेमिटीज रुकी हुई हैं।''

अ.बापदादा 11.3.71

''पुरुषार्थ करना चाहिए ऊंच पद पाने का। बाप कहते हैं - जितना अभी पुरुषार्थ कर पद पायेंगे, वही कल्प-कल्पान्तर के लिए होगा।... पूरा पुरुषार्थ नहीं किया तो अन्त में दिल शिकस्त भी होंगे ओर सजा भी खानी पड़ेगी। फिर उस समय कर ही क्या सकेंगे।''

सा.बाबा 20.07.09 रिवा.

''इस मृत्युलोक का अभी अन्त है। हम खुशी का खज़ाना यहाँ से ही भरकर जाते हैं। तो इस कमाई करने में, झोली भरने में अच्छी रीति लग जाना चाहिए।...बस, हमको तो औरों की सर्विस करनी है और अपनी झोली भरनी है।''

सा.बाबा 18.07.09 रिवा.

''तुम सब अपना राज्य स्थापन कर रहे हो। तो सर्विस में बिजी रहना चाहिए। ... तुम विचार करो - यह सब कैसे खत्म होंगे। सृष्टि के ऑलराउण्ड सागर है। विनाश होगा तो जलमई हो जायेगी। ... भारत कितना छोटा जाकर रहेगा, सो भी मीठे पानी पर।''

सा.बाबा 18.07.09 रिवा.

''आगे चलकर सब साक्षात्कार होते रहेंगे कि तुम यह बनेंगे, परन्तु उस समय कर ही क्या सकेंगे। रिजल्ट निकल गई, फिर ट्रान्सफर होने की बात हो जायेगी। फिर रोयेंगे-पीटेंगे। हम बदली हो जायेंगे नई दुनिया के लिए।... अन्त में किसी का जमा नहीं होगा क्योंकि अन्त में किसी के पैसे की भी दरकार नहीं रहेगी।''

सा.बाबा 16.07.09 रिवा.

''इन्जीनियर्स आदि भी पिछाड़ी में आयेंगे, इसलिए वे इतना ज्ञान नहीं उठायेंगे। वे फिर वहाँ भी आकर यही इन्जीनियरिंग आदि का काम करेंगे। राजा-रानी तो बन न सकें। वे राजा-रानी के आगे सर्विस में रहेंगे।... बच्चों को पुरुषार्थ पूरा करना चाहिए। फुल पास होकर कर्मातीत अवस्था को पाना है। जल्दी जाने का ख्याल नहीं आना चाहिए। अभी तुम हो ईश्वरीय सन्तान।''

सा.बाबा 16.07.09 रिवा.

''जो साक्षात्कार किया है, वह फिर इन आँखों से देखेंगे। विनाश देखना कोई मासी का घर नहीं है। बात मत पूछो। एक-दो के सामने खून करते हैं।...स्थापना तो जरूर होनी है, फिर जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे।''

सा.बाबा 22.06.09 रिवा.

''सृष्टि की क़यामत के पहले अपनी कमजोरी और कमियों की क़यामत करो। ... अपनी पुरानी बातों को, पुराने संस्कारों को ऐसा परिवर्तन में लाना है, जैसे जन्म परिवर्तन होने के बाद पुराने जन्म की बातें भूल जाती हैं।''

अ.बापदादा 23.10.70

''सुबह को भी तुम ड्रिल करते हो। शरीर से नयारा होकर बाप की याद में रहते हो। यहाँ तुम आये हो जीते जी मरने। बाप पर न्योछावर होते हो। ... पुरुषार्थ ऐसा करो, जो अन्त में कुछ भी याद न आये।''

सा.बाबा 15.04.09 रिवा.

''बाप कहते हैं - इन आँखों से तुम जो कुछ भी देखते हो, उससे वैराग्य। यह तो सब खत्म हो जाना है।... यह है बेहद की बात। बाप आया है स्वर्ग की स्थापना करने।... विनाश तो होना ही है। दुनिया तमोप्रधान बनती है तो नेचुरल केलेमिटीज़ भी विनाश में मदद करती है।''

सा.बाबा 18.04.09 रिवा.

''लक्ष्य और लक्षण में सम्पन्न बने ?... वैसे तो समय से भी स्वयं की गति तीव्र होनी चाहिए क्योंकि समाप्ति के समय को लाने वाली आप विशेष आत्मायें निमित्त हो। तीव्र गति से वर्ष तो सम्पन्न हो गया। ... फरिश्ता अर्थात् जिसका पुराने संस्कार और संसार से रिश्ता नहीं।''

अ.बापदादा 25.1.94

''कोई तो 95 परसेन्ट सज़ा खाते हैं, सिर्फ 5 परसेन्ट अपने पुरुषार्थ से चेन्ज होते हैं। हाइएस्ट और लोएस्ट नम्बर तो होते हैं ना। अभी अपने को कोई हंस कह न सके, अभी बनने का पुरुषार्थ कर रहे हो। जब ज्ञान पूरा हो जायेगा, तब लड़ाई लगेगी। ... अभी तो घर-घर पैग़ाम पहुँचाना है।''

सा.बाबा 27.02.09 रिवा.

परमात्मा हमारा बाप है, अभी हमारा नाटक में पार्ट पूरा हुआ, अब हम घर जा रहे हैं ... जब ये स्मृति होगी, तब ही इस देह और देह की दुनिया से वैराग्य आयेगा, इससे उपराम होंगे।

दादी जानकी 16.2.09

''अन्त में चाहेंगे तो भी सेवा नहीं कर सकेंगे,... उस समय फरिश्ता लाइफ या अशरीरी बनने का सेकेण्ड में बिन्दु लगाने का यह अभ्यास ही काम में आना है और अचानक होना है। ... सेवा करनी है लेकिन दोनों का बैलेन्स चाहिए। बापदादा बार-बार इशारा दे रहा है, जिससे कोई उल्हना न दे। अचानक होना है और ऐसे सरकमस्टांश में होना है।''

अ.बापदादा 5.02.09

''तुम जानते हो अभी खूने नाहेक खेल होना है।... नेचुरल केलेमिटीज होंगी, सबका मौत होगा। इसको देखने की बड़ी हिम्मत चाहिए। डरपोक तो झट बेहोश हो जायेंगे। इसमें निडरपना बहुत चाहिए।''

सा.बाबा 29.1.05 रिवा.

''यह है खूने नाहेक खेल, नेचुरल केलेमिटीज भी होंगी। ... बहुत आफतें आयेंगी। तुम बच्चों को अभी ऐसी प्रैक्टिस करनी है, जो अन्त में एक शिवबाबा ही याद रहे।... नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा।''

सा.बाबा 13.4.05

''हाहाकार के बाद जयजयकार हो जायेगी। ... नेचुरल केलेमिटीज बहुत मदद करतीं हैं। ... ऐसी सीन को देखने के लिए हिम्मत चाहिए। मेहनत भी करना है और निर्भय भी बनना है। तुम बच्चों में अहंकार बिल्कुल नहीं होना चाहिए।''

सा.बाबा 11.11.05 रिवा.

''समय आपका इन्तजार कर रहा है और आपको इन्तजाम करना है, समय का इन्तजार नहीं करना है। सर्व को सन्देश देने का और समय को सम्पन्न बनाने का इन्तजाम करना है।''

अ.बापदादा 20.12.92

''सदैव एकरस स्थिति रहे और विघ्नों को भी हटा सकें, इसके लिए सदैव दो बातें अपने सामने रखनी हैं। ... एक तरफ विनाश के नगाड़े सामने रखो और दूसरे तरफ अपने राज्य के नज़ारे सामने रखो। दोनों ही साथ में बुद्धि में रखो।''

अ.बापदादा 28.5.70

''अजुन अभी अपार दुख आने वाले हैं। यह सारी बेहद की बात है। ... तुम बच्चे जानते हो विनाश की सीन बड़ी दर्दनाक है। उसके पहले बाप से वर्सा ले लेना चाहिए।''

सा.बाबा 2.12.08 रिवा.

''आपकी स्थिति ऐसी हो जो आपके मस्तक में लाइट देखने में आये। विनाश के समय भी यह लाइट रूप आपको बहुत मदद देगा। कोई किस भी वृत्ति वाला आपके सामने आयेगा, वह देह को न देख आपके चमकते हुए इस वल्व को देखेंगे।''

अ.बापदादा 2.2.70

''पिछाड़ी में बहुत साक्षात्कार होंगे। जो यहाँ होंगे, हिम्मत से हाथ पकड़ कर रखेंगे, वे ही अन्त समय यह सब देखेंगे। ... पुरुषार्थ नहीं किया, बाप का हाथ छोड़ा तो बहुत पछताना पड़ेगा। ... बाप कहेंगे - तुमको कितना समझाया, तुम श्रीमत पर न चले तो तुम्हारा यह हाल हुआ, अब कल्प-कल्प यही पद मिलता रहेगा।''

सा.बाबा 27.10.08 रिवा.

अचानक प्रकृति के नज़ारे देख आत्माओं में हद की वैराग्य वृत्ति आयेगी और भौतिकता की तरफ से बुद्धि हटकर आध्यात्मिकता की तरफ जायेगी। उनमें जिन आत्माओं के भाग्य में है, वे थोड़ा-बहुत मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा ले ही लेंगे। सन्देश 14.10.08

अभी यह रिहर्सल हो रही है रियल समय के लिए। ... अब समय की तेज रफ्तार को देखकर स्वयं को चेक करो कि समर्थ बन व्यर्थ को कहाँ तक समाप्त किया है क्योंकि इस संगम का एक-एक सेकेण्ड, सेकेण्ड नहीं लेकिन अमूल्य समय है, हीरे समान है। इसलिए सेकेण्ड भी व्यर्थ न जाये, समर्थ हो सफल हो। सन्देश 14.10.08

''तुम यह रुहानी पढ़ाई पढ़ते हो राजाई लेने के लिए। तुम्हारा धन्धा ही यह है रुहानी पढ़ाई पढ़ना और पढ़ाना। ... विचार करना चाहिए कि अब कौन की पढ़ाई में लगें। ... यह कमाई करते-करते दुनिया ही विनाश हो जानी है। तुम्हारी यह पढ़ाई पूरी होगी, तब ही विनाश होगा।'' सा.बाबा 16.04.10 रिवा.

''तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए कि अब यह नाटक पूरा होता है, अभी हमको अपने घर वापस जाना है। ... कई समझते हैं कि जल्दी इस दुनिया से छूटें परन्तु जायेंगे कहाँ ? ...

अपनी नब्ज़ आपही देखनी है कि हम कहाँ तक लायक बनें हैं, स्वर्ग में जाए क्या करेंगे ?''

सा.बाबा 22.02.10 रिवा.

''आज तो यह झण्डा लहराया लेकिन वह दिन जल्दी से जल्दी आना है जो सबके दिल में बाप के स्नेह का झण्डा लहरायेगा ...सभी के मुख से यह आवाज़ निकलेगा - 'हमारा बाबा आ गया', अभी तीव्र पुरुषार्थ करके यह समय जल्दी से जल्दी समीप लाना ही है। आना ही है, होना ही है और सबको बोलना ही है।''

अ.बापदादा 11.02.10

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और माया

बाबा कहते - यह युद्ध का मैदान है, इसमें राम के बच्चों की माया रावण से युद्ध है। जो इस युद्ध में जितना और जैसे जीतता है, उस अनुसार ही वह अभी ईश्वरीय सम्पत्ति का अधिकारी बनता है और भविष्य रामराज्य में राजाई पद पाता है। इसमें हर आत्मा राजाई पा सकती है। हर आत्मा अपने लिए राजाई पाने के लिए लड़ रहे हैं। वहाँ सिपाही राजा के लिए लड़ते हैं परन्तु यहाँ हर एक अपने लिए लड़ता है। ये लड़ाई भी गुप्त है, इसके अस्त्र-शस्त्र भी गुप्त है और प्रालब्ध अर्थात राज़ाई भी गुप्त है। हर आत्मा की अपने अन्दर के आसुरी और दैवी संस्कारों के बीच युद्ध चलती है। आधे कल्प तक आसुरी संस्कारों का दैवी संस्कारों पर राज्य चलता है। परन्तु अभी समय है दैवी संस्कारों का आसुरी संस्कारों पर विजय पाने का।

आधे कल्प तक हम माया के साथ रहे हैं परन्तु अभी हम राम परमात्मा के साथ आये हैं तो हमारी माया से युद्ध होती है और हमको माया पर जीत पानी होती है। माया न आये अर्थात् विघ्न न आयें, तो कैसे समझा जाये कि हमने माया पर जीत पाई है। इसलिए मायाजीत बनना है तो कब विघ्नों से घबराना नहीं है लेकिन उनको जीतने का संकल्प और साहस रखकर अभीष्ट पुरुषार्थ करना है। बाबा ने कहा है तुम योद्धे हो, योद्धों को बुद्धि में सदा युद्ध और विजय ही रहती है अर्थात् युद्ध करना है और विजय पानी है। और कोई बात उनकी बुद्धि में होती ही नहीं।

''इसको कहा जाता है - युद्ध का मैदान। तुम हरेक इण्डिपेण्डेण्ट युद्ध के मैदान में सिपाही हो। अब हरेक जितना चाहे उतना पुरुषार्थ करे। राजाई में ऊंच पद पाना - यह है पुरुषार्थ करना। बाकी बाप सेकण्ड में जीवनमुक्ति देते हैं।'' सा.बाबा 08.9.04 रिवा.

''अभी तुम माया पर जीत पाने के लिए युद्ध करते हो। युद्ध करते-करते फेल हो जाते हैं तो त्रेता में चले जाते हो।'' सा.बाबा 22.11.04 रिवा.

''रावण को जीतने का यह युद्ध का मैदान है। थोड़ा भी देह का अभिमान न आये 'मैं ऐसी सर्विस करता हूँ, यह करता हूँ...।' हम तो गॉडली सर्वेन्ट हैं, सबको पैगाम देना ही है।''

सा.बाबा 26.11.04 रिवा.

''समीप रतन सदैव अपना आकारी रूप और भविष्य रूप सामने देखते रहेंगे। ... यह पुरुषार्थी शरीर एकदम मर्ज हो जायेगा, वे दोनों इमर्ज होंगे। एक तरफ अव्यक्त, दूसरी तरफ भविष्य। जब पहले ऐसा स्वयं अनुभव करेंगे, तब आपसे दूसरों को भी अनुभव होगा।''

अ.बापदादा 29.5.70

''तुम जितना पुरुषार्थ करेंगे बाप को याद करने का, उतना माया तुमको नीचे गिराने की कोशिश करेगी। तुम्हारी अवस्था ऐसी मजबूत होनी चाहिए जो माया के कोई तूफान हिला न सकें। ... बाप वरदान देते हैं परन्तु सिर्फ वरदान से कोई काम नहीं होता है, अपनी मेहनत करनी है। हर एक बात समझने की है। अपने को आपही राज-तिलक देने के अधिकारी बनाना है।''

सा.बाबा 16.06.09 रिवा.

''माया आ जाती है - इस पुराने शब्द और संकल्प को भी पुराने वर्ष के साथ विदाई दो। ... दुनिया की हालतें बिगड़ना शुरू हो रही हैं, ... बापदादा के महावाक्य हैं कि अचानक होना है और अचानक का अभ्यास बहुत समय का नहीं होगा तो बताओ उस समय क्या होगा?''

अ.बापदादा 31.12.09

''अपनी अवस्था को आपही देखना है और अपना जमा और ना का पोतामेल आपही रखना है। ... तुम्हारी माया से युद्ध है। सेकण्ड में फायदा और सेकण्ड में घाटा हो जाता है। झट मालूम पड़ता है कि हमने फायदा किया या घाटा किया? तुम व्यापारी हो ना। कोई विरला यह व्यापार करे। स्मृति से है फायदा और विस्मृति से है घाटा।''

सा.बाबा 27.11.09 रिवा.

''बाप ने यह भी बताया है कि यह युद्ध का मैदान है। पावन बनने में टाइम लगता है। ऐसे नहीं कि जो शुरू में आये हैं, वे पूरे पावन बन गये हैं। माया से लड़ाई जोर से चलती है, अच्छों-अच्छों को भी माया जीत लेती है।... मूर्छित हो जाते हैं, फिर जब मुरली पढ़ें, तब सुजाग हों।''

सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

''थोड़ा भी सुना तो स्वर्ग में तो वे भी आयेंगे। अभी बाप कहते हैं - पुरुषार्थ करके ऊंच पद पाओ। अगर विकार में गये तो पद-भ्रष्ट हो जायेगा।... माया बहुत धोखा देती है। तुम्हारी स्थिति इच्छामात्रम् अविद्या की होनी चाहिए। अगर कोई इच्छा रखी तो मरा। बर्थ नॉट ऐ पेनी बन जाते हैं।''

सा.बाबा 26.11.09 रिवा.

''हर समय, हर संकल्प, हर कर्म वारी जाऊं का है? जब ऐसी चेकिंग करते रहो और ऐसी स्थिति रहे तो माया सामना करने का साहस नहीं रखेगी लेकिन बार-बार नमस्कार कर विदाई लेगी।... दूसरी बात वरदानीमूर्त बनने के लिए सर्व शक्तियों को अपने में देखना चाहिए कि इतना स्टॉक जमा किया है, जो दूसरों को भी दे सकूँ?''

अ.बापदादा 20.5.71

''अच्छे-अच्छे महारथियों को भी माया हरा देती है। माया भी बलवान से बलवान होकर लड़ती है। ... माया के साथ बॉक्सिंग है, बच्चों को बहुत सावधान रहना है।''

सा.बाबा 19.11.09 रिवा.

''पुरुषोत्तम संगमयुग का टाइम पूरा एक्यूरेट है। यह ड्रामा बड़ा एक्यूरेट चलता है और बहुत वण्डरफुल है। ... इतना ऊंच पद पाना कोई सहज थोड़ेही हो सकता है। बहुत सहज बात है - बाप की याद और बाप से वर्सा लेना। सेकेण्ड की बात है। फिर ऊंच पद पाने का पुरुषार्थ करने लगते हैं तो माया के विघ्न भी पड़ते हैं।''

सा.बाबा 16.11.09 रिवा.

''कोई-कोई पढ़ने वाले ऐसी कोशिश करते हैं, जो पढ़ाने वाले से भी ऊंच चले जाते हैं। ... आगे चलकर तुम बहुतों का सुनते रहेंगे, वण्डर खायेंगे कि यह तो हमको ज्ञान देती थी, फिर यह कैसे चली गई। ... जैसे तुम माया को फथकाकर उस पर जीत पाते हो, माया भी फिर ऐसे करेगी। ... यह युद्ध का मैदान है, बच्चों को बहुत खबरदार रहना है।''

सा.बाबा 10.11.09 रिवा.

''कोई भी बुराई को समाप्त करने के लिए बाप की बड़ाई करो।... सदैव बड़े से बड़े बाप की बड़ाई करते रहो, इसमें सारी पढ़ाई भी आ जाती है। तो इस बड़ाई करने क्या होगा? लड़ाई बन्द हो जायेगी। माया से लड़-लड़ कर थक गये हो ना। जब बाप की बड़ाई करेंगे तो लड़ाई में थकेंगे नहीं।... लड़ाई भी एक खेल मिसल दिखाई देगी।''

अ.बापदादा 6.05.71

'''अब घर चलना है' - यह लहर हर एक एक अपने जीवन से चाहे भारत, चाहे विदेश में अनुभव करके दिखाओ। बेहद का वैराग्य। गेस्ट-हाउस में दिल नहीं लगती है। जाना है, जाना है, सदा याद रहता है। यह बेहद का वैराग्य कोई भी प्रकार का, मन के संकल्पों का, आपस में संगठन में माया के विघ्नों कोएकदम समाप्त कर देगा। माया के तूफान आपके लिए तोहफा बन जायेंगे।''

अ.बापदादा 25.10.09

''जो पहले-पहले बाप से बिछड़े हो, वे ही आकर बाप से मिलते हो। उनको ही पुरुषार्थ करना

है।...बाप याद करने की भिन्न-भिन्न युक्तियाँ बताते रहते हैं, फिर साथ-साथ यह भी कहते हैं कि माया बड़ी दुस्तर है, घड़ी-घड़ी तुमको भुलायेगी, देहाभिमानी बना देगी, इसलिए जितना हो सके तुम बाप को याद करते रहो।''

सा.बाबा 20.10.09 रिवा.

''तुम रुहानी बाप के साथ योग लगाकर रावण पर जीत पाने का कितना सहज पुरुषार्थ करते हो। तुमको कहा जाता है गुप्त वारियर्स, गुप्त महावीर। ... बाप विश्व पर जीत पाने वा विश्व में शान्ति स्थापन करने के लिए कितनी सहज युक्ति बताते हैं।''

सा.बाबा 14.10.09 रिवा.

''शान्तिधाम तो सब जायेंगे। वहाँ जाकर सबको सिर्फ बैठ जाना है क्या ? वे कोई काम के न रहे। ... अब तुमको फिर से माया रावण पर जीत पानी है, विश्व का मालिक तुमको ही बनना है। अभी बाप तुमको रावण पर जीत पहनाते हैं।''

सा.बाबा 27.08.09 रिवा.

''माया को चेलेन्ज है कि प्रतिज्ञा करने वालों का खूब प्रैक्टिकल पेपर ले। सामना करने की शक्ति सदैव अपने में कायम रखना। ... माया भी बड़ी चतुर है। अपना अति सूक्ष्म रूप भी धारण करती है। ... इसलिए अच्छी तरह से तीसरे नेत्र से अपनी चेकिंग करनी है।''

अ.बापदादा 5.12.70

''माया के तूफान तो आयेंगे लेकिन तुमको हारना नहीं है।... माया से लड़ाई न हो तो पहलवान कैसे कहेंगे। माया के तूफानों की परवाह नहीं करनी चाहिए।''

सा.बाबा 3.04.09 रिवा.

''अविनाशी नशा है। ... माया का भी परमात्म-बच्चों से आदि से अब तक सम्बन्ध है। माया और परमात्म बच्चे दोनों का आपस में कनेक्शन है। माया का काम है आना और आप बच्चों का काम क्या है ? माया को दूर से भगाना। ... आने देते हो तो उसकी आदत पड़ जाती है आने की।''

अ.बापदादा 22.2.09

''माया के प्रभाव में आकर यही सोचते हैं कि अभी तो टू-लेट का बोर्ड नहीं लगा है, अभी तो समय पड़ा है, पुरुषार्थ कर रहे हैं, पहुँच जायेंगे। ... कोई कोई बच्चे माया को पहचानने में भी गलती कर लेते हैं। माया की मत है या बाप की मत है। न पहचानने के कारण माया के प्रभाव में आ जाते हैं।''

अ.बापदादा 22.2.09

''माया आये और भगाओ, इसमें समय नहीं गँवाओ क्योंकि समय कम है और आपका वायदा है कि विश्व-परिवर्तक बन विश्व-सेवक बन विश्व की आत्माओं को बाप का परिचय दे मुक्ति का

वर्सा दिलायेंगे, वह कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ है। उस कार्य को करने में समय लगाना है।... बाप से जो शक्तियाँ मिली हैं, उनके आधार पर माया को दूर से ही भगाओ।''

अ.बापदादा 22.2.09

''विशेष दो खज़ाने बहुत जमा करने हैं। कौन से दो खज़ाने ? एक संकल्प और दूसरा समय। ... नॉलेजफुल हो या नॉलेजफुल हो ? ... फुल नॉलेज आ गई है, माया को भगाने की नॉलेज है ? ... नॉलेजफुल अर्थात् माया को दूर से भगाने वाले।''

अ.बापदादा 22.2.09

''यूँ तो बाप समझते हैं कि यह मेहनत का काम है। फिर भी पुरुषार्थ कराने के लिए पम्प करते रहते हैं। ... माया भुलायेगी जरूर, टाइम लगेगा। परन्तु ऐसे नहीं समझो कि माया को भुलाना ही है, इसलिए ठण्डे होकर बैठ जाओ। नहीं, पुरुषार्थ जरूर करना है।''

सा.बाबा 11.02.09 रिवा.

''तुम सुखधाम के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। यह बॉक्सिंग है। बॉक्सिंग में कभी माया की जीत होती है तो कभी बच्चों की जीत होती है। यह युद्ध दिन-रात चलती है। उस्ताद का हाथ पूरा पकड़ना है। उस्ताद सर्वशक्तिवान, सर्व समर्थ है, उनका हाथ छोड़ा तो यह मरा।''

सा.बाबा 27.10.08 रिवा.

''अभी योग लगाते-लगाते युद्ध करनी पड़ती है। बैठते योग में हैं लेकिन अनुभूति में खोये हुए नहीं होने के कारण कभी योग, कभी युद्ध दोनों चलते रहते हैं। ... विस्मृति है तब तो स्मृति में लाने का पुरुषार्थ करना पड़ता है। ... स्मृति-विस्मृति की युद्ध लवलीन अनुभूति करने नहीं देती है।''

अ.बापदादा 5.12.94

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और सुखद जीवन, सुखद मृत्यु एवं सुखद जन्म

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और मृत्यु पर विजय

पुरुषार्थ ही जीवन है और पुरुषार्थहीनता ही मृत्यु है। पुरुषार्थ अर्थात् कर्म के बिना कोई इस सृष्टि पर रह नहीं सकता और बिना पुरुषार्थ के किसी को कोई प्रालब्ध भी नहीं मिल सकती है, इसलिए आत्मा पुरुषार्थ करती ही है अर्थात् पुरुषार्थ आत्मा स्वभाव है। वर्तमान हमारा पुरुषार्थी जीवन विशेष पुरुषार्थ का है क्योंकि सारे कल्प जो पुरुषार्थ करते हैं, वह उतरती कला का अर्थात् उसकी गति सुख से दुख की तरफ होती है, अभी हमको परमात्मा मिला है और उसने सारा ज्ञान हमको दिया है, इसलिए अब हम जो पुरुषार्थ करते हैं, वह चढ़ती कला

का अर्थात् उसकी गति दुख से सुख की तरफ होती है। अब प्रश्न उठता की हमारा वर्तमान का पुरुषार्थी जीवन सदा सुखमय हो, हमारा अन्त अर्थात् हमारी मृत्यु भी सुखमय हो और भविष्य जन्म भी सुखमय हो, उसके लिए हम क्या और कैसा पुरुषार्थ करें - वह विचारणीय है। हमारा ये जीवन, मृत्यु और जन्म सब सुखमय हो, उसका राज़ ज्ञान सागर परमात्मा ही आकर बताते हैं, जो उन्होंने अभी हमको बताया है। उस आत्मा उस राज़ को जानकर उस अनुसार पुरुषार्थ करता है, उसका जीवन, मृत्यु और जन्म सब निश्चित ही सुखमय हो जाता है।

परमात्मा ने अभी जो इस विश्व-नाटक का रहस्योद्घाटन किया है, उस अनुसार आत्मा अविनाशी है, मृत्यु और जन्म इस विश्व-नाटक में भिन्न-भिन्न पार्ट बजाने के लिए वस्त्र बदलना है, जिसके बिना यथार्थ पार्ट चल नहीं सकता। जो इस राज़ को समझ लेता है और अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को देखता है, उसमें पार्ट बजाता है, उसके लिए मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख की बात खत्म हो जाती है और उसका ये जीवन परम सुखमय हो जाता है, साथ ही वह सुखमय मृत्यु को प्राप्त करता है और उसको अपना भविष्य भी निश्चित ही सुखमय दिखाई देता है, इसलिए वह निश्चिन्त और निर्भय रहता है। परन्तु बिडम्बना ये है कि आत्मा पर अनेक जन्मों के पापों का बोझा है, देहाभिमान की जंक चढ़ी हुई है, इसलिए इसे समझना और इसमें स्थित होना कठिन होता है। बाबा ने अभी ये राज़ समझाया है और उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ का भी ज्ञान दिया है। जो आत्मा उस अनुसार पुरुषार्थ करती है, वह इस भय और दुख से मुक्त हो जाती है। पुरुषार्थ की सफलता अवश्य होती है, इसलिए कभी पुरुषार्थहीन नहीं होना है। हिम्मतवान को परमात्मा की मदद भी अवश्य मिलती है।

संक्षेप में कहें तो सुखमय जीवन का आधार है कि इस ईश्वरीय जीवन प्राप्तियाँ अर्थात् ज्ञान-गुण-शक्तियों को अनुभवों को बुद्धि में जाग्रत रखना, परमात्मा पिता, ब्रह्मा बाबा और दैवी परिवार के साथ के अनुभवों को जीवन में जाग्रत रखना। ऐसे ही सुखमय मृत्यु का आधार है - देह और देह की दुनियाँ को भूलने का सफल अभ्यास, परमात्मा की याद से और सहनशक्ति को धारण कर कर्मभोग के रूप में आये विकर्मों का संचित खाते को खुशी से खत्म करना। सुखद जन्म के लिए आवश्यक है श्रेष्ठ कर्म करके भविष्य के लिए श्रेष्ठ प्रालब्ध का खाता जमा करना। जिस आत्मा ने तन-मन-धन से ईश्वरीय सेवा करके श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा किया हुआ है, उसका ही भविष्य जन्म सुखमय होगा, उसका आभास आत्मा को इस वर्तमान देह का त्याग करते समय अर्थात् मृत्यु के समय भी होता है।

सुखमय जीवन, मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त होना भी प्रालब्ध है, जो आत्मा

को अपने पुरुषार्थ अनुसार मिलती है, जिस पुरुषार्थ के लिए ज्ञान संगमयुग पर परमात्मा देते हैं। मृत्यु के राज़ को समझने का भी पुरुषार्थ है और उस राज़ की धारणा करने का भी पुरुषार्थ है। जो इस राज़ को समझकर, उसकी धारणा करता है, वही मृत्यु-भय से मुक्त होकर अमरत्व का अनुभव करता है और अन्त में मृत्यु-दुख से मुक्त हो जाता है।

इसके लिए ही गायन है कि देवताओं ने ब्रह्चर्य के बल पर ही मृत्यु को जीता है। मृत्यु-दुख का कारण अज्ञानता जनित देहाभिमान है। आत्मा अविनाशी है, इसलिए आत्मिक स्वरूप में स्थित होने वाले के लिए मृत्यु नाम की कोई चीज है ही नहीं। जब चीज ही नहीं तो दुख किस बात का।

सार रूप में देखें तो सुखद जीवन, मृत्यु-भय से मुक्त होकर सुखद मृत्यु और सुखद जीवन का का पुरुषार्थ है एक तो विश्व-नाटक की वास्तविकता को समझकर देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों से नष्टोमोहा हो जाना और दूसरा अपने को देह से न्यारी आत्मा समझकर देखने, चलने और व्यवहार में आने का सफल अभ्यास करना।

''जीते जी मरना है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो और स्मृति में रखो कि अब हमको वापस घर जाना है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है और देह और इस दुनिया को भूल जाना है।... मैं इस शरीर से अलग हूँ, तुम भी अपने को शरीर से अलग समझो।''

सा.बाबा 25.04.09 रिवा.

''बाबा ने यह भी समझाया है कि जितने धर्म हैं, उतने ही वैराइटी फीचर्स हैं। ... फिर जब चक्र रिपीट होता है तब हर जन्म में फीचर्स, नाम-रूप आदि सब बदल जाते हैं। ... तुम बचचों को कभी भी कोई फिकरात नहीं होनी चाहिए। सब एक्टर्स हैं, सबको एक शरीर छोड़कर दूसरा लेकर अपना पार्ट बजाना ही है।''

सा.बाबा 29.10.09 रिवा.

''ब्रह्म ज्ञानियों के भी ब्रह्म की याद में रहते-रहते श्वांस सुखाते हो जाते हैं। ब्रह्म की याद में आपही शरीर छोड़ दे - यह हो सकता है परन्तु ब्रह्म में कोई जाता नहीं है। ... तुमको भी पुरुषार्थ करना है कि बाप की याद में शरीर छोड़ें, तो अन्त मती सो गति हो जायेगी।''

सा.बाबा 12.10.09 रिवा.

''पहला परिवर्तन - आँख खुलते ही, मैं शरीर नहीं, आत्मा हूँ। यह है आदि समय का आदि परिवर्तन संकलप। इसी आदि संकल्प के साथ सारे दिन की दिनचर्या का आधार है। अगर आदि संकल्प में परिवर्तन नहीं हुआ तो सारा दिन स्वराज्य वा विश्व-कल्याण में सफल नहीं हो सकेंगे। यह आदि समय से परिवर्तन शक्ति कार्य में लाओ।''

अ.बापदादा 31.12.70

''दूसरा परिवर्तन - मैं किसका हूँ, सर्व सम्बन्ध किससे हैं। सर्व प्राप्तियाँ किससे हैं। ... सम्बन्ध के आधार पर प्राप्तियों का परिवर्तन। इस परिवर्तन को ही सहज याद कहा जाता है।''

अ.बापदादा 31.12.70

''मैं चेतन्य सर्वश्रेष्ठ मूर्ति हूँ, यह शरीर मन्दिर है। ... इस मन्दिर को सजा रहे हैं। इस मन्दिर के अन्दर स्वयं बापदादा की प्रिय मूर्ति विराजमान है। जिस मूर्ति के गुणों की माला स्वयं बापदादा सिमरण करते हैं। ... स्वयं ही मूर्ति, स्वयं ही मन्दिर का ट्रस्टी बन मन्दिर को सजाते रहो।''

अ.बापदादा 31.12.70

''तुम देही-अभिमानी बनने का पुरुषार्थ करेंगे तो कर्मेन्द्रियाँ वश होती जायेंगी। कर्मेन्द्रियों को वश करने का एक ही उपाय याद का है। ... याद का ऐसा पुरुषार्थ करो जो अन्तकाल कोई शरीर का भान न रहे और कोई धन-दौलत याद न आये।''

सा.बाबा 14.04.09 रिवा.

'''काल पर कैसे जीत पाई जाती है' - ऐसी-ऐसी बातों पर तुम बच्चों को समझाना है।... समझ को ही साक्षात्कार कहा जाता है।... सर्प का मिसाल सतयुग के लिए है। वहाँ अमरलोक में आपेही समय पर शरीर छोड़ देते हैं। ... कछुये का मिसाल यहाँ का है। काम करके फिर अन्तर्मुखी हो जाना है।''

सा.बाबा 21.03.09 रिवा.

''अब घर जाना है, इसलिए शरीर में भी कोई ममत्व नहीं रहना चाहिए। इस शरीर से, इस दुनिया से उपराम रहना चाहिए। ... विनाश भी बहुत कड़ा होने वाला है।''

सा.बाबा 7.03.09 रिवा.

''सारी देहद की दुनिया से ममत्व मिट जाये, इसमें ही मेहनत है। भाई-भाई की दृष्टि पक्की तब रह सकती है, जब देहाभिमान टूट जाये। ... किसको समझाते हो तब भी याद रहे कि हम सब भाई-भाई हैं। ... भाई-बहन का भी भान न आये। इसको कहा जाता है आत्माभिमानी।''

सा.बाबा 7.03.09 रिवा.

''यह बना-बनाया ड्रामा है। अभी भगवान सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। ... ड्रामा में हर एक एक्टर का अपना-अपना पार्ट है। इसमें हम रोयें-पीटें क्यों ? हम जीते जी उस बाप को याद करते हैं। इस शरीर की भी हमको परवाह नहीं है। यह पुराना शरीर छूटे और हम बाबा के पास जायें।''

सा.बाबा 30.10.08 रिवा.

''अभी जीते जी पुरानी दुनिया से मरकर आकर बाप का बनना है। अपने को आत्मा समझ

अपने बाप को याद करना है। पुरानी दुनिया से बुद्धि हट जानी चाहिए। उसके लिए ही पुरुषार्थ करना चाहिए।''

सा.बाबा 18.10.08 रिवा.

Q. क्या आत्मा मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से मुक्त हो सकती है?

हाँ, मृत्यु का राज़ अर्थात् विश्व-नाटक में पार्ट बजाने के लिए मृत्यु आत्मा के वस्त्र बदलने का एक आधार है। वास्तविकता को देखा जाये तो मृत्यु जीवात्मा के लिए एक वरदान है परन्तु अज्ञानतावश देहाभिमान के कारण वह वरदान एक अभिषाप बन गया है। मृत्यु ही जन्म का आधार है और मृत्यु-जन्म से ही आत्मा को नवजीवन प्राप्त होता है। इस अभिषाप से मुक्त होने के लिए ही परमात्मा ने आत्मा का ज्ञान दिया है। जो इसके सत्य राज़ को समझकर देह और देह की दुनियाँ को भूलकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का सफल पुरुषार्थ करता है, वह मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से मुक्त हो जाता है और जो अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा की मधुर याद में श्रेष्ठ कर्म करता है, उसका भविष्य निश्चित ही सुखमय होता है। मृत्यु-भय के दो कारण हैं। एक मृत्यु-दुख की पूर्व की अनुभूति और दूसरा विकर्मों के फलस्वरूप होने वाले अन्धकारमय भविष्य की आशंका। आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा की याद में कर्म करने वाला इससे सहज मुक्त हो जाता है।

''बाप कहते हैं स्वदर्शन चक्रधारी होकर मरो, और कुछ भी याद न आये। जैसे आत्मा बिगर सम्बन्ध आई थी, वैसे ही जाना है। ... बाबा-बाबा मुख से कहना भी नहीं है। अजपाजाप चलता रहे। बाप की याद में, कर्मातीत अवस्था में यह शरीर छूटे तब ऊंच पद पा सकते हैं।''

सा.बाबा 13.06.09 रिवा.

''अब पुरुषार्थ करो। यह रेस है बुद्धियोग की। समय लगता है। बुद्धियोग से ही पाप कटेंगे।... बाप ने तो स्वर्ग रचा है। ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ हैं सबको प्राण-दान देने वाले। प्राण-दान देने वालों के प्राणों को कब काल बेकायदे, अकाले नहीं ले जायेंगे।''

सा.बाबा 26.12.08 रिवा.

''अभी तुम जानते हो हम यह शरीर छोड़ जायेंगे अपने घर। अभी तुम यह प्रैक्टिस कर रहे हो कि हम कैसे शरीर छोड़ें। ऐसा पूरुषार्थ दुनिया में और कोई करते नहीं होंगे। तुम बच्चों को यह ज्ञान है कि हमारा यह पुराना शरीर है, इसको छोड़कर घर वापस जाना है।''

सा.बाबा 19.03.10 रिवा.

Q. सुखमय मृत्यु और सुखद अर्थात् सुखदायी मृत्यु में क्या अन्तर है?

मृत्यु के समय भी हमको दुख न हो, दुख की महसूसता न हो, उसे कहेंगे सुखमय मृत्यु, उसके लिए हमको देह से न्यारा आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का बहुत समय का सफल पुरुषार्थ

करना होता है। सुखद मृत्य तब होगी जब हम अपने उज्ज्वल भविष्य के प्रति हम आश्वस्त होंगे, उसके लिए कर्म के विधि-विधान को समझकर हमको परमात्मा की याद में रहकर श्रेष्ठ कर्म करने होंगे। जब श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा होगा, तो हमको मृत्यु भी सुखदायी अनुभव होगी अर्थात् मृत्यु से हम भयभीत नहीं होंगे।

''बाप कहते हैं - मैं निराकार हूँ, तुम बच्चों को आप समान अर्थात् निराकारी बनाने, जीते जी मरना सिखलाने आया हूँ। ... शरीर में रहते हुए भी शरीर का भान नहीं है। ... तुम बच्चे भी इस शरीर का भान निकाल दो। तुम आत्माओं को ही मेरे साथ चलना है।''

सा.बाबा 25.02.09 रिवा.

''तुमको जीते जी इस शरीर से मरना है। मैं भी आत्मा, तुम भी आत्मा। ... जैसे मैं अशरीरी हूँ, वैसे तुम भी जीते जी अपने को अशरीरी समझो।... जैसे मेरा इसमें ममत्व नहीं है, वैसे तुम भी इस पुरानी जूती से ममत्व निकालो।''

सा.बाबा 25.02.09 रिवा.

''अभी सबको वापस घर जाना है, इसलिए बाप कहते हैं - इस पुरानी दुनिया से बुद्धियोग तोड़ दो। अब तो जाना है अपने घर, फिर जिसको जितना वहाँ ठहरना होगा, उतना ठहरेंगे। ... कोई तो 100 वर्ष कम 5000 वर्ष तक भी शान्तिधाम में रहेंगे। पिछाड़ी को आयेंगे। ... बाकी सदा काल के लिए मोक्ष कोई को मिल न सके।''

सा.बाबा 10.02.09 रिवा.

''विश्व का मालिक बनने का पुरुषार्थ बाप ही कराते हैं।... अपने से पूछना है कि हमको कहाँ तक खुशी रहती है, हमको कहाँ तक निश्चय है।... हम खुशी से इस पुराने शरीर को छोड़ें। हम खुशी से इस पुराने शरीर को और पुरानी दुनिया को छोड़कर जाते हैं। नये कपड़े खुशी से पहनते हैं ना।''

सा.बाबा 24.01.09 रिवा.

''बाप को शमा भी कहते हैं, उनमें लाइट भी है और माइट भी है। तुम लाइट में आते हो अर्थात् जागते हो तो माइट आ जाती है। ... तुम खुशी से एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हो, दुख की कोई बात नहीं। जैसे एक खेल हो जाता है।''

सा.बाबा 24.01.09 रिवा.

अन्त समय न हमारे लिए किसको कोई संकल्प हो और न हमको किसके लिए कोई संकल्प हो - ऐसी हमारी अन्त समय गति हो, परन्तु ऐसी स्थिति उसकी हो सकती है, जो बहुत समय से निर्संकल्प रहने का अभ्यास होगा।

दादी जानकी 15.02.10

''सतयुग में दुख की कोई बात होती नहीं है। समय पर एक शरीर छोड़ दूसरा ले लेते हैं।

जैसे सर्प का मिसाल है, उसको मरना नहीं कहेंगे। समय पर समझेंगे कि अब टाइम पूरा हुआ है, इस शरीर को छोड़कर दूसरा ले लेते हैं। तुम बच्चों को शरीर से डिटैच होने का अभ्यास यहाँ ही डालना है।''

सा.बाबा 1.02.10 रिवा.

पुरुषार्थ और प्रालब्ध अर्थात् पुरुषार्थ की सफलता

जैसे भक्ति मार्ग में हठयोग में अष्टांग योग है, जिसमें उसकी सफलता के लिए आठ विधि-विधान बताये हैं, वैसे ही इस ज्ञान मार्ग में पुरुषार्थ की सफलता के लिए परमात्मा ने चार विषय अर्थात् ज्ञान, योग, धारणा और सेवा बताये हैं। जिनको यथार्थ रीति अपनाने से ही पुरुषार्थी को मनवांच्छित सफलता मिलती है। इन चारों विषयों में क्या-क्या धारणायें हैं, उन पर यहाँ कुछ विचार कर रहे हैं।

ज्ञान में - मुरली, ज्ञान के विभिन्न बिन्दुओं का मनन-चिन्तन, आपस में चर्चा, लेखन आदि

योग में - अमृतवेला, सायं काल, कर्म करते हुए योग का अभ्यास आदि।

धारणा में - ईश्वरीय गुणों, दैवी गुणो की धारणा, ज्ञान के विभिन्न बिन्दुओं की धारणा मुख्य है।

सेवा में - स्व-सेवा, विश्व-सेवा, यज्ञ की स्थूल-सूक्ष्म सेवा, तन-मन-धन से सेवा, मन्सा-वाचा-कर्मणा सेवा है।

इन सब विषयों के लिए बाबा ने श्रीमत दी हुई है, जो उन सब बातों को यथार्थ रीति समझकर बाबा की श्रीमत पर चलता है, उसके पुरुषार्थ में अवश्य ही सफलता मिलती है और उसको अपना ये पुरुषार्थी जीवन अति सुखमय अनुभव होता है अर्थात् जीवन सफल अनुभव होता है।

''बातों को और व्यक्तियों को न देखो। बाप को देखो, बाप समान कर्म करो, बाप समान बनो। ... व्यर्थ की बातों का रोल के ऊपर रोल होता जाता है। ... बादलों को देख घबराओ नहीं। ये बातें ही बादल हैं। सेकेण्ड में उनको क्रास करो। विधि को जानो और सेकेण्ड में विधि द्वारा सिद्धि मो प्राप्त करो।''

अ.बापदादा 14.4.94

''उस समय आप इस स्थूल शरीर के भान से परे रहते हो, इसलिए इसको सूक्ष्म शरीर भी कह दिया है। ... आर्डर किया कि यहाँ पहुँचो तो वहाँ पहुँच जायेगा। जैसे साइन्स वाले ... ऐसे अभी आप लोगों का पुरुषार्थ भी हर बात में स्पीड बढ़ाने का चल रहा है। जितनी जिसकी स्पीड बढ़ेगी, उतना ही वह अपनी फाइनल स्टेज के नज़दीक आयेंगे। ... अपनी स्पीड से स्टेज को परख सकते हो।''

अ.बापदादा 11.2.71

''इसके लिए चार बातें - लगन, मिलन, मगन और वर्णन में अपने समय को फिक्स करो। ... बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्पों को आने और डिस्टर्व करने का समय ही नहीं मिलेगा। अपनी दिनचर्य को फिक्स करो कि इतना समय इस बात में, इतना समय इस बात में लगाना है। ऐसी अपॉइन्टमेन्ट निश्चित करो तब यह कम्पलेन खत्म होगी और कम्पलीट बन जायेंगे।''

अ.बापदादा 5.11.70

कोई देह को भूलता है तब बाप याद आता है और कोई बाप को याद करता है तो देह को भूल जाता है, जिससे वह अतीन्द्रिय सुख को अनुभव करता है। दादी जानकी 5-06-09

''सफलता के सितारे हो या पुरुषार्थ के सितारे हो ? ... जैसा लक्ष्य होता है, वैसा ही लक्षण होता है। ... पुरुषार्थी समझने से कई छोटी-छोटी गलतियाँ अपने को माफ कर देते हो। ... जब स्वयं सफलता स्वरूप बनेंगे तब दूसरी आत्माओं को भी सफलता का मार्ग बता सकेंगे।''

अ.बापदादा 26.1.70

''अगर अन्त तक पुरुषार्थी रहेंगे तो संगम के प्रालब्ध का अनुभव कब करेंगे ! क्या यह सारा जीवन पुरुषार्थी ही रहेंगे, इस संगमयुग की प्रालब्ध 'सफलता' प्रत्यक्ष रूप में नहीं प्राप्त करेंगे ? सफलता स्वरूप निश्चय करने से सफलता होती रहेगी। ... सर्वशक्तिवान की सन्तान किसी कार्य में असफल हो नहीं सकती।'' अ.बापदादा 26.1.70

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और निराकार एवं फरिश्ता स्वरूप का अभ्यास

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और आत्मिक स्वरूप की ड्रिल

पुरुषार्थ में मनवांच्छित सफलता प्राप्त करने के लिए आत्मिक स्वरूप में स्थित रहने का अभ्यास अर्थात् अपने निराकारी स्वरूप में स्थित होने का पुरुषार्थ करना अति आवश्यक है। जो आत्मा अपने इस निराकारी स्वरूप में स्थित होने का सफलतापूर्वक अभ्यास कर लेती है अर्थात् इस अभ्यास में सफलता प्राप्त कर लेती है, उसके लिए आगे का पुरुषार्थ सहज हो जाता है। हठयोग में भी कहा गया है कि निर्संकल्प समाधि की सिद्धि के बाद ही निर्विकल्प समाधि सिद्ध होती है अर्थात् पहले निराकारी स्वरूप का सफलतापूर्वक अभ्यास करने के बाद ही फरिश्ता स्वरूप का अभ्यास सफल होगा अर्थात् फरिश्ता स्वरूप में स्थित रह सकेंगे।

''बापदादा समय की सूचना बार-बार दे रहे हैं। फिर नहीं कहना कि हमने तो समझा अभी टाइम पड़ा है क्योंकि अपने को भी सम्पन्न बनाना है और सेवा में भी आगे जाना है। दोनों काम

करने हैं। पुरुषार्थ में एक याद और दूसरी सेवा दोनों नम्बरवन हों। तीसरा स्वभाव-संस्कार में परिवर्तन। ... बातें ऐसी आयेंगी, जो व्यर्थ संकल्प चला देंगी। लेकिन तीव्र पुरुषार्थ अर्थात् धरनी पर पाँव नहीं हो, उड़ते रहो। फरिश्ते के पाँव धरनी पर नहीं दिखाते। तो ये स्थूल पाँव नहीं लेकिन स्थिति के पाँव।''

अ.बापदादा 31.12.09

''अव्यक्त रूप में ही सदा साथ हो सकता है क्योंकि अव्यक्त रूप व्यक्त शरीर के बन्धन से मुक्त है। ... अभी सदा साथ का अनुभव करने के लिए जैसे बाप अव्यक्त है, वैसे अव्यक्त बनकर ही अनुभव कर सकते हो। यह अलौकिक अनुभव करने के लिए सदा व्यक्त भाव से परे, व्यक्त देश की स्मृति से उपराम अर्थात् साक्षी बनने से ही हर समय साथ का अनुभव कर पायेंगे।''

अ.बापदादा 20.04.71

''आप सबके तीन रूप ब्राह्मण, फिर फरिश्ता रूप और फिर देवता रूप हैं ... ब्राह्मण तो हो ही लेकिन जब तक फरिश्ता नहीं बनेंगे, तब तक देवता पद नहीं पायेंगे। इसलिए चलते-फिरते फरिश्तेपन की ड्रेस पहनकर रखो।''

अ.बापदादा का सन्देश 13.9.09 गुल्जार दादी जी

''जितना तुम पुरानी दुनिया के आकर्षण से परे जायेंगे, फिर न चाहते हुए भी आकर्षणमूर्त बन जायेंगे। साकार में होते हुए भी सभी को आकारी दिखाई दें और दूसरों को भी आकारी रूप में देखना है। सर्विस का भी बहुत बल मिलता है। एक है अपने पुरुषार्थ का बल और दूसरा है औरों की सर्विस करने से बल की प्राप्ति। तो दोनों बल प्राप्त होते हैं।''

अ.बापदादा 5.4.70

''इस शरीर के भान से भी दूर खाली हो जाओ। तुम्हारा यहाँ कुछ भी नहीं है, सिवाए एक शिवबाबा के दूसरा न कोई।... श्रीमत पर चलना है, सब सरेण्डर भी कर देना है।''

सा.बाबा 22.12.08 रिवा.

''पुरुषोत्तम संगमयुग है कल्याणकारी युग। इसमें ही बाप आकर सबका कल्याण करते हैं। ... अभी तुम यहाँ पुरुषार्थी हो, सम्पूर्ण पवित्र नहीं। सम्पूर्ण पवित्र को फरिश्ता कहा जाता है। ... फरिश्ता बनने के बाद फिर देवता बनते हो।''

सा.बाबा 8.07.09 रिवा.

''मानसिक चिन्तायें और मानसिक परिस्थितियों को हटाने का एक ही साधन याद रखना है - अपने इस पुराने शरीर के भान को मिटाना है। इस देहाभिमान को मिटाने से सर्व परिस्थितियाँ मिट जायेंगी।''

अ.बापदादा 21.1.71 राज्यपाल से

''बाप ने बच्चों को समझाया है कि तुम ऐसा अभ्यास करो, जैसे कि तुम इस शरीर में हो ही

नहीं। ... फिर बाप की मदद है या इनकी मदद है। मदद मिलती जरूर है और पुरुषार्थ भी करना होता है। ... देखा जाता है कि इस याद में रहने से शरीर के रोग जो तंग करते हैं, वे भी ऑटोमेटिकली ठण्डे हो जाते हैं। वह खुशी रह जाती है।'' सा.बाबा 6.07.09 रिवा.

''आज का दिवस सिर्फ स्मृति दिवस नहीं मनाना लेकिन आज का दिवस समर्थी बढ़ाने का दिवस मनाना है। आज का दिवस स्थिति वा स्टेज ट्रान्सफर करने का दिवस समझो। ... अपने को ऐसी ट्रान्सपेरेण्ट स्थिति में ट्रान्सफर करना है, जो आपके शरीर के अन्दर जो आत्मा विराजमान है, वह स्पष्ट सभी को दिखाई दे।''

अ.बापदादा 18.1.71

''जिसकी फरिश्ता रूप की स्थिति अर्थात् अव्यक्त स्थिति सदा काल रहती है, वह बिन्दुरूप में भी सहज स्थित हो सकेगा। अगर अव्यक्त स्थिति में नहीं हैं तो बिन्दुरूप में स्थित होना भी मुश्किल लगता है। इसलिए अभी इसका अभ्यास करो।''

अ.बापदादा 24.7.70

''जैसे शुरू में अव्यक्त स्थित का एकान्त में बैठकर अपना व्यक्तिगत पुरुषार्थ करते थे, वैसे ही इस फाइनल स्टेज का भी पुरुषार्थ बीच-बीच में समय निकाल करना चाहिए। यह है फाइनल सिद्धि की स्थिति। ... अब पाण्डव गवर्मेन्ट को भी बचत की स्कीम बनानी पड़े। ... समय की, संकल्पों की, शक्ति की बचत की योजना बनाकर बीच-बीच में बिन्दुरूप की स्थिति को बढ़ाओ।''

अ.बापदादा 24.7.70

''जो सर्व गुणों में फुल होगा, उसको ही सम्पूर्ण अव्यक्त फरिश्ता की डिग्री मिलती है। ... अभी बहुत नाज़ुक समय है, अभी नाज़ से चलने का समय नहीं है।... अब दिन प्रतिदिन नाज़ुक समय होने के कारण संहारीमूर्त बनना है। संहार भी किसका ? अपने विकर्मों का और विकारी संस्कारों का।''

अ.बापदादा 11.7.70

''फरिश्तों को फर्श की आकर्षण नहीं होती है। अभी-अभी आया और गया। कार्य समाप्त हुआ, फिर ठहरते नहीं है। आप लोगों ने भी कार्य के लिए व्यक्त शरीर का आधार लिया, कार्य समाप्त किया, फिर अव्यक्त एक सेकण्ड में। यह प्रैक्टिस नेचुरल हो जाये, फिर फरिश्ते कहलायेंगे।''

अ.बापदादा 18.6.70

''वर्तमान समय और लक्ष्य के पुरुषार्थ प्रमाण अभी लक्ष्य यही है फरिश्ता। संगमयुग के सम्पन्न स्वरूप फरिश्ता सो देवता बनना है। फरिश्ते की परिभाषा जानते भी हो। फरिश्ता अर्थात् पुरानी दुनिया के सम्बन्ध, संस्कार, संकल्प से हल्का। पुराने संस्कार सब में हल्के हो।''

अ.बापदादा 5.02.09

''सिर्फ अपने संस्कार-स्वभाव, संसार में हल्कापन नहीं, लेकिन फरिश्ता अर्थात् सर्व के सम्बन्ध में आते सर्व के स्वभाव-संस्कार में हल्कापन। इस हल्केपन की निशानी क्या है? फरिश्ता आत्मा सर्व के प्यारे होंगे। कोई-कोई के प्यारे नहीं लेकिन सर्व के प्यारे। जैसे बाप, ब्रह्मा बाप को हर एक समझता है कि मेरा है।''

अ.बापदादा 5.02.09

''फरिश्ता अर्थात् इस देह, साकार देह से न्यारा, सदा लाइट के देहधारी। फरिश्ता अर्थात् इन कर्मेन्द्रियों के राजा। ... फरिश्ता अर्थात् स्वराज्य अधिकारी।... अभी यह तीव्र पुरुषार्थ का लक्ष्य और लक्षण सदा इमर्ज रखो।'' अ.बापदादा 5.02.09

''तो संगमयुग का लक्ष्य क्या है? हम सब आत्माओं का बाप आ गया। वर्सा तो बाप द्वारा मिलेगा ना। वह प्रभाव फरिश्ता अवस्था से वायुमण्डल में फैलेगा।... अभी तीव्र पुरुषार्थ का यही लक्ष्य रखो कि मैं डबल लाइट फरिश्ता हूँ। चलते-फिरते फरिश्ता स्वरूप की अनुभूति को बढाओ, अशरीरीपन के अनुभव को बढ़ाओ।'' अ.बापदादा 5.02.09

''वर्तमान समय के हिसाब से बापदादा फिर से इशारा दे रहा है कि अपना संगमयुग का लास्ट स्वरूप फरिश्ता अब जीवन में प्रत्यक्ष करो, साकार में लाओ। फरिश्ता बनने से अशरीरी बनना बहुत सहज हो जायेगा। अपनी चेकिंग करो कि अपनी या और किसी की विशेषता से सूक्ष्म रूप में लगाव तो नहीं है, अभिमान तो नहीं है?''

अ.बापदादा 5.02.09

''संकल्प को वा बुद्धि को जहाँ लगाने चाहो, वहाँ लगा सके... फर्स्ट और लास्ट पाठ यही अभ्यास है। ... यह है बुद्धि की ड्रिल... ऐसे अभ्यासी बनना ही है। इसके सिवाए राज्य-भाग्य की प्राप्ति होना मुश्किल है।... इस मुख्य अभ्यास को सहज और निरन्तर बनाओ। ऐसे अभ्यासी अनेक आत्माओं को साक्षात्कार कराने वाले साक्षात् बापदादा दिखाई देंगे।''

अ.बापदादा 18.6.71

''जब अपनी असली स्थिति में स्थित हो जाते हो तो आवाज़ से परे स्थिति अच्छी लगती है ना। ... जैसे वाणी में आना कितना सहज है, वैसे ही यह वाणी से परे जाना भी इतना ही सहज होना है।'' अ.बापदादा 18.6.71

Q. 12-12 अर्थात् 24 बार के बाबा ने जो ड्रिल बताई, उसका अभ्यास कैसे हो सकता है और इसमें बाबा का भाव-अर्थ क्या है?

''बापदादा ने 24 बारी का होमवर्क दिया था (12 बारी निराकारी स्थिति और 12 बारी फरिश्ता स्थिति में स्थित होने का अभ्यास करना है और एक समय कम से कम 10 मिनट

स्थित रहे) वह 10 मिनट कई बच्चों को मुश्किल हो रहा है। ... जितना ज्यादा कर सको, उतनी आदत डालो क्योंकि बहुत काल का वरदान प्रैक्टिकल में अभी कर सकते हो। ... अगर 10 मिनट हो तो अच्छा है। ऐसा समय आयेगा जो आप लोगों को अपने लिए और विश्व के लिए भी किरणें देनी पड़ेंगी।'' अ.बापदादा 31.12.09

''बहुत काल का यह अभ्यास बहुत काल की प्राप्ति का आधार है।... 10 मिनट नहीं हो सकता तो ऐसा न हो कि 10 मिनट के सोच 5 मिनट भी चले जायें। तो 5 मिनट ही करो, फिर जितना आगे बढ़ा सकते बढ़ओ।'' अ.बापदादा 31.12.09

हम समझते हैं कि हमारा योग निरन्तर हो, जिससे हमारी एकरस स्थिति हो, हमारी स्थिति सदा आनन्दमय हर्षितमुख हो और हम अचानक के पेपर में सहज पास हो जायें, उसके लिए बाबा ने 24 बार इस अभ्यास के लिए कहा है। हम अपनी दिनचर्या पर विचार करें और जैसे हमारा विधि-विधान है अर्थात् ट्रैफिक-कन्ट्रोल, उठते-बैठते, अमृतवेला, क्लास, खाने-पीने और हर कार्य के आदि-अन्त में याद का, उसको यथार्थ रीति करें तो यह अभ्यास सहज ही कर सकते हैं।

इस सम्बन्ध में मुझे हम सबकी शुभ-चिन्तक, हमारे साकार आदर्श आदरणीय जानकी दादी जी की एक बात याद आती है, जो उन्होंने एकाउण्ट्स की मीटिंग के समय टीचर्स को सम्बोधित करके रात्रि क्लास में कही थी कि मेरी मीठी बहनों अपने को ठगो नहीं, यथार्थ रीति ट्रेफिक कन्ट्रोल के समय योग करो अर्थात् यथार्थ रीति संकल्पों का ट्रेफिक कन्ट्रोल हो। इस सत्य पर विचार करके हम अपने को चेक करें तो सहज ही इस ड्रिल में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

Q. निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति कैसी है, उसके गुण-धर्म क्या है ?

निराकार शिवबाबा की स्थिति और साकार ब्रह्मा बाबा के पुरुषार्थी जीवन की स्थिति और वर्तमान फरिश्ता स्थिति पर विचार करेंगे तो सहज ये स्थितियाँ हमारे सामने स्पष्ट हों जायेंगी और जब स्थितियाँ स्पष्ट होंगी, तब ही हम उनका अपनी दिनचर्या के अनुसार सफल अभ्यास और अनुभव कर सकेंगे।

निराकारी स्थिति अर्थात् शिव बाबा के समान स्थिति अर्थात् निर्संकल्प-बीजरूप स्थिति, सदा साक्षी-दृष्टा स्थिति, चिन्तन-मुक्त स्थिति, सूर्य के समान लाइट-हाउस और माइट-हाउस स्थिति, सुख-दुख से न्यारी स्थिति, अपने-पराये, अच्छे-बुरे से भी मुक्त स्थिति। इसी स्थिति के लिए एक महापुरुष ने कहा है - जहाँ चेतन हो परन्तु चेतना न हो अर्थात् आत्मा शरीर में हो परन्तु संकल्प न हो। इसको ही हठयोग में निर्संकल्प समाधि के रूप में वर्णन किया है।

शिवबाबा निराकारी स्थिति का सिम्बल है। विचार करने की बात है - क्या शिवबाबा कभी सोचता है कि हमको क्लास में जाकर क्या सुनाना है या संकल्प करता है कि हमको जाना है या क्या करना है। शिवबाबा परम पवित्र है, इसलिए ड्रामा अनुसार ऑटोमेटिक उनसे समय पर सारे कर्म होते हैं क्योंकि सृष्टि के विधि-विधान अनुसार पवित्र आत्मा से समय सारे कार्य स्वत: होते हैं, उसको संकल्प करने की आवश्यकता नहीं होती है। इस सम्बन्ध में बाबा ने मुरलियों में भी कहा है कि मैं कभी सोचता नहीं हूँ, ड्रामा अनुसार समय पर स्वत: मुरली चलने लगती है। इसके लिए ही शिवबाबा को असोचता कहा जाता है।

फरिश्ता स्थिति अर्थात् ब्रह्मा बाप समान स्थिति अर्थात् ब्रह्मा बाबा साकार में भी सदा ज्ञान के चिन्तन में और विश्व-कल्याण के चिन्तन में रहे, देह से न्यारी स्थिति में रहे और अभी तो वे साक्षात् फरिश्ता रूप में हैं ही। अभी तो ब्रह्मा बाबा ज्ञान और विश्व-कल्याण के चिन्तन से भी मुक्त सदा विश्व-कल्याण में ही तत्पर हैं, विश्व की सर्वात्माओं को शक्ति देने के लिए, उनको दुख-दर्द से मुक्त करने के लिए उनसे लाइट-माइट की किरणें स्वत: फैलती रहती हैं।

विचारणीय है कि किसी कार्य के लिए चिन्तन पहले होता है, कार्य करने के समय नहीं। कार्य करने के समय तो कार्य करने की लगन होती है। फरिश्ता स्थिति विकल्प से मुक्त निर्विकल्प स्थिति अर्थात् सदा विश्व-कल्याण में तत्पर स्थिति, विश्व-कल्याण के संकल्प से भरपूर स्थिति है।

फरिश्तों के पैर धरती पर नहीं पड़ते क्योंकि वे देहाभिमान से मुक्त होते हैं, फरिश्ते सदा उड़ते रहते, फरिश्तों का किससे कोई रिश्ता-नाता नहीं होता अर्थात् वे सबके होते और सब उनके होते हैं, इसलिए फरिश्ते कब कहाँ रुकते नहीं, सदा उड़ते रहते, साकार देह के भान और बोझ से मुक्त होते, वे किसी आधार पर आधारित नहीं होते हैं। जैसे स्पेस में स्थिति होती है।

अब हम शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा की स्थिति पर विचार करके निश्चित करें कि हमको इस स्थिति के लिए कैसे अभ्यास करना है।

निराकारी स्थिति अर्थात् परमधाम में हम आत्मायें शिवबाबा के साथ हैं परन्तु साथ रहने की कोई अनुभूति नहीं होती, कोई आभास नहीं होता, वहाँ कोई प्राप्ति नहीं होती है। परन्तु अभी विशेषता ये है कि जब हम देह में रहते देह से न्यारी निराकारी स्थिति में स्थित होते हैं तो हमको परम-शान्ति और परम-शक्ति की अनुभूति होती है। आत्मा के मूल स्वरूप सत्, चित्, आनन्द स्वरूप की अनुभूति होती है।

ऐसे ही फरिश्ता स्थिति अर्थात् सूक्ष्मवतन में फरिश्ता स्वरूप बापदादा के साथ की

स्थिति, उनके समान विश्व-कल्याण के संकल्प की स्थिति, जिसमें आत्मा को परमानन्द की अनुभूति होती है, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है। परन्तु अभी इस देह में रहते फरिश्ता स्थिति, उससे भी श्रेष्ठ अनुभूति की स्थिति है। यथार्थ जीवनमुक्ति की स्थिति यही है।

फरिश्ता स्वरूप की स्थिति के लिए आदरणीय दादा विश्वरतन जी की एक बात याद आती है, जो वे प्राय: सबको सुनाया करते थे। दादा जी कहते थे - ब्रह्मा बाप समान बनना है तो जब अव्यक्त बापदादा आते हैं तो उनको ध्यान से देखो तो सहज समझ में आयेगा कि फरिश्ता स्थिति क्या होती है और अव्यक्त बाबा को फॉलो कर सकेंगे, फरिश्ता बन सकेगे। बापदादा कैसे बोलते हैं, कैसे देखते हैं, कैसे मुस्कराते हैं। हॉल में और स्टेज पर सबकुछ होते हुए देखते भी बाबा की स्थिति कैसी रहती है।

इन्द्रियों के रस, स्वभाव-संस्कार, दैहिक सम्बन्धों की आकर्षण आदि आत्मिक शक्ति को सीमित कर देते हैं। फरिश्ता स्वरूप इन सब बन्धनों से मुक्त होता है। ऐसी मुक्त आत्मा एक ही समय अनेक आत्माओं की और अनेकों स्थानों पर बिना किसी बन्धन के सेवा कर सकती है, कार्य कर सकती है। जैसे निराकार शिवबाबा और अव्यक्त फरिश्ता ब्रह्मा बाबा करते हैं। निराकारी स्वरूप और फरिश्ता स्वरूप सर्वशक्तियों से सम्पन्न सदा निर्बन्धन है।

बाबा ने निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की स्थिति में स्थित होने के अभ्यास के लिए कहा है, उस स्थिति को याद करने के लिए नहीं। याद करना तो प्रथम स्टेज है, बाबा अभी बच्चों को फाइनल स्टेज अर्थात् बाप समान स्थिति में देखना चाहते हैं क्योंकि समय सम्पन्नता की ओर जा रहा है।

Q. हम निराकार आत्मा हैं और निराकार शिवबाबा कि शक्ति रूपी किरणें हमारे ऊपर आ रही हैं, उनकी छत्रछाया हमारे ऊपर है - क्या यह स्मृति या यह अनुभूति निराकारी स्थिति की है या बापदादा का हाथ हमारे सिर के ऊपर है, जिससे हमको शक्ति ... मिल रही है - यह फरिश्ता स्थिति है ?

नहीं, निराकारी स्थिति तो संकल्प से भी परे निर्संकल्प अर्थात् बीजरूप स्थिति है, जिसमें किसी प्रकार की चाहना का प्रश्न ही नहीं है और फरिश्ता स्वरूप बापदादा के समान सम्पन्न और सम्पूर्ण दाता-वरदाता स्वरूप है, इसलिए उसमें भी किसी प्रकार की चाहना या पाने का प्रश्न ही नहीं उठता है। दोनों ही स्थितियाँ मास्टर सर्वशक्तिवान, मास्टर नॉलेजफुल, दाता-वरदाता की हैं। जब तक लेने की इच्छा है, तब तक दाता-वरदाता नहीं बना जा सकता है। बाबा ने बच्चों को अपने समान, सम्पूर्ण और सम्पन्न बनाने के लिए ये अभ्यास करने को कहा है। हम बाबा

से ले रहे हैं और आत्माओं को दे रहे हैं - यह स्थिति तो ब्राह्मणपन की है, फरिश्तापन की या निराकारी स्थिति नहीं है।

इन दोनों स्थितियों का सफल अभ्यास और अनुभव करने के लिए जितना निराकार शिवबाबा और फरिश्ता स्वरूप ब्रह्मा बाबा के साथ प्यार होगा, सम्बन्ध की निकटता होगी, उतना ही अनुभूति होगी। शिवबाबा के साथ प्यार और उनकी निकटता से हम अपने को सदा उनके समान मास्टर बीजरूप, मास्टर सर्वशक्तिवान ... अनुभव करेंगे। ब्रह्मा बाबा के साथ प्यार और निकटता से हम उनके समान पुरुषार्थ कर फरिश्ता बन उनके साथ विश्व-कल्याण की सेवा में रहेंगे, उनके समान महादानी-वरदानी बन विश्व-कल्याण की सेवा करेंगे।

Q. क्या बाहर जो गीत बज रहा है, उसे सुनते या हेड-फोन से सुन रहे हैं या और कुछ सुन या देख रहे हैं, तो हम निराकारी या फरिश्ता स्थिति की अनुभूति में हैं, उस समय हम निराकारी या फरिश्ता स्थिति का अनुभव कर सकते हैं? यदि समझते है कि हैं या हो सकती है तो वह विचारणीय है और यदि समझते नहीं है तो कैसे हो, वह विचार करना है?

नहीं, क्योंकि निराकारी स्थिति में स्थित आत्मा तो सुनने-देखने से भी परे होती है और फरिश्ता को ये सब सुनने-देखने की आवश्यकता ही है क्योंकि वह तो सदा सम्पन्न है और विश्व-कल्याण की सेवा में तत्पर है। इस सम्बन्ध में बाबा ने एक मुरली में कहा है - मुरली सुनना भी योग नहीं है, वह तो तुम धन कमाते हो योग में तो सुनना-देखना सब बन्द हो जाता है।

जब तक हमारी बुद्धि देखने-सुनने में है तब तक हमारी निराकारी स्थिति हो नहीं सकती अर्थात् जब तक स्थूल इन्द्रियों से कोई रस अन्दर आ रहा है, तब तक वह स्थिति न निराकारी है और न फरिश्ता की स्थिति है। निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति की अनुभूति स्थूल इन्द्रीय रसों की अनुभूति से परे है।

इसी सम्बन्ध में विचारणीय है कि जब तक स्थूल इन्द्रियों से अन्दर आ रहा है, तब तक हमारा विश्व-कल्याण का संकल्प बाहर कैसे जा सकता है और जब हमारा विश्व-कल्याण का संकल्प बाहर नहीं जा रहा है तो हमारी स्थिति फरिश्ता की कैसे हो सकती है क्योंकि फरिश्ता का समय-संकल्प-शक्ति तो विश्व-कल्याणार्थ ही होता है।

ब्रह्मा बाबा के साकार पुरुषार्थी जीवन पर विचार करें तो क्या उन्होंने अपने पुरुषार्थ के लिए किसी स्थूल माध्यम का आधार लिया। वे सदा ही देह और देह की दुनिया के चिन्तन से मुक्त ज्ञान के चिन्तन में और विश्व-कल्याण के चिन्तन में रहे। इसलिए वे साकार देह में रहते भी देह से उपराम फरिश्ता स्थिति में रहे और अब तो वे साक्षात् फरिश्ता रूप में ही हैं, इसलिए अभी वे ज्ञान के चिन्तन से भी मुक्त हैं, सदा ही विश्व-कल्याणार्थ सर्वात्माओं के और

विशेष कर ब्राह्मण परिवार की आत्माओं एवं एडवान्स पार्टी की आत्माओं को विशेष शक्ति का सहयोग देने के लिए उड़ते रहते हैं क्योंकि फरिश्ता धरती के आकर्षण से मुक्त सदा उड़ती कला की स्थिति में होता है।

बाबा कहते हैं - मैं अमृतवेला बच्चों को विशेष शक्ति देता हूँ। अब विचारणीय है कि कौनसा ऐसा क्षण है, जब सारे विश्व में कहाँ न कहाँ अमृतवेला नहीं है और वहाँ के बच्चे बाबा को याद नहीं कर रहे हैं। इस सत्य पर विचार करें तो स्पष्ट समझ में भी आता है और अनुभव भी होगा कि बाबा कैसे हर क्षण विश्व-कल्याणार्थ उड़ते रहते हैं, कभी भी एक क्षण के लिए रुकते नहीं हैं और रुक भी नहीं सकते हैं।

जब तक स्थूल इन्द्रियों से अन्दर आ रहा है, तब तक इन दोनों स्थितियों की अनुभूति हो नहीं सकती है अर्थात् हमारी वह स्थिति नहीं है। निराकारी स्थिति की अनुभूति और स्थिति के लिए हम देखें तो जब अव्यक्त बापदादा गुल्जार दादी जी के तन में आते हैं और दृष्टि देते हैं, जिससे हम इस साकार देह और सूक्ष्म देह दोनों से मुक्त बीजरूप स्थिति में अपने को अनुभव करते हैं, वही हमारी निराकारी स्थिति का यथार्थ अनुभव है। उस समय गीत भी नहीं बजता है।

ऐसे ही जब आदरणीय जानकी दादी जी योग कराती हैं और योग के बाद दृष्टि देती हैं तो हम उस स्थिति का अनुभव करते हैं। ऐसे ही जब हमारी योग में स्थिति अच्छी होती है तो भी कभी-कभी ऐसा अनुभव होता है।

जब तक स्थूल इन्द्रियों से हमारे अन्दर आ रहा है या हमको कुछ लेने-पाने की इच्छा है, तब तक इस निराकारी और फरिश्ता स्थिति का अनुभव नहीं हो सकता अर्थात् हमारी यह ड्रिल यथार्थ नहीं है। वह चाहना भले ही शिवबाबा या फरिश्ता रूपधारी बापदादा से ही क्यों न हो। बाबा ने अनेक बार कहा है - तुमको अपनी स्थिति इच्छामात्रम् अविद्या की बनानी है। बाबा से भी माँगना नहीं है क्योंकि वह दाता है और बाबा ने हमको सबकुछ दिया है, हम उसको देखें और उसका अनुभव करें। बाबा ने कहा है - बाबा से भी अगर माँगते हो तो बाबा को मनुष्य बना देते हो क्योंकि माँगने से देने वाला मनुष्य होता है, मैं तो दाता हूँ, बिना माँगे ही सबकुछ देता हूँ, माँगने की दरकार नहीं है। इस देह में रहते निराकारी और फरिश्ता स्थिति तो दाता-वरदाता की स्थिति है।

Q. क्या शान्ति में स्थित होकर अपने आत्मिक स्वरूप अर्थात् बिन्दुरूप का ध्यान करना या फरिश्ता स्वरूप का ध्यान करना या याद करने की स्थिति बाबा ने जो ड्रिल बताई है, उसका यथार्थ रीति अभ्यास है ?

नहीं, वास्तव में बाबा ने जो ड्रिल बताई है, उसके लिए ये पुरुषार्थ है परन्तु वह स्थिति नहीं है। बाबा ने निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति की 10-10 मिनट स्मृति के लिए नहीं कहा है बल्कि उस स्थिति में स्थित होने के लिए कहा है। इसकी सत्यता को समझने के लिए हठयोग के दो शब्द बहुत सहायक सिद्ध होते हैं। हठयोग के अष्टांग योग में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का वर्णन किया गया है। उसमें सातवीं स्थिति में ध्यान है और उसके बाद समाधि है। बाबा ने जो स्थिति बताई है, वह समाधि है, ध्यान उस स्थिति के लिए पुरुषार्थ मात्र है। समाधि अर्थात् उस स्थिति में स्थित हो जाना।

Q. अब हम इस निराकारी और फरिश्ता स्थिति की ड्रिल 12-12 बार कैसे करें ?

हमको इस स्थिति के अभ्यास के लिए सदा विशेष संकल्प रखना होगा कि जब हमारे ट्रेफिक कन्ट्रोल के गीत बजते हैं तो उस समय हमको विशेष ध्यान रखकर इस अभ्यास को बढ़ाना होगा क्योंकि जब तक हमारी बुद्धि जो गीत बज रहा है, उसको सुनने में, उसके शब्दों में है, तब तक हम सही रीति से निराकारी और फरिश्ता रूप की स्थिति में स्थित नहीं है। वह गीत हमको इस अभ्यास के लिए स्मृति दिला रहा है, उसको सुनकर अपनी दिनचर्या, स्थान, समय को देखकर इस स्थिति का अभ्यास करने का विशेष पुरुषार्थ करना होगा क्योंकि स्थान और समय को देखकर हम गीत के बाद उस स्थान पर हम 10 मिनट तक खड़े या बैठे रह सकते हैं या नहीं, वह भी देखना होगा और अभ्यास करना होगा। फिर भी जो गीत बजते हैं, उस समय स्मृति रखेंगे और ट्रैफिक कन्ट्रोल का सही रीति संकल्प रखेंगे, उसका अभ्यास करेंगे तो इसमें सफलता अवश्य मिलेगी।

इस निराकार और फरिश्ता स्थिति के सफल अभ्यास और मनवान्छित सफलता प्राप्त करने के लिए साकार ब्रह्मा बाबा और अव्यक्त बापदादा के समय-समय पर उच्चारे महावाक्यों को भी ध्यान में रखना होगा।

''यह है अजपाजाप। मुख से कुछ बोलना नहीं है। गीत भी स्थूल हो जाता है। बच्चों को सिर्फ बाप को याद करना है। नहीं तो गीत आदि याद आते रहेंगे। तुमको तो आवाज़ से परे जाना है। बाप का डायरेक्शन है ही - मन्मनाभव। बाप थोड़ेही कहते हैं कि गीत गाओ, रड़ी मारो। मेरी महिमा गायन करने की भी दरकार नहीं है।'' सा.बाबा , रिवा.

''कहेंगे - हम तो शिवबाबा को ही याद करते थे परन्तु सचमुच याद में थे ? बिल्कुल साइलेन्स में रहने से फिर यह दुनिया भी भूल जाती है। अपने को ठगना नहीं है कि हम तो शिवबाबा की याद में हैं। याद में देह के सब धर्म भूल जाने चाहिए। हमको शिवबाबा कशिश कर सारी दुनिया भुलाते हैं। ... अपने को मियां मिट्ठू समझ ठगी नहीं करना है।''

सा.बाबा 7.5.04 रिवा.

''फरिश्ता बनना वा निराकारी कर्मातीत अवस्था बनाने का विशेष साधन है - निरहंकारी बनना। निरहंकारी ही निराकारी बन सकता है। इसलिए बाप ने ब्रह्मा द्वारा लास्ट मन्त्र में निराकारी के साथ निरहंकारी कहा है।''

अ.बापदादा 15.12.02

''बापदादा एक सेकेण्ड में अशरीरी भव की ड्रिल देखना चाहते हैं। अगर अन्त में पास होना है तो यह ड्रिल बहुत आवश्यक है। इसलिए अभी इतने बड़े संगठन में बैठे एक सेकण्ड में देहभान से परे स्थिति में स्थित हो जाओ, कोई आकर्षण आकर्षित न करे।''

अ.बापदादा 30.11.05

विचारणीय है कि यहाँ बाबा ने देहाभिमान नहीं लेकिन देहभान शब्द प्रयोग किया है। यह भी विचारणीय है कि जब अव्यक्त बापदादा मुरली के बीच में ये ड्रिल कराते हैं, तब कोई गीत आदि नहीं बजता है, साइलेन्स में बाबा दृष्टि देते हैं और हम उस स्थिति में स्थित होते हैं, उस समय परम शान्ति और शक्ति का अनुभव करते हैं।

Q. बाबा ने जो ड्रिल बताई, उसके लिए साधन और साधना क्या है अर्थात् उसके लिए अभीष्ठ पुरुषार्थ क्या है?

निश्चय - 1. हमको निश्चय हो कि ये केवल पुरुषार्थ ही नहीं है लेकिन इसमें परमानन्द की अनुभूति समाई हुई है, 2. ये पुरुषार्थ समय अनुसार अति आवश्यक है, 3. ये आने वाले समय में हमारी सुरक्षा का साधन है और भविष्य प्राप्ति का आधार है। 4. निश्चय - A. बाबा ने जो ज्ञान दिया है, उसमें निश्चय अर्थात् आत्मा, परमात्मा, ड्रामा और परिवार आदि के विषय में जो गुण-धर्म बताये हैं, उनके विषय में पूरा निश्चय।

B. गायन है निश्चयबुद्धि विजयन्ति। जिसको ये निश्चय होगा कि इस अभ्यास में हम जो समय देंगे, उससे हमारा कोई काम रुक नहीं सकता और न बिगड़ सकता है। बल्कि इस स्थिति के सफल अभ्यास से हमारे सभी काम अच्छे ते अच्छे होंगे और सफलता पूर्वक सम्पन्न होंगे क्योंकि ये सर्वशक्तिवान ज्ञान सागर परमात्मा की श्रीमत है और समय की पुकार है। इसमें ही हमारा और विश्व का कल्याण नीहित है।

C. निराकार और फरिश्ता स्वरूप के अभ्यास के लिए इस बात का निश्चय होना भी अति आवश्यक है कि इस अभ्यास को करने अर्थात् इसमें समय देने से हमारे किसी काम में बाधा नहीं आ सकती है। और ही इस अभ्यास को करने से हमारे व्यवहारिक कामों में सफलता मिलेगी। निराकारी और फरिश्ता स्वरूप में स्थित आत्मा की सर्व आवश्यकतायें स्वत: पूर्ण होती हैं, इसलिए उनको किसी प्रकार की चिन्ता या फिकर करने की आवश्यकता नहीं है।

गायन है निश्चयबुद्धि विजयन्ति।

साधन और साधना - 1. बापदादा से मिले ज्ञान की यथार्थ रीति धारणा, 2. उस स्वरूप की बार-बार स्मृति, 3. खान-पान की शुद्धि और मात्रा अति सूक्ष्म, 4. संग की परहेज़, 5. अन्तमुर्खता की विशेष साधना अर्थात् साकार ब्रह्मा बाबा के समान सुनते-देखते भी देखने-सुनने से परे स्थिति में स्थित हो जाने का अभ्यास और इस अभ्यास के लिए मुख्य साधना है - साकार बाबा के समान देह में रहते, देह से न्यारी स्थिति में स्थित होने का अभ्यास। अव्यक्त बापदादा ने यह भी कहा है कि ब्रह्मा बाबा ने पहले-पहले अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का जो अभ्यास किया, वह अति आवश्यक है।

''अभी बापदादा सभी बच्चों को एक ड्रिल कराना चाहते हैं। वह ड्रिल है - चारो ओर की परिस्थितियाँ हैं ... ऐसी परिस्थितियों के बीच में आप एक सेकेण्ड में एकाग्र हो सकते हो? ... आपके आगे व्यर्थ संकल्पों का तूफान आ गया, ऐसे समय पर आप अपने मन-बुद्धि को एकाग्र कर सकते हो?'' अ.बापदादा 28.2.10

''आज बापदादा सेकेण्ड में फुलस्टॉप अर्थात् एकाग्र स्थिति के अभ्यास पर अटेन्शन खिंचवाना चाहता है क्योंकि प्रकृति ने अपने भिन्न-भिन्न रंग दिखाने शुरू कर दिये हैं। ... एक सेकेण्ड में मन-बुद्धि को परमधाम में टिका सकते हो? ... अभी अपने फरिश्ते रूप में टिकाओ ... अभी अपने को मैं ब्राह्मण मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति में हूँ ... टिक जाओ। ... ऐसी प्रैक्टिस सारे दिन में बार-बार करते रहो।'' अ.बापदादा 28.2.10

Q. बाबा ने हमको परम सत्य का ज्ञान दिया है, उसका हमारी इस निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति के अभ्यास क्या महत्व है और उस ज्ञान को पाकर हमारा कर्तव्य क्या है अर्थात् हमारा पुरुषार्थ क्या है और क्या होना चाहिए?

बाप ने इस विश्व-नाटक के परम सत्य का ज्ञान दिया है, जिसमें सब प्रकार के रहस्यों का ज्ञान समाया हुआ है। उस ज्ञान को पाकर हमारा कर्तव्य यही है कि हम उस ज्ञान को अच्छी रीति समझकर, धारण कर हम जो हैं, अपने उस आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायें। आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता से मुक्त होती है अर्थात् उसमें ये सब हो नहीं सकता और जहाँ ये सब नहीं होंगे, तब ही आत्मा अपने निराकारी आत्मिक स्वरूप में स्थित हो सकेगी। विश्व-नाटक के ज्ञान की यथार्थता को देखें तो उसमें राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता का कोई स्थान ही नहीं है। इनसे मुक्त आत्मा की निर्सकल्प और निर्विकल्प स्थिति होगी, जो सर्व प्राप्तियों का आधार है और सर्व पुरुषार्थ का मूल है। साकार

स्वरूप से ऊपर है फरिश्ता स्वरूप और फरिश्ता से भी ऊपर है निराकारी स्थिति अर्थात् कर्मातीत स्थिति।

Q. गायन है कि सायंकाल के सन्धिकाल अर्थात् नुमा शाम को फरिश्ते चक्कर लगाते हैं, तो वे फरिश्ते कौन हैं? क्या वे कोई चेतन आत्मायें हैं, जिनका स्वतन्त्र अस्तित्व है या केवल गायन ही है? इस गायन का भी आधार क्या है अर्थात् इन फरिश्तों की बात कहाँ से निकली है?

जैसे शिवबाबा ब्रह्मा तन में आये और फरिश्ता स्वरूप में उनका साक्षात्कार होना आरम्भ हो गया और ब्रह्मा तन में साकार में रहते भी उनसे अनेक प्रकार के भविष्य जीवन के और वर्तमान में सम्पूर्णता के अनेक साक्षात्कार होते रहे। ऐसे ही जब धर्मपितायें अपने धर्म स्थापनार्थ परकाया प्रवेश करते हैं तो उनका भी फरिश्ता रूप में साक्षात्कार होता है, जिसका अनेक धर्मों में गायन है।

भक्ति में प्राय: सभी धर्म वाले प्रात: और सायंकाल को विशेष भक्ति करते हैं क्योंकि इन दोनों सन्धिकाल में आत्मा को एकाग्र होने में वातावरण का विशेष सहयोग होता है। इसलिए धर्म स्थापना के निमित्त बनी हुई वे धर्मपिताओं की आत्मायें और जिनमें वे प्रवेश करते हैं, वे आत्मायें भी सायंकाल के सन्धिकाल में अन्य आत्माओं को प्रेरित करने का पुरुषार्थ अवश्य करते होंगे और आत्माओं को उनका साक्षात्कार होता होगा, इसलिए वहीं से ये बात निकली है। विभिन्न धर्मों की स्थापना में भी ये फरिश्तों के आने की बातें वर्णित हैं।

देखा गया है कि सन्धिकाल और संगम के स्थान आत्मा को देह और देह की दुनिया को भूलकर भक्ति करने या ज्ञान मार्ग में योग और ज्ञान के चिन्तन के पुरुषार्थ करने में अधिक साहयक होते हैं। जैसे दिन-रात का सन्धिकाल, ऋतुओं का सन्धिकाल, कल्प का सन्धिकाल, साल का सन्धिकाल, नदियों का संगम का स्थान, सागर-नदियों का संगम का स्थान, पहाड़ों और समतल भूमि के संगम के स्थान आदि-आदि। ऐसे स्थानों पर और ऐसे समय पर आत्मा को विशेष शान्ति और शक्ति की अनुभूति होती है। इसलिए भारतीय सभ्यता में ऐसे संगम के स्थानों का विशेष महत्व है और वहाँ पर विशेष तीर्थ स्थल बनाये हैं।

Q. सूक्ष्मवतन में फरिश्ते रहते हैं, तो क्या सब आत्मायें फरिश्ता स्वरूप में सूक्ष्मवतन में जायेंगी या केवल ब्रह्मा बाबा का और कुछ निमित्त आत्माओं का ही पार्ट है?

वास्तव में जैसे ब्रह्मा बाबा सूक्ष्मवतन में फरिश्ते स्वरूप में हैं, वैसे सभी आत्माओं को भी सूक्ष्मवतन में फरिश्ता स्वरूप में जाना है क्योंकि सूक्ष्मवतन में फरिश्ता स्वरूप में जाने के बाद ही आत्मायें निराकारी रूप धारण कर परमधाम में जाती हैं अर्थात् हर आत्मा को सूक्ष्मवतन से

फरिश्ता स्वरूप में पास करना ही होता है परन्तु वहाँ जाने और रहने का समय किसी का एक सेकेण्ड का होता है और किसी का 40-50 साल तक होता है। जैसे ब्रह्मा बाबा 40-45 साल से सूक्ष्मवतन में हैं और वहाँ से नई दुनिया की स्थापना का कर्तव्य कर रहे हैं और कोई आत्मायें जब परमधाम जायेंगी तो एक सेकेण्ड ही उससे पास करेंगी।

सूक्ष्मवतन में फरिश्ता स्वरूप में पार्ट बजाने का आधार भी ब्राह्मण जीवन में साकार में रहते फरिश्ता स्वरूप के अभ्यास और उस स्थिति में रहकर कर्म करने से है। दोनों स्थितियों का गहरा सम्बन्ध है। ब्रह्मा बाबा ने साकार में पुरुषार्थ करके अपना फरिश्ता स्वरूप दिखाया अर्थात् कर्म करते भी फरिश्ता स्वरूप में रहे, जिसके फलस्वरूप ही वे 40-45 साल से सूक्ष्मवतन में फरिश्ता रूप में रहते पार्ट बजा रहे हैं, नई दुनिया के निर्माण का कर्तव्य कर रहे हैं।

Q. बाबा ने कहा है - बोझ बाबा को दे दो, बाप बच्चों का बोझ लेने के लिए ही आये हैं। तो बोझ बाबा को देने का विधि-विधान क्या है और उसका इस निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की स्थिति के अभ्यास में क्या महत्व है ?

आत्मा, परमात्मा और ड्रामा की यथार्थता पर विचार करें तो आत्मा को किसी तरह से बोझ उठाने की आवश्यकता नहीं है अर्थात् आत्मा पर किसी प्रकार का बोझ नहीं है क्योंकि आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है और विश्व-नाटक भी परमानन्दमय है, परमात्मा ने तो ये सत्य ज्ञान दिया ही है और सब तरह से बच्चों की मदद कर ही रहा है। आवश्यकता है आत्मा को अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने की।

फरिश्ता कभी भी बोझ नहीं उठाता है और बोझ वाले कब फरिश्ता नहीं बन सकते हैं अर्थात् बोझ वाली आत्मायें फरिश्ता स्वरूप का अनुभव नहीं कर सकती हैं। निराकारी स्वरूप में तो बोझ उठाने का प्रश्न ही नहीं उठता है। इसलिए तन-मन-धन-जन, सम्बन्ध-सम्पर्क सब प्रकार के बोझ से मुक्त आत्मा ही निराकारी स्वरूप और फरिश्ता स्वरूप में स्थित हो सकती है, दोनों स्वरूपों का सफलतापूर्वक अभ्यास कर सकती है और दोनों स्वरूपों से प्राप्त होने वाले आनन्द, शान्ति-शक्ति का अनुभव कर सकती है।

आत्मा, परमात्मा और ड्रामा के ज्ञान की यथार्थता पर विचार करें तो आत्मा को किसी तरह का बोझ है ही नहीं और न ही किसी तरह का बोझ उठाने की आवश्यकता है क्योंकि आत्मिक स्वरूप सब प्रकार के बोझ से मुक्त परमानन्दमय है और ये विश्व-नाटक भी परमानन्दमय है तथा परमात्मा तो है ही परमानन्द का दाता। परमात्मा ने तो ये सत्य ज्ञान हमको दिया ही है और सब तरह से बच्चों की मदद कर ही रहा है। आवश्यकता है आत्मा

को अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने की, जिसके लिए बाबा पुरुषार्थ की भिन्न-भिन्न युक्तियाँ बता रहा है और ये निराकारी और फरिश्ता रूप का अभ्यास भी उसके लिए ही है। जो आत्मा, परमात्मा और इस विश्व-नाटक के राज़ को समझकर यथार्थ रीति इस अभ्यास को करेगा, वह परमानन्द को अभी भी अनुभव करेगा और भविष्य में आने वाली परिस्थितियों में भी उसको इससे सहयोग मिलेगा। ड्रामा के ज्ञान की यथार्थता पर विचार करें तो आत्मा पर किसी प्रकार का बोझ है ही नहीं क्योंकि ये विश्व-नाटक एक खेल है और खेल में आत्मा आनन्द का अनुभव करती है। आवश्यकता है इसके राज़ को समझकर अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर इसको देखने की। इस विश्व-नाटक के यथार्थ रहस्य को भूलकर, आत्मायें विभिन्न प्रकार के बोझ को उठाती हैं और उस बोझ के कारण थक जाती हैं। इस विश्व-नाटक के यथार्थ रहस्य को समझने वाली आत्मा तो इसको साक्षी होकर देखती है और देख-देख कर आनन्दित होती है क्योंकि ये विश्व-नाटक अनेकानेक गुह्य और आश्चर्यजनक रहस्यों से परिपूर्ण है।

''बाप कहते हैं - अभी मैं तुमको कितना ज्ञान रत्नों से श्रृंगारता हूँ, फिर तुम लक्ष्मी-नारायण बनते हो। ... जैसे बाबा सवेरे उठकर विचार सागर मन्थन करते हैं, बच्चों को भी फॉलो करना है। तुम बच्चे जानते हो कि यह हार-जीत का वण्डरफुल नाटक बना हुआ है, इसको देखकर बहुत खुशी होती है। कब किससे घृणा नहीं आती।'' सा.बाबा 19.01.10 रिवा.

इन्द्रियों के रस, आत्मा के अपने स्वभाव-संस्कार, लौकेक सम्बन्धों के आकर्षण का बन्धन, आदि-आदि अनेक प्रकार के बोझ हैं, जो आत्मा को निराकारी और फरिश्ता स्थिति में स्थित होने नहीं देते हैं। इसकी यथार्थता को जानकर इनसे विरक्त होंगे तो सहज इस अभ्यास को कर सकेंगे। बाबा ने इन स्थितियों में स्थित होने के अभ्यास के लिए कहा है, उसमें क्या-क्या बाधायें आती हैं, उनको समझकर उनको दूर करना हमारा पुरुषार्थ है। विश्व-नाटक के ज्ञान की अच्छी समझ और उसकी धारणा से ये सब बाधायें स्वत: दूर हो जायेंगी और जब ये बाधायें दूर हो जायेंगी तो निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति का अभ्यास सहज और सफलतापूर्वक होगा।

निराकारी-फरिश्ता स्थिति का अभ्यास और विश्व-नाटक का ज्ञान

वास्तविकता को देखा जाये तो विश्व-नाटक का ज्ञान ही हमको इन दोनों स्थितियों में सहज स्थित होने की शक्ति प्रदान करता है क्योंकि निराकार आत्मायें ही इस विश्व-नाटक में पार्टधारी हैं, देह तो एक वस्त्र मात्र है, इसलिए जिसको विश्व-नाटक के ज्ञान की यथार्थ रीति

धारणा होगी, वह सहज ही निराकारी स्थिति में स्थित हो जायेगा या रहेगा और निराकारी स्थिति के बाद फरिश्ता स्वरूप की स्थिति का अभ्यास सहज होगा अर्थात् निराकारी स्थिति के सफल अभ्यास वाले की फरिश्ता स्थिति अवश्य ही होगी क्योंकि जब तक आत्मा इस देह में है, देह द्वारा पार्ट बजा रही है, तब उसके साथ सूक्ष्म शरीर तो होगा ही। इसके लिए ही परमात्मा ने आत्मा, परमात्मा के साथ विश्व-नाटक का भी ज्ञान दिया है।

विश्व-नाटक का ज्ञान परमात्मा ने ही दिया है, इसलिए उसके साथ परमात्मा की याद भी अवश्य रहेगी। ऐसे ही ज्ञान सागर परमात्मा को यथार्थ रीति याद करेंगे तो विश्व-नाटक का ज्ञान बुद्धि में अवश्य इमर्ज होगा। विश्व-नाटक के गुण-धर्मों की धारणा सहज ही हमको देह, देह के सम्बन्ध और देह की दुनिया भुला देती है क्योंकि विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा से आत्मा सहज ही नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप हो जाती है, जिससे आत्मा सहज ही राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता, इच्छा-आकांक्षा से मुक्त हो जाती है, जो व्यर्थ संकल्पों के मूल कारण हैं और व्यर्थ संकल्प ही इस स्थिति में स्थित होने में बाधक होते हैं।

विश्व-नाटक का ज्ञान ही हमको इस नाटक के अन्त और आदि की याद दिलाता है, घर जाने के समय की याद दिलाता है। घर तो आत्मा निराकार रूप में ही जायेगी और उसके पहले सूक्ष्म वतन से पास होना ही पड़ेगा, जिससे फरिश्ता स्वरूप भी याद आता ही है। इसलिए विश्व-नाटक के ज्ञान की यथार्थ रीति धारणा वाला सहज ही निराकारी और फरिश्ता स्वरूप में स्थित हो सकता है।

निराकार और फरिश्ता स्वरूप की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन

देह में रहते निराकार स्थिति है लाइट-माइट हाउस की स्थिर स्थिति और फरिश्ता स्वरूप है लाइट-माइट हाउस के साथ-साथ सर्च-लाइट का भी काम करता है। फरिश्ता की चल स्थिति है क्योंकि फरिश्ता सदा विश्व-कल्याण के कार्य अर्थ लाइट-माइट फैलाते हुए उड़ता रहता है, कब स्थिर होकर नहीं रहता है, उसे सर्व आत्माओं को देने का संकल्प रहता है। निराकार स्थिति में स्थित होने से जो लाइट-माइट फैलाती है, वह सूर्य के समान होती है, उससे हर आत्मा अपने पुरुषार्थ, पार्ट और स्थिति के अनुसार लाइट-माइट प्राप्त करती है, उसको अनुभूति होती है। फरिश्ता स्वरूप की स्थिति में सर्च-लाइट का भी अनुभव होता है। निराकारी स्थिति बीजरूप निर्संकल्प शान्त और शक्ति सम्पन्न स्थिति है परन्तु फरिश्ता स्थिति निर्विकल्प शान्ति और शक्ति से सम्पन्न परमानन्दमय स्थिति है।

निराकार रूप की और फरिश्ता रूप की मूल स्थिति और साकार देह में रहते उस स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन

परमधाम में आत्मा का निराकार स्वरूप साकार देह में रहते निराकारी स्थिति के गुण-धर्म और अनुभव उसके गुण-धर्म

प्रकाशमय बिन्दुरूप, शान्त और शक्ति स्वरूप परन्तु निर्संकल्प, शान्ति और शक्ति सम्पन्न परन्तु शान्ति और शक्ति

निर्संकल्प, अनुभव रहित, निष्क्रिय स्थिति,प्लस-माइनस की सूक्ष्म अनुभूति क्योंकि आत्मा देह में इसलिए सूक्ष्म में संकल्प रहता ही है। देह से न्यारी लाइट-माइट स्वरूप की अनुभूति,

से रहित एकरसअर्थात् प्रभाव रहित स्थिति लाइट-माइट का वातावरण पर प्रभाव और उसका वातावरण में प्रवाह

परमात्मा के साथ की भी अनुभूति नहीं, समान और परमात्मा के समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति, सम्पन्न-सम्पूर्ण स्थिति शान्ति और शक्ति की अनुभूति

निराकारी दुनिया में निराकारी स्थिति में अभी साकार देह में रहते निराकारी स्थिति में प्लस-माइनस नहीं होता है। प्लस होता है क्योंकि उसका आत्माओं और वातावरण पर प्रभाव पड़ता है।

सूक्ष्मवतन का फरिश्ता स्वरूप साकार देह में रहते फरिश्ता स्वरूप की स्थिति, उसके गुण-धर्म उसके गुण-धर्म और अनुभव

प्रकाशमय काया, धरती से ऊपर उड़ती कला में, आनन्दमय स्थिति, देह और देह की दुनिया के

लाइट-माइट हाउस स्वरूप, विश्व-कल्याण का आकर्षण से मुक्त उपराम, विश्व-कल्याण का संकल्प,

संकल्प और कर्तव्य, निर्बन्धन, सम्पन्न और सम्पूर्ण निर्बन्धन, सम्पन्नता और सम्पूर्णता का अनुभव, इच्छामात्रम अविद्या, मुदित और आनन्दमय स्थिति, रहमभाव,

राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, इच्छा-आकांक्षा राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, इच्छा-आकांक्षा

से मुक्त निराधार ब्रह्मा बाप के समान सम्पन्न और से मुक्त निराधार ब्रह्मा बाप के समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति सम्पूर्ण स्थिति, आन्तरिक खुशी की अनुभूति

निर्विकल्प स्थिति निर्विकल्प स्थिति

फरिश्ता का संकल्प सदा विश्व-कल्याण का ही रहता साकार देह में रहते फरिश्ता स्थिति में प्लस होता है, इसलिए उसमें प्लस होता है, माइनस नहीं। है परन्तु साकार देह में ये स्थिति सदा नहीं रहती,

इसलिए जब यह स्थिति नहीं है तो माइनस भी होता है।।

परमात्मा से भी लेने की इच्छा नहीं। सदा सम्पन्न अर्थात परमात्मा से भी कुछ लेने की इच्छा नहीं।

ब्राह्मण बनने के बाद भले हम निराकारी स्वरूप के अभ्यास में हैं या फरिश्ता स्वरूप के अभ्यास में हैं परन्तु वह भी ब्राह्मणपन की ही स्थिति है।

देह में रहते ब्राह्मण जीवन की प्राप्तियाँ और अनुभव ज्ञान-गुण-शक्तियों की परमात्मा से प्राप्ति की अनुभूति और अन्य आत्माओं प्रति देने की स्थिति, परमात्म छत्रछाया की अनुभूति, आत्मा और परमात्मा को याद करने की स्थिति, ब्राह्मणपन में परमात्मा और अव्यक्त बापदादा से शक्ति आदि लेने की सूक्ष्म इच्छा-आकांक्षा रहती है।

नोट - सूक्ष्म वतन भी स्पेस है, वहाँ आत्मा सूक्ष्म शरीर के साथ स्वत: उड़ती रहती है या चलती रहती है अर्थात् फरिश्ता स्वरूप कब स्थिर नहीं रहता। सूक्ष्मवतन में फरिश्ता स्वरूप में भी प्लस होता है।

जब तक ये ब्राह्मण जीवन है, तब तक निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति में स्थित होते भी सूक्ष्म में बाबा की याद रहती ही है, उसकी अनुभूति होती है परन्तु निराकारी दुनिया में और सूक्ष्मवतन में साथ रहते भी अनुभूति की बात नहीं रहती है अर्थात् स्वभाविक साथ रहते हैं।

Q. निराकार और फरिश्ता स्वरूप के अभ्यास का हमारे भूतकाल, वर्तमान और भविष्य से क्या सम्बन्ध है?

इस अभ्यास से हम अपने भूतकाल में किये गये पुरुषार्थ को समझ सकते हैं और वर्तमान में क्या पुरुषार्थ करना है, उसकी दिशा-दशा और गति को निश्चित कर सकते हैं।

निराकार स्थिति में स्थित होने के अभ्यास के लिए बाबा ने जो कहा है, इसकी वास्तविकता पर पर विचार करें और इसका अनुभव करें तो ये वर्तमान में परमशान्ति, परम-शक्ति को देने वाली स्थिति है और परमानन्द को अनुभव कराने वाली है और यही अभ्यास भविष्य में आने वाली परिस्थिति का सामना करने और उनको सहन कर परमानन्द में रहने का साधन बनेंगा। इस अभ्यास के आधार से ही हम वर्तमान और भविष्य नई दुनिया में स्थूल प्राप्तियाँ करेंगे।

निराकार स्थिति का सफल अभ्यास करने वाला ही फरिश्ता स्वरूप में स्थित हो सकता है। इस सम्बन्ध में बाबा ने तीन शब्द भी याद दिलाये हैं - अचानक, एवर-रेडी और बहुत काल।

Q. निराकारी और फरिश्ता स्वरूप के सफल अभ्यास के पहले किस अभ्यास को करें, तो दूसरे में सुविधा हो ?

पहले निराकारी स्थिति में स्थित होने के अभ्यास में सफल होंगे, तब ही फरिश्ता स्थिति का अभ्यास कर सकेंगे। इसलिए हठयोग में पहले निर्संकल्प समाधि की सफलता बताई है, उसके बाद ही निर्विकल्प समाधि सिद्ध होती है। वैसे भी पहले निराकारी दुनिया में जाना है, फिर देवता बनना है, जहाँ विकल्प का भी ज्ञान नहीं होता है और स्वभाविक शुद्ध संकल्प होता है।

ब्रह्मा बाबा ने भी आदि में अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का, आत्मा को देह से अलग देखने और अनुभव करने का, उस स्थिति में स्थित रहने का सफलतापूर्वक अभ्यास किया, जिस अभ्यास से ही वे साकार में रहते भी फरिश्ता स्वरूप में रहे, जिसको उनके सम्पर्क में आने वाले सभी ने अनुभव किया। वे ही पहले मानव हैं, जो साकार से अव्यक्त फरिश्ता बनें। निराकारी अभ्यास सफल होगा तब ही फरिश्ता स्वरूप का अभ्यास सफल होगा। इसलिए साकार बाबा ने अन्तिम शिक्षा जो दी, उसमें निराकारी शब्द पहले कहा है अर्थात् बाबा ने जो साकार में अन्तिम महावाक्य उच्चारे उसमें निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी कहा है।

Q. निराकार और फरिश्ता स्वरूप का हमारा अभ्यास सफल है या सफल होगा, उसका दर्पण अर्थात् कसौटी (Test Stone or criteria) क्या है ?

Q. हम दूसरों की स्थिति को और दूसरे हमारी स्थिति को और हम स्वयं भी अपनी स्थिति को सहज परख सकें कि हमारा निराकारी स्थिति का और फरिश्ता स्थिति का अभ्यास सफल है या नहीं है, उसका दर्पण क्या है ?

जो आत्मा इन दोनों सथितियों के सफल अभ्यास में होगी या जिसका ये अभ्यास सफलतापूर्वक चलता होगा, उसको तन-मन-धन-जन, सम्बन्ध-सम्पर्क सब में सन्तुष्टता होगी। वह स्वयं भी स्वयं से सदा सन्तुष्ट होगी और दूसरों से भी सदा सन्तुष्ट होगी। दूसरे भी उससे सन्तुष्ट होंगे और उसकी सन्तुष्ट स्थिति से प्रेरणा लेंगे। सन्तुष्टता का आधार सम्पूर्णता अर्थात् सर्व प्राप्तियों में सम्पन्नता है। निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति सर्व प्राप्तियों से भरपूर सम्पूर्ण और सम्पन्न स्थिति है। इस स्थिति के अभ्यास वाली आत्मा अपने जीवन में सदा सन्तुष्टता का अनुभव करेगी, जिससे वह सदा हर्षित रहेगी। वह स्वयं भी खुश रहेगी और दूसरों को भी खुशी बांटती रहेगी।

''फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट। लाइट अर्थात् हल्कापन। ... अगर स्वभाव-संस्कार में भी

हल्कापन नहीं तो फरिश्ता नहीं कहेंगे। ... जो स्वभाव-संस्कार, सम्बन्ध-सम्पर्क में हल्का होगा, उसकी निशानी है - वह सर्व के प्यारे और न्यारे होंगे। ... फरिश्ता अर्थात् जिसका पुरानी देह और पुरानी दुनिया से रिश्ता नहीं।''

अ.बापदादा 23.12.94

''फरिश्ते सदा उड़ते रहते हैं और मैसेज देते रहते हैं। फरिश्ता आया, सन्देश दिया और उड़ा। तो वे फरिश्ते कौन है? आप ही हो ना! फलक से कहो - हम ही है और हम ही रहेंगे। इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि विजयी आत्मा।''

अ.बापदादा 23.12.94

''फरिश्तेपन की दो मुख्य क्वालीफिकेशन हैं। एक लाइट और दूसरी माइट। दोनों जरूरी हैं। ... लाइट और माइट रूप बनने के लिए एक-एक अलग-अलग गुण बताओ। एक है मनन शक्ति और दूसरी है सहन शक्ति (Controling Power)। जितनी सहनशक्ति होती है, उतनी सर्वशक्तिवान की सर्व शक्तियाँ स्वत: प्राप्त होती है।''

अ.बापदादा 29.06.71

''जितना-जितना देह के भान के तरफ से बुद्धि ऊपर होगी, उतना वह अपने को फरिश्ता महसूस करेगा। हर कर्म करते बाप की याद में उड़ते रहेंगे, वह इस अभ्यास से अनुभव होगा। स्थिति ऐसी हो जैसे कि उड़ रहे हैं।'' अ.बापदादा 29.06.71

Q. निराकारी और फरिश्ता स्वरूप का अभ्यास सफलता पूर्वक हो रहा है? यदि नहीं तो उसका कारण क्या है?

आत्मा निराकार है, इसलिए जब उसका मूल स्वरूप ही निराकार है तो उस स्थिति में स्थित होने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए और जब आत्मा इस देह में प्रवेश करती है, तब से ही उसके साथ सूक्ष्म शरीर तो रहता ही है, इसलिए उसमें स्थित होना भी कठिन नहीं होना चाहिए और सूक्ष्म शरीर का ही शुद्ध-पवित्र रूप फरिश्ता है।

वास्तविकता को देखें तो खान-पान और संग ही इस अभ्यास में मुख्य बाधा है। योग की सफलता के लिए खान-पान न अधिक हो और न बिल्कुल कम हो अर्थात् भोजन शुद्ध और सन्तुलित हो। ऐसे ही स्थूल और सूक्ष्म संग भी अच्छा हो अर्थात् बुद्धि में सदा ज्ञान का चिन्तन रहे और स्थूल संग भी अच्छा रहे तो ये अभ्यास निश्चित ही सहज होगा।

- जब तक आत्मा में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता की भावना है, तब तक निराकारी स्थिति और अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप का सफल अभ्यास अर्थात् हम उस स्थित में स्थित नहीं हो सकते क्योंकि इनके कारण हमारी बुद्धि में किसी न

किसी व्यक्ति की याद आती ही रहेगी और जब किसी व्यक्ति या वस्तु की याद बुद्धि में होगी तो निराकारी स्थिति या अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप की स्थिति कैसे हो सकती है।

''मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा मुझे यथार्थ रीति कोई नहीं जानते हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही जानते हैं। ... विचार करना है कि मैं आत्मा बहुत छोटी बिन्दी हूँ, हमारा बाबा भी बहुत छोटा बिन्दी है, ऐसे याद रहता है।... बाप को यथार्थ रीति याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे।''

सा.बाबा 9.02.10 रिवा.

इस सत्य को समझने वाला ही निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्वरूप में स्थित हो सकेगा।

''आत्मा भी निराकार है, परमात्मा भी निराकार है, इसमें फोटो आदि की भी बात नहीं है। तुमको तो अपने को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करना है, देहाभिमान छोड़ना है। ... देही-अभिमानी बनो। इसमें ही मेहनत है। जितना याद में रहेंगे, उतना कर्मातीत अवस्था को पाये, ऊंच पद पायेंगे।''

सा.बाबा 13.02.10 रिवा.

''सेकेण्ड पूरा हुआ और निर्विकल्प स्थिति बन जाये, यह संस्कार इमर्ज करो। निर्विकल्प बनना आता है ना ? अपने श्रेष्ठ भाग्य को स्मृति में लाकर सदा हर्षित रहो। अपनी परमात्म-पालना को सदा बार-बार स्मृति में लाओ।''

अ.बापदादा 26.11.94

''आज बापदादा सेकेण्ड में फुलस्टॉप अर्थात् एकाग्र स्थिति के अभ्यास पर अटेन्शन खिंचवाना चाहता है क्योंकि प्रकृति ने अपने भिन्न-भिन्न रंग दिखाने शुरू कर दिये हैं। ... एक सेकेण्ड में मन-बुद्धि को परमधाम में टिका सकते हो,... अभी अपने फरिश्ते रूप में टिकाओ ... अभी अपने को मैं ब्राह्मण मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति में हूँ ... टिक जाओ।''

अ.बापदादा 28.02.10

Q. परमधाम में निराकारी स्थिति, फरिश्ते स्वरूप की स्थिति और मास्टर सर्वशक्तिवान ब्राह्मण स्वरूप की स्थिति की अनुभूति कैसी होगी, उसके गुण-धर्म क्या होंगे ?

निराकारी परमधाम की स्थिति अर्थात् निर्संकल्प स्थिति, जहाँ मन-बुद्धि सहित देह के सब धर्म और क्रियायें बन्द हों जातीं। फरिश्ते स्वरूप की स्थिति अर्थात् डबल लाइट स्वरूप में बापदादा के साथ एक ही विश्व-कल्याण के संकल्प में स्थित। मास्टर सर्वशक्तिवान ब्राह्मण स्वरूप की स्थिति अर्थात् परमात्मा का हाथ हमारे ऊपर है और उसका साथ है, ज्ञान-गुण-शक्तियों सहित सर्व प्राप्तियों सम्पन्न इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति और विश्व-कल्याण की सेवा में तत्पर।

Q. बाबा ने यह जो ड्रिल बताई और पहले भी इसके सम्बन्ध में अपने पाँच स्वरूपों की ड्रिल बताई, निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की ड्रिल बताई - इन सबका सफलतापूर्वक अभ्यास

कौन कर सकता है और कैसे कर सकता है?

जिसको तीन बिन्दियों अर्थात् आत्मा, परमात्मा और ड्रामा के गुण-धर्मों का यथार्थ रूप में ज्ञान होगा, उसकी सफल अनुभूति होगी, उसकी धारणा होगी और उस पर पूरा निश्चय और विश्वास होगा, जिससे वह भूत काल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता से मुक्त होगा। जो ऐसा चिन्तन और चिन्ता से मुक्त होगा, वही इसका सफलतापूर्वक अभ्यास कर सकेगा। इसके लिए ही परमात्मा ने ये सारा ज्ञान दिया है। अज्ञानतावश अर्थात् यथार्थ सत्य की धारणा न होने के कारण भूत काल का चिन्तन और भविष्य की चिन्ता के कारण चलने वाले व्यर्थ संकल्प ही इस अभ्यास में मुख्य बाधा हैं।

''चाहे निराकार रूप से संग करो, चाहे साकार रूप में करो लेकिन सत का संग जरूर हो।... बापदादा के संग के सिवाए और कोई भी संग बुद्धि में न हो। फरिश्ता बनने के लिए बाप के साथ जो रिश्ता है, वह पक्का होना चाहिए। अगर अपना रिश्ता पक्का है तो फरिश्ता बन ही जायेंगे। ... अगर एक के साथ सर्व रिश्ते हैं तो सहज और सदा फरिश्ते हैं।''

अ.बापदादा 4.07.71

''अभी सिर्फ अपने रिश्ते को ठीक करो। अगर एक के साथ सर्व रिश्ते हैं तो सहज और सदा फरिश्ते हैं। और है भी क्या जहाँ बुद्धि जाये। अभी कुछ रहा है क्या? सर्व सम्बन्ध वा सर्व रिश्ते, सर्व रास्ते ब्लॉक हैं? रास्ता खुला हुआ होगा तो बुद्धि भागेगी। ... एक ही रास्ता, एक ही रिश्ता है तो फिर फरिश्ता बन जायेंगे।'' अ.बापदादा 4.07.71

''सूक्ष्मवतन में सूक्ष्म शरीर होता है। ऐसे नहीं कि निराकार बन जाते हैं। नहीं, सूक्ष्म आकार रहता है। वहाँ की भाषा मूवी चलती है।... सूक्ष्म आवाज़ होता है, वह है मूवी, फिर है साइलेन्स।... यह ड्रामा का बना-बनाया पार्ट है। वहाँ है साइलेन्स, सूक्ष्मवतन में है मूवी और यहाँ है टॉकी। इन तीन लोकों को यथार्थ रीति याद करने वाले कोई विरले होंगे।''

सा.बाबा 24.03.10 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और अचानक एवं एवर-रेडी का पाठ

इस विश्व-नाटक में प्राय: सभी घटनायें अचानक होती हैं और ये अचानक होना ही इस विश्व-नाटक को रोचक बनाता है। इस विश्व-नाटक का यथार्थ रीति आनन्द ले सकें, उसके लिए ही बाबा ने हमको अचानक, एवर-रेडी और बहुत काल का पाठ पढ़ाया है। जो आत्मा यथार्थ रीति पुरुषार्थ करके इस पाठ को पक्का करती है, वह इस विश्व-नाटक का यथार्थ रीति आनन्द ले सकती है। बाबा ने अनेक बार कहा है कि आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, परमात्मा परमानन्दमय है और ये विश्व-नाटक परमानन्द और परम सुखमय है। जो आत्मा

यथार्थ रीति पुरुषार्थ करके अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा के साथ रहकर इस विश्व-नाटक को साक्षी होकर देखती है, वह इस विश्व-नाटक के परमानन्द को अनुभव करती है। ये परमानन्द ही संगमयुग की प्रालब्ध है अर्थात् परमात्म-वर्सा है। जो आत्मायें विनाश के आधार पर जी रही हैं या विनाश की डेट गिरती कर रहीं हैं, वे इस परमात्म वर्से को अर्थात् इस विश्व-नाटक के परम-सुख से वंचित हैं। इसलिए यथार्थ पुरुषार्थ कर इस प्रालब्ध को अनुभव करना और कराना हर ब्राह्मण आत्मा का परम कर्तव्य है।

''विश्व के विनाश की डेट बापदादा एनाउन्स नहीं करेंगे लेकिन अपना जीवन काल कब समाप्त होना है, वह मालूम है? ... अचानक कुछ भी हो सकता है। ... विश्व की डेट के संकल्प से अलबेला नहीं बनना। ... कब नहीं कहो, अब। कल कुछ भी हो जाये लेकिन हमको एवर-रेडी रहना ही है।''

अ.बापदादा 18.1.10

''ज्ञान, योग, सेवा और धारणा चारो में ऐसी तैयारी है? पूरा बेहद का वैराग्य का अनुभव चेक किया है? अपनी दिल में यह चेक किया कि हम एवर-रेडी हैं? क्योंकि ब्रह्मा बाप ने भी स्वयं को पुरुषार्थ करके ऐसा बनाया, जो अनुभवी बच्चों ने देखा। कोई भी तरफ यह वातावरण नहीं था, ... अशरीरी बनने के अभ्यास से अचानक अशरीरी बनाकर उड़ गये।''

अ.बापदादा 18.1.10

''अचानक अशरीरी बनने के अभ्यास से अचानक अशरीरी बनाकर उड़ गये। ... इसका कारण बहुत समय अशरीरीपन का अभ्यास रहा। कई अनुभवी बच्चे जो साथ रहे, उन्होंने अनुभव किया कि कर्म करते-करते ऐसे अशरीरी बन जाते थे। ... यह जो कर्म और योग में अन्तर पड़ जाता है, इसका कारण कर्म करते यह स्मृति इमर्ज नहीं होती कि मैं आत्मा हूँ।''

अ.बापदादा 18.01.10

''ऐसे पूरा वर्सा लेने वाले यही लक्ष्य बुद्धि में रखो कि अचानक, एवर-रेडी और बहुत समय। तीनों शब्द साथ-साथ याद रखो। इसलिए बापदादा के आशाओं के दीपक बच्चों प्रति यही वरदान है कि सदा ये तीनों ही शब्द याद रखकर सभी आशाओं के दीपक बनने का प्रत्यक्ष सबूत दिखाओ।''

अ.बापदादा 18.1.10

''योगबल से पाप भस्म होंगे और पुण्यात्मा बन जायेंगे। पहले-पहले यह मेहनत करनी है। ... चार्ट में दोनों बातें लिखना चाहिए कि सर्विस कितनी की, बाप को कितना याद किया? पुरुषार्थ ऐसा करना है, जो पिछाड़ी में कोई भी चीज़ याद न आये। अपने को आत्मा समझ, बाप को याद कर पुण्यात्मा बन जायें - यह मेहनत बहुत करनी है।''

सा.बाबा 5.01.10 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और गीत-कवितायें एवं चित्र

गीत-कवितायें और चित्र भी पुरुषार्थ में मदद करते हैं परन्तु उनको आधार बनाकर पुरुषार्थ करने से पुरुषार्थ सफल नहीं होता है। बाबा ने कहा है - जब किसी कारण से अवस्था में कोई थकावट आती है तो गीत आदि सुनकर अवस्था को ठीक करना चाहिए। लक्ष्मी-नारायण का चित्र घर में रखो तो उनको देखने से भी बाबा याद आयेगा। परन्तु इस सत्य को अवश्य ध्यान में रखना है कि योग की सफलता के लिए अपने मन मन्दिर में शिवबाबा का, लक्ष्मी-नारायण का चित्र रखना है, जिससे हम समय बाबा की याद रहे।

''यह तो बाप जानते हैं कि निरन्तर याद रह नहीं सकती परन्तु पुरुषार्थ करना है। ... इनको याद करेंगे तो बाप जरूर याद आयेगा, बाप को याद करेंगे तो यह जरूर याद आयेंगे क्योंकि हमको बाप ऐसा बना रहे हैं।... सभी के घर में यह लक्ष्मी-नारायण का चित्र होना चाहिए।''

सा.बाबा 21.12.09 रिवा.

''तुम इनको अच्छी तरह देखते हो, यह है एम एण्ड आब्जेक्ट अर्थात् तुम इस घराने के थे, अभी क्या बन गये हो। कितना रात-दिन का फर्क है। इसलिए घड़ी-घड़ी इनको देखना है और लक्ष्य रखना कि हमको ऐसा बनना है।...देही-अभिमानी होकर इन लक्ष्मी-नारायण को देखेंगे तो समझेंगे कि हम ऐसे बन रहे हैं।''

सा.बाबा 21.12.09 रिवा.

''श्रीमत पर चले, तब बाप की दिल पर चढ़े। बाप की दिल पर चढ़े तब तख्त पर भी बैठे। ... इन चित्रों में भी करेक्शन होती रहती है। ... यह सब प्वाइन्ट्स हैं, जो सेन्सीबुल बच्चे हैं, वे ही धारण करते हैं। ... आज्ञाकारी बच्चों को ही बाप प्यार करेंगे। बहुत पुरुषार्थ करना है।''

सा.बाबा 4.11.08 रिवा.

''जाग सजनिया जाग ... ऐसे-ऐसे गीत अपने घर में रखने चाहिए, जिससे किसको भी इन पर समझा सकेंगे। ... बाप बुद्धिवानों की बुद्धि है, ऐसे गीत बनवाये हैं।... एक दिन आयेगा जो इस ज्ञान के गीत गाने वाले भी तुम्हारे पास आयेंगे। बाप की महिमा में ऐसा गीत गायेंगे, जो घायल कर देंगे।''

सा.बाबा 10.02.10 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और श्रीमत

पुरुषार्थ का आधार श्रीमत है और पुरुषार्थ का फल प्रालब्ध है। जो यथार्थ रीति श्रीमत पर चलता है, उसका पुरुषार्थ स्वत: ही सही दिशा में चलता है, उसको कुछ सोचने की

आवश्यकता नहीं रहती है। यथार्थ रीति पुरुषार्थ कराने वाला ज्ञान सागर, सर्वशक्तिवान, सर्वज्ञ परमात्मा ही है, इसलिए जो उनकी श्रीमत पर चलता है, उसका पुरुषार्थ अवश्य ही श्रेष्ठ होता है।

''बीमारी सर्जन को नहीं बतायेंगे तो अन्दर दिल खाती रहेगी, फिर बाप को याद कर नहीं सकेंगे। सच सुना देंगे तो याद कर सकेंगे। रावण राज्य में पाप तो जरूर किये हैं। इस जन्म का बाप को सुना देने से हल्का हो जाते हैं। ... अब बाप कहते हैं - अभी तुमको पापात्माओं से लेन-देन नहीं करनी है।'' सा.बाबा 5.12.09 रिवा.

''कोई कुछ छी-छी बोले तो सुना-अनसुना कर देना चाहिए।... ऊंच पद पाना है तो मान-अपमान, सुख-दुख, हार-जीत, निन्दा-स्तुति सब सहन जरूर करना है। सबमें अवस्था एकरस रखनी है। बाप कितनी युक्तियाँ बताते हैं। फिर भी बच्चे बाप का भी सुना-अनसुना कर देते हैं।'' सा.बाबा 2.12.09 रिवा.

''महिमा सारी तुम्हारी है। नवरात्रि पर पूजा आदि सब तुम्हारी होती है। तुम ही बाप की श्रीमत पर चलकर स्थापना करते हो। श्रीमत पर तुम सारे विश्व को चेन्ज करते हो तो उनकी श्रीमत पर पूरा चलना चाहिए ना। सब नम्बरवार पुरुषार्थ करते रहते हैं और स्थापना होती रहती है।''

सा.बाबा 29.11.09 रिवा.

''बाप-टीचर-सत्गुरु तीनों को याद करते रहें तो अवस्था बहुत हर्षितमुख रहे। ... बाप तुमको नई दुनिया में आने के लिए लायक बनाते हैं। जो-जो लायक बनते हैं, वे सतयुग में आकर नम्बरवर पुरुषार्थ पद पाते हैं।'' सा.बाबा 29.11.09 रिवा.

''परिवर्तन शक्ति द्वारा नेगेटिव संकल्प, नेगेटिव चलन को देखते हुए पॉजिटिव में चेन्ज करो। शुभ-भावना, शुभ-कामना द्वारा यह सहज हो जायेगा। ऑपोजीशन तो आयेगी लेकिन आपके परिवर्तन की शक्ति आपको सहज सफलता दिलायेगी।''

अ.बापदादा 31.12.08

''तुम बच्चों को आपस में बहुत खीरखण्ड होकर चलना है। इस समय तुम जो यह पुरुषार्थ करते हो, उसके फलस्वरूप 21 जन्म खीरखण्ड होकर चलते हो। ... जो बाप का फरमान नहीं मानेंगे, उनको कहा जायेगा ईश्वर का नाफरमानबरदार।''

सा.बाबा 2.01.09 रिवा.

''अपने सुहाग को सदा कायम रखने के लिए चार बातें याद रखनी है। ... एक जीवन का उद्देश्य (लक्ष्य) सदा सामने हो, दूसरा बापदादा का आदेश (श्रीमत), तीसरा सन्देश (सेवा) और चौथा स्वदेश (अब घर जाना है)। यह चारो बातें सदा स्मृति में हैं तो पुरुषार्थ स्वत: तीव्र

चलेगा।''

अ.बापदादा 14.5.70

''तुम बच्चों को अपने को आत्मा समझ, शरीर को भूलकर शिवबाबा को याद करना है। ... बाप बच्चों को श्रीमत देते हैं - जितना हो सके पुरुषार्थ कर सभी के दुख दूर करते रहो। पुरुषार्थ से ही अच्छा पद मिलेगा। ... बच्चों को अपने पर आपही रहम करना है।''

सा.बाबा 13.10.09 रिवा.

''ड्रामा प्लॉन अनुसार तुम बच्चे जितना सर्विस कर प्रजा बनाते हो, उतना आत्माओं का कल्याण होता है, उतनी उन्हों की आशीर्वाद तुमको मिल जाती है।... पुरुषार्थ करना और कराना है। पुरुषार्थ में कब थकना नहीं है। ... तुमने जिसको सुनाया, जिसने भी सुना, उस पर छाप तो लग गई। पिछाड़ी में फिर सब जागेंगे जरूर।''

सा.बाबा 5.10.09 रिवा.

''श्रीमत पर नहीं चलेंगे तो बहुत धोखा खायेंगे। चलते हो वा नहीं चलते हो, वह तो तुम जानो और शिवबाबा जाने। तुमको पुरुषार्थ कराने वाला शिवबाबा है। देहधारी सब पुरुषार्थ करते हैं। यह भी देहधारी है, इनको भी शिवबाबा पुरुषार्थ कराते हैं।''

सा.बाबा 24.09.09 रिवा.

''ऑलमाइटी बाप है ना। बाप बच्चों को वर्से में कितनी ताकत देते हैं, जो सारा आसमान, धरती आदि सब हमारे हो जाते हैं। ... तो ऐसे बाप की श्रीमत पर पूरा चलना चाहिए ना। इसमें लिए हर एक को अपना पुरुषार्थ करना है।''

सा.बाबा 15.09.09 रिवा.

''बाप जिस भाषा में अभी समझाते हैं, कल्प-कल्प उसमें ही समझायेंगे। जो भाषा इनकी होगी, उसमें ही बाबा समझायेंगे।... तुमको बाप ने श्रीमत दी है कि तुम अपनी उन्ति के लिए पुरुषार्थ करो, औरों के चिन्तन में मत जाओ। ऐसे तो अनेक बातों का चिन्तन हो जायेगा।... मूल बात है पावन बनने की।''

सा.बाबा 16.09.09 रिवा.

''अभी तुम यह जानते हो कि बाप कैसे रचना के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज हमको देते हैं। ... अब यह है नॉलेज। बच्चे बने हो तो फिर पढ़ाई भी पढ़नी है। यहाँ बैठे और कोई धन्धे आदि का ख्याल भी नहीं आना चाहिए।''

सा.बाबा 18.09.09 रिवा.

''तुम भी रुहानी मिलीटरी हो। यहाँ भी बाप तुमको कहते हैं अटेन्शन अर्थात् एक बाप की याद में रहो। ... बुद्धि बाप में लगी रहे। तुम्हारा यह अटेन्शन फार एवर है। जब तक जीना है, तब तक बाप को याद करना है। ... तुम जब यहाँ बैठते हो तो रचता और रचना के आदि-मध्य-

अन्त का ज्ञान भी बुद्धि में रखना है अर्थात् स्वदर्शन चक्र फिराना चाहिए। ... उठते-बैठते तुम अपने को लाइट-हाउस समझो।''
सा.बाबा 5.09.09 रिवा.

''जब तक अपने आप से कोई प्रतिज्ञा नहीं की है तब तक परिपक्वता आ नहीं सकेगी। ... म्युजियम वा पदर्शनी में सभी को सुनाते हो - 'अब नहीं तो कब नही', वह अपने लिए भी याद रखो। कब कर लेंगे, ऐसा नहीं सोचो लेकिन अभी बनकर दिखायेंगे। जितना प्रतिज्ञा करेंगे, उतनी परिपक्वता और हिम्मत आयेगी।''
अ.बापदादा 25.6.70

''बाबा को तो यह लक्ष्मी-नारायण का चित्र देखकर बहुत खुशी होती है। स्टूडेण्ट्स को तो खुशी होनी चाहिए ना कि हम पढ़कर यह बनते हैं। ऐसे नहीं कि जो भाग्य में होगा। पुरुषार्थ से ही प्रालब्ध मिलती है। अभी पुरुषार्थ कराने वाला बाप मिला है, तो उनकी श्रीमत पर पूरा चलना चाहिए।''
सा.बाबा 11.01.10 रिवा.

''प्रजा तो करोड़ों के अन्दाज़ में बनेंगी परन्तु राजा बनने-बनाने के लिए पुरुषार्थ करना होता है। जो जास्ती सर्विस करते हैं, वे जरूर ऊंच पद पायेंगे। ... बाबा हर एक के सरकमस्टाँस देखकर राय देते हैं। कुमार है तो कहेंगे, तुम सर्विस कर सकते हो। सर्विस कर बेहद के बाप से वर्सा लो।''
सा.बाबा 11.01.10 रिवा.

''बाप कहेंगे यह सब सर्विस में लगाओ। मैं तुमको जो मत देता हूँ, वैसे कार्य करो। युनिवर्सिटी खोलो, सेन्टर खोलो, जिससे बहुतों का कल्याण हो जाये।... तुम बच्चों को ही मैसेन्जर, पैगम्बर कहा जाता है। सबको यह मैसेज दो कि बाप ब्रह्मा द्वारा कहते हैं - मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुमको जीवनमुक्ति मिल जायेगी।''
सा.बाबा 6.01.10 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और स्वमान-वरदान

बाबा ने सबसे सहज पुरुषार्थ बताया है कि अपने स्वमान में रहो और बाप से मिले वरदानों को याद रखो। ज्ञान सागर सर्वशक्तिवान परमात्मा से संगमयुग में प्राप्त स्वमान और वरदानों पर ही हमारी भविष्य प्रालब्ध आधारित है। जो जितना स्वमान में रहता है, वह उतना ही महान बन जाता है।

''रत्न तो सभी हैं। उम्मीदवार में भी नम्बरवार तो होते ही हैं। तो सदैव यह स्मृति में रखो कि हम बापदादा के नूरे रतन हैं तो हमारे नयनों में वा नज़रों में और कोई चीज़ समा नहीं सकती। चलते-फिरते, खाते-पीते आपके नयनों में क्या दिखाई दे ? बाप की मूरत वा सूरत।''
अ.बापदादा 6.05.71

''अगर अपनी शान में स्थित हो जाओ तो परेशान हो नहीं सकते। तो सर्व परेशानियों को मिटाने के लिए सिर्फ शब्द के अर्थ स्वरूप में टिक जाओ अर्थात् अपने शान में स्थित हो जाओ। शान से मान स्वत: और सदैव प्राप्त होता है। इसलिए मान-शान कहा जाता है। ... अपनी शान को सदैव याद रखो तो कर्म भी शानदार होंगे और परेशान भी नहीं होंगे।''

अ.बापदादा 6.05.71

''तुम्हारे में भी जो अच्छी रीति पढ़कर, पवित्र बन औरों को भी बनाते हैं, वे प्राइज़ लेते हैं। पास विद् ऑनर 8 होते हैं, उनकी ही माला बनती है। फिर 108 की भी माला होती है, वह भी सुमिरण की जाती है। कोई मनुष्य माला का रहस्य थोड़ेही समझते हैं।''

सा.बाबा 19.09.09 रिवा.

''आज का दिवस स्नेह द्वारा शक्ति का वरदान प्रापत करने का दिवस है। ... स्नेह द्वारा वरदाता से कोई भी वर प्राप्त हो सकता है। समझा, पुरुषार्थ द्वारा नहीं लेकिन स्नेह द्वारा। वरदान के दिवस को जितना जो समझ सके, उतना ही वरदान पा सकता है। कैच करने वाले की कमाल होती है।''

अ.बापदादा 18.1.71

''अगर बहुत समय से सेकेण्ड ग्रेड का पुरुषार्थ ही रहा तो वर्सा भी बहुत समय सेकेण्ड ग्रेड मिलेगा। बाकी थोड़ा समय फर्स्ट ग्रेड में अनुभव करेंगे।... या तो आज से अपने को सर्वशक्तिवान के बच्चे न कहलाओ।... वे बच्चे नहीं कच्चे हैं। अभी तक ऐसा पुरुषार्थ करना है। अभी का पुरुषार्थ बच्चों के स्वमान लायक नहीं दिखाई पड़ता है।''

अ.बापदादा 23.10.70

''सुनने, जानने और करने के अनुभव को बढ़ाने के लिए दो बातों के विशेष महत्व को जानो। एक स्वयं के महत्व को, दूसरा समय के महत्व को।... एक मिनट में कितने स्वमान याद आ जायेंगे ... अनुभव करने में अन्तर क्यों पड़ जाता है, क्योंकि समय पर उस स्थिति के सीट पर सेट नहीं होते हो।''

अ.बापदादा 9.12.93

''अगर सीट पर सेट हैं तो कोई भी , चाहे कमजोर संस्कार, चाहे कोई आत्मा, चाहे प्रकृति, चाहे किसी भी प्रकार की रॉयल माया अपसेट नहीं कर सकती।... शरीर को बिठाने के लिए स्थूल स्थान होता है और मन-बुद्धि को बिठाने के लिए श्रेष्ठ स्थितियों का स्थान है। ... इस समय विशेष अटेन्शन चाहिए - मन और बुद्धि को सदा एकाग्र रहे।''

अ.बापदादा 9.12.93

यह भी याद रहे कि हम निमित्त बने हुए बाप के साथी बच्चों को सिर्फ अपने लिए पुरुषार्थ नहीं करना है लेकिन हमारे ऊपर सारे विश्व की आत्माओं को परिवर्तन करने की भी जिम्मेवारी है।

... समय नाज़ुक आ रहा है तो अब उन दुखी अशान्त आत्माओं के प्रति भी मास्टर दुखहर्ता-सुखकर्ता बनना ही है। सन्देश 14.10.08

''इसलिए अपना यह स्वमान सदा याद रखो कि मुझ ब्राह्मण आत्मा का स्वमान ही है पर-उपकारी। तो दूसरी सीज़न में बापदादा हर एक बच्चे में यह परिवर्तन देखने चाहते हैं। हो सकता है? ... रोज़ रात को गुडनाइट करने से पहले अपना सारे दिन का पोतामेल बाबा को देना। अच्छा किया या बुरा किया ... अपनी बुद्धि को खाली करके गुडनाइट करना।''

अ.बापदादा 31.03.10

''जब ऐसी बातें सामने आती हैं, तब ही तो विजयी बनने का चान्स होता है। बातों का काम है आना और आपका का काम है बातों को पार करके विजयी बनना, क्योंकि आपको नॉलेज है। ... आपके देवता रूप के आगे आपकी महिमा सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी गाते हैं। आपका यह बनने का पार्ट अभी संगमयुग का ही गायन है।''

अ.बापदादा 28.02.10

''झूठे देहाभिमान के संग से तुम गिर पड़ते हो और फिर सत के संग में तुम ऊपर चढ़ जाते हो। आधा कल्प तुम अपनी प्रालब्ध भोगते हो। ऐसे नहीं कि वहाँ भी तुमको सत का संग है। नहीं, सत का संग और झूठ का संग तब कहते हैं, जब दोनों हाजिर हैं। सत बाप ही आकर सब बातें समझाते हैं।'' सा.बाबा 24.02.10 रिवा.

''अभी तुम हो ईश्वरीय सम्प्रदाय, फिर होंगे दैवी सम्प्रदाय।... यह हीरे जैसा जन्म गाया हुआ है, इसकी बहुत सम्भाल भी करनी होती है। तन्दुरुस्त होंगे तो नॉलेज सुनते रहेंगे। ... यहाँ जितना जियैंगे, उतनी कमाई होती रहेगी, हिसाब-किताब चुक्तू होता रहेगा। ... पूछते बाबा सतयुग कब आयेगा। बाबा कहते हैं - पहले कर्मातीत अवस्था तो बनाओ।''

सा.बाबा 18.02.10 रिवा.

''बहुत समय का अभ्यास ही समय पर मदद देगा। इसलिए पुरुषार्थी नहीं, अनुभवी। अनुभव की अथॉरिटी आप सबको ऑलमाइटी अथॉरिटी ने दी है। जैसे देहभान के अनुभवी हो, वैसे देही-अभिमानी के अनुभवी बनो। ... जैसे देहाभिमान पक्का हो गया है, ऐसे देही-अभिमानी, स्वमानधारी, स्वराज्य अधिकारी भी इतना ही पक्का हो।''

अ.बापदादा 30.01.10

''भिन्न-भिन्न प्रकार के देहभान हैं और भिन्न-भिन्न प्रकार स्वमान भी बाप ने दिये हैं। ... अनुभव का पुरुषार्थ करना और अनुभवी स्वरूप बनना, उसमें अन्तर है। इसलिए मेहनत करनी पड़ती है। तो बापदादा को अब समय प्रमाण बाप समान बनने का लक्ष्य सम्पन्न करते

समय, बच्चों का यह मेहनत करना अच्छा नहीं लगता है।''

अ.बापदादा 30.01.10

''जैसे स्थूल कर्म का टाइमटेबुल फिक्स करते हो, वैसे मन का टाइमटेबुल फिक्स करो। ... किस कर्म को करते समय मालिकपन का अधिकार किस स्वमान के रूप में रखना है, यह मन का टाइमटेबुल बनाओ। ... स्वमान अपनी बुद्धि में इमर्ज रखना है। स्वमान की माला इतनी बड़ी है, जो स्वमान गिनती करते जाओ और माला में समा जाओ।''

अ.बापदादा 18.01.10

''यह तो सब जानते हैं कि मैं आत्मा हूँ लेकिन मैं आत्मा कौनसी आत्मा हूँ? मैं करावनहार आत्मा हूँ और ये कर्मेन्द्रियाँ करनहार हैं, यह करावनहार का स्वमान कर्म करते स्मृति स्वरूप में रहे। ... लेकिन मैं करावनहार हूँ, मालिक हूँ - इस सीट पर अगर सेट हैं तो हर कर्मेन्द्री आर्डर में रहेगी। बिना सीट पर सेट होते कोई किसका नहीं मानता है।''

अ.बापदादा 18.01.10

''सदैव यह याद रखना कि हम ऑलमाइटी अथॉरिटी के द्वारा निमित्त बने हुए हैं, ऑलमाइटी गवर्मेन्ट के मैसेन्जर हैं। कोई से भी डिस्कस में अपना माइण्ड डिस्टर्व नहीं करना है। ... अपने चेहरे पर वा मन की स्थिति में अन्तर न लाना। मन्त्र सदा याद रखना। ... मन्मनाभव का मन्त्र प्रयोग करना।''

अ.बापदादा 10.6.71

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और चार्ट एवं चेकिंग

पुरुषार्थ में सफलता प्राप्त करने के लिए अपनी चेकिंग अति आवश्यक है, उसके लिए ही बाबा बार-बार कहते हैं कि बच्चे अपना चार्ट रखो कि कितना बाप को याद करते हो, कितना समय ईश्वरीय सेवा में लगाते हो, अपना समय, स्वांस, संकल्प व्यर्थ तो नहीं गंवाते हो। जब चार्ट रखेंगे, तब ही पता पड़ेगा कि हम अपना समय, स्वांस, संकल्प, तन-मन-धन ईश्वरीय सेवा में सफल करते हैं और हमारी भविष्य प्रालब्ध क्या होगी।

''आप आपही अपना चार्ट रखना और बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि हर रोज़ रात्रि को बापदादा को अपने सारे दिन का चार्ट सुनाने के बाद अपना दिमाग़ खाली करके सोने से आपको नींद भी अच्छी आयेगी और दूसरे दिन ... वह स्मृति सहयोग देती है।''

अ.बापदादा 25.10.09

''बाप को अपना चार्ट दे दिया और परिवर्तन कर लिया तो धर्मराजपुरी से बच जायेंगे। अभी

दूसरे वर्ष को देखा तो किसने नहीं है लेकिन अभी लक्ष्य रखो ... (बापदादा से मिले खज़ानों को) आपका चेहरा दिखाई दे, चलन दिखाई दे, वह जल्दी से जल्दी प्रैक्टिकल में करके दिखाओ।''

अ.बापदादा 25.10.09

जो सदा अपनी शकल देखता है, उसके सामने कोई बात मुश्किल नहीं है। जो दूसरों की शकल देखता है, उसके सामने सदा ही मुश्किलातें आती हैं।... ब्रह्मा बाबा हमारे सामने दर्पण है। सच्चा पुरुषार्थी सदा अपने को उस दर्पण में देख अपनी शकल को साफ करता है।

दादी जानकी 7-06-09

''जो अभी पुरुषार्थ करके बनेंगे, वह कल्प-कल्पान्तर बनेंगे। अभी पूरा जोर देकर पुरुषार्थ करना पड़े। नर से नारायण बनना चाहिए। जो अच्छे पुरुषार्थी होंगे, वे अमल करेंगे। रोज़ अपनी आमदनी और घाटे को देखना होता है।''

सा.बाबा 11.06.09 रिवा.

''दृष्टि आत्मिक बनानी है। ... जहाँ देखते, जिसको देखते, वह आत्मिक स्वरूप ही दिखाई दे। ऐसी दृष्टि बदली है? जिसकी दृष्टि में अर्थात् नैनों में खराबी होती है तो एक समय में दो चीज़ें दिखाई पड़ती हैं। ... कब देह को देखते, कब देही को देखते हो।... यथार्थ रूप है देही, न कि देह। जो यथार्थ रूप है, वही दिखाई दे।''

अ.बापदादा 6.08.70

''साक्षात्कार दृष्टि से ही करेंगे। एक-एक की दृष्टि में अपने यथार्थ रूप, यथार्थ घर और यथार्थ राजधानी देखेंगे, अगर यथार्थ दृष्टि है तो। सदैव अपने को चेक करो कि अभी कोई भी सामने आये तो मेरी दृष्टि द्वारा क्या साक्षात्कार करेंगे। जो आपकी वृत्ति में होगा, वैसे अन्य आप की दृष्टि से देखेंगे।''

अ.बापदादा 6.08.70

''कन्ट्रोलिंग पॉवर की ब्रेक चेक करो।... जब समझते हैं कि यह राँग है तो उसी समय राँग को राइट में परिवर्तन होना चाहिए। इसको कहा जाता है कन्ट्रोलिंग पॉवर।''

अ.बापदादा 12.11.92

''चेक करो - अगर बार-बार किसी भी बात में स्थिति नीचे-ऊपर होती है अर्थात् बार-बार पुरुषार्थ में मेहनत करनी पड़ती है, इससे सिद्ध है कि ज्ञान की मूल सब्जेक्ट के दो शब्द - 'रचता और रचना' की पढ़ाई को स्वरूप में नहीं लाया।''

अ.बापदादा 13.10.92

''चेक करो - निश्चय के फाउण्डेशन के चारो ओर (बाप, आप, परिवार, संगम का समय) मज़बूत है ... पहली बात प्यार का सबूत है - समान बनना। दूसरी बात क्या करनी है - निश्चय

के फाउण्डेशन को पक्का करो। ... हलचल समाप्त होगी तब निश्चय और विजय दोनों की समानता हो जायेगी।''
अ.बापदादा 15.4.92

''अपने को आत्मा समझ बाप को कितना समय याद किया, यह चार्ट रखने में बड़ी विशालबुद्धि चाहिए। देही-अभिमानी होकर बाप को याद करना पड़े, तब विकर्म विनाश हों। बाप की याद से सब भूत भाग जायेंगे। यह है गुप्त मेहनत। अपनी आपेही उन्नति करनी है।... बाप आते हैं सबको सुख देने तो बच्चों को भी सबको सुख देना है।''
सा.बाबा 20.2.10 रिवा.

''बीच-बीच में अपनी चेकिंग करनी पड़ेगी। जब तक चेकर नहीं बने हो तब तक मेकर नहीं बन सकते हो। वर्ल्ड-मेकर वा पीस-मेकर का जो गायन है, वह तब तक नहीं बन सकते हो, जब तक चेकर नहीं बने हो। अपने ऊपर बहुत चेकिंग चाहिए।... अपने आप को चेक करने से ही अपनी उन्नति कर सकते हो।''
अ.बापदादा 25.06.71

''ये सब बातें तुम बच्चों की बुद्धि में रहनी चाहिए। अन्तर्मुख होकर बुद्धि चलानी चाहिए। अपने आपको सुधारने के लिए अन्तर्मुख हो अपनी जाँच करो।... अपनी आपही जाँच कर सावधान रहेंगे तब ही ऊंच पद पा सकेंगे। अपनी जाँच कर आपही अपने को सज़ा देनी है।''
सा.बाबा 12.02.10 रिवा.

दूसरों को न देख अपने लक्ष्य के अनुसार अपने लक्षण और पुरुषार्थ को चेक करो और चेक करके चेन्ज करो, पुरुषार्थ में तीव्रता लाओ।

''हर एक अपने को चेक करो कि मैं कर्मयोगी जीवन वाला हूँ? ... जो लक्ष्य है योगी जीवन का, ऐसा अनुभवी स्वरूप बनाओ। जो लक्ष्य है अनुभवी मूर्त बनने का, वह लक्ष्य सम्पन्न है? सदा मस्तक में चमकती हुई लाइट खुद को भी अनुभव हो और दूसरे भी अनुभव करें।''
अ.बापदादा 30.01.10

''मेहनत करनी पड़ती है, इसका कारण है अनुभवी स्वरूप बनने की कमी। पुरुषार्थी हैं लेकिन स्वरूप नहीं बने हैं। एक सेकण्ड में चारो ही सब्जेक्ट में अपने स्वमान के अनुभवी स्वरूप की अनुभूति होनी चाहिए, जो देह अभिमान नज़दीक आ नहीं सके। जैसे रोशनी के आगे अन्धकार नहीं ठहर सकता है।''
अ.बापदादा 30.01.10

''चेक करो ज्ञान स्वरूप बना हूँ या ज्ञान सुनने और सुनाने वाला बना हूँ? नॉलेज का प्रैक्टिकल स्वरूप है, नॉलेज को कहते नॉलेज इज लाइट, नॉलेज इज माइट। तो ज्ञान स्वरूप बनना अर्थात् वे जो भी कर्म करेंगे, वह लाइट-माइट वाला होगा, यथार्थ होगा। इसको कहा जाता है ज्ञान-स्वरूप बनना।''
अ.बापदादा 30.01.10

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और ब्रह्मचर्य

पवित्रता ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है और ब्रह्मचर्य उसका फाउण्डेशन है। पवित्रता अर्थात् आत्मा की सतोप्रधान अर्थात् कर्मातीत स्थिति और ब्रह्मचर्य अर्थात् काम वासना से मुक्त स्थिति। एक बालक ब्रह्मचारी हो सकता है परन्तु उसको सतोप्रधान नहीं कहा जा सकता क्योंकि आत्मा जन्म-पुनर्जन्म लेते अपनी सतोप्रधान अर्थात् पवित्र स्थिति से नीचे आती ही है। सन्यासी भी ब्रह्मचारी हो सकते हैं परन्तु यह निश्चित नहीं कि वे पवित्र अर्थात् सतोप्रधान अर्थात् कर्मातीत स्थिति में भी हों। हाँ कोई सन्यासी, जिसकी आत्मा ने पहला ही जन्म लिया हो, वह अपनी सतोप्रधान स्थिति में हो सकता है परन्तु उसको जन्म लेते ही उतरती कला में आना ही है। बाबा ने अभी हमको ज्ञान देकर अपनी सतोप्रधान स्थिति अर्थात् कर्मातीत स्थित में जाने के लिए पुरुषार्थ करना सिखाया है, जिसके लिए बाबा ने कहा है - कोई भी आत्मा सम्पूर्ण पवित्र बनने के बिगर परमधाम नहीं जा सकती, फिर वह अपने ज्ञान-योग के पुरुषार्थ से बनें या अन्त समय धर्मराज की सजाओं के द्वारा बनें अर्थात् अपने कर्मों का भोग भोगकर बनें।

इस आध्यात्मिक जीवन का फाउण्डेशन है ब्रह्चर्य। ब्रह्चर्य को पालन करने वाला या धारण करने की प्रतिज्ञा करने वाला ही ब्राह्मण अर्थात् पवित्रता की मंजिल पर जाने का पुरुषार्थी कहला सकता है अर्थात् वहाँ से ही पुरुषार्थ की प्रक्रिया आरम्भ होती है और यथार्थ रीति पुरुषार्थ करने वाला ही ब्रह्चर्य व्रत की धारणा में सफल हो सकता है। इसके लिए बाबा ने कहा है - साँप को न देख मणि को देखो तो यह ब्रह्मचर्य का पालन सहज हो जायेगा, इसके लिए बाबा ने भाई-बहन का नाते का और भाई-भाई के नाते का ज्ञान दिया। अभी जो ब्रह्चर्य के व्रत को धारण करते हैं और ज्ञान-योग से पवित्र बनते हैं, उसकी प्रालब्ध आधा कल्प चलती है। इसके लिए ही गायन है कि देवताओं ने ब्रह्चर्य के बल पर ही मृत्यु को जीता है।

''दुख का मूल कारण है काम, जो आदि-मध्य-अन्त दुख देता है। काम को जीतने से ही तुम जगतजीत बनेंगे। ... जो कल्प पहले बने थे, वे ही अभी भी बनेंगे। हर एक के पुरुषार्थ से समझा जाता है कि कौन-कौन ऊंच ते ऊंच देवता बनेंगे।''

सा.बाबा 22.09.09 रिवा.

''यहाँ स्त्री-पुरुष दोनों को पावन सतोप्रधान बनने का पुरुषार्थ करना है। सन्यासी यह ज्ञान दे नहीं सकते। वह धर्म ही अलग है। वह है निवृत्ति मार्ग का धर्म। भगवान स्त्री-पुरुष दोनों को पढ़ाते हैं। ... लक्ष्मी-नारायण सब तो नहीं बनेंगे। लक्ष्मी-नारायण की भी डिनायस्टी होती है।''

सा.बाबा 22.09.09 रिवा.

''अवस्था ऐसी चाहिए, जो किसको भी देखने से चलायमानी न हो। बाबा का फरमान है - देहाभिमानी मत बनो। सबको भाई-भाई की दृष्टि से देखो। आत्मा जानती है - हम सब भाई-भाई हैं।''

सा.बाबा 28.05.09 रिवा.

''सतयुग में मरने की चिन्ता नहीं होती है।... तुम काल पर जीत पाते हो तो कितना नशा रहना चाहिए।... मन्सा-वाचा-कर्मणा पावन बनना है। बुद्धि में विकारी संकल्प भी न आये। वह तब होगा, जब भाई-भाई समझेंगे, भाई-भाई की दृष्टि से देखेंगे।''

सा.बाबा 6.04.09 रिवा.

''सबसे अधिक धोखा देने वाली यह ऑखें हैं, इसलिए बाप ने तीसरा नेत्र दिया है, जिससे अपने को आत्मा समझ भाई-भाई को देखो। भाई-बहन भी फेल होते हैं तो दूसरी युक्ति निकाली है कि अपने को भाई-भाई समझो। ... किसी के भी नाम-रूप में नहीं फँसना है। इतना पुरुषार्थ करना चाहिए जो भाई-भाई की दृष्टि पक्की हो जाये।''

सा.बाबा 6.04.09 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और पवित्रता

परमात्मा पतित-पावन है, वह आकर आत्माओं को पवित्र बनाते हैं। वास्तव में परमात्मा पवित्र बनाते नहीं हैं, पवित्र बनने का रास्ता बताते हैं। फिर जो जितना उस रास्ते पर चलते हैं, उसके लिए पुरुषार्थ करते हैं, वे उस स्थिति तक पावन बनते हैं और उस अनुसार ही उसकी प्रालब्ध अभी भी अतीन्द्रिय सुख के रूप में पाते हैं और भविष्य में भी स्थूल रूप में पाते हैं। परमात्मा बनाये तो वह सबको एक समान बनाये क्योंकि उसकी दृष्टि में सब बराबर हैं, वह निष्पक्ष और निष्काम हैं। कोई-कोई ब्रह्मचर्य की धारणा को ही पवित्रता समझ लेते हैं। वास्तव में ये एक भूल है। ब्रह्मचर्य तो पवित्रता की स्थिति बनाने के लिए फाउण्डेशन है परन्तु पवित्रता मंजिल है। एक छोटा बच्चा ब्रह्मचारी हो सकता है परन्तु ये निश्चित नहीं कि वह पवित्र हो क्योंकि जैसे-जैसे आत्मायें पुनर्जन्म लेती जाती हैं, वैसे उनमें अपवित्रता अर्थात् देहाभिमान आता जाता है।

''आत्माभिमानी बनने और दूसरे को भी आत्मा समझने से तुम्हारी क्रिमिनल आई नहीं होगी।... आत्मा का अभिमान पक्का रहना चाहिए और सब सम्बन्ध भूल जाने चाहिए। हम आत्मायें स्वीट होम के रहने वाले हैं, यहाँ पार्ट बजाने आये हैं।''

सा.बाबा 12.01.09 रिवा.

''पहले-पहले तो यह दृष्टि पक्की करो कि हम आत्मा हैं, हम अपने भाई आत्मा को देखते हैं। ... बाप भी आत्माओं को देखते हैं, यह भाई भी अपने भाइयों को देखते हैं। तुमको भी भाइयों को देखना है। यह दृष्टि पक्की होने से क्रिमिनल ख्यालात बन्द हो जायेंगे।''

सा.बाबा 13.01.09 रिवा.

''कल्प पहले जिसने जो पद पाया होगा, जो रिजल्ट निकली होगी, वही निकलेगी। ऐसे नहीं कि पिछाड़ी में आने वाले माला के दाने नहीं बन सकते हैं। वह भी बनेंगे। ... यहाँ भी ऐसे निकलेंगे, जो रात-दिन मेहनत कर पतित से पावन बनेंगे।''

सा.बाबा 9.01.09 रिवा.

''लॉ ऐसा कहता है कि भाई-बहन की आपस में कभी शादी हो न सके, उनकी गन्दी वृत्ति होनी नहीं चाहिए। ... परमपिता परमात्मा के बच्चों से तो माया की एकदम लड़ाई होती है। ... यहाँ तो तुम सब एक बाप के बच्चे भाई-बहन हो, उनको अगर गन्दे ख्यालात आयें तो उनको क्या कहेंगे ? वे तो नर्क में रहने वालों से भी हजार गुणा गन्दे गिने जायेंगे।''

सा.बाबा 28.11.08 रिवा.

''ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है पवित्रता और पवित्रता द्वारा ही परमात्म-प्यार और सर्व परमात्म प्राप्तियाँ हो रही हैं। ... जिन बच्चों ने संकल्प किया और दृढ़ संकल्प द्वारा प्रैक्टिकल में परिवर्तन दिखा रहे हैं, ऐसे चारो ओर के महान बच्चों को बापदादा बहुत-बहुत दिल से दुआयें दे रहे हैं।।''

अ.बापदादा 30.11.08

''पवित्रता की वृत्ति अर्थात् हर एक आत्मा प्रति शुभ भावना और शुभ कामना। दृष्टि से हर एक आत्मा को आत्मिक स्वरूप में देखना, स्वयं को भी सहज सदा आत्मिक स्थिति में अनुभव करना। ... पवित्रता द्वारा स्वयं को भी सदा खुश अनुभव करते हो और दूसरों को भी खुशी देते हो।''

अ.बापदादा 30.11.08

''एक धर्म। धर्म अर्थात् धारणा। तो स्वराज्य का धर्म वा धारणा एक कौनसी है ? 'पवित्रता'। मन, वचन, कर्म, सम्बन्ध, सम्पर्क सब प्रकार की पवित्रता - इसको कहा जाता है एक धर्म अर्थात् एक धारणा। स्वप्न व संकल्प मात्र भी अपवित्रता अर्थात् दूसरा धर्म न हो।''

अ.बापदादा 18.11.93

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और एकाग्रता

एकाग्रता का पुरुषार्थ ही श्रेष्ठ प्रालब्ध का आधार है। एकाग्रता के पुरुषार्थ के लिए परमात्मा ने समय समया पर भिन्न युक्तियाँ बताई हैं। एकाग्राता का पुरुषार्थ सबसे श्रेष्ठ पुरुषार्थ है।

''संकल्प की सिद्धि और कर्तव्य की विधि से जन्मसिद्ध अधिकार सहज ही पा लेते हो। संकल्प की सिद्धि कैसे आयेगी ? ... व्यर्थ संकल्पों की सिद्धि तो हो नहीं सकती है। तो संकल्पों की सिद्धि प्राप्त करने के लिए मुख्य पुरुषार्थ यह है कि व्यर्थ संकल्प न रच समर्थ संकल्पों की रचना करो।''
अ.बापदादा 01.3.71

''संकल्पों की रचना जितनी कम, उतनी पॉपरफुल होगी। जितनी रचना ज्यादा होती है, उतनी ही शक्तिहीन रचना होती है। तो संकल्पों की सिद्धि प्राप्त करने के लिए व्यर्थ संकल्पों की रचना बन्द करने का पुरुषार्थ करना पड़े। ... व्यर्थ संकल्पों में समय वेस्ट करने के कारण संकल्पों की सिद्धि और कर्मों की सफलता कम होती है।''
अ.बापदादा 01.3.71

''बाप कहते हैं - ऐसी मेहनत नहीं करो, जो धन्धे-धोरी के पिछाड़ी अपना पद गँवा दो। अपना भविष्य तो बनाना है ना। ... अच्छे स्टूडेण्ट्स जो होते हैं, वे एकान्त में बगीचे में जाकर पढ़ते हैं। ... उस धन कमाने की भेंट में यह अविनाशी धन तो बहुत-बहुत ऊंचा है। वह विनाशी धन तो खाक हो जाना है।''
सा.बाबा 12.10.09 रिवा.

''बाप यह जानते हैं कि सदैव कोई याद में रह न सके। सदैव याद रहे तो सारे विकर्म विनाश हो जायें, फिर तो कर्मातीत अवस्था हो जाये। अभी सभी पुरुषार्थी हैं। जो ब्राह्मण बनेंगे, वे ही देवता बनेंगे। ... ब्राह्मण हैं चोटी।''
सा.बाबा 22.09.09 रिवा.

अभी हम अपने आत्मिक स्वरूप और निराकार परमात्मा के स्वरूप के ध्यान से सहज ही निर्संकल्प और निर्विकल्प समाधि में स्थित हो सकते हैं और स्थित होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुख अनुभव कर सकते हैं। बाबा के द्वारा दिया गया इस विश्व-नाटक का ज्ञान हमको इसके लिए परम सहयोगी है।

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और समर्पणता

यह विश्व-नाटक कर्म और फल, पुरुषार्थ और प्रालब्ध के विधि-विधान पर अनादि-अविनाशी बना हुआ है, जो कल्प-कल्प हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। इसमें विभिन्न योनियों की आत्माओं के स्तर के आधार पर कर्म और फल, पुरुषार्थ और प्रालब्ध के लिए अविनाशी विधि-विधान बने हुए हैं, जिनके आधार पर वे कर्म करते हैं और उसके अनुसार उसका फल प्राप्त करते हैं। इस विश्व-नाटक में कोई भी आत्मा बिना कर्म के कोई फल प्राप्त नहीं कर सकती है अर्थात् सुख या दुख नहीं पा सकती है। परन्तु संगमयुग पर परमात्मा पिता आकर

इस विश्व-नाटक का, इसके विधि-विधानों का ज्ञान देते हैं और आत्माओं को अपने स्वरूप तथा अपने परमात्मिक स्वरूप का अनुभव कराते हैं, उस अनुभव को पाकर जो आत्मायें उनके बनते हैं, उन पर तन-मन-धन-जन, मन-बुद्धि सहित समर्पित होते हैं, उनकी श्रीमत अनुसार पूरा पुरुषार्थ करते हैं, वे उनके पूरे वर्से के अधिकारी बनते हैं। वे संगम पर भी देव-दुर्लभ अतीन्द्रिय सुख अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख प्राप्त करते हैं और भविष्य में स्वर्गिक सुखों को भी प्राप्त करते हैं क्योंकि परमात्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता है, स्वर्ग का रचता है।

जो आत्मायें इस विश्व-नाटक के विधि-विधानों को समझते हैं, उनके लिए कर्म और फल के विशेष विधि-विधान हैं, जिनके विषय में भी परमात्मा ने समय-समय पर ज्ञान दिया हुआ है। यथा - परमात्मा ने बताया है कि अज्ञानी मनुष्य जो कर्म करता है, उसका उसको उस अनुसार एक गुणा फल मिलता है परन्तु ज्ञानी आत्मायें जो संगमयुग पर परमात्मा के बनकर जो कर्म करते हैं, उसका उनको सौगुणा अर्थात कई गुणा फल मिलता है। ये विधि-विधान अच्छे-बुरे दोनों ही प्रकार के कर्मों पर प्रभावित होता है।

समर्पणता के कई प्रकार हैं परन्तु संक्षेप में कहें तो जो आत्मायें परमात्मा की बनती हैं, वे सभी समर्पित हैं क्योंकि वे पुरानी दुनिया से बुद्धियोग निकाल कर परमात्मा के बनते हैं, मरजीवा जन्म लेते हैं परन्तु मरजीवा जन्म लेने वाले अर्थात् समर्पित होने वाले नम्बरवर पुरुषार्थ अनुसार तो होते हीं हैं और सबको प्रालब्ध अर्थात् फल भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही मिलता है क्योंकि ये खेल ही पुरुषार्थ और प्रालब्ध पर आधारित है और अति विविधतापूर्ण है।

''यह तो जानते हो कि महाराजा-महारानी बनेंगे तो उनके दास-दासियाँ भी चाहिए। वे भी यहाँ के ही बनेंगे। सारा मदार है पढ़ाई पर। इस शरीर को भी खुशी से छोड़ना है, दुख की बात नहीं। ... बाप का बनकर अगर ग्लानि करते हैं तो बहुत बोझा चढ़ता है।''

सा.बाबा 2.10.09 रिवा.

''स्वर्ग में भी राजधानी तो होगी ना, उसमें राजा, प्रजा, नौकर-चाकर, सब होंगे परन्तु वहाँ पापात्मायें गन्दे विकारी नहीं होंगे। वह है ही निर्विकारी पावन दुनियां। ... फिर भी बाप के पास आयी हैं तो स्वर्ग में तो जायेंगी परन्तु सब ऐसे लक्ष्मी-नारायण थोड़ेही बनेंगी। प्रजा, नौकर-चाकर, दास-दासियाँ भी बनेंगी।''

सा.बाबा 1.10.09 रिवा.

''बच्चों को नोट करना चाहिए - हमने यहाँ बैठे-बैठे कितना समय याद किया ? लिखने से बाप समझ जायेंगे। ऐसे नहीं कि बाप को सब मालूम पड़ता है ... यह तो हर एक अपने चार्ट

से समझ सकते हैं कि कितने समय बाप की याद थी और कितना समय बुद्धि और कहाँ चली गई। झूठ लिखने से तो और ही 100 गुणा पाप चढ़ेगा।''

सा.बाबा 23.09.09 रिवा.

''रुहानी बच्चे जानते हैं - हम अपने लिए अपना दैवी राज्य फिर से स्थापन कर रहे हैं। ... जब अपना राज्य स्थापन हो जायेगा, फिर यह पुरानी सृष्टि नहीं रहेगी।... तुम जानते हो इस विनाश में खास भारत की और आम सारी दुनिया की भलाई है।''

सा.बाबा 22.09.09 रिवा.

''आपका हर कर्म दर्पण बन जाये, जिस दर्पण से बापदादा के गुणों और कर्तव्य का दिव्य रूप और रुहानियत का साक्षात्कार हो। लेकिन दर्पण कौन बन सकेगा?... जो देहाभिमान को अर्पण करता है, उसका हर कर्म दर्पण बन जाता है।''

अ.बापदादा 18.3.71

''बाबा ने समझाया है - काशी में भी बलि चढ़ते थे, जिसे काशी कलवट कहते हैं। ... अल्पकाल छणभंगुर सुख मिल जाता है। यहाँ तुम बलि चढ़ते हो अर्थात् जीते जी शिवबाबा का बनते हो 21 जन्मों का वर्सा पाने के लिए। इसमें जीवघात की बात नहीं है। ... कल्प-कल्प तुम यह पुरुषार्थ करते आये हो।''

सा.बाबा 1.10.08 रिवा.

''अपने को इन्श्योर नहीं करेंगे तो भविष्य 21 जन्मों के लिए कैसे मिलेगा। मरना तो है ही, तो क्यों न इन्श्योर कर देना चाहिए। कहते - सब कुछ उनका है तो परवरिश भी वह करेंगे। भल कोई सब कुछ देते हैं परन्तु सर्विस नहीं करेंगे तो जो दिया, वह खाते रहते हैं। बाकी जमा क्या होगा। कुछ नहीं। सर्विस का सबूत चाहिए।''

सा.बाबा 9.12.08 रिवा.

''कई समझते हैं - हमने इन्श्योर किया है। जो इन्श्योर किया, उसका तो तुमको मिल जायेगा। यहाँ तो बहुतों को दान करना है, बाप के मुआफिक अविनाशी ज्ञान रतनों का फ्लेन्थ्रोफिस्ट बनना है। ... इस धन्धे में लग जाने से फिर बुद्धि बहुत निर्माण हो जाती है। सर्विस करते-करते बुद्धि रिफाइन होती है।''

सा.बाबा 6.11.08 रिवा.

''पाण्डव सेना और शक्ति सेना ही इस पाण्डव भवन का महत्व बढ़ा सकते हैं। ... पाण्डव सेना को एग्मॉम्पुल बनना है, जो आप लोगों को देखकर औरों को भी प्रेरणा मिले। जो भी मधुवन में आये तो यह विशेषता देखे कि ये एक हैं और एक की ही लगन में मगन हैं, एकरस

स्थिति में स्थित हैं। ऐसा दृश्य देखेंगे, तब प्रत्यक्षता होगी।''

अ.बापदादा 5.3.70

''बाबा ने इनको कहा - अपना तन-मन-धन सब इसमें लगा तो इसने सबकुछ न्योछावर कर दिया ना। इनको कहा जाता है महादानी। विनाशी धन के साथ अविनाशी धन भी दान करना होता है, फिर जो जितना दान करे। ... वह है इण्डायरेक्ट, यह है डायरेक्ट ईश्वर अर्थ।... पुरुषार्थ करना चाहिए बाप को पूरा फॉलो करने का। इसमें मन-बुद्धि से सब सरेण्डर करना होता है।''

सा.बाबा 6.01.10 रिवा.

''अभी राजाई स्थापन होती है, इसलिए कम्पलीट फ्लेन्थ्रोफिस्ट बनना है। भक्ति मार्ग में तो गाते हैं आप जब आयेंगे तो हम वारी जायेंगे। अभी ... यहाँ तुम जो कुछ करते हो अपने लिए ही करते हो। ... ऐसा योग कमाओ, जो कर्मातीत अवस्था को पा लो, अन्त में कोई सज़ा न खाओ।''

सा.बाबा 6.01.10 रिवा.

''ब्रह्मा बाबा की भी कितनी सम्भाल होती रहती है। यह तो शिवबाबा का रथ है ना, जो सारे वर्ल्ड को हेविन बनाने वाला है। वह है हसीन मुसाफिर, जो आकर सबको हसीन बनाते हैं। ... उन पर तो कुर्बान जाना चाहिए। ... ये बड़ी समझ की बातें हैं, जो बच्चों को बुद्धि में नोट रहनी चाहिए। बुद्धि में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही धारणा होती है।''

सा.बाबा 31.01.10 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और राजतन्त्र

अभी सारे विश्व में राजतन्त्र में प्रजातन्त्र है अर्थात् राज-व्यवस्था प्रजा के हाथ में है। परमात्मा आकर विश्व में राजशाही की स्थापना करते हैं, जिस राजशाही में राजा-प्रजा का सम्बन्ध पिता-पुत्र के समान होता है अर्थात् प्रजा के सुख में ही राजा अपना सुख अनुभव करता है। उस राजतन्त्र की स्थापना परमात्मा अभी संगमयुग पर करते हैं। उस राजतन्त्र में राजा-प्रजा, नौकर-चाकर, दास-दासियाँ सब होते हैं परन्तु परस्पर प्यार होता है। अभी के पुरुषार्थ अनुसार राजा-प्रजा, नौकर-चाकर, दास-दासियाँ बनते हैं।

''जो भी बच्चे जहाँ हैं, उन सबको बाबा समझते हैं कि कौन-कौन क्या पुरुषार्थ करते हैं। वे क्या पद पायेंगे ? ... याद की यात्रा की मेहनत वे समझ नहीं सकते। बाबा रोज-रोज नई-नई बातें समझाते हैं। ऐसे तुम भी औरों को समझाकर ले आओ।''

सा.बाबा 14.09.09 रिवा.

''यह राजधानी स्थापन हो रही है। राजा-रानी बनना मासी का घर थोड़ेही है। ... मनुष्यों में

बहुत देहाभिमान है। देही-अभिमानी तुम बच्चों के सिवाए कोई हो न सके। पुरुषार्थ अच्छी रीति करना है। ऐसे नहीं कि जो नसीब में होगा। अच्छे पुरुषार्थी ऐसे नहीं कहेंगे। वह तो पुरुषार्थ करते-करते जब फेल हो जाते हैं तो कहते हैं तकदीर में जो था सो हुआ।''

सा.बाबा 14.09.09 रिवा.

''इसको युद्ध का मैदान कहा जाता है। तुम हर एक इण्डिपेण्डेण्ट युद्ध के मैदान में सिपाही हो। अब जो जितना चाहे, उतना पुरुषार्थ करे। पुरुषार्थ करना तो स्टूडेण्ट्स का काम है। ... बाप के बने हो तो विश्व के मालिक तो बन ही गये। फिर विश्व में है बादशाही, उसमें ऊंच पद पाना है, उसके लिए पुरुषार्थ करना है, वह हर एक का अपने ऊपर है।''

सा.बाबा 15.09.09 रिवा.

''माया के तूफान तो अन्त तक आयेंगे। अवस्था मजबूत चाहिए। यह है गुप्त मेहनत। कई बच्चे पुरुषार्थ कर तूफानों को उड़ाते रहते हैं। जो जितना पास होगा, उतना ऊंच पद पायेगा। राजधानी में पद तो बहुत हैं ना। हर एक अपने पुरुषार्थ अनुसार पद पायेंगे।''

सा.बाबा 15.07.09 रिवा.

''अच्छी रीति पुरुषार्थ करना चाहिए। ऐसे नहीं कि जो नसीब में होगा। नहीं, पुरुषार्थ करना चाहिए। फिर समझा जाता है कि राजधानी स्थापन हो रही है। हम श्रीमत पर अपने लिए राजधानी स्थापन कर रहे हैं। ... हमने अनगिनत बार राजाई स्थापन की है, करते और गँवाते हैं। यह चक्र फिरता ही रहता है।''

सा.बाबा 6.07.09 रिवा.

''तुम अपने ऊपर आपही कृपा करो। अपने को आपही राजतिलक दो। मै युक्ति बताता हूँ कि कैसे दे सकते हो। टीचर पढ़ने की युक्ति बताते हैं, पढ़ना स्टूडेण्ट का काम है। ... इसमें हर एक आत्मा स्वतन्त्र है, जो जितना दौड़ी लगाना चाहे, वह लगाये। याद की यात्रा ही दौड़ी है।''

सा.बाबा 7.07.09 रिवा.

''राजा बनना तो मेहनत का काम है। राजाओं के पास दास-दासियाँ भी चाहिए। दास-दासियाँ कौन बनते हैं, यह भी तुम समझ सकते हो। ..ऐसा नहीं पढ़ना चाहिए जो जन्म-जन्मान्तर दास-दासी बनें। पुरुषार्थ करना है ऊंच बनने का।''

सा.बाबा 1.07.09 रिवा.

''अपने को आपही राज-तिलक देने के अधिकारी बनाना है। बाप अधिकारी बनाते हैं, शिक्षा देते हैं कि ऐसे-ऐसे करो। पहले नम्बर की शिक्षा देते हैं कि मामेकम् याद करो।''

सा.बाबा 16.06.09 रिवा.

''ये राजधानी के स्थापना की बातें बड़ी गुह्य और गोपनीय हैं ... आयेंगे वे ही, जिनहोंने कल्प-कल्प राज्य लिया है। कल्प पहले मुआफिक हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। ... तुम जो बाप के मददगार बनते हो, वे ही ऊंच पद पाते हो। वास्तव में तो तुम मदद अपने को ही करते हो।''

सा.बाबा 12.06.09 रिवा.

''अभी तुम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। राजधानी में तो सब प्रकार के पद होते हैं। ... तुम काम पर जीत पहनने से जगतजीत बनेंगे। तुम पवित्रता धारण करते हो देवता बनने के लिए। तुम आये हो आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करने। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग, अभी पुरुषार्थ कर पावन बनना है।''

सा.बाबा 25.05.09 रिवा.

''तुम ऐसी राजधानी के मालिक बन रहे हो। अनेक बार बने हो, फिर भी ऐसी राजधानी के मालिक बनने का पूरा पुरुषार्थ करना है। पुरुषार्थ बिगर प्रालब्ध कैसे पायेंगे। ... विनाश की तैयारियाँ भी देखते हो। रिहर्सल होती रहेगी, फिर फाइनल हो जायेगी। ... तुम बच्चों की बुद्धि में सारा ज्ञान है, सिर्फ बाप को याद करना है।''

सा.बाबा 7.05.09 रिवा.

''इस समय सबके ऊपर दुखों के पहाड़ गिरने हैं। खूने नाहेक खेल दिखाते हैं। ... तुम थोड़े से बच्चे इस दुखों के पहाड़ को हटाते हो। दुख भी सहन करते हो।... राजाई का तिलक तुमको अपनी मेहनत से मिलता है। अभी तुम राजाई के लिए पढ़ रहे हो।''

सा.बाबा 22.04.09 रिवा.

''सेकेण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति का गायन है। अभी तुम कितना दूरादेशी बुद्धि बन गये हो। यही चिन्तन सदा चलता रहे कि हम बेहद के बाप द्वारा पढ़ रहे हैं। हम अपने लिए राज्य स्थापन कर रहे हैं, तो उसमें क्यों न हम ऊंच पद पायें। राजधानी स्थापन होती है तो उसमें मर्तबे तो जरूर होंगे ना।''

सा.बाबा 6.04.09 रिवा.

''आत्मा को कभी काल नहीं खाता है। वह सिर्फ मैली और साफ होती है। आत्मा का तख्त भ्रकुटी के बीच ही शोभता है। तिलक की निशानी भी यहाँ ही दिखाते हैं। बाप कहते हैं - तुम अपने को आपही राज-तिलक देने के लायक बनाओ। ऐसे नहीं कि मैं सबको राज-तिलक दूँगा।'' (बाप राजतिलक लायक बनने की विधि बताते हैं)

सा.बाबा 1.04.09 रिवा.

''विश्व का राजा, वे बनेंगे, जो विश्व की हर आत्मा से सम्बन्ध जोड़ेंगे और सहयोगी बनेंगे। जैसा और जितना, वैसा और उतना का हिसाब है ना।... विश्व अधिकारी बनने का लक्ष्य रखा

है ना। अभी यही तीव्र पुरुषार्थ करना है।'' अ.बापदादा 2.07.70

''बाप पुरुषार्थ जरूर कराते हैं। भल समझते हैं कि बनेंगे वे ही जो कल्प पहले बनें होंगे। ... अब तुम अपना राज्य योगबल से स्थापन कर रहे हो। योगबल से तुम विश्व की बादशाही लेते हो। बाहुबल से कोई विश्व की बादशाही ले न सके।... विनाश हो जायेगा और सब कुम्भकरण की नींद में सोये रहेंगे।'' सा.बाबा 19.02.09 रिवा.

''बाप को तो तरस पड़ता है। बाप का बनकर और वर्सा नहीं लिया तो वह क्या काम का रहा। बाप मिला है तो पूरा पुरुषार्थ कर वर्सा लेना चाहिए, श्रीमत पर चलना चाहिए। ... बाबा जानते हैं कल्प पहले मुआफिक राजाई स्थापन हो रही है।''

सा.बाबा 19.12.08 रिवा.

''जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, वे उतना ही ऊंच पद पायेंगे। यह है राजाई के लिए पुरुषार्थ। ... पुरुषार्थ पर प्रालब्ध का मदार रहता है। पुरुषार्थ से ही बादशाही मिलती है।''

सा.बाबा 11.01.69

''बाप ने समझाया है -आत्मा में रिकार्ड भरा हुआ है। ड्रामा के प्लॉन अनुसार हमारा पुरुषार्थ चल रहा है। कोई राजा कोई रानी बनेंगे। अन्त में पुरुषार्थ की रिजल्ट निकलेगी, जिससे फिर माला बनेंगी।'' सा.बाबा 11.01.69

''तुमको बाप समझाते हैं - अपने को आत्मा समझना है, देहाभिमान में नहीं फँसना है। ... वास्तव में तुम परमधाम के निवासी हो, अभी फिर वहाँ चलना है, जहाँ से तुम यहाँ पार्ट बजाने आये हो। ... अभी गॉड किंगडम स्थापन कर रहे हैं।... गीता में है प्राचीन राजयोग और ज्ञान, वह प्राय: लोप हो जाता है।'' सा.बाबा 29.11.08 रिवा.

''सारा मदार पुरुषार्थ पर है। पुरुषार्थ कर कोई तो विश्व के मालिक डबल सिरताज बनते हैं और कोई फिर प्रजा में भी नौकर-चाकर बनते हैं। राजधानी स्थापन हो रही है। ... हर एक के पुरुषार्थ से मालूम पड़ता है। ऐसे नहीं कि मैं अन्तर्यामी हूँ, सबके अन्दर को रीड करता हूँ।'' सा.बाबा 17.11.08 रिवा.

''ये चित्र विलायत में भी बहुत सर्विस करेंगे। बच्चों को इन चित्रों का इतना क़दर नहीं है। खर्चा तो होता ही है। राजधानी स्थापन करने में कुछ खर्चा तो होगा ही ना। ... श्रीमत पर पूरा पुरुषार्थ करना है, तब ही श्रेष्ठ पद पा सकेंगे। नहीं तो अन्त में बहुत पछतायेंगे।''

सा.बाबा 7.11.08 रिवा.

''जो बच्चे बनते हैं, वे डायनेस्टी में तो आ जायेंगे,... परन्तु जो अच्छी रीति पढ़ेंगे-पढ़ायेंगे नहीं तो वे दास-दासी बनेंगे।... पढ़ाई अनुसार ही पद मिलेगा।''

सा.बाबा 21.10.08 रिवा.

''बाबा तो पुरुषार्थ करायेंगे ना। हर एक के पुरुषार्थ करने से समझ में आता है कि यह राजा-रानी बनेंगे या साहूकार प्रजा में जायेंगे या साधारणा प्रजा में जायेंगे या दास-दासी बनेंगे।... विहंग मार्ग की सेवा के लिए बच्चों के विचार चलने चाहिए।''

सा.बाबा 24.10.08 रिवा.

''यहाँ तुम विश्व में शान्ति स्थापना के निमित्त बने हुए बच्चों को बाप विश्व की राजाई की प्राइज़ देते हैं। वह इनाम भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार मिलता है, देने वाला है भगवान बाप।... इन चित्रों पर तुम किसको भी अच्छी रीति समझा सकेंगे। साथ में दैवीगुण भी चाहिए, अन्दर-बाहर सच्चाई चाहिए।''

सा.बाबा 1.03.10 रिवा.

''बाप ऊंच पद प्राप्त कराने आये हैं तो पुरुषार्थ करना चाहिए ना। परन्तु तकदीर में नहीं है तो श्रीमत को भी मानते नहीं हैं, फिर पद भ्रष्ट हो जाता है। ड्रामा प्लैन अनुसार राजधानी स्थापन हो रही है, उसमें सब प्रकार के चाहिए ना। ... वहाँ सबको सुख ही सुख है, फिर भी मर्तबे तो नम्बरवार होंगे ही। ... पुरुषार्थ से समझा जाता है कि ड्रामा अनुसार इनका क्या पद होगा।''

सा.बाबा 19.02.10 रिवा.

''हम आये हैं नई दुनिया के लिए तकदीर जगाने। नई दुनिया है सतयुग। ... कोई सूर्यवंशी राजा बनते हैं, कोई प्रजा बनते हैं, कोई प्रजा के भी नौकर-चाकर बनते हैं। यह नई दुनिया की राजाई स्थापन हो रही है। ... अभी बाप से 21 जन्मों का वर्सा मिलता है।''

सा.बाबा 2.02.10 रिवा.

''है कितना सहज परन्तु तकदीर में नहीं है तो तदबीर भी कैसे करें। ... राजधानी स्थापन हो रही है। सब तो वारिस नहीं बनेंगे। पवित्र बनना बड़ा मुश्किल है।... किससे दिल लगाने से फिर रोना भी बहुत पड़ता है।''

सा.बाबा 27.01.10 रिवा.

''अब बाप तुम बच्चों को गुप्त रीति पुरुषार्थ कराते रहते हैं, जिससे तुम कितना सुख पाते हो। ... तुम्हारा देवी-देवता धर्म बहुत सुख देने वाला है। हम तुमको विश्व का मालिक बनाते है। और कोई धर्म स्थापक राजाई स्थापन नहीं करते हैं। वे किसकी सद्गति नहीं करते हैं। वे तो सिर्फ अपना धर्म स्थापन करने आते हैं।''

सा.बाबा 4.01.10 रिवा.

''अभी तुम अपने पुरुषार्थ से अपने आपको राजतिलक दे रहे हो। तुम बाप की शिक्षा पर अच्छी तरह चलते हो तो जैसे कि तुम अपने को राज-तिलक देते हो। ऐसे नहीं कि बाप कोई आशीर्वाद वा कृपा करेंगे। ... फॉलो फादर करने का पुरुषार्थ है, दूसरों को नहीं देखना है।... यह है ही राजयोग, जिससे तुम बेगर टू प्रिन्स बनते हो।''

सा.बाबा 6.01.10 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और साक्षी एवं ट्रस्टी स्थिति

इस विश्व-नाटक में साक्षी स्थिति का बहुत महत्व है। इसलिए इस साक्षी स्थिति के लिए प्राय: सभी धर्मों के धर्म-स्थापकों और आध्यात्मिक संस्थाओं के संस्थापकों ने इस स्थिति के लिए कहा है परन्तु देखा जाये तो बिना विश्व-नाटक के ज्ञान के यथार्थ रीति साक्षी स्थिति किसकी बन नहीं सकती। परमात्मा सदा साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखते हैं, इसलिए वे कब इसकी किसी घटना से प्रभावित नहीं होते हैं और वे सदा पावन हैं, इसलिए उनको इस स्थिति के लिए किसी प्रकार के पुरुषार्थ की आवश्यकता नहीं होती है और जब वे पुरुषार्थ नहीं करते हैं तो उनको प्रालब्ध मिले, उसका भी प्रश्न नहीं उठता है। परमात्मा आकर अभी इस विश्व-नाटक का ज्ञान देते हैं और जो आत्मायें यथार्थ पुरुषार्थ करके उस ज्ञान को धारण करते हैं, वे ही यथार्थ रीति साक्षी स्थिति को धारण कर सकते हैं और जो आत्मायें साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखते हैं, वे ही यथार्थ रीति पुरुषार्थ करके अपनी श्रेष्ठ प्रालब्ध बना सकते हैं।

''जिन्होंने जो पार्ट बजाया है, वही बजायेंगे। बाप पुरुषार्थ कराते रहेंगे और साक्षी होकर देखते रहेंगे। ... बाप को याद करते रहना है, जिससे अन्त मती सो गति हो जाये। इसमें ही मेहनत है। ...यह भी एक खेल है। यह कोई को पता नहीं है कि यह खेल कब से शुरू हुआ है। ... तो बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए।''

सा.बाबा 7.08.09 रिवा.

''बाप कहते हैं - गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए अब पारलौकिक बाप से वर्सा ले लो। ... अब लौकिक वर्से को पारलौकिक वर्से के साथ एक्सचेन्ज करो। यह कितना अच्छा व्यापार है। ... अभी लौकिक बाप का वर्सा एक्सचेन्ज करते हो पारलौकिक बाप से। जैसे इसने किया। देखा, पारलौकिक बाप से तो ताज-तख्त मिलता है ... फॉलो फादर। भूख मरने की तो बात ही नहीं। बाप कहते हैं - तुम ट्रस्टी होकर सम्भालो।''

सा.बाबा 15.04.09 रिवा.

''बाप समझाते हैं - बच्चे, तुम अगर बीज नहीं बोयेंगे तो तुम्हारा पद कम हो जायेगा। फॉलो फादर। तुम्हारे सामने यह दादा बैठा है। इसने बिल्कुल ही शिवबाबा और शिव-शक्तियों को ट्रस्टी बनाया।... इनको माताओं पर बलि चढ़ना पड़े। माताओं को ही आगे करना है। बाप आकर ज्ञान अमृत का कलष माताओं को ही देते हैं कि वे मनुष्य को देवता बनायें।''

सा.बाबा 22.12.08 रिवा.

''यहाँ है माया से युद्ध। माया से मरकर तुम ईश्वर के बनते हो, फिर कोई ईश्वर से मरकर

माया के बन जाते हैं। ... हार और जीत होती है। यह खेल ही हार-जीत का है। पाँच विकारों से हारे हार है। अभी तुम जीतने का पुरुषार्थ करते हो। आखरीन जीत तुम्हारी है।''

सा.बाबा 20.11.08 रिवा. रात्रि क्लास

''बाप का बनकर सर्विसएबुल न बना तो बाप की दिल पर कैसे चढ़ सकते हैं। ... यहाँ तो अम्मा मरे तो हलुआ खाओ ... रोयेंगे-पीटेंगे नहीं। ड्रामा पर मजबूत रहना चाहिए। यह मम्मा-बाबा भी जायेंगे, अनन्य बच्चे भी एडवान्स में जायेंगे। ... हम साक्षी होकर सारा खेल देखते हैं, अवस्था सदैव हर्षित रहना चाहिए।''

सा.बाबा 6.11.08 रिवा.

''आपके नयनों को देखते ही बुद्धियोग द्वारा उनको अनेक साक्षात्कार होंगे। ऐसे साक्षात्कार मूर्त अपने को बनाना है। लेकिन साक्षात्कार मूर्त वे बन सकेंगे, जो सदैव साक्षी स्थिति में स्थित होंगे। उनके नयन प्रोजेक्टर का काम करेंगे।''

अ.बापदादा 2.2.70

''इस समय यह तमोप्रधान दुख की दुनिया है। इसमें थोड़े समय के लिए दुख-सुख, स्तुति-निन्दा सब कुछ सहन करना पड़ता है। इन सबसे पार होना है।... अभी तुम बच्चों को सुखधाम में जाने के लिए पूरा पुरुषार्थ करना है। यह तुम्हारा मोस्ट वैल्यूएबुल समय है।''

सा.बाबा 16.04.10 रिवा.

''सारा दिन शिवबाबा को ही याद करने का ख्याल रहना चाहिए। अब यह नाटक पूरा होता है, हमको वापस घर जाना है। .. जो अच्छी मेहनत करते हैं, वे जरूर स्कॉलरशिप लेंगे। साक्षी होकर अपने को और दूसरों को देखना होता है।''

सा.बाबा 27.01.10 रिवा.

''बच्चों पर आज बृहस्पति की दशा है तो कल राहू की दशा बैठ जाती है। ड्रामा में साक्षी होकर हर एक के पार्ट को देखना होता है।... बच्चों को अच्छी रीति पुरुषार्थ कर अपना जीवन बनाना चाहिए। नहीं तो कल्प-कल्पान्तर के लिए सत्यानाश हो जायेगी।''

सा.बाबा 11.01.10 रिवा.

पुरुषार्थ-प्रालब्ध और स्वर्ग-नर्क

ज्ञान सागर बाप आकर ज्ञान देते हैं और स्वर्ग का राज़ समझाते हैं तथा नर्क से स्वर्ग में कैसे जा सकते हैं, उसके लिए पुरुषार्थ का भी ज्ञान देते हैं। जो आत्मायें यथार्थ रीति पुरुषार्थ करके स्वर्ग-नर्क का राज़ अच्छी रीति समझते हैं, वे ही नर्क से स्वर्ग में जाने का सही रीति

पुरुषार्थ कर सकते हैं और जो सही रीति पुरुषार्थ करते हैं, वे ही स्वर्ग का सच्चा सुख पाते हैं। बाबा ने कहा है बाप के बने हो तो ऐसा पुरुषार्थ करो, जो स्वर्ग में पहले-पहले आओ अर्थात् सतोप्रधान स्वर्ग का सुख प्राप्त करो।

स्वर्ग और नर्क दोनों ही आत्माओं को अपने कर्मानुसार ही प्राप्त होते हैं। परमात्मा स्वर्ग का रचता है, उसके लिए परमात्मा हम आत्माओं को पुरुषार्थ कराते हैं और वास्तविकता ये है कि परमात्मा स्वर्ग की स्थापना भी हम आत्माओं के द्वारा कराते हैं, जिसके लिए बाबा कहते हैं जो करेगा, वह पायेगा। तुम बच्चे बाबा की श्रीमत पर स्वर्ग की स्थापना करते हो, इसलिए तुम ही उसकी प्रालब्ध भोगते हो। परमात्मा तो स्वर्ग-नर्क का ज्ञान देते हैं और स्वर्ग की स्थापना के लिए क्या पुरुषार्थ करना है, उसकी विधि-विधान बताते हैं। जो पुरुषार्थ करते हैं, वे उसका सुख भोगते हैं।

''स्वर्ग में तो चलेंगे, परन्तु वह कोई बड़ी बात थोड़ेही है। जो यहाँ आये भल, परन्तु पढ़े नहीं, फिर भी वे सब स्वर्ग में तो आयेंगे ना। समझते हैं - स्वर्ग में तो जाना ही है, फिर क्या भी बनें। वह तो पढ़ाई नहीं हुई ना। ... पढ़ाई से तो बड़ी स्कॉलरशिप मिलती है।''

सा.बाबा 4.08.09 रिवा.

''सब बच्चे इकट्ठे तो एक ही समय यहाँ आ न सकें। बच्चे वृद्धि को पाते रहेंगे। बच्चे यहाँ छोटे-छोटे मकान बनाते हैं, वहाँ उनको ढेर महल मिलेंगे। यह तो तुम बच्चे जानते हो कि पैसे सब मिट्टी में मिल जायेंगे। ... वहाँ नेचुरल ब्युटी होती है। अभी तुम बच्चे उस दुनिया में जाने का पुरुषार्थ कर रहे हो।''

सा.बाबा 25.07.09 रिवा.

''स्वर्ग में जाने वाले विकार में थोड़ेही जायेंगे। भक्त लोग भी इतना विकार में नहीं जाते हैं। ... पवित्र बनने का पुरुषार्थ इस समय ही होता है, फिर है प्रालब्ध। ... यहाँ अपार दुख है, फिर वहाँ अपार सुख होगा। तुम कोशिश करो दोनों की लिस्ट बनाने की।''

सा.बाबा 22.07.09 रिवा.

''स्वर्ग में जो दास-दासियाँ होंगे, वे भी दिल पर चढ़े हुए होंगे। ऐसे नहीं कि सब आ जायेंगे। ... जो पढ़ाई में तीखे जायेंगे, वे ऊंच पद पायेंगे। डल बुद्धि कम पद पायेंगे। ... पुरुषार्थ से समझा जाता है। यह सारा ड्रामा चल रहा है।''

सा.बाबा 17.07.09 रिवा.

''तुम्हारे सिवाए और कोई देवता बनने वाले ही नहीं हैं। यहाँ आते ही हैं दैवी घराने का भाती बनने। वहाँ तुम दैवी घराने के भाती होंगे। ... ऐसा दैवी परिवार का बनने के लिए खूब पुरुषार्थ करना है। ... इसमें पिछाड़ी तक पुरुषार्थ करना पड़ता है।''

सा.बाबा 7.05.09 रिवा.

''इस दुखधाम को जीते जी तलाक दे देना चाहिए। बाप युक्ति बताते हैं कि तुम कैसे तलाक दे सकते हो। ... अभी तुम ख्याल करते हो - हम यह पुराना शरीर छोड़ेंगे, फिर घर में जायेंगे और वहाँ से आकर सतयुग में योगबल से जन्म लेंगे।''

सा.बाबा 8.05.09 रिवा.

''यह ड्रामा बना हुआ है। कभी-कभी बाबा सोचते हैं कि इस ड्रामा में कुछ चेन्ज हो जाये परन्तु चेन्ज हो नहीं सकता। यह बना-बनाया खेल है। बच्चों की अवस्था को देखकर ख्याल आता है कि कुछ चेन्ज हो जाये। संकल्प आता कि क्या ऐसे-ऐसे भी स्वर्ग में चलेंगे ? फिर ख्याल आता है, स्वर्ग में तो सारी राजधानी चाहिए। दास-दासियाँ, चण्डाल आदि भी तो होंगे।''

सा.बाबा 3.03.09 रिवा.

''इस ड्रामा के सभी जन्मों का डिटेल में तो हम-तुम नहीं जान सकते हैं, बाकी इस समय हमारा भविष्य के लिए पुरुषार्थ चल रहा है। देवता तो बनेंगे परन्तु किस पद को पायेंगे, उसके लिए पुरुषार्थ करना है। ... यह अनादि वर्ल्ड ड्रामा है, जो चक्र लगाता रहता है। यह तुम बच्चे अभी जानते हो।''

सा.बाबा 29.11.08 रिवा.

''तुम जो कुछ करेंगे, वह अपने लिए करेंगे। जो श्रीमत पर चलेगा, वह मालिक बनेगा। तुम नये विश्व में नये भारत के मालिक बनते हो। नई विश्व अर्थात् सतयुग में तुम मालिक थे। अभी यह पुराना युग है, फिर तुमको पुरुषार्थ कराया जाता है नई दुनिया के लिए। ... पुरुषार्थ अच्छी रीति करना चाहिए, नहीं तो बहुत पछताना होगा, सजायें खानी होंगी।''

सा.बाबा 29.11.08 रिवा.

''जब सुख का पता पड़ता है तब समझ में आता है कि यह दुखधाम है। दोनों में वास्ट डिफरेन्ट है। अभी तुम सुख के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। समझते हो कि यह दुख का पुराना नाटक पूरा हुआ। ... अभी बाबा के पास जाना है, बाबा लेने आया है।''

सा.बाबा 26.11.08 रिवा.

''अभी बाप कहते हैं - मैं तुमको स्वर्ग के सुख घनेरे लेने के लिए पुरुषार्थ करा रहा हूँ। ... सतयुग में भल राजा-प्रजा सबको सुख है, फिर भी पद तो ऊंचा लेना चाहिए ना। ... बाप कहेंगे - इसमें कृपा की तो बात ही नहीं है। मैं टीचर हूँ, मैं तो पढ़ाउंगा, अच्छे मार्क्स से पास होने का पुरुषार्थ तुमको करना है।''

सा.बाबा 24.10.08 रिवा.

''स्वर्ग में दुख का नाम-निशान नहीं होगा तो उसके लिए कितना पुरुषार्थ करना चाहिए। बच्चों की अवस्थायें कैसी हैं, वह बाबा जानते भी हैं। बच्चे भी जानते हैं हमारे मम्मा-बाबा बहुत

अच्छी रीति पुरुषार्थ करते हैं तो क्यों नहीं हम भी ऐसा पुरुषार्थ करके वर्सा लेवें।''

सा.बाबा 25.10.08 रिवा.

''जहाँ आत्मायें रहती हैं, वह है शान्तिधाम, सतयुग है सुखधाम, इस कलियुग को कहा जाता है दुखधाम। अभी हम आत्मायें मनुष्य से देवता बनने, स्वर्ग में जाने के लिए पढ़ रही हैं। ... पढ़ाई में किसका पुरुषार्थ तीखा होता है, किसका ढीला होता है। जो सतोप्रधान पुरुषार्थी होते हैं, वे दूसरों को भी आप समान बनाने का पुरुषार्थ करते हैं।''

सा.बाबा 22.03.10 रिवा.

''बाप सेकेण्ड में जीवनमुक्ति देते हैं परन्तु कोई पुरुषार्थ तो करे ना। कदम ही नहीं उठायेंगे तो पहुँच कैसे सकेंगे। ... बाप के पास आये हैं स्वर्ग का वर्सा लेने के लिए। नई दुनिया की स्थापना हो रही है। स्थापना पूरी हुई और विनाश शुरू हो जायेगा। यह वही महाभारत की लड़ाई है।''

सा.बाबा 2.02.10 रिवा.

''बाप समझाते हैं - तुम जितना पुरुषार्थ करेंगे, सुखधाम में उतना ऊंच पद पायेंगे। स्वर्ग में तो बहुत जायेंगे। भारत पुण्यात्माओं की दुनिया थी, पाप का नाम-निशान नहीं था। अभी तो बहुत पापात्मा बन गये हैं। ... बाप इतना समझाते हैं तो भी समझते नहीं हैं। कल्प-कल्प ऐसा होता आया है, कोई नई बात नहीं है।''

सा.बाबा 26.01.10 रिवा.

''यह तो बड़ी वडरफुल नॉलेज है। बाप को ज्ञान का सागर, सुख-शान्ति का सागर कहा जाता है। अभी तुम भी मास्टर ज्ञान सागर बनते हो। फिर यह टाइटिल उड़ जायेगा। फिर तुमको सर्वगुण सम्पन्न ... कहा जायेगा। यह है मनुष्य का ऊंच ते ऊंच मर्तबा। इस समय तुम्हारा है ईश्वरीय मर्तबा। कितनी गुह्य समझने और समझाने की बातें हैं।''

सा.बाबा 31.1.10 रिवा.

''बाप स्वर्ग रचते हैं, जिसको तुम बच्चे ही नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो और उस अनुसार पुरुषार्थ कर पद पाते हो। जिसने जो पुरुषार्थ किया, वह ड्रामा अनुसार ही करते हैं। पुरुषार्थ बिगर तो कुछ मिल न सके। आत्मा कर्म बिगर एक सेकण्ड भी रह नहीं सकती। ... कर्म सन्यासी कोई हो न सके।''

सा.बाबा 31.01.10 रिवा.

''वहाँ लश्कर आदि सब खुछ राजा-रानी के लिए करते हैं। यहाँ तुम अपने लिए ही माया पर जीत पाते हो। जो जितना करेंगे, उतना पायेंगे। तुम हर एक को अपना तन-मन-धन भारत को स्वर्ग बनाने में खर्च करना पड़ता है। जो जितना करेंगे, उस अनुसार वहाँ ऊंच पद पायेंगे। ... गायन है - किसकी दबी रही धूल में... खर्चे नाम धणी के। धणी अर्थात् ईश्वर।''

सा.बाबा 6.01.10 रिवा.

पुरुषार्थ ड्रामा और पुरुषार्थ-हीनता

इस विश्व-नाटक ज्ञान आत्मा को कब पुरुषार्थहीन नहीं बनाता है। जो आत्मायें पुरुषार्थहीन बनते हैं, वे इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की कमी के कारण बनते हैं और उनका पुरुषार्थहीन बनना भी इस ड्रामा की अनादि-अविनाशी नूँध है।

पुरुषार्थ, प्रालब्ध और एडवान्स पार्टी
पुरुषार्थ, प्रालब्ध और एडवान्स जन्म
पुरुषार्थ, प्रालब्ध और एडवान्स स्टेज

प्रश्नोत्तर

Q. मूल पुरुषार्थ क्या है और उसमें हम सफल कैसे हों?
मूल पुरुषार्थ है अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर, बाबा को याद करते हुए, बाबा ने जो चार सब्जेक्ट दिये हैं, उनमें मनवांच्छित सफलता को प्राप्त करना।
ज्ञान अर्थात् जो चीज जैसी है, वैसे उसके यथार्थ स्वरूप में जानना और उसके सम्बन्ध में आना अर्थात् आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक, कर्म-सिद्धान्त, संगमयुग आदि को उनके गुण-धर्मों के साथ यथार्थ रूप में जानना और उस स्थिति में स्थित होना।
योग अर्थात् विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को बुद्धि में रख अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर देह और देह की दुनिया को भूलकर एक परमात्मा की याद में स्थित हो जाना या परमात्मा की मधुर स्नेहमयी याद में देह और देह की दुनिया को भूलकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाना। योग से ही हम प्रकृति को पावन बनाते हैं, जो हमारे भविष्य सुख के आधार हैं; योग से ही ज्ञान, गुण, शक्तियों की धारणा पक्की होती है; योग से ही सेवा में सफलता मिलती है।
धारणा अर्थात् ज्ञान, गुण, शक्तियों की जीवन में धारणा और व्यवहार में आना। आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, परमात्मा परमानन्द का सागर है, विश्व-नाटक परम सुखमय है, संगमयुग परमानन्द अनुभव करने का समय है। जो परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान, गुण, शक्तियों की यथार्थ रीति धारणा करेगा, वह इस जीवन का परमानन्द अनुभव करेगा क्योंकि यही जीवन और समय परमानन्द अनुभव करने का है।
सेवा अर्थात् ज्ञान, गुण, शक्तियों की धारणा कर उनका सुख अनुभव करना और अन्य आत्माओं को भी कराकर भविष्य नये सम्बन्धों का खाता जमा करना। सेवा ही हमारे ज्ञान को

प्रशस्त करने का साधन है; हमारे ज्ञान, गुण, शक्तियों की धारणा की परख है; भविष्य नये सम्बन्धों का एकमात्र आधार है। हम विश्व पिता के बच्चे हैं, विश्व हमारा परिवार है, हमारा परम कर्तव्य है अपने सभी भाई-बहनों को सुख का रास्ता बताना और उस पर चलने में सहयोग करना।

Q. बाबा कहते - शरीर भल चला जाये परन्तु खुशी न जाये, तुम्हारा चेहरा और जीवन सदा हर्षित रहे, उसका आधार क्या है ?

आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, परमात्मा परमानन्द का सागर है, विश्व-नाटक परम सुखमय है, संगमयुग परमानन्द अनुभव करने का समय है। जिसके जीवन में परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान, गुण, शक्तियों की यथार्थ रीति धारणा होगी, वह सदा ही इस जीवन में परमानन्द अनुभव करेगा। ये संगमयुग का समय है, जिसमें आत्मा को आधे कल्प के विकर्मों का खाता खत्म कर पावन बनना है और आधे कल्प के लिए सुकर्मों का खाता जमा करना है, इसलिए कर्मभोग और कर्म-बन्धन का आना अवश्य समभावी है परन्तु जिसके जीवन में ज्ञान की यथार्थ रीति धारणा होगी, परमात्मा के साथ यथार्थ रीति योग होगा, उसके कर्मभोग और कर्म-बन्धन पानी पर लकीर के समान खत्म होते जायेंगे और उसके श्रेष्ठ कर्मों से भविष्य का खाता जमा होता रहेगा, जिससे वह सदा ही हर्षित रहेगा, उसके जीवन में उदासी, मायूसी, दुख-अशान्ति आ नहीं सकती।

Q. यथार्थ पुरुषार्थ क्या है ?

पुरुषार्थ है परमात्मा ने जो ज्ञान, गुण, शक्तियों का ज्ञान दिया है, उसको समझने और धारण करने और अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को साक्षी होकर देखने और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए इस विश्व नाटक का परम आनन्द अनुभव करने और कराने का। आत्मा को और विश्व को पावन बनाने के लिए योग का पुरुषार्थ है। विश्व की अन्य आत्माओं को पावन बनने रास्ता दिखाने और उनको पावन बनने में सहयोग देने का। वर्तमान जीवन में सुख-शान्ति-आनन्द की अनुभूति काने और भविष्य के लिए सुख-शान्ति का खाता जमा करने का।

Q. देह से न्यारे होने का पुरुषार्थ करना आवश्यक क्यों ?

मूल पुरुषार्थ है ही देह से न्यारे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का, जिसमें सर्व पुरुषार्थ समाये हुए ही हैं।

आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, इसलिए उस परमानन्द को अनुभव करने और कराने के लिए आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का पुरुषार्थ अति आवश्यक है।

आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा ही इस ज्ञान सागर परमात्मा द्वारा उद्घाटित गुह्य रहस्यों को समझने और अनुभव करने में समर्थ होती है, इसलिए उनको समझने और अनुभव करने के लिए देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का पुरुषार्थ अति आवश्यक है।

समान ही परमात्म-मिलन का सुर-दुर्लभ सुख अनुभव कर सकता है, इसलिए उसको अनुभव करने के लिए देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का पुरुषार्थ अति आवश्यक है क्योंकि परमात्मा सदा अशरीरी है।।

आत्मा पर अनेक जन्मों के विकर्मों का बोझा है, इसलिए कर्मभोग का आना आवश्य सम्भावी है, इसलिए उसकी वेदना से बचने के लिए देह से न्यारे होने का पुरुषार्थ अति आवश्यक है क्योंकि देह से न्यारा आत्मिक स्वरूप दैहिक वेदना से मुक्त होता है।

'जन्मत-मरत दुसह दुख होई', उस मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से मुक्त होने के लिए देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का पुरुषार्थ अति आवश्यक है क्योंकि आत्मा अविनाशी है, इसलिए आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को मृत्यु का कोई भय नहीं और मृत्यु देख भी नहीं क्योंकि मृत्यु तो एक वस्त्र बदलना है।

मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम-सुख अनुभव करने के लिए देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का पुरुषार्थ अति आवश्यक है। वर्तमान संगमयुग पर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव ही यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव है।

ईश्वरीय गुणों और शक्तियों का अनुभव करने और दैवी गुणों की धारणा करने के लिए आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास अति आवश्यक है।

हम ईश्वर के बच्चे हैं, ईश्वरीय कर्तव्य करना ही हमारे जीवन का अभीष्ट लक्ष्य है, इसलिए उस कर्तव्य को करने के लिए देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का पुरुषार्थ अति आवश्यक है क्योंकि सर्व आत्माओं को उनके आत्मिक स्वरूप का अनुभव कराना ही मूल ईश्वरीय कर्तव्य है, जिसमें सर्व कर्तव्य समाये हुए हैं। जो स्वयं आत्मिक स्वरूप में स्थित होगा, वही दूसरों को भी उसका अनुभव करा सकेगा।

''यह किताब आदि सब खत्म हो जायेंगे। तुम यह जो नोट्स आदि लिखते हो, यह सब खत्म हो जाने हैं। यह सिर्फ तुम अपने पुरुषार्थ के लिए लिखते हो। ... अन्त में तुम्हारी बुद्धि में सिर्फ यह याद ही रहेगी। आत्मा बिल्कुल बाप जैसी भरपूर हो जाती है।''

सा.बाबा 22.03.09 रिवा.

Q. क्या भक्ति मार्ग में आत्म-कल्याण की भावना से किये गये कर्मों को पुरुषार्थ कहेंगे और यदि कहेंगे तो भक्ति मार्ग के पुरुषार्थ और ज्ञान मार्ग के पुरुषार्थ में क्या अन्तर है?

वास्तविकता को देखा जाये तो भक्ति मार्ग में आत्मा कितना भी पुरुषार्थ करती है परन्तु उसको करते हुए भी उसकी उतरती कला ही होती है, इसलिए वह सही पुरुषार्थ नहीं हुआ। परन्तु बाबा के निम्नलिखित शब्दों को याद करें तो वह भी पुरुषार्थ कहा जा सकता है।

''तुम देही-अभिमानी होकर कहाँ भी जाओ तो कब थकेंगे नहीं। भक्ति में भी मनुष्य तीर्थों आदि पर पैदल ही जाते थे। उस समय मनुष्यों की बुद्धि इतनी तमोप्रधान नहीं थी, बहुत श्रृद्धा-भावना से जाते थे, इसलिए थकते नहीं थे। बाबा को याद करने से मदद तो जरूर मिलेगी ना। भल वह पत्थर की मूर्ति है परन्तु बाबा उस समय अल्पकाल के लिए मनोकामना पूरी कर देते हैं। उससे भी आत्मा को बल मिलता था।''

सा.बाबा 25.12.09 रिवा.

भक्ति मार्ग में भी आत्मायें आत्म-कल्याण के लक्ष्य से जो प्रयत्न करते हैं, उससे भल उनकी चढ़ती कला नहीं होती है परन्तु उनकी उतरती कला की गति मन्द अवश्य होती है, इसलिए वह भी पुरुषार्थ ही हुआ क्योंकि आत्मा की शक्ति के ह्रास की गति कम हो गयी। भक्ति मार्ग के पुरुषार्थ और ज्ञान मार्ग के पुरुषार्थ में रात और दिन का अन्तर है और दोनों का फल अलग-अलग होता है। भक्ति मार्ग में पुरुषार्थ करते भी आत्मा और समग्र विश्व की उतरती कला होती है, जबकि ज्ञान मार्ग में किये गये पुरुषार्थ से आत्मा की और समग्र विश्व की चढ़ती कला होती है। भक्ति मार्ग में पुरुषार्थ कराने वाले और उसका विधि-विधान बताने वाले मनुष्यात्मायें होती हैं, जबकि ज्ञान मार्ग में पुरुषार्थ कराने वाला और उसका विधि-विधान बताने वाला परम-आत्मा है। भक्ति मार्ग में जो पुरुषार्थ करते उसका विधि-विधान तो मनुष्यात्मायें बताती हैं परन्तु फल देने वाला परमात्मा है या उसके नाम से फल पाते हैं परन्तु ज्ञान मार्ग में विधि-विधान बताने वाला भी परमात्मा है और फल देने वाला भी परमात्मा है। भक्ति मार्ग के पुरुषार्थ से अल्प काल का फल मिलता है, जबकि ज्ञान मार्ग के पुरुषार्थ दीर्ष काल के लिए फल मिलता है अर्थात् 21 जन्म के लिए फल मिलता है। वैसे तो ज्ञान मार्ग में किये गये पुरुषार्थ से आत्मा की जो शक्ति संचित होती है, वह सारे कल्प तक चलती है।

Q. माया, कमभोग, कर्म-बन्धन, विघ्नों में क्या मूलभूत अन्तर है ?

माया विकर्मों के लिए प्रेरित करती है, जिसके फलस्वरूप भविष्य में कर्मभोग और कर्म-बन्धन का खाता जमा होता है। माया पुरुषार्थहीन बनाती है, जिससे धीरे-धीरे आत्मा विकर्मों में प्रवृत्त होने लगती है। कर्मभोग और कर्म-बन्धन भूतकाल में माया के वश किये गये विकर्मों का फल है, जिसको पुरुषार्थी आत्मा सहज भोग कर मुक्त हो जाती है और पुरुषार्थहीन आत्मा दुखी होकर पार होती है। आलस्य-अलबेलापन माया है माया है, संशय माया है, कर्मभोग या कर्म-

बन्धन नहीं। बीमारी, सम्बन्धों में कटुता आदि कर्मभोग और कर्म-बन्धन है, माया नहीं है। विघ्न आना एक परीक्षा है, जिनको पार करके आत्मा अनुभवी बनती है और आगे बढ़ती है।

Q. कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस कीन्ह तासु फल चाखा और बनी-बनाई बन रही, अब कछु बननी नाहि, चिन्ता ताकी कीजिये जो हनहोनी होये - दोनों में क्या समन्जस्य है?

Q. बनी-बनाई बन रही, अब कछु बननी नाहि, चिन्ता ताकी कीजिये जो हनहोनी होये और ड्रामा हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, फिर भी परमात्मा को भाग्य विधाता कहा जाता है, तो इसका रहस्य क्या है?

भगवान ज्ञान का सागर है, उसने ही ड्रामा का ज्ञान दिया और पुरुषार्थ एवं प्रालब्ध का राज़ बताया है। भगवान के ज्ञान देने के बाद, उनके सम्बन्ध में आने के बाद ही आत्मा की और विश्व की चढ़ती कला होती है और ड्रामा अनुसार आत्मायें दुख से मुक्त होकर सुख-शान्ति को पाती हैं। भगवान की मत पर चलने से ही आत्माओं का कल्याण होता है, इसलिए उनको भाग्य विधाता कहा जाता है। ये कर्म और फल का खेल है, बिना कर्म के आत्मा को कोई फल प्राप्त नहीं हो सकता है।

Q. बापदादा ने होम वर्क क्या दिया है, उसको कैसे करना है और कैसे उसमें पास होना है?

15 दिन तक संकल्प भी वेस्ट नहीं, युद्ध भी नहीं लेकिन विजयी, फुल विजयी।

''तीव्र पुरुषार्थ न कर, एक घण्टा साधारण पुरुषार्थ में रहे और उसी एक घण्टे में अचानक फाइनल पेपर का टाइम आ गया तो अन्त मति सो गति ... कितना नुकसान कर देगा। इसलिए बापदादा हर बच्चे को, हर संकल्प और हर सेंकेण्ड के महत्व का समय प्रति समय इशारा दे रहे हैं। हलचल के समय अचल रहने का पुरुषार्थ तीव्र पुरुषार्थी ही कर सकता है। सेकण्ड में बिन्दी अर्थात् फुल-स्टॉप।''

अ.बापदादा 30.11.09

''बापदादा का एक संकल्प ... हर एक सच्ची दिल, साफ दिल से स्वप्न में भी संकल्प, वाणी और कर्म में पास होकर दिखाये। ... संकल्प भी वेस्ट नहीं, युद्ध नहीं लेकिन विजयी, फुल विजयी। तो 15 दिन के फुल विजयी। ... मधुबन वाले ... कम से कम 80 परसेन्ट मॉर्क्स लेना ही है। ... रॉयल अलबेलापन और आलस्य तीव्र पुरुषार्थ में कमी डालता है।''

अ.बापदादा 30.11.09

Q. यथार्थ पुरुषार्थ क्या है, जिससे अन्त समय हमको कोई पश्चाताप न करना पड़े?

यथार्थ पुरुषार्थ है देह से न्यारे अपने मूल आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का, जिस स्थिति में स्थित आत्मा को ऊंच-नीच का, अहंकार-हीनता का कोई महसूसता नहीं होती है। जिस आत्मा

का ये देह से न्यारे होने का अभ्यास पक्का नहीं होगा, वह किसी भी स्थिति में हो, उसमें अहंकार या हीनता का प्रभाव अवश्य होगा और जहाँ अहंकार-हीनता होगी, उसको किसी न किसी प्रकार का पश्चाताप अवश्य रहेगा।

''ज्ञान रतनों को धारण कर दान करते रहेंगे तो खुशी होगी। भारत को महादानी माना जाता है। वह धन तो बहुत दान करते हैं परन्तु यह है अविनाशी ज्ञान रतनों का दान। देह सहित जो कुछ है, वह सब छोड़कर बुद्धियोग एक बाप के साथ रहे।... बाप रास्ता बताते हैं, पुरुषार्थ करना बच्चों का काम है।''

सा.बाबा 17.11.09 रिवा.

''अभी बाप तुमको बहुत हल्का बनाते हैं, जिससे अपने को बिन्दी समझ और झट भागेंगे। ... अभी हम संगमयुग पर हैं फिर ऐसे चक्र लगायेंगे। यह चक्र सदैव बुद्धि में फिरता रहना चाहिए। यह चक्र आदि की नॉलेज तुम ब्राह्मणों के पास ही है। न शूद्रों के पास होती है और न ही देवताओं के पास भी यह ज्ञान है।''

सा.बाबा 18.11.09 रिवा.

Q. क्या शिवबाबा के लिए देही-अभिमानी कहेंगे ? यदि कहेंगे तो कैसे और यदि नहीं तो क्यों ?

वास्तव में देही-अभिमानी और देहाभिमानी शब्द जीवात्मा के लिए कहा जाता है, निराकार परमात्मा के लिए नहीं।

''इसमें मेहनत चाहिए, समय निकालकर एकान्त में अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने का अभ्यास करना होता है। इसमें आशीर्वाद आदि की बात नहीं है। यह तो पढ़ाई है, जो अच्छी रीति पढ़नी है। इसमें कृपा आशीर्वाद नहीं चलती है।''

सा.बाबा 28.10.09 रिवा.

''पहले-पहले यह प्रैक्टिस करो कि हम आत्मा हैं, न कि शरीर। जब अपने को आत्मा समझेंगे, तब ही परमपिता परमात्मा को याद कर सकेंगे।... परमात्मा तो है ही निराकार, उनको आकर यह प्रैक्टिस करानी है।''

सा.बाबा 28.10.09 रिवा.

Q. यथार्थ पुरुषार्थ का दर्पण क्या है ?

''बापदादा ने बच्चों की रिजल्ट में देखा कि ज्ञान, गुण, शक्तियों का खज़ाना जमा सभी बच्चों के पास है लेकिन जमा होते भी नम्बरवार क्यों हैं ? ... खज़ाने को विधिपूर्वक कार्य में लगाना नहीं आता है। समय बीत जाता है, फिर सोचते हैं कि ऐसे करते, इस विधि से चलते तो सिद्धि मिल जाती।''

अ.बापदादा 01.02.94

''समय को जानना और समय प्रमाण ज्ञान, गुण, शक्तियों को कार्य में लगाना, इसके लिए दिव्य-बुद्धि की विशेष आवश्यकता है। ... बाप के लिए गाया हुआ है कि मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा मुझे जानने वाले कोटों में कोई हैं। ... इसी रीति जैसा समय और जो ज्ञान की प्वाइन्ट वा गुण वा शक्ति आवश्यक है, वैसा कार्य में लगाना, इसमें अन्तर पड़ जाता है, जिसके कारण नम्बर बन जाते हैं।''

अ.बापदादा 01.02.94

Q. जब पवित्र सब बनेंगे फिर भी अनन्य बच्चे ही साथ क्यों चलेंगे, उनमें क्या विशेषता होगी ?

जो पहले से पुरुषार्थ कर पावन बनेंगे, नष्टोमोहा बन मददगार बन बाप समान सेवा करेंगे, वे ही साथ चलेंगे।

''सजनियाँ साथ में वे चलेंगी, जिनका दीपक जगा हुआ होगा।... अनन्य बच्चे ही साथ चलेंगे, बाकी तो नम्बरवार पिछाड़ी में आयेंगे परन्तु पवित्र तो सब बनेंगे।''

सा.बाबा 6.12.08 रिवा.

Q. वर्तमान हमारा ब्राह्मण जीवन क्या है और हमारा पुरुषार्थ क्या है अर्थात् हमको क्या पुरुषार्थ करना चाहिए एवं हमारे पुरुषार्थ की सफलता क्या है ?

हमारा ये ब्राह्मण जीवन कल्प में सर्वोत्तम जीवन है क्योंकि अभी हमको ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने इस विश्व-नाटक के गुह्य रहस्यों का ज्ञान दिया है, जिनको यथार्थ रीति समझकर, उनकी धारणा करके इस ब्राह्मण जीवन का परमसुख, परम शान्ति, परमानन्द अनुभव कर सकते हैं और अपने तन-मन-धन, मन्सा-वाचा-कर्मणा ऐसा पुरुषार्थ करें, जिससे अन्य आत्मायें भी उस सत्य को सहज समझ सकें और अभीष्ट पुरुषार्थ करके परम शान्ति, परमानन्द, परम सुख को अनुभव कर सकें।

''प्यारे बनने के पुरुषार्थ से प्यारे बनेंगे तो रिजल्ट क्या होगी ? और ही प्यारे बनने के बजाये बापदादा के दिल रूपी तख्त से दूर हो जायेंगे, इसलिए यह पुरुषार्थ नहीं करना है।... आप न्यारे बनों। न्यारे नहीं बन पाते हो, इसका कारण क्या है ?... लगाव के कारण न्यारे नहीं बन सकते हो।''

अ.बापदादा 25.03.71

''स्वार्थ के कारण लगाव है और लगाव के कारण न्यारे नहीं बन सकते। स्व+रथ अर्थात् देह अभिमान है, देह की स्मृति है, देह का लगाव है - इस स्वार्थ को कैसे खत्म करेंगे ? उसका सहज पुरुषार्थ है - स्वार्थ शब्द के अर्थ को समझो। स्वार्थ गया तो न्यारे बन ही जायेंगे।''

अ.बापदादा 25.03.71

Q. बाबा ने 3-4 साल से हर अव्यक्त मुरली में बिन्दु रूप के अभ्यास के लिए कहा है तो

बिन्दु रूप का अभ्यास क्यों आवश्यक है, जिसके कारण बाबा इस पर इतना जोर देते हैं?

Q. ब्रह्मचर्य व्रत, एकाग्रता और आत्मिक स्वरूप में क्या सम्बन्ध है अर्थात् तीनों का परस्पर क्या सहयोग है?

ब्रह्मचर्य व्रत आध्यात्मिक पुरुषार्थ का आधार है, इसलिए प्राय: सभी धर्मों के आध्यात्मिक पुरुषार्थी इसका पालन किसी न किसी रूप में अवश्य करते हैं। हठयोग में ब्रह्मचर्य की सफलता के लिए एकाग्रता का विशेष अभ्यास करते हैं, इसके लिए वे त्राटक, हृदय, किसी बिन्दु, किसी देवता की प्रतिमा, दीप शिखा आदि पर अपने ध्यान को केन्द्रित करते हैं अर्थात् एकाग्र करते हैं। वास्तव में यह ध्यान केन्द्रित करना और ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना दोनों एक दूसरे के पूरक हैं अर्थात् ब्रह्मचर्य के पालन से एकाग्रता में सफलता मिलती है और एकाग्रता के सफल अभ्यास से ब्रह्मचर्य व्रत दृढ़ होता है। ज्ञान का सागर परमात्मा है, उसने अभी हमको इन तीनों के महत्व का ज्ञान दिया है और इन तीनों पर एक साथ सफलता का मार्ग बताया है। बाबा ने बताया है कि आत्मिक स्वरूप बिन्दुरूप है, उसमें स्थित होने से एकाग्रता सहज हो जाती है और ब्रह्मचर्य का पालन भी अवश्य होता है क्योंकि आत्मिक स्वरूप में इन्द्रियाँ ही नहीं है तो ब्रह्मचर्य के भंग होने का प्रश्न ही नहीं उठता है। परन्तु बाबा ने यह भी बताया है कि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन ब्रह्मचर्य व्रत है अर्थात् ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करने वाला ही इस आध्यात्मिक पुरुषार्थ को कर सकता है अर्थात् यथार्थ ज्ञान को धारण कर अपने आत्मिक स्वरूप में टिक सकता है। ब्रह्मचर्य व्रत के लिए बाबा ने भाई-बहन का नाता स्थापित किया, जिससे भाई-बहन की दृष्टि होने से ब्रह्मचर्य व्रत खण्डित न हो परन्तु बाबा ने देखा कि इससे भी दाल नहीं गल रही है अर्थात् दृष्टि-वृत्ति खराब हो जाती है तो बाबा ने अपने आत्मिक स्वरूप अर्थात् बिन्दु रूप में स्थित होने पर बल दिया और कहा कि आत्मिक स्वरूप में सब भाई-भाई हैं क्योंकि आत्मिक स्वरूप में लिंग-भेद ही नहीं है क्योंकि इन्द्रियाँ ही नहीं है, इसलिए ब्रह्मचर्य व्रत के खण्डित होने का प्रश्न ही नहीं है।

पुरुषार्थ भी संगमयुग पर प्रालब्ध है अर्थात् प्रालब्ध के समान सुख देने वाला है। यथार्थ पुरुषार्थ अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित होने से आत्मा को अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है।

''तुम सब नये बन जायेंगे। इसमें मूँझने की बात ही नहीं। अनेकानेक बार तुम पुराने से नये और नये से पुराने बनते आये हो। इसलिए अभी अच्छी रीति पुरुषार्थ करना है। ... भल आगे भी याद करते थे परन्तु अभी अपने को निराकार आत्मा समझ निराकार बाप को याद करना है। ये बड़ी विचार सागर मन्थन करने की बातें हैं।''

सा.बाबा 2.06.09 रिवा.

Q. देह से न्यारी स्थिति क्या है और कैसी है या क्या होगी ?

मूल पुरुषार्थ है ही देह और देही के राज़ को समझकर देह से न्यारे होकर देही-अभिमानी स्थिति में स्थित होने का।

''जब चाहे तब देह में प्रवेश करें और जब चाहें तब फिर न्यारे हो जायें, ऐसा अनुभव करते हो ? एक सेकेण्ड में देह धारण करें और एक सेकेण्ड में छोड़ दें, यह अभ्यास है ? वैसे ही इस देह के भान को जब चाहें, तब छोड़ देही-अभिमानी बन जायें - यह प्रैक्टिस इतनी सरल है, जितनी कोई सथूल वस्तु की सहज होती है।''

अ.बापदादा 6.08.70

''जब चाहें तब न्यारे बन जायें और जब चाहें तब प्यारे बन जायें। इतना बन्धन-मुक्त बने हो ? इस देह का भी बन्धन है, देह भी अपने बन्धन में बाँधती है। अगर देह के बन्धन से मुक्त हो तो यह देह बन्धन नहीं डालेगी। ... देह के भान को छोड़ने अथवा उससे न्यारा होने में कितना समय लगता है ? एक सेकेण्ड लगता है। सदैव एक सेकेण्ड लगता है या कब कितना और कब कितना लगता है।''

अ.बापदादा 6.08.70

''जितना साक्षी रहेंगे, उतना साक्षात्कारमूर्त और साक्षात् मूर्त बनेंगे। इसलिए यह अभ्यास करो। कौनसा अभ्यास ? अभी-अभी देह का आधार लिया और अभी-अभी न्यारे हो गये। इस अभ्यास को बढ़ाना अर्थात् सम्पूर्णता और समय को समीप लाना।''

अ.बापदादा 6.08.70

''संकल्प में भी यह न आये कि कब कर लेंगे या कब हो जायेगा। नहीं, अब करेंगे। अब हो ही जायेगा। ... नज़दीक की प्रजा बनाने के लिए नाज़ों से चलना छोड़कर राज़ों से चलना है।... जितना-जितना राज़युक्त होंगे, उतना-उतना नाज़ुकपना छूटता जायेगा।''

अ.बापदादा 6.08.70 पार्टियों से

''यह शरीर का भान छोड़ना है, इस प्रैक्टिस में रहना है। शरीर छोड़ने का अभ्यास होगा तो रूप बदलना छूट जायेगा। ... पढ़ाई में भी रेग्यूलर। जितना हर बात में रेग्यूलर, उतना ही रूलर बनेंगे। अमृतवेले उठने से लेकर हर कर्म, हर संकल्प और हर वाणी में भी रेग्यूलर। एक भी बोल ऐसा न निकले, जो व्यर्थ हो।''

अ.बापदादा 6.08.70 पार्टियों से

Q. क्या वहाँ ये महसूसता होगी कि हमने ऐसे कर्म किये हैं, जिससे हम दास-दासियाँ बने हैं या राजा-रानी बने हैं ?

''यह राजा-रानी है, हम दास-दासियाँ हैं तो जरूर आगे जन्म में ऐसे कर्म किये हैं। बुरे कर्म

करने से बुरा जन्म मिलता है। कर्मों की गति तो चलती रहती है। ... वहाँ भी ऐसे जरूर समझेंगे कि अगले जन्म के कर्मों के अनुसार हम ऐसे बनें हैं। बाकी क्या कर्म किये हैं, वह नहीं जानेंगे।''

सा.बाबा 11.03.09 रिवा.

यदि ये महसूसता होगी तो उसका परिणाम क्या होगा और यदि नहीं होगी तो बाबा ने ये बात क्यों कही है? वहां ये महसूसता नहीं होगी, बाबा ने ये बात पुरुषार्थ कराने के लिए कही है। यदि वहां ये महसूसता हो तो आत्मा को दुख हो जाये, जिससे वहाँ भी भक्ति मार्ग के समान पुरुषार्थ और प्रालब्ध का विधान चले, फिर ये नहीं कहा जा सकता कि वहाँ संगम पर किये गये कर्मों का फल है।

Q. क्या किसी साधन-सम्पत्ति से अतीन्द्रिय सुख या आनन्द का अनुभव हो सकता है? वर्तमान का परम सुख कौन अनुभव कर सकेगा?

नहीं, अतीन्द्रिय सुख या आनन्द की अनुभूति तो सर्व संकल्पों-विकल्पों से मुक्त आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा ही कर सकती है। यदि साधन-सम्पत्ति से अतीन्द्रिय सुख या आनन्द की अनुभूति होती तो दुनिया में अनेकानेक आत्मायें करेंगी, हमारा नम्बर बहुत बाद में आने वाला है क्योंकि अनेकानेक आत्माओं के पास हमारे से अधिक स्थूल साधन और सम्पत्ति है। परमात्मा अतीन्द्रिय सुख या आनन्द की अनुभूति कराने लिए ही आता है, जिसके लिए वह यथार्थ ज्ञान देता है। जो आत्मायें उस ज्ञान को धारण करके परमात्मा की अव्यभिचारी याद में रहते हैं, वे ही अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करते हैं। जो ही सच्चा सुख है और जिसकी अनुभूति अभी ही होती है।

Q. भविष्य किसका अच्छा होगा?

जो विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर भूतकाल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता से मुक्त होकर वर्तमान में स्थित होकर अभीष्ट पुरुषार्थ करेगा। वर्तमान ही हमारे वश में है और वर्तमान ही भविष्य का आधार है अर्थात् बीज है। भूतकाल हमारे हाथ से निकल गया है, उसमें किये गये कर्मों का फल तो आत्म को भोगना ही पड़ेगा, इसलिए उसका चिन्तन करके वर्तमान समय को व्यर्थ गँवाना बुद्धिमानी नहीं है।

जो वर्तमान में स्थित होकर देह और देह की दुनिया को भूलकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होता है या स्थित होने का पुरुषार्थ करता है, वही वर्तमान में भी परम सुख अनुभव करता है और जो उस स्थिति में स्थित होकर परमात्मा की याद में जो कर्म करता है, वे कर्म श्रेष्ठ कर्म होते हैं, जिससे उसका भविष्य अवश्य ही सुखमय होता है।

जो वर्तमान में परमात्मा को याद कर उनके सानिध्य का सुख अनुभव करता है और उनकी

श्रीमत पर चलकर अभी श्रेष्ठ कर्म करता है, अपना तन-मन-धन सफल करता है, उसका ही भविष्य अच्छा होगा।

Q. बाबा ने अचानक और एवर-रेडी कहा है, दोनों का क्या राज़ है और क्या अन्तर है?

विनाश अचानक होगा, मृत्यु अचानक आती है। अचानक होना ही इस विश्व-नाटक की शोभा है। अचानक कोई घटना हो, उसमें हम खुशी रहें, अन्त समय हमको परमात्मा की याद रहे, उसके योग्य बनना है, जो बनता है वह एवर-रेडी कहलायेगा। विनाश कभी भी हो सकता है, हमारी मृत्यु की घड़ी कभी भी आ सकती है और आयेगी अचानक ही इसलिए सदा ही रेडी रहना है। इसके लिए हम हर समय अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित रहें, परमात्मा की याद में रहें, तो कब भी मृत्यु हो, हमारा भविष्य अच्छा ही होगा क्योंकि परमात्मा की याद में मृत्यु हुई।

अचानक अर्थात् अपने को चेक करें कि इस समय हम जिन संकल्पों में हैं, उस समय अचानक हमारी इस देह में अन्तिम घड़ी आ जाये तो हमारी क्या गति होगी और एवर-रेडी अर्थात् जब भी हमारी अन्तिम घड़ी आये तो हमको कोई पश्चाताप तो नहीं हो, कोई वस्तु या व्यक्ति तो याद नहीं आये, परमात्मा की ही याद आये। इसके लिए हमारी स्थिति ऐसी सम्पूर्ण और सम्पन्न रहे, तब कहेंगे एवर-रेडी।

''अभी अलबेलेपन का समय नहीं है। ... 'अब नहीं तो कब नहीं', अगर अब न करेंगे तो फिर कब करेंगे। ... 'मिटेंगे लेकिन हटेंगे नहीं', ऐसे कोई न कोई स्लोगन हर दिन सामने रखो और उस स्लोगन को प्रैक्टिकल में लाओ।'' अ.बापदादा 18.6.70

Q. अन्त समय परमात्मा की याद हो और अन्त समय परमात्मा की याद रहे - दोनों में क्या अन्तर है और दोनों का क्या पुरुषार्थ है?

अचानक कोई एक्सीडेण्ट हो और हमारी मृत्यु हो जाये, उसके लिए हमको सदा परमात्मा की याद में रहने का पुरुषार्थ करना होगा। हमारा एक सेकेण्ड भी याद के बिना न हो। बाबा ने कहा है - जिस सेकेण्ड तुम व्यर्थ चिन्तन में हो, उसी समय अचानक मृत्यु हो जाये तो तुम्हारी क्या गति होगी - इस बात का ध्यान रखो। साधारण रीति हमारे देह त्याग का समय आये तो भी हमको परमात्मा की याद होनी चाहिए। याद रहे - यह पुरुषार्थ का संकल्प है और याद हो - यह पुरुषार्थ की सफलता है।

Q. संगमयुग पर जीना और संगमयुग का सुख अनुभव करने में क्या अन्तर है?

Q. पुरुषार्थ करना और पुरुषार्थ का सुख अनुभव करने में क्या अन्तर है?

संगमयुग पर पुरुषार्थ भी सतयुग के सुखों से श्रेष्ठ सुख की अनुभूति कराने वाला है।

अतीन्द्रिय सुख की, आनन्द की अनुभूति संगमयुग पर ही होती है। उस सुख को अनुभव करने के लिए पुरुषार्थ करना है। सतयुग के सुखों की लालसा में पुरुषार्थ करने वाले संगमयुग के सच्चे सुख का अनुभव नहीं कर सकेंगे।

ये सुख-दुख का अनादि-अविनाशी खेल है। हर आत्मा सुख के आधार पर दुख और दुख के आधार पर ही सुख का अनुभव करती है। बिना दुख की अनुभूति के सुख की अनुभूति हो नहीं सकती और जिसको जितनी दुख की गहरी अनुभूति होती, उसको सुख की अनुभूति भी उतनी ही गहरी होती है। ये सुख और दुख की दोनों अनुभूतियाँ आत्मा को संगमयुग पर ही होती है, सतयुग-त्रेता में दुख की अनुभूति का संस्कार आत्मा में जाग्रत नहीं होता है, इसलिए वहाँ के सुख का इतना महत्व नहीं है, जितना इस संगमयुग के सुख का है। इस संगमयुग के सुख को ही अतीन्द्रिय सुख कहा जाता है, जिसका मूल गुण है कि वह सुख भोगने से बढ़ता है और सभी सुख भोगने से घटते हैं।

''पुराना सबकुछ भुलाना पड़े। एकदम बचपन में चले जाओ, अपने को आत्मा समझो। ... ये सब कब्रिस्तानी हैं हैं, उनसे क्या दिल लगायेंगे। अभी हमको परिस्तानी बनना है।... तुम पुरानी दुनिया में बैठे हो, पुरुषार्थ कर रहे हो नई दुनिया के लिए। तुम बीच में बैठे हो।... पुरुषोत्तम संगमयुग का किसको पता नहीं है।'' सा.बाबा 16.02.09 रिवा.

''ड्रामा में जो कुछ नूँध है, उसे साक्षी होकर देखना होता है।... इसमें रोने-रुसने की कोई बात नहीं है। कोई नई बात थोड़ेही है। अफसोस उनको होता है, जो ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को रियलाइज़ नहीं करते। ... ये बड़ी आश्चर्यवत् विचार सागर मन्थन करने की बातें हैं। ... तुम थोड़ेही कहेंगे कि हम रचता-रचना को नहीं जानते।''

सा.बाबा 17.02.09 रिवा.

''तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। हम उस पार जा रहे हैं। अनेक बार तुम बच्चे स्वर्ग में गये होंगे। यह चक्र तुम लगाते ही रहते हो। पुरुषार्थ ऐसा करना चाहिए, जो हम नई दुनिया में पहले-पहले आयें। कोई की पुराने मकान में जाने की दिल थोड़ेही होती है।''

सा.बाबा 16.02.09 रिवा.

''इस रीति हर दिन कुछ छोड़ो और कुछ भरो। जब इतना अटेन्शन रखेंगे तब समय के पहले सम्पूर्ण बन सकेंगे। समय के अनुसार अगर सम्पूर्ण बनें तो उसकी इतनी प्राप्ति नहीं होती है। समय के पहले सम्पूर्ण बनना है। सम्पूर्णता क्या होती है, उसका अनुभव कब करेंगे ? ईश्वरीय अतीन्द्रिय सुख निरन्तर क्या होता है, उसका अनुभव यहाँ ही करना है।''

अ.बापदादा 18.6.70

Q. किसी भी परिस्थिति में या किसी भी कर्मभोग से सहज मुक्ति पाने का यथार्थ पुरुषार्थ क्या है?

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझकर, अनुभव कर, निश्चय करके देह और देह की दुनिया को भूलकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का सफल पुरुषार्थ करना। अपने मूल स्वरूप में स्थित आत्मा साधन-सम्पत्ति और सहयोगी-सम्बन्धी न होते भी किसी भी दैहिक वेदना से मुक्त हो सकती है और किसी भी परिस्थिति में विजयी बन सकती है परन्तु आत्मिक स्वरूप से विमुख आत्मा विपुल धन-सम्पत्ति, सम्बन्धी-साथी होते भी किसी दैहिक वेदना से मुक्त हो जाये या परिस्थिति को पार कर ले, यह ।सम्भव नहीं है। इसलिए आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का पुरुषार्थ ही अभीष्ट पुरुषार्थ है।

''निरन्तर याद करने वाले ही विन कर सकेंगे। ... कर्मातीत अवस्था तक पहुँचने के लिए मेहनत करनी है। वह अवस्था अन्त में आनी है परन्तु अन्त कोई भी समय आ सकता है, इसलिए लगातार पुरुषार्थ करना है। तुम्हारा पुरुषार्थ निरन्तर चलता रहे। ... तुम बच्चों का याद में रहने का गुप्त अभ्यास चलता रहे तो अच्छा है।''

सा.बाबा 18.11.08 रिवा. रात्रि क्लास

Q. यथार्थ पुरुषार्थ क्या है, जिसकी कमजोरी के कारण व्यर्थ संकल्पों की रचना होती है, जीवन में सम्पूर्णता नहीं आती है?

मुख्य पुरुषार्थ है ही अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का और इस विश्व-नाटक की यथार्थता को समझकर साक्षी होकर इसे देखने और ट्रस्टी बनकर पार्ट बजाने का। इसकी यथार्थ रीति समझ और धारणा न होने की कमजोरी के कारण ही व्यर्थ संकल्प चलते हैं। इसके लिए ही अव्यक्त बापदादा अभी भी मुरली के बीच में और बाद में ड्रिल कराते हैं और उसको पक्का करने के लिए श्रीमत देते हैं, प्रेरणा देते हैं और बाबा कहते हैं कि एक सेकेण्ड में इस इस देह से न्यारी स्थिति में स्थित हो जाओ।

''पुरुषार्थ की कमजोरी के कारण व्यर्थ संकल्पों की रचना होती है। इसलिए अब इनको नाम-निशान से खत्म कर देना हे। ... अभी भी कई ऐसे बोल निकलते हैं, जो सम्पूर्णता की स्टेज अनुसार नहीं हैं। ... संकल्प-बोल-कर्म ऐसे हों ... जो सभी की सूरत में सम्पूर्णता की झलक देखने में आये।''

अ.बापदादा 26.3.70

Q. बाबा ने ज्ञान की सब बातों का अनुभवी बनकर अनुभव की अथॉरिटी बनने के लिए कहा है, तो किस-किस बात में अनुभव करना है?

ज्ञान - आत्मा, परमात्मा, ड्रामा, कल्प-वृक्ष, परिवार, योग, कर्म और फल का विधि-विधान

आदि-आदि के राज़ को यथार्थ रीति समझना और अनुभव करना।
गुणों - ईश्वरीय गुणों और दैवी गुणों को समझना और अनुभव करना।
शक्तियों - ईश्वरीय शक्तियों और दैवी शक्तियों को समझना और अनुभव करना।
अनुभवी बनने से अपनी प्राप्तियों और दूसरों की प्राप्तियों को समझना और अनुभव करना।
Q. अनुभवी मूर्त बनें हैं, उसका दर्पण क्या है ?
ईश्वरीय ज्ञान-गुण-शक्तियों की अनुभवी आत्मा सदा अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति में रहेगी।

पुरुषार्थ और विविध ईश्वरीय महावाक्य

साकार बाबा के द्वारा उच्चारे

''एक दिन फॉरेनर्स भी आबू में सबसे ज्यादा आयेंगे, और सब तीर्थ यात्रा आदि छोड़ देंगे। वे भी चाहते हैं कि भारत का राजयोग सीखें। जानना चाहते हैं कि कौन है, जिसने पैराडाइज़ स्थापन किया। पुरुषार्थ किया जाता है, कल्प पहले जो हुआ होगा, वह अवश्य होगा।''

सा.बाबा 24.11.09 रिवा.

''इस समय रुहानी बाप यह रुहानी पढ़ाई पढ़ाने की सेवा करते हैं। ... तुम परमपिता परमात्मा शिवबाबा की जीवन कहानी को भी जानते हो। सब नम्बरवार बुद्धि में याद होना चाहिए। सारा विराट रूप जरूर बुद्धि में रहता होगा। ... उत्थान और पतन का सारा राज़ बुद्धि में रहे। हम उत्थान में थे, फिर पतन में आये, अभी हम बीच में हैं।''

सा.बाबा 18.11.09 रिवा.

''जो पास्ट हो गया है, वह फिर रिपीट होगा। इस समय तुम शुरू से लेकर अन्त तक सारे ड्रामा को जानते हो। जानते जायेंगे तो जीते रहेंगे। ... अभी तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुग पर, उत्तम पुरुष बनने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। ये सब बड़ी समझने की बातें हैं।''

सा.बाबा 19.11.09 रिवा.

''तुमको मालूम है कि हम स्वदर्शन चक्रधारी लकी सितारे हैं, बाप हमको लकी बनाते हैं। ... अभी तुमको बेहद का बाप मिलता है, उनसे जो जितना लकी बनना चाहें, बन सकते हैं। बाप कहते हैं - जो चाहे सो पुरुषार्थ से लो। सारा मदार है पुरुषार्थ पर।''

सा.बाबा 13.11.09 रिवा.

''याद का चार्ट जरूर रखना है क्योंकि तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना है। यहाँ ऐसे ही बुद्धू बनकर नहीं बैठना है। ... सतोप्रधान बनने से ही तुम सतोप्रधान दुनिया में बेहद का सुख

पा सकेंगे। सतो बनेंगे तो सतो दुनिया में आयेंगे ... बाप सारा हिसाब बतला देते हैं।''

सा.बाबा 13.11.09 रिवा.

''तुम ही पूज्य और तुम ही पुजारी बनते हो, 84 का चक्र तुम ही लगाते हो। अब फिर वापस घर जाना है। कोई पतित वापस घर जा नहीं सकता।... तुम पवित्र बनकर पवित्र दुनिया में चले जायेंगे। अब जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे। बहुतों को बाप का परिचय देते रहो।''

सा.बाबा 11.11.09 रिवा.

''गरीब ही अपना अच्छा भाग्य बनायेंगे और समझने का पुरुषार्थ करेंगे। साहूकारों को तो पुरुषार्थ करना नहीं है। उनको देहाभिमान बहुत है। ड्रामा अनुसार जैसे बाबा ने उनको दण्ड दे दिया है। ... ग़रीब झट अपनी बैटरी भर सकते हैं क्योंकि वे बाप को बहुत याद करते हैं।''

सा.बाबा 5.11.09 रिवा.

''यह भी तुम जानते हो कि हम सब अभी पुरुषार्थ करते हैं, फिर नम्बरवार तो बनेंगे ही। सब एक समान तो बन न सकें। ... कितना बड़ा वण्डरफुल नाटक है। एक के फीचर्स न मिलें दूसरे से, फिर वे ही हू-ब-हू रिपीट होंगे। यह सब विचार कर आश्चर्य खाना चाहिए।''

सा.बाबा 30.10.09 रिवा.

''बाप को भूलना भी ड्रामा में नूँध है। ... आत्मा ही याद करती है। फिर तुम आत्मायें अपने को, अपने बाप को, ड्रामा को भूल जाती हो।... कल्प-कल्प जो वर्सा तुम लेते हो, पुरुषार्थ अनुसार वही अभी भी लेंगे।''

सा.बाबा 31.10.09 रिवा.

''बाप हर एक बात अच्छी रीति समझाते रहते हैं। फिर भी जो कल्प पहले समझे हैं, वे अभी भी जरूर समझेंगे। फिर भी पुरुषार्थ तो करना ही पड़ता है। बाप आते ही हैं पढ़ाने। यह पढ़ाई है, इसमें बड़ी समझ चाहिए।''

सा.बाबा 31.10.09 रिवा.

''बाप की बुद्धि में सारा ज्ञान है, जो वर्णन करते हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि में भी है कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। ... पुरुषार्थ कराना भी जरूरी है। पुरुषार्थ कराने के लिए कितने चित्र आदि बनाते हैं। जो आते हैं, उनको चित्रों से 84 के चक्र पर समझाते हो।''

सा.बाबा 21.10.09 रिवा.

''अभी तुम यहाँ बैठे क्या करते हो ? तुम वाणी से परे जाने के लिए पुरुषार्थ करते हो। ... ड्रामा के प्लैन अनुसार अब सबको वापस जाना है।... अभी सबको वाणी से परे वापस घर जाना है। तुमको कोई काल नहीं खायेगा। तुम तो खुशी से जाते हो।''

सा.बाबा 22.10.09 रिवा.

''बाप कितनी सहज बातें समझाते हैं, जो धारण करनी है और करानी हैं।... बाप जो सर्विस

सिखलाते हैं, वह सर्विस ही करनी है। तुम्हारी है यह गॉडली सर्विस। ... इसमें सब बातों को भूलना पड़ता है। देह सहित देह के सब सम्बन्धों को भूलकर अपने को आत्मा समझना है।''

सा.बाबा 13.10.09 रिवा.

''देही-अभिमानी बड़े शान्त रहेंगे।... बाबा हर प्रकार से पुरुषार्थ कराते रहते हैं।... देहाभिमान बहुत खोटा है। शिवबाबा तो कहते हैं - आई एम योअर मोस्ट ओबिडिएन्ट सर्वेन्ट। ऐसे नहीं कि अपने को कहना सर्वेन्ट और नवाबी चलाते रहे।''

सा.बाबा 12.10.09 रिवा.

''अभी तुम नई दुनिया में जाने की तैयारी कर रहे हो। तुम पुरुषार्थ करते हो कि पाप कट जायें तो हम पुण्यात्मा बन जायें। अभी तुमको कोई पाप नहीं करना है। काम कटारी चलाना भी पाप है। ... अभी तुम पतित बने हो, इसलिए देवी-देवता के बदले अपना नाम ही हिन्दू रख दिया है।''

सा.बाबा 9.10.09 रिवा.

''वे आपस में लड़ा देते हैं। यह हिन्दुस्तान-पाकिस्तान पहले अलग था क्या। यह सब ड्रामा में नूँध है। अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो, योगबल से विश्व का मालिक बनने का। बाप तुमको राजयोग सिखा रहे हैं।''

सा.बाबा 6.10.09 रिवा.

''रुहानी बाप अभी सृष्टि-चक्र के पास्ट, प्रैजेन्ट, फ्युचर की नॉलेज सुना रहे हैं।... अभी बहुत कुछ समझने का है। बाप ने आबू की महिमा पर समझाया है, इस पर ख्याल करना चाहिए। तुम यहाँ बैठे हो तो तुम्हारी बुद्धि में यह आना चाहिए कि यह कब बना, कितने वर्ष बाद बना ... अभी का यादगार और बैकुण्ठ का यादगार भी बनाया है। ... आबू की महिमा को अच्छी रीति सिद्ध करना है।''

सा.बाबा 2.10.09 रिवा.

''यह चिन्तन करते-करते हम सतोप्रधान बनेंगे, नारायण का सुमिरण करने से हम नारायण बनेंगे। ... बाप को याद करना है, जिससे पाप कटेंगे और फिर नारायण बनेंगे। ... एक अपने को आत्मा जरूर निश्चय करो और बाप को याद करो।''

सा.बाबा 29.09.09 रिवा.

''बच्चों को ऐसी युक्तियाँ रचनी चाहिए, जो आपही समझने के लिए लोग आयें। ... ख्याल तो चलता है ना कि सारा भारत कैसे गोल्डन एज में आ जाये। उसके लिए बाबा कितना समझाते हैं।''

सा.बाबा 15.09.09 रिवा.

''स्टूडेण्ट्स जो पढ़ते हैं, वही उनकी बुद्धि में चलता है। जैसे बाप में संस्कार हैं, वैसे तुम्हारी आत्मा में भी भरते हैं। ... फिर तुम जब यहाँ आयेंगे तो वही पार्ट रिपीट होगा। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार आकर अपना पार्ट बजायेंगे। अपने दिल से पूछो - हम कितना पुरुषार्थ करते

हैं।''

सा.बाबा 9.09.09 रिवा.

''विश्व में शान्ति थी, यह लक्ष्मी-नारायण एम एण्ड आब्जेक्ट खड़ी है। यह राजधानी हम फिर से स्थापन कर रहे हैं। ... अपने ही तन-मन-धन से गुप्त रीति। बाप गुप्त है, नॉलेज भी गुप्त है और तुम्हारा पुरुषार्थ भी गुप्त है। इसलिए बाबा गीत-कवितायें आदि भी पसन्द नहीं करते हैं। वह है भक्ति मार्ग। यहाँ तो चुप रहना है। चलते-फिरते शान्ति में बाप को याद करना है और सृष्टि-चक्र बुद्धि में फिराना है।''

सा.बाबा 10.09.09 रिवा.

''बाप नई दुनिया स्वर्ग स्थापन कर रहे हैं, इसलिए अब इस पुरानी दुनिया को देखते हुए भी नहीं देखो। इस पुरानी दुनिया से वैराग्य।... नई सतयुगी दुनिया में अपार सुख हैं तो जरूर उसको याद करेंगे।... काम महाशत्रु है, उसको जीतने से ही तुम जगतजीत बनेंगे।''

सा.बाबा 10.09.09 रिवा.

''एक तो बाप को याद करना है, दूसरा दैवीगुण धारण करने हैं और राजा-रानी बनना है तो प्रजा भी बनानी है। कोई बहुत प्रजा बनाते हैं और कोई कम। प्रजा बनती है सर्विस से। ... बाप तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं, ऐसे बाप को याद कर तुमको खुशी नहीं रहती है तो तुम पूरा याद नहीं करते हो, तब खुशी नहीं ठहरती है।''

सा.बाबा 11.09.09 रिवा.

''अब तुम फिर से स्वर्ग की स्थापना कर रहे हो, वहाँ दूसरा कोई धर्म होता ही नहीं। ... शिवबाबा का थोड़ा भी ज्ञान सुना तो वे स्वर्ग में जरूर आयेंगे। फिर जितना जो पढ़ेंगे, बाप को याद करेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे। अभी विनाश काल तो सब के लिए है। ... कल्प-कल्प तुम मेरी मत पर स्वर्ग स्थापन करते हो।''

सा.बाबा 11.09.09 रिवा.

''तुम यहाँ बैठे-बैठे कितना कार्य करते हो। इसमें कोई हाथ-पाँव चलाने की बात नहीं है। सिर्फ बिचार की बात है। ... इन लक्ष्मी-नारायण जैसा अपना श्रृंगार करना है, दैवीगुण धारण करने हैं। बाप सभी को एक ही रास्ता बताते हैं - अल्फ और बे।''

सा.बाबा 9.09.09 रिवा.

''तुमको अपना भी श्रृंगार करना है और फिर औरों को भी रास्ता बताना है। ... कोई तो अपना भी श्रृंगार कर फिर दूसरों का भी करते हैं। ... अच्छी रीति सोच-विचार करो कि बाबा कैसे-कैसे युक्तियाँ बताते हैं।''

सा.बाबा 9.09.09 रिवा.

''ड्रामा अनुसार रावण के संग में तुम्हारा यह हाल हुआ है।... भक्ति मार्ग में दिन-प्रतिदिन तुम नीचे उतरते तमोप्रधान बुद्धि बुद्धू हो जाते हो। ... अभी तुमको समझ आई है कि बेसमझी से

तुमने बाप की ग्लानि की है। अब तुमने समझा है तो अब पुरुषार्थ कर रहे हो बेगर टु प्रिन्स बनने का।''

सा.बाबा 24.08.09 रिवा.

''सिर्फ याद की यात्रा से भी काम नहीं चलेगा, पढ़ाई भी जरूरी है। हम 84 का चक्र कैसे लगाते हैं, यह भी बुद्धि में फिरना चाहिए। ... लॉ नहीं कहता कि जो तुम्हारे सिवाए विश्व का मालिक कोई बनें। विश्व का मालिक बनाने वाला बाप ही है और कोई की ताक़त नहीं है, ऐसा बनाने की।''

सा.बाबा 27.08.09 रिवा.

''बाप रोज़ ज्ञानामृत का डोज़ चढ़ाते रहते हैं। सिर्फ इस पर नहीं ठहरना है कि हम बाबा को बहुत याद करते हैं। याद से ही पावन हो जायेंगे परन्तु पद भी पाना है। पावन तो मोचरा खाकर भी सबको होना ही है, परन्तु बाप आये हैं विश्व का मालिक बनाने।''

सा.बाबा 27.08.09 रिवा.

''कोई भी मनुष्य रचयिता बाप और रचना के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते हैं। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती रहती है। ... बाप श्रृंगार तो करते हैं परनतु अपना पुरुषार्थ भी करना चाहिए। ..यह है सच्ची कमाई। तुम्हारी यह सच्ची कमाई है 21 जन्मों के लिए। बेहद का बाप ही यह सच्ची कमाई कराते हैं।''

सा.बाबा 22.08.09 रिवा.

''अभी तुम समझते हो कि इस याद की यात्रा से पाप कटते हैं और हम सतोप्रधान बन जायेंगे। तो इसमें पुरुषार्थ अच्छा करना है। ... कर्म करते हुए बुद्धि में बाप की याद रहे, इसमें तुम्हारी बहुत-बहुत कमाई है।''

सा.बाबा 17.08.09 रिवा.

''बाप यह भी समझाते हैं कि जो कुछ सर्विस होती है, वह कल्प पहले मिसल होती है। सतोप्रधान बनने का ओना रखना है, इसमें ही बच्चे गफलत करते हैं।... पिछाड़ी में सिवाए एक बाप के कोई भी याद न आये।''

सा.बाबा 17.08.09 रिवा.

''वास्तव में मन्दिर तो सिर्फ देवी-देवताओं के बनते हैं, जो सतयुग में रहते हैं। और कोई मनुष्य का मन्दिर बनता नहीं है क्योंकि मनुष्य तो हैं पतित। पतित मनुष्य पावन देवताओं की पूजा करते हैं।'' (देवताओं की आत्मा शरीर दोनों पवित्र हैं)

सा.बाबा 13.08.09 रिवा.

''ऊपर जाना माना मरना, शरीर छोड़ना। यहाँ तो बाप ने कहा है - तुम इस शरीर को भूलते जाओ। बाप तुमको जीते जी मरना सिखलाते हैं, जो और कोई सिखला न सके। तुम यहाँ आये ही हो अपने घर जाने के लिए। घर कैसे जाना है, यह ज्ञान अभी ही मिलता है।''

सा.बाबा 7.08.09 रिवा.

''जैसे हद के नाटक के एक्टर्स होते हैं तो नाटक जब पूरा होता है तो नाटक के कपड़े वहाँ ही छोड़कर घर के कपड़े पहनकर घर में जाते हैं। तुम्हें भी अब यह चोला यहाँ ही छोड़कर घर जाना है।'' सा.बाबा 7.08.09 रिवा.

''अभी तुम यह नॉलेज सुन रहे हो। मैं बीजरूप, ज्ञान का सागर हूँ।... बाप निराकारी, निरहंकारी है। सो भी जब वह एकट में आये, तब तो निरहंकारी कहा जाये। बाप तुमको अथाह ज्ञान देते हैं। यह है अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान। फिर जो जितना लेवे।''

सा.बाबा 6.08.09 रिवा.

''जो भी एक्टर्स हैं, सब आत्मायें अविनाशी हैं, सब अपना-अपना पार्ट बजाने आती हैं। कल्प-कल्प तुम ही आकर बाप से स्टूडेण्ट बन पढ़ते हो।... बाबा भी ड्रामा अनुसार बँधयमान है, सबको वापस ले जाने के लिए। ... तुम हू-ब-हू कल्प पहले मिसल नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बाप से अपना राज्य भाग्य ले रहे हो।'' सा.बाबा 30.07.09 रिवा.

''यह कितना बड़ा ह्यूज़ ड्रामा है। यह सारा ड्रामा तो कभी कोई देख भी न सके। इम्पॉसिबुल है। ... अब तुम बच्चों को पुरुषार्थ करना है, कल्प पहले मिसल पद पाने के लिए पढ़ना है।... जो खुद जानते हैं, वे औरों को भी समझाने लग पड़ेंगे। कल्प पहले भी यही किया होगा।... पुरुषार्थ करते रहते हैं और करते रहेंगे। यह भी ड्रामा में नूँध है।''

सा.बाबा 22.07.09 रिवा.

''पढ़ाने वाला बाप विदेही है। तुमको भी विदेही बनाते हैं, इसलिए बाप कहते हैं - शरीर का भान छोड़ते जाओ। ... तुम खुद भी समझ सकते हो कि इस हालत में हमारा शरीर छूट जाये तो हमारी क्या गति होगी।'' सा.बाबा 22.07.09 रिवा.

''अभी तुम पुरुषार्थ करते हो, यह पुरानी जूती उतार कर नई दैवी जूती लेने का। ... आत्मा के पवित्र होने से 5 तत्व भी नये बन जाते हैं। पाँच तत्वों का ही शरीर बनता है। जब आत्मा सतोप्रधान है तो शरीर भी सतोप्रधान मिलता है। आत्मा तमोप्रधान तो शरीर भी तमोप्रधान मिलता है।'' सा.बाबा 20.07.09 रिवा.

''देहाभिमान में आने से कुछ न कुछ उल्टा काम करते हैं तो गोया बाप की निन्दा कराते हैं। सत्गुरु की निन्दा कराने वाले लक्ष्मी-नारायण बनने की ठौर पा न सकें। इसलिए पूरा पुरुषार्थ करते रहो, इससे बहुत ही शीतल बन जायेंगे।... बाप से बहुत ताक़त मिल जायेगी।''

सा.बाबा 21.07.09 रिवा.

''भल टाइम पड़ा है परन्तु पुरुषार्थ तो पूरी रीति करना है क्योंकि शरीर पर तो कोई भरोसा नहीं। ... आत्मा का स्वधर्म है शान्त। तुम जानते हो अभी हमको उस घर में जाना है। ...

शान्ति मे रहने में कोई निन्दा वा विकर्म होता नहीं है। बाप को याद करते रहने से और ही विकर्म विनाश होंगे।''

सा.बाबा 21.07.09 रिवा.

''माया बाप को याद करने नहीं देगी। तुमको खबरदार रहना है। इस पर ही युद्ध है। ऑखे बड़ा धोखा देती हैं।... अब बाप समझाते हैं अपन को आत्मा समझ आत्मा को देखो, भाई-भाई समझो।... अच्छे-अच्छे महारथियों को भी माया हरा देती है।''

सा.बाबा 21.07.09 रिवा.

''सबको पैग़ाम देना है। कल्प पहले जिन्होंने वर्सा लिया है, वह ले लेंगे। पुरुषार्थ करते रहते हैं क्योंकि बेचारे बाप को नहीं जानते हैं। ... भगवानुवाच - तुम इस अन्तिम जन्म में मेरी मत पर चलेंगे, पवित्र बनेंगे तो पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे।''

सा.बाबा 18.07.09 रिवा.

''आत्मा ही सुनती है वा आत्मा ही धारण करती है। परन्तु अच्छे-अच्छे महारथी भी यह भूल जाते हैं, देहाभिमान में आकर बोलने लग पड़ते हैं। ऐसे सबका होता है। बाप तो कहते हैं सब पुरुषार्थी हैं।''

सा.बाबा 17.07.09 रिवा.

''अभी तुम जानते हो कि यह सब खेल बना हुआ है। ड्रामा में हर एक को पार्ट मिला हुआ है। इसमें बड़ी अचल, स्थेरियम बुद्धि चाहिए। जब तक अचल, अडोल, एकरस अवस्था नहीं है तब तक पुरुषार्थ कैसे करेंगे। ... माया के तूफान तो अन्त तक आयेंगे। अवस्था मजबूत चाहिए। यह है गुप्त मेहनत।''

सा.बाबा 15.07.09 रिवा.

''अभी तुम रावण राज्य में तो नहीं हो ना। तुम अभी ईश्वर के पास बैठे हुए हो। तो इन विकारों से छूटने की प्रतिज्ञा करनी है। ... अभी हम पुरुषोत्तम संगमयुग वासी हैं। अब रामराज्य में जाने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं।''

सा.बाबा 13.07.09 रिवा.

''बाबा का बनकर अगर विकार गिरे तो ज्ञान की धारणा हो न सके। उन्नति के बदले गिरते-गिरते पाई-पैसे का पद पा लेंगे। कहाँ राजा, कहाँ नीच पद। भल वहाँ सुख तो सबको है परन्तु पुरुषार्थ किया जाता है ऊंच पद पाने का।''

सा.बाबा 13.07.09 रिवा.

''कहते क्या राम-सीता को बच्चे नहीं थे। लेकिन वहाँ विकार से बच्चे नहीं होते हैं। अरे, वह तो है ही सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया। वहाँ भ्रष्टाचार से पैदाइश नहीं होती। ... तुम अभी पुरुषार्थ कर ऐसा फूल बनते हो। बाबा कहते - मीठे-मीठे बच्चो, जो कुछ बीता, उसको ड्रामा समझो, उसके विषय में सोचो नहीं।''

सा.बाबा 13.07.09 रिवा.

''ड्रामा के प्लेन अनुसार बाप बैठ समझाते हैं। ... दैवी और आसुरी कैरेकटर्स में रात-दिन

का फर्क है। बाप समझाते हैं - अब पुरुषार्थ कर अपना दैवी कैरेक्टर्स बनाना है, तब ही आसुरी कैरेक्टर्स से छूटते जायेंगे। ... देवताओं का कैरेक्टर कैसे बिगड़ता है, जब वे वाम मार्ग में जाते हैं अर्थात् विकारी बनते हैं।'' सा.बाबा 14.07.09 रिवा.

''बाबा ज्ञान सागर है तो जरूर ज्ञान टपकता होगा। तुम भी ज्ञान सागर से निकली हुई ज्ञान नदियाँ हो। वह तो एवर सागर ही है, तुम एवर सागर नहीं हो।... स्टूडेण्ट्स की बुद्धि में सारा दिन पढ़ाई रहती है। तुम्हारी बुद्धि में भी सारा दिन पढ़ाई के ही ख्यालात चलने चाहिए।''

सा.बाबा 9.07.09 रिवा.

''आँखे कुछ न कुछ धोखा जरूर देती हैं। तो ड्रामा जल्दी किसकी सिविलाइज्ड नहीं बनायेगा। खूब पुरुषार्थ कर अपनी जाँच करनी है।... विश्व का मालिक बनना बड़ी ऊंच मन्जिल है। ... कदम-कदम पर भूलें होती रहती हैं। थोड़ा भी उस क्रिमिनल दृष्टि से देखा, भूल हुई, फौरन नोट करो।'' सा.बाबा 10.07.09 रिवा.

''इस रथ को कुछ होता है तो तुमको फीलिंग आयेगी कि दादा को कुछ हुआ है। बाबा को कुछ नहीं होता है, इनको होता है। ज्ञान मार्ग में अन्धश्रृद्धा की बात नहीं होती है।... दादा भी पुरुषार्थी है, सम्पूर्ण नहीं है।'' सा.बाबा 6.07.09 रिवा.

''बच्चे एकान्त में बैठकर विचार करो - बाबा को याद करके हमको यह बनना है, ये गुण धारण करना है। ... बाप को याद करेंगे तब तो किचड़ा निकलेगा।''

सा.बाबा 6.07.09 रिवा.

''आत्मा को शुद्ध करने के लिए एक बाप को याद करना होता है। बाप भी आत्मा को देखते हैं। सिर्फ देखने से आत्मा शुद्ध नहीं बनेंगी। वह तो जितना बाप को याद करेंगे, उतना शुद्ध होती जायेगी। यह तो तुम्हारा काम है। बाप को याद करते-करते सतोप्रधान बनना है।''

सा.बाबा 2.07.09 रिवा.

''जिन्होंने कल्प पहले बाप को जाना है, वे ही अभी जानते हैं, वे ही अब पुरुषार्थ कर रहे हैं। यह पुरुषार्थ भी बाप के बिना कोई करा नहीं सकता। ... इन बातों को मानेंगे भी वे ही, जिन्होंने कल्प पहले माना होगा। तुम्हारा फर्ज है जो भी आये, उनको बाप का फरमान बताना।''

सा.बाबा 10.02.09 रिवा.

''आखरीन जाना तो सभी को शिवालय में है परन्तु शान्तिधाम में कोई को बैठ नहीं जाना है। ... तुम बच्चों को याद दोनों को ही करना है। वह शिवालय है शान्ति के लिए और वह शिवालय है सुख के लिए। यह है दुखधाम। अभी तुम बैठे हो संगम पर।... दोनों शिवालय याद आने चाहिए और दुखधाम भूल जाना है।'' सा.बाबा 26.06.09 रिवा.

''यहाँ और कोई ख्यालात में नहीं बैठना चाहिए। नहीं तो तुम औरों को भी नुकसान पहुँचाते हो। फायदे के बदले और ही नुकसान करते हो। ... शिवबाबा के आगे बच्चे बड़े अच्छे होने चाहिए, जो गफलत में नहीं रहें क्योंकि यह कोई आर्डिनरी टीचर नहीं है। बाप बैठ सिखलाते हैं, तो यहाँ बहुत सावधान होकर बैठना चाहिए।''

सा.बाबा 26.06.09 रिवा.

''बच्चे लिखते हैं - बाबा माया बहुत तंग करती है। बाबा कहते हैं - यही युद्ध है। तुम गोरे से काले, फिर काले से गोरे बनते हो, यह खेल है। ... अभी तुम बच्चों का यह टाइम मोस्ट वेल्यूबुल है। पुरुषार्थ पूरा करना चाहिए।''

सा.बाबा 22.06.09 रिवा.

''बोलो ईश्वर ने कहा है - हियर नो ईविल, सी नो ईविल ... आत्मा को देखो, शरीर को नहीं देखो।...देह सहित देह के जो भी सम्बन्ध हैं, उन सबको भूल जाना है। आत्मा को देखो और एक परमात्मा बाप से सुनो। इसमें ही मेहनत है।''

सा.बाबा 17.06.09 रिवा.

''अगर पूरा पुरुषार्थ न किया तो फिर सजायें भी बहुत खानी पड़ेंगी। ... अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो पाप भस्म हो जायें।''

सा.बाबा 17.06.09 रिवा.

''तुम देही-अभिमानी बनने के लिए ही सब पुरुषार्थ करते हो। ... देह-अभिमान से पाप जरूर होता है, इसलिए देही-अभिमानी बनने का पुरुषार्थ करते रहो।''

सा.बाबा 17.06.09 रिवा.

''माला का मणका बनते ही तब हैं, जब पहला पाठ अच्छी तरह से पक्का करते हैं। ... मन-बुद्धि को सब तरफ से हटाकर एक तरफ लगाना है। जो कुछ इन ऑखों से देखते हो, उससे बुद्धियोग हटा दो।''

सा.बाबा 19.06.09 रिवा.

''पुकारते हैं, कहते हैं - बाबा रक्षा करो। वाह, लड़ाई के मैदान में अनेक मरते हैं, फिर रक्षा की जाती है क्या! यह माया की गोली बन्दूक की गोली से भी बहुत कड़ी है। काम की चोट खाई गोया ऊपर से गिरे।''

सा.बाबा 16.06.09 रिवा.

''देवताओं में बहुत प्यार रहता है ना। तो वह अवस्था तुमको यहाँ ही जमानी है। इस समय तुमको नॉलेज है, फिर जब देवता बन गये तो यह नॉलेज नहीं रहेगी।''

सा.बाबा 13.06.09 रिवा.

''यह पढ़ाई है। यहाँ प्रजेन्ट वे हैं, जो सदैव बाप को याद करते हैं, स्वदर्शन चक्र फिराते रहते

हैं। उठते-बैठते तुम अपने को स्वदर्शन चक्रधारी समझो। भूलते हो तो अबसेन्ट हो जाते हो। ऊंच पद पाने वालों की बुद्धि में यह चक्र फिरता रहेगा।''

सा.बाबा 13.06.09 रिवा.

''नॉलेज है सोर्स ऑफ इन्कम। ... सर्विस नहीं करेंगे तो अच्छा फूल कैसे बनेंगे ? हर एक अपनी दिल से पूछे कि मैं किस प्रकार का फूल हूँ, किस प्रकार का माली हूँ ? बच्चों को विचार सागर मन्थन करना पड़े। ... याद करो तो पाप कटें, तब फूल बनकर फिर औरों को भी फूल बनायेंगे।''

सा.बाबा 11.06.09 रिवा.

''बाप को अपनी जन्मपत्री बताओ। सच बतायेंगे तो बच जायेंगे। छिपायेंगे तो वह वृद्धि होती जायेगी। बाप के पास झूठ चल न सके। बाप को सच बताना चाहिए, नहीं तो बिल्कुल महारोगी बन जायेंगे। ... अभी तुमको सारा ज्ञान मिला है।''

सा.बाबा 11.06.09 रिवा.

''जड़ हीरे में फ्लो होगा तो वह निकाल थोड़ेही सकेंगे। तुम तो चैतन्य हो, तुम अपने फ्लो को निकाल सकते हो। ... तुम अपने को अच्छी रीति जानते हो कि कौनसा फ्लो है, जो तुमको अटकाता है। चेतन्य होने के कारण तुम पुरुषार्थ कर अपने फ्लो को निकाल सकते हो।''

सा.बाबा 27.05.09 रिवा.

''सबसे जास्ती खाद है देहाभिमान की, तब ही देह की तरफ बुद्धि चली जाती है। देह में होते हुए तुमको देही-अभिमानी बनना है। अन्त में इन आँखों से देखने वाली कोई भी चीज सामने न आये, ऐसी अवस्था जमानी है। ... एक बाप के सिवाए और कोई याद न आये।''

सा.बाबा 27.05.09 रिवा.

''बाप की याद में एकदम रोमांच खड़े हो जाने चाहिए।... अपनी जाँच करनी है। फ्लो आदि है, वह अभी तुम निकाल सकते हो। ... अगर थोड़ा भी डिफेक्ट होगा तो समझना चाहिए कि हमारी वेल्यू कम होगी।''

सा.बाबा 28.05.09 रिवा.

''बाबा प्रदर्शनी आदि देखते हैं तो ख्यालात चलते रहते हैं। तुम बच्चे घर जायेंगे तो फिर ये सब बातें भूल जायेंगे। परन्तु ये सब बुद्धि में याद रहना चाहिए।... अच्छे-अच्छे बच्चे जो पुरुषार्थी हैं, उनकी बुद्धि में यह ज्ञान टपकना चाहिए। बाबा की बुद्धि में टपकता रहता है ना। बुद्धि में सारा ज्ञान रहेगा तो बाबा की याद भी रहेगी। उन्नति को पाते रहेंगे।''

सा.बाबा 29.05.09 रिवा.

''बाप कहते हैं - देह के सब धर्म छोड़ अपने को आत्मा निश्चय करो। बाकी देह के सब सम्बन्ध आदि भूल जाओ। एक बाप को ही याद करो।... जीते जी मर जाओ। बाप आकर

जीते जी मरना सिखलाते हैं। ... सतयुग में कभी काल खाता नहीं है, उसको अमरपुरी कहा जाता है।''

सा.बाबा 29.05.09 रिवा.

''ऐसा ख्याल मत करो कि जो नसीब में होगा, वह मिलेगा। स्कूल में पढ़ाई का पुरुषार्थ करते हैं। ... मूल बात है - पवित्र बन औरों को भी पवित्र बनाना।... बाप यह भी समझते हैं कि जिसने कल्प पहले जो सर्विस की है, वही अभी करते हैं। जो बहुत सर्विस करते हैं, वे बाप को भी बहुत प्यारे लगते हैं।''

सा.बाबा 30.06.09 रिवा.

''तुम कहाँ भी खड़े-खड़े सबको यह रास्ता बता सकते हो कि बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो, अपने को आत्मा समझो। यह समझा कर फिर उनका चेहरा देखो, कुछ बदलता है, नैन गीले होते हैं? ... यह है ही मनुष्य से देवता बनने का विद्यालय, इतना निश्चय में बच्चों को रहना है।''

सा.बाबा 18.05.09 रिवा.

''अभी कलियुग में करोड़ों मनुष्य हैं। सतयुग में तो बहुत थोड़े देवी-देवता ही थे, तो जरूर विनाश हुआ होगा।... फिर हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होनी है। अभी तो संगमयुग की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होगी। तुम समझते हो अभी हम नई दुनिया में ऊंच पद पाने का पुरुषार्थ कर रहे हैं।''

सा.बाबा 19.05.09 रिवा.

''यह बड़ा ही वण्डरफुल खेल है। यह ईश्वरीय पढ़ाई है। इसमें दिन-रात ख्यालात चलने चाहिए।...एक बाप ही नॉलेजफुल है, वह हमको पढ़ाते हैं। यह सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो। यह दिन-रात अन्दर में सिमरण चलना चाहिए।''

सा.बाबा 13.05.09 रिवा.

''अभी पुरुषार्थ कर अवस्था को जमाना है। ऐसे नहीं कि पिछाड़ी में याद कर सकेंगे, उस समय ऐसी अवस्था हो जायेगी। नहीं, अभी से पुरुषार्थ करते-करते उस अवस्था को अन्त तक ठीक बनाना है। ऐसा न हो कि पिछाड़ी में वृत्ति कहाँ और तरफ चली जाये।''

सा.बाबा 14.05.09 रिवा.

''बाप अभी आत्माओं से डायरेक्ट बात करते हैं। बाप कहते हैं - आत्मा निश्चयबुद्धि होकर बैठो, देहाभिमान को छोड़ो। ... यथार्थ ज्ञान का पता न होने के कारण भक्ति को ही ज्ञान समझ लिया। अब तुम बच्चे समझते हो कि भक्ति अलग है और ज्ञान अलग है। ज्ञान से तो सद्गति होती है।''

सा.बाबा 16.05.09 रिवा.

''एक है योग की नॉलेज, दूसरी है 84 जन्म के चक्र की नॉलेज, फिर उसमें दैवी गुण ऑटोमेटिकली मर्ज हैं। ... ज्ञान और दैवीगुण धारण करने के लिए बुद्धि रूपी बर्तन सोने का चाहिए। जितना पुरुषार्थ करेंगे, उतनी प्वाइन्ट्स इमर्ज होगी। ज्ञान भी अच्छा सुनाते रहेंगे।''

सा.बाबा 2.05.09 रिवा.

''साहूकार इस ज्ञान को लेंगे नहीं। बाप है ग़रीब निवाज़। यहाँ के ग़रीब वहाँ साहूकार बनते हैं, साहूकार वहाँ गरीब बनते हैं। ... उनकी बुद्धि से यह सब निकल नहीं सकता। यहाँ तो बाप कहते हैं सबकुछ भूल जाओ, बिल्कुल बेगर बन जाओ।''

सा.बाबा 30.04.09 रिवा.

''बाप कहते - तुम एक जन्म पवित्र बनो तो 21 जन्म तुम पावन बन जायेंगे। तो क्यों नहीं बनेंगे, परन्तु माया ऐसी है, जो भाई-बहन समझने से भी दाल नहीं गलती, कच्चे रह जाते हैं। दाल तब गले, जब अपने को आत्मा समझ भाई-भाई समझें, देह का भान निकल जाये। यह है मेहनत।''

सा.बाबा 4.05.09 रिवा.

''फिर से बाप वही राजयोग सिखला रहे हैं। इसमें मूँझने की दरकार नहीं है।... आत्मा का निवास स्थान भृकुटी है, तो आत्मा को ही देखना पड़े।... एक बाप के सिवाए कुछ भी याद न आये। पिछाड़ी में एक बाप की याद में ही शरीर छूटे - यह प्रैक्टिस पक्की करनी है।''

सा.बाबा 4.05.09 रिवा.

''तुमको सबको समझाना पड़ता है कि यह पुरुषोत्तम संगमयुग है।... बहुत लोग पूछते हैं - तुम भारत की क्या सेवा कर रहे हो।... हम श्रीमत पर अपने तन-मन-धन से भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा कर रहे हैं।... तुम्हारा फर्ज है मनुष्य मात्र को यह पैग़ाम देना कि यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, बेहद का बाप बेहद का वर्सा देने आया है।''

सा.बाबा 13.04.09 रिवा.

''तुम अभी न फारेस्ट में हो और न गॉर्डन में हो। तुम अभी संगमयुग पर हो, गॉर्डन में जाने का पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम इस रावणराज्य को रामराज्य बना रहे हो। ... वे लोग सॉवरन्टी को मानते नहीं हैं, इसलिए राजाओं की राजाई खत्म कर दी है।... बोलो हम श्रीमत पर अपना खर्चा कर अपने लिए सतयुगी राजधानी बना रहे हैं।''

सा.बाबा 13.04.09 रिवा.

''बाप समझाते हैं - अपने को आत्मा समझ भाई-भाई की दृष्टि से देखो, तो तुम जब किसको ज्ञान देंगे तो तुम्हारी वाणी में ताक़त आयेगी।... एक बाप के सिवाए और किसी को याद न करो। बेहद के बाप से हम मुक्ति और जीवनमुक्ति के हक़दार बनते हैं।... तुम्हारा फर्ज है मनुष्य मात्र को यह पैग़ाम देना।''

सा.बाबा 13.04.09 रिवा.

''तुमको कितना फ्राक दिल होना चाहिए। तुम बाप के ऊपर कर्ज चढ़ाते हो। ईश्वर अर्थ जो देते हो, उसका दूसरे जन्म में बाप से रिटर्न लेते हो ना। बाबा को तुमने सबकुछ दिया तो बाबा

को भी सब कुछ देना पड़ेगा। कब ये ख्याल भी नहीं आना चाहिए कि बाबा को मैंने दिया।... बाबा तो दाता है ना।''

सा.बाबा 13.04.09 रिवा.

''इस पुरुषार्थ से तुम सुखधाम में जाते हो। तो तुमको कितना पुरुषार्थ करना चाहिए। जितना पुरुषार्थ अभी करेंगे, उतना कल्प-कल्प होगा। अपने अन्दर आपही जाँच करनी है कि अपने इस पुरुषार्थ से कहाँ तक ऊंच पद पायेंगे।''

सा.बाबा 6.04.09 रिवा.

''बाप बच्चों के साथ कितना वफादार है। कभी तुमको छोड़ेंगे नहीं। बाप आये ही हैं सुधार कर साथ वापस घर ले जाने। ... अपना चोपड़ा रखो कि कितना याद करते हैं, कितनी सर्विस करते हैं। अपने को घाटा नहीं डालना चाहिए। नहीं तो कल्प-कल्पान्तर का घाटा पड़ जायेगा।''

सा.बाबा 6.04.09 रिवा.

''अन्दर में भी अजपाजाप चलता रहे। शिवबाबा से बेहद सुख, स्वर्ग का वर्सा मिल रहा है, इसलिए शिवबाबा को जरूर याद करना है। सबको हक़ है बेहद के बाप से वर्सा लेने का। जैसे हद का बर्थ राइट मिलता है, वैसे यह फिर है बेहद का।... हर एक आत्मा का हक़ है बाप से बर्थ राइट लेने का।''

सा.बाबा 9.04.09 रिवा.

''मेरी मत पर न चल, पतित बने तो सौगुणा दण्ड पड़ जाता है और पद भी कम हो जाता है। यह राजाई स्थापन हो रही है। यह याद रहे तो ऊंच पद पाने का पुरुषार्थ जरूर करे। इन ऑखों से जो कुछ देखते हो, वह सब खत्म होने वाला है। तुमको अपना बुद्धियोग नई दुनिया और बेहद के सम्बन्धियों से रखना है।''

सा.बाबा 4.04.09 रिवा.

''गायन है सुबह को अमीर, रात को फकीर था। तुम भी सुबह को अमीर और फिर बेहद की रात में फकीर बन जाते हो। ... तुम बच्चों को अमीर बनने की खुशी होनी चाहिए। ब्राह्मणों का दिन और ब्राह्मणों की रात होती है। अब तुम दिन में अमीर बन रहे हो और बनेंगे भी जरूर, परन्तु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जो बहुतों का कल्याण करते हैं तो बहुतों की आशीर्वाद भी मिलेगी। प्रजा बनाने का पुरुषार्थ करना चाहिए। अपने को आपेही बन्धन से छुड़ाना चाहिए।''

सा.बाबा 1.04.09 रिवा.

''मेरी ताक़त भी उनको मिलती है, जो मेरे से योग लगाते हैं।... ऑलमाइटी बाबा से माइट बहुतों को मिलती है। वास्तव में माइट सबको मिलती है परन्तु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सारा दिन इस पढ़ाई के चिन्तन में रहना चाहिए।... तुमने यह पुरुषार्थ किया है, तब तो यह माला बनी है। कल्प-कल्प बनती रहती है।''

सा.बाबा 1.04.09 रिवा.

''अभी पुरुषार्थ करने से पद भी अच्छा मिलेगा। उस समय तुम्हारी अवस्था भी बहुत अच्छी होगी, साक्षात्कार भी करेंगे। कल्प-कल्प जैसे विनाश हुआ है, वैसे ही होगा। जिनमें निश्चय होगा, चक्र का ज्ञान होगा, वे बहुत खुशी में रहेंगे।''

सा.बाबा 2.04.09 रिवा. रात्रि क्लास

''कल्प-कल्प बाप आते हैं और पढ़ाते हैं।... ड्रामा प्लैन अनुसार हम पुरुषार्थ कर बाप को फॉलो करते हैं। यहाँ शिक्षा पाकर फॉलो करते हैं। जैसे यह सीखते हैं वैसे तुम बच्चे भी पुरुषार्थ करते हो।''

सा.बाबा 5.01.69 रात्रि क्लास

''जिसने कर्मों की गहन गति को समझ लिया है, वह सदा सर्व को सुख देने का पुरुषार्थ अवश्य करेगा। ... अपनी दृष्टि-वृत्ति को बदलने का पुरुषार्थ अवश्य करेगा।''

दादी जानकी 16.8.08

''देहाभिमान में आने से एक-दो की खामियाँ निकालते रहते हैं। बाप कहते हैं - तुम अपना पुरुषार्थ करो ऊंच पद पाने का। ... देहाभिमान में आने से ही अवगुण दिखाई देते हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो और भाई-भाई देखो तो गुण ही गुण दिखाई पड़ेंगे। गुणवान बनो और सबको गुणवान बनाने की कोशिश करो।''

सा.बाबा 30.03.09 रिवा.

''कोई तमो, कोई रजोप्रधान हैं, तो जरूर उनकी चलन ऐसी होगी। सबसे जास्ती गुण हैं बाप में। तो तुम बाप के गुण ग्रहण करो, और सब बातें छोड़ दो।... तुमको मेरे समान गुणवान बनना है। और कोई बात न सुनो और न किसकी ग्लानि करो। सब में कोई न कोई खामी है।''

सा.बाबा 30.03.09 रिवा.

''कल्प पहले भी तुम ऐसे ही बने थे। कल्प पहले जिसने जितना पुरुषार्थ किया है, वे वही करेंगे, अपना वर्सा लेंगे। हम साक्षी होकर देखते हैं। बाप कहते हैं - तुम सब मैसेन्जर हो। और कोई मैसेन्जर-पैगम्बर होते नहीं हैं। सबकी सद्गति करने वाला एक ही सत्गुरु बेहद का बाप है। अन्य सब धर्म-पितायें आते हैं अपने धर्म की स्थापना करने, तो वे गुरु कैसे ठहरे।''

सा.बाबा 27.03.09 रिवा.

''सारा दिन अन्दर में यह पढ़ाई चलती रहनी चाहिए। बाप कहते हैं - मैं तुमको रोज़ नई-नई बातें सुनाता हूँ। तुम फिर औरों को पढ़ाते हो।... शिवबाबा को तो सिर्फ पिता कहेंगे। मात-पिता फिर इनको कहेंगे। इस माता द्वारा बाप तुमके एडॉप्ट करते हैं।... अन्तर्मुख होकर ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन करेंगे तब वह खुशी और नशा रहेगा।''

सा.बाबा 28.3.09 रिवा.

''इस बाप ने सबकुछ बाप को दे दिया। बोला बाबा यह सब कुछ लो, फिर बाप कहते हैं तुमको सारे विश्व की बादशाही देता हूँ। ... सब कुछ एक बाप को दे दिया तो जरूर एक बाप ही याद आयेगा। ... तुम बच्चे जास्ती याद कर सकते हो।... इनको तो कितना संकल्प चलाना पड़ता है। भल समझते है कि ड्रामा में यह सब है, हम कर ही क्या सकते हैं। कल्प पहले भी अबलाओं पर अत्याचार हुए थे। नई दुनिया तो स्थापन होनी ही है।''

सा.बाबा 28.03.09 रिवा.

''यह किताब आदि सब खत्म हो जायेंगे। तुम यह जो नोट्स आदि लिखते हो, यह सब खत्म हो जाने हैं। यह सिर्फ तुम अपने पुरुषार्थ के लिए लिखते हो।... अन्त में तुम्हारी बुद्धि में सिर्फ यह याद ही रहेगी। आत्मा बिल्कुल बाप जैसी भरपूर हो जाती है।''

सा.बाबा 22.03.09 रिवा.

''अपने अन्दर में बैठकर देखो, अपने से पूछो कि ऐसा मीठा-मीठा बाबा जो हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, उनको सारे दिन में कितना याद किया ? ... यह सब खत्म हो जाना है, हम और बाबा ही रहने वाले हैं। ऐसे-ऐसे अपने अन्दर बातें करो तो बहुत मज़ा आयेगा।''

सा.बाबा 22.03.09 रिवा.

''भक्ति मार्ग में आत्मा पार्ट बजाते-बजाते पतित बनी है, अभी आत्मा को फिर पवित्र बनना है। सो जब तक अपने को आत्मा समझ परमात्मा बाप को याद नहीं करेंगे तो पवित्र कैसे बनेंगे। इस पर बच्चों को अन्तर्मुखी होकर बाप को याद करना है।... अन्तर्मुखी होने के लिए एकान्त भी चाहिए।''

सा.बाबा 25.03.09 रिवा.

''अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र है। जो अच्छे पुरुषार्थी हैं, वे खुद भी समझते हैं और औरों को भी पुरुषार्थ कराते हैं।... तुमको बहुत आन्तरिक खुशी होनी चाहिए। वह भी उन्हें होती हे, जो आप समान बनाते हैं। प्रजा बनायें तब तो राजा बनें।''

सा.बाबा 26.03.09 रिवा.

''यह युद्ध का मैदान है ना। ऐसे कोई मत समझे कि सहज बात है। मन में ढेर के ढेर तूफान वा विकल्प न चाहते हुए भी आयेंगे परन्तु इनमें मूँझना नहीं है। योगबल से ही माया भागेगी। इसमें पुरुषार्थ बहुत है।''

सा.बाबा 26.03.09 रिवा.

''अभी तुमने सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को बाप द्वारा जाना है। तुम बाप को जान गये हो, इसलिए सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त और इसके ड्युरेशन को भी जान गये हो। एक-एक बात पर विचार सागर मन्थन कर अपना आपही फैसला करना होता है।''

सा.बाबा 16.03.09 रिवा.

''सबको अपनी-अपनी देह है, शिवबाबा को विदेही कहा जाता है। यह भगवान बैठकर समझाते हैं, उनको अपनी देह नहीं है। तो अपने को भी ऐसा विदेही समझना कितना मीठा लगता है। ... यह ड्रामा कैसा बना हुआ है, यह भी तुम अभी समझते हो।''

सा.बाबा 17.03.09 रिवा.

''जिनको सर्विस का शौक है, वे तो इसमें लगे रहते हैं। उनका और सब तरफ से मोह आदि टूट जाता है। हम इन ऑखों से जो कुछ देखते हैं, उनको भूलना है।... बाबा उनको आफरीन देते हैं, जो औरों को समझाकर लायक बनाती हैं। प्राइज़ भी उनको मिलती है, जो काम करके दिखाते हैं।''

सा.बाबा 17.03.09 रिवा.

''अभी बच्चों की बुद्धि में बैठ गया है कि यह सृष्टि-चक्र हू-ब-हू रिपीट होता है।... तुम बच्चों की बुद्धि में यह चक्र चलना चाहिए। तुम्हारा नाम भी है स्वदर्शन चक्रधारी। तो बुद्धि में चक्र फिरना चाहिए ना। बाप द्वारा जो नॉलेज मिलती है, ग्रहण करनी चाहिए। ऐसी ग्रहण हो जो पिछाड़ी में बाप और रचना के आदि-मध्य-अन्त की ही याद रहे।''

सा.बाबा 18.03.09 रिवा.

''तुम जानते हो कि बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं तो अच्छी तरह पढ़ना चाहिए, गफलत नहीं करनी चाहिए। ... शिवबाबा से पढ़ना है और सौदा भी शिवबाबा से करना है।... यह शिवबाबा की बैंक है। समझो कोई बाहर में सतसंग शुरू करते हैं और कहते हैं हमें शिवबाबा की बैंक में जमा करना है। तो कैसे करेंगे ?'' (शिवबाबा से सही सम्बन्ध होगा, यज्ञ में देंगे तो शिवबाबा की बैंक में जमा होगा और उसका रिटर्न मिलेगा)

सा.बाबा 18.03.09 रिवा.

''ब्राह्मण-ब्राह्मणी वह, जिनके मुख में बाबा का गीता ज्ञान कण्ठ हो। ... हर एक को अपना पुरुषार्थ करना है। सर्विस का सबूत देना चाहिए। सर्विस से समझ में आयेगा कि यह ऐसा पद पायेगा, फिर वह कल्प-कल्पानतर के लिए हो जायेगा।''

सा.बाबा 18.03.09 रिवा.

''आत्माभिमानी बनना है। शरीर ही नहीं है तो दूसरे का सुनेंगे कैसे। यह पक्का अभ्यास करो - हम आत्मा हैं, अब हमको वापस घर जाना है। बाप कहते हैं - देह सहित यह सबका बुद्धि से त्याग करो और बाप को याद करो। इस पर ही सारा मदार है।''

सा.बाबा 18.03.09 रिवा.

''आठ घण्टा इस गवर्मेन्ट की सर्विस करो। यह भी तुम मेरी नहीं, सारे विश्व की सेवा करते हो। इसके लिए टाइम निकालो।... इस गवर्मेन्ट की सर्विस करने से तुम पद्मापदमपति बनते हो

तो कितना दिल से सेवा करनी चाहिए।''

सा.बाबा 18.03.09 रिवा.

''भाई-भाई की दृष्टि रहे, इसमें ही सारी मेहनत है। मेहनत से ही ऊंच पद मिलता है। ... अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो। भाई-भाई की दृष्टि से देखो। इस दृष्टि से कर्म-बन्धन से अतीत कर्मातीत हो जायेंगे। इस अभ्यास से यह शरीर भी भूल जाता है, सिर्फ बाप ही याद रहता है।''

सा.बाबा 21.03.09 रिवा.

''बाप तुमको गुह्य-गुह्य बातें सुनाते हैं। मेहनत तो बच्चों को करनी है। जो कल्प पहले बने थे, वे मेहनत जरूर करेंगे। ... पुरुषार्थ करने से ही ऊंच पद मिलता है। माया तो पिछाड़ी तक छोड़ती नहीं है। माया की लड़ाई चलती रहेगी। ... फिर तुम अनायास ही चले जायेंगे।''

सा.बाबा 21.03.09 रिवा.

''इस पढ़ाई से बड़ी राजाई स्थापन हो रही है। पुरुषार्थ ऐसा करना है जो हम जाकर राजा बनें। इस समय तुम जो पुरुषार्थ करते हो, वह कल्प-कल्पान्तर करते रहेंगे। ... नम्बरवन पुरुषार्थ है याद का। पहले योगबल से स्वच्छ बनें। तुम जानते हो जितना हम बाप को याद करेंगे, उतनी नॉलेज की धारणा होगी और बहुतों को समझाकर अपनी प्रजा भी बनायेंगे।''

सा.बाबा 13.03.09 रिवा.

''पुरुषार्थ तो सबको करना है। तुम यहाँ पुरुषार्थ के लिए बैठे हो। ... सवेरे बैठकर बाबा एक-एक आत्मा को सर्चलाइट देते हैं। बाप कहते हैं मैं हर एक आत्मा को बैठ करेण्ट देता हूँ, जिससे ताक़त भरती जाये। अगर किसकी बुद्धि बाहर में भटकती होगी तो फिर करेण्ट को कैच नहीं कर सकेंगे।''

सा.बाबा 13.03.09 रिवा.

''बुद्धि में सारा ज्ञान बैठ जाये, इसमें भी टाइम लगता है। सम्पूर्ण तो अभी कोई बना नहीं है। सम्पूर्ण बन जाये तो यहाँ से चले जायें। अभी तक सब पुरुषार्थ कर रहे हैं। ... पहले तो नशा चढ़ गया। अभी समझते हैं, यह तो ठीक है। राजधानी बनेंगी, बहुतों को राजाई मिलनी है। हम एक जाकर क्या करेंगे। यह अभी समझते हैं। पहले तो खुशी का पारा चढ़ गया।''

सा.बाबा 13.03.09 रिवा.

''बुद्धि बाहर भटकती रहेगी तो बैटरी चार्ज नहीं होगी। बाप आता है बेटरी चार्ज करने। उनका फर्ज है सर्विस करना, बचचे सर्विस स्वीकार करते हैं वा नहीं, यह उनकी आत्मा जाने। ... मैं एक-एक को बहुत पयार से सकाश देता हूँ। ... तुमको अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करना है, न कि ब्रह्मा को। इनको देखते भी उनको देखें।''

सा.बाबा 13.03.09 रिवा.

''भक्ति मार्ग में भी याद करना होता है एक को। एक की पूजा भी अव्यभिचारी पूजा है, वह भी अच्छी है। ... सबसे ऊच ते ऊंच सतोगुणी है शिवबाबा की भक्ति। ... तुम ज्ञान को अलग और भक्ति को अलग समझते हो। रामराज्य और रावण राज्य कैसे चलता है, यह भी तुम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो।''

सा.बाबा 14.03.09 रिवा.

''यह याद की यात्रा अलग है। इसको कहा जाता है अजपाजाप। जपना कुछ नहीं है। अन्दर में भी शिव-शिव नहीं कहना चाहिए। सिर्फ बाप को याद करना है। ... देह सहित देह के सर्व सम्बन्ध छोड़ अपने को आत्मा समझो और मुझ अपने बाप को याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे।''

सा.बाबा 14.03.09 रिवा.

''पहले तुमको यह थोड़ेही मालूम था कि बाप संगमयुग पर आकर हमको ट्रान्सफर करेंगे। ... अभी हम पुरुषोत्तम बन रहे हैं। अब जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, उतना बनेंगे। हर एक को अपने दिल से पूछना है - हम क्या बनेंगे ?''

सा.बाबा 14.03.09 रिवा.

''बेहद का बाप तो यात्रा में नहीं बैठे हैं, वे तो बच्चों को सकाश की मदद दे रहे हैं अर्थात् इस शरीर को भुला रहे हैं। ...तुम हर एक की बुद्धि बाप की तरफ जाती है और बाप की बुद्धि वा दृष्टि फिर बच्चों की तरफ जाती है। तुम यह अभ्यास करते हो डेड साइलेन्स का अर्थात् शरीर को छोड़ अलग होना चाहते हो।''

सा.बाबा 16.03.09 रिवा.

''बच्चों को बहुत पुरुषार्थ करना चाहिए परन्तु सब तो एक जैसे बन न सकें। फिर तो फीचर्स आदि भी एक जैसे हो जायें, पद भी एक हो जाये। यह तो ड्रामा बना हुआ है। इसमें फर्क नहीं हो सकता। ... ड्रामा अनुसार एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना, बाकी सब धर्मों का विनाश होना है।''

सा.बाबा 10.03.09 रिवा.

''बच्चों को बहुत पुरुषार्थ करना चाहिए। सबको पैग़ाम देना है। अच्छे-अच्छे पण्डे बन बच्चे आते हैं रिफ्रेश होने के लिए। यह भी ड्रामा में नूँध है। फिर भी आयेंगे। इतने सब आये हैं, पता नहीं इन सबको फिर देखूँगा या नहीं ?... फिर आश्चर्यवत् भागन्ती हो गये।''

सा.बाबा 10.03.09 रिवा.

''विकार में जाना, यह है सबसे बड़े ते बड़ी अवज्ञा।... मैं आकर इन ब्रह्मा द्वारा सब वेदों-शास्त्रों का सार सुनाता हूँ। अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो पाप विनाश होंगे। बाकी पानी में स्नान करने से पावन कैसे बनेंगे। ... यह सबको बताना है। इसमें डरने की बात

नहीं।''

सा.बाबा 10.03.09 रिवा.

''बाप नई दुनिया की स्थापना कर पुरानी का विनाश करा देते हैं। यह ड्रामा में नूंध है।... पहले तुम सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को आकर समझो।... पहले-पहले ये देवी-देवता बहुत थोड़े थे। ... ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन करो।... ऐसी-ऐसी बातों पर विचार सागर मन्थन करो।''

सा.बाबा 11.03.09 रिवा.

''आत्मा का शरीर में ममत्व हो गया है। नहीं तो हम आत्मायें वहाँ की रहने वाली हैं। अब फिर पुरुषार्थ करते हैं, वहाँ जाने के लिए। ... ये 5 तत्व भी खींचते हैं, ऊपर से नीचे आकर पार्ट बजाने के लिए। प्रकृति का आधार तो जरूर लेना पड़ता है। नहीं तो खेल चल न सके। यह सुख और दुख का खेल बना हुआ है।''

सा.बाबा 12.03.09 रिवा.

''आत्मा के पवित्र बनने से वहाँ शरीर भी योगबल से बनते हैं, इसलिए माया खींचती नहीं है। ... आत्मा का बल खलास हो जाता है तो 5 तत्वों का बल आत्मा को खींचता है। आत्मा को घर जाने के लिए शरीर को छोड़ने की दिल होती है।... तुम बच्चों को शरीर सहित सब चीजों से ममत्व मिटा देना है।''

सा.बाबा 12.03.09 रिवा.

''आत्मा का 5 तत्वों के पुतले से मोह हो गया है, इसलिए इसको छोड़ने की दिल नहीं होती है। नहीं तो विवेक कहता है - शरीर छूट जाये और हम बाबा के पास चले जायें। अभी पुरुषार्थ करते हो - हमको पावन बनकर बाबा के पास जाना है।... जब तक योग लगाकर आत्मा पवित्र नहीं बनी है, कर्मातीत अवस्था नहीं बनी है तब तक जा नहीं सकते।''

सा.बाबा 12.03.09 रिवा.

''आत्मा पवित्र बन जायेगी फिर इस शरीर को छोड़ने और धारण करने में कोई तकलीफ नहीं होगी। ... तुमको तो खुशी रहनी चाहिए हम जाते हैं बाबा के पास। ... जाने का रास्ता तो एक बाप ही बताते हैं। हम बाबा के पास जायें, तुमको उसकी खुशी होती है।''

सा.बाबा 12.03.09 रिवा.

''इन ऑखों से आत्मा जो कुछ देखती है, वह सब माया ही माया है। इस सबसे ममत्व निकाल दो। ... देहाभिमान है सबसे कमजोर बनाने वाला।... मुझे याद करो तो आत्मा पवित्र हो जाये। पावन बनने की और कोई युक्ति नहीं है।''

सा.बाबा 12.03.09 रिवा.

''बाप समझाते हैं - यह ड्रामा बना हुआ है, यह कब बन्द नहीं हो सकता है। इसमें मोक्ष आदि की कोई बात नहीं है। यह तो बना-बनाया ड्रामा है। कहते भी हैं - बनी-बनाई चिन्ता ताकी

कीजिये, जो अनहोनी होये। जो पास्ट हो गया, वह फिर होना ही है। चिन्ता की बात नहीं है। ड्रामा में जो नूँध है, उसमें कुछ भी फर्क नहीं पड़ सकता है।''

सा.बाबा 12.03.09 रिवा.

''तुम पुरुषार्थ ही करते हो कि याद से पाप विनाश हो जायें। रावण के कारण बहुत पाप हुए हैं, जिनसे छूटने का रास्ता बाप ही बतलाते हैं।... याद करना भी मासी का घर नहीं है। मुझे याद करने के लिए माया तुमको बहुत हैरान करती है। बाबा अपना अनुभव भी सुनाते हैं ... दोनो साथ इकट्ठे होते हुए भी घड़ी-घड़ी भूल जाता हूँ। यह याद पड़ा, फलाना याद पड़ा। ... ये बुद्धि से समझने की बात है।''

सा.बाबा 12.03.09 रिवा.

''बाबा का विचार सागर मन्थन सुबह को चलता है। तुमको भी ऐसा बनना है, जैसा टीचर। फिर भी फर्क तो जरूर रहता है। ... वह है ऊंचे ते ऊंचा, हम हैं देहधारी। तो बाबा मिसल 100 परसेन्ट कैसे बनेंगे ? ये बड़ी गुह्य बातें हैं।''

सा.बाबा 3.03.09 रिवा.

''सन्यासी भी इस देह से न्यारी अशरीरी अवस्था का अभ्यास करते-करते शरीर छोड़ देते हैं। परन्तु उन्हों का रास्ता ही अलग है, इसलिए उनको फिर जन्म लेना पड़ता है। ... वापस कोई जा नहीं सकता। बाप को याद करते-करते शरीर का भान निकल जायेगा। बैटरी भरेगी तब जब योग होगा और जब बाप से योग होगा तो आत्मा सतोप्रधान बनेंगी। तमोप्रधान आत्मा वापस घर नहीं जा सकती।''

सा.बाबा 4.03.09 रिवा.

''अचानक जब समय आया तो बाबा आ गया। बाबा अब नई-नई बातें समझाते रहते हैं। ... जैसे यहाँ राव और रंक हैं, वैसे वहाँ भी राव और रंक बनते हैं। सारा मदार पुरुषार्थ पर है।''

सा.बाबा 5.03.09 रिवा.

''ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। दोष किसको दे नहीं सकते। कल्प पहले जिसने जितनी पढ़ाई की होगी, उससे उतनी ही होगी। जास्ती हो नहीं सकती। कितना भी पुरुषार्थ करायें, कोई फर्क नहीं पड़ेगा। फर्क तब पड़े, जब किसको सुनायें। नम्बरवार तो होते ही हैं। कहाँ राव और कहाँ रंक!''

सा.बाबा 5.03.09 रिवा.

''ये अविनाशी ज्ञान रत्न धारण करने से राव बनते हैं। अगर पुरुषार्थ नहीं करते हैं तो रंक बन जाते हैं। सबका अपना-अपना पार्ट है। कोई गिरता है, कोई चढ़ता है। कोई की तकदीर अच्छी है, कोई की कम। तदबीर तो बाबा एकरस कराते हैं, पढ़ाई भी एकरस है, तो टीचर भी एक है।''

सा.बाबा 5.03.09 रिवा.

''बाप कहते हैं - आत्माभिमानी बनो। कितना नशा चढ़ना चाहिए - हमको भगवान पढ़ाते हैं।

बाप तुमको अथाह खज़ाने देते हैं, उनको धारण करना है। मैं तुम्हारी ज्ञान रत्नों से झोली भरता हूँ। फिर नम्बरवार जो झोली भरते हैं, वे फिर दान भी करते हैं। वे सबको प्यारे लगते हैं। अपने पास ही नहीं होगा तो देंगे क्या।''

सा.बाबा 5.03.09 रिवा.

''चित्र आदि जो भी ड्रामा अनुसार बनें हैं, वे ही ठीक हैं।... बच्चे कहते हैं - बाबा, क्या हमारे समझाने में कोई भूल है, जो मनुष्य समझते नहीं हैं? बाबा फट से कह देते हैं - हाँ, भूल है, तुम आत्माभिमानी अवस्था में रहकर नहीं समझाते हो तो आँखे क्रिमिनल हो जाती हैं। सिविल तब बनेंगी, जब तुम अपने को आत्मा समझेंगे।''

सा.बाबा 6.03.09 रिवा.

''हम आत्मा हैं, शिवबाबा हमारा बाप है, हम आत्मायें आपस में भाई-भाई हैं, जब इस बात को भूलते हो तब तुम तमोप्रधान बन जाते हो।... अब बाप की याद से तुम्हारी सब मनोकामनायें पूर्ण हो जायेंगी।... मूल बात है ही अलफ को जानने की। अलफ को जानने से तुम सब-कुछ जान जायेंगे। अलफ को न जानने से तुम कुछ भी समझ नहीं सकेंगे।''

सा.बाबा 6.03.09 रिवा.

''अपने आपसे पूछो - हम सतोप्रधान बनें हैं, दिल गवाही देती है? अभी कर्मातीत अवस्था तो हुई नहीं है। होनी है जरूर।... किसको भी बहुत धैर्य और प्यार से समझाना है। ... तुम मिनिस्टर आदि को भी समझा सकते हो। समझाना ऐसा चाहिए, जो उनको पानी-पानी कर दे।''

सा.बाबा 7.03.09 रिवा.

''इसमें पुरुषार्थ की मार्जिन भी है। जितना श्रीमत पर पुरुषार्थ करेंगे, उतना ऊंच पद मिलेगा। ... बाप कहते हैं - अपने को आत्मा समझो, फिर क्यों नहीं श्रीमत को मानते हो। ... पुरुषार्थ ऐसा करना है जो जब शरीर छोड़ें तो बाबा की याद हो, वशीकरण मन्त्र याद हो, और कुछ भी याद न हो।''

सा.बाबा 7.03.09 रिवा.

''किसको घायल करने में योगबल चाहिए।... योगबल से तुम किसको कशिश कर सकेंगे। अभी बच्चे भल भाषण अच्छा करते हैं परन्तु योग की कशिश कम है। मुख्य बात है योग की। ...इस ज्ञान-योग से तुम्हारे अन्दर डान्स होती है। बाप की याद में रहते-रहते तुम अशरीरी बन जाते हो। बुद्धि में ज्ञान भी चाहिए।''

सा.बाबा 7.03.09 रिवा.

''तुम्हारे पास फर्स्ट क्लास चीज है। कोई कहे इससे क्या फायदा है? बोलो, हमारा फर्ज है अन्धों की लाठी बन रास्ता दिखाना।... तुम सबको चढ़ती कला का रास्ता बताते हो। एक

बाप को याद करते रहो तो तुमको बहुत खुशी होगी और विकर्म भी विनाश होंगे।''

सा.बाबा 7.03.09 रिवा.

''तुम बच्चों के मुख से सदैव रत्न निकलना चाहिए, पत्थर नहीं।... भल चाहते भी हैं कि हम किचड़े से जल्दी बाहर निकलें परन्तु जल्दी हो न सके।... समझाने वालों में भी नम्बरवार हैं। युक्तियुक्त समझानी पिछाड़ी में होगी, तब तुम्हारे बाण तीखे चलेंगे।''

सा.बाबा 27.02.09 रिवा.

''झाड़ पहले छोटा होता है, फिर बड़ा होता है। बहुत टाल-टालियाँ, पत्ते हो जाते हैं। रोज़ कितने जन्म लेते हैं, मरते भी कितने हैं। ... मनुष्यों की वृद्धि होती जाती है। ... पहले अपना पुरुषार्थ करो जो ऐसा बन सको। मुख्य है याद की यात्रा और सबको पैगाम देना है।''

सा.बाबा 27.02.09 रिवा.

''यह तो बाप समझते हैं कि सब नम्बरवार ही समझेंगे। फिर भी पुरुषार्थ कराते रहते हैं। ... अभी कोई पाप नहीं करना। मेरी आज्ञा का उलंघन किया तो बहुत दण्ड पड़ेगा। सतगुरु का निन्दक ठौर न पाये।... मूल बात है बाप को और सृष्टि-चक्र को याद करो तो तुम चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे। पुरुषार्थ कर शरीर का भान निकाल दो।''

सा.बाबा 28.02.09 रिवा.

''इस ज्ञान को मानेंगे वे ही, जिन्होंने कल्प पहले माना है। इसमें अपनी चलन को बहुत सुधारना पड़ता है। सर्विस करनी पड़ती है। बहुतों का कल्याण करना है। बहुतों को जाकर रास्ता बताना है। बहुत मीठी जबान से समझाना है।''

सा.बाबा 24.02.09 रिवा.

''अपने को शरीर से न्यारा समझना है। इसको ही जीते जी मरना कहा जाता है। अपना घर ही याद रहे। ... अपने को आत्मा समझकर चलने से कोई भी देहधारी में ममत्व नहीं रहेगा। ...यह देहधारी की याद एकदम उड़ा देनी चाहिए।''

सा.बाबा 25.02.09 रिवा.

''अब तुमको वापस चलना है, इसलिए कोई देहधारी से ममत्व न रहे। ... शरीर को नहीं, आत्मा को देखना है। शरीर को देखने से तुम फँस मरेंगे। ... तुम इस शरीर में फँसे हुए हो। मैं तुमको छुड़ाने आया हूँ। अब तुम्हारे 84 जन्म पूरे हुए, अब इस शरीर से भान निकालो।''

सा.बाबा 25.02.09 रिवा.

''पिछाड़ी में तुमको एकदम भाई-भाई होकर रहना है। नंगे आये थे, नंगे ही जाना है। ऐसा न हो कि पिछाड़ी में कोई याद आ जाये। ... अभी कोई शरीर छोड़ेंगे तो वे या तो सूक्ष्मवतन में

जायेंगे या यहाँ ही जन्म लेंगे। बाकी जो कोई कमी रही होगी, उसका पुरुषार्थ करेंगे।''

सा.बाबा 17.02.09 रिवा.

''माया के राज्य में बहुत भूलचूक होती रहती है, जिस कारण से सहन करना पड़ता है। जो पूरा नहीं पढ़ेंगे, कर्मातीत अवस्था को नहीं पायेंगे तो सहन करना ही पड़ेगा। फिर पद भी कम हो जायेगा। विचार सागर मन्थन कर औरों को सुनाते रहेंगे तब चिन्तन चलेगा। जिसके पास जितने ज्ञान रतन होंगे, उनको उतनी खुशी भी होगी।''

सा.बाबा 17.02.09 रिवा.

''आत्मा जानती है कि हम ऐसे-ऐसे चक्र लगाते हैं। अब फिर जाना है घर। बाप ने कहा है - मुझे याद करो तो घर पहुँच जायेंगे। ऐसे भी नहीं कि तुम इस समय उस अवस्था में बैठ जायेंगे। नहीं, बाहर की बहुत बातें बुद्धि में आ जाती हैं।... और सब बातों को समेटकर एक को ही याद करो।''

सा.बाबा 18.02.09 रिवा.

''स्वदर्शन चक्रधारी बनकर तुमको अन्त तक पुरुषार्थ करना है।... वह धन्धा करते, साथ में आप समान बनाने का यह धन्धा जो बाप ने दिया है, वह भी करना है। यह भी शरीर निर्वाह हुआ ना। वह है अल्प काल का और यह है 21 जन्मों के लिए।''

सा.बाबा 18.02.09 रिवा.

''इसमें एकान्त में विचार सागर मन्थन करना होता है। रात्रि को जो बच्चे पहरा देते हैं, उनको टाइम बहुत अच्छा मिलता है, वे बहुत याद कर सकते हैं। बाप को याद करते स्वदर्शन चक्र भी फिराते रहो। याद करेंगे तो खुशी में नींद भी फिट जायेगी। जिसको धन मिलता है, वह बहुत खुशी में रहता है।''

सा.बाबा 18.02.09 रिवा.

''अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो इस योग अग्नि से तुम्हारे पाप कट जायेंगे। कल्प पहले भी मैंने तुमको यह ज्ञान सिखलाकर देवी-देवता बनाया था। ... अभी तुम समझते हो कि यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है, इसलिए तुम्हारा नाम है स्वदर्शन चक्रधारी।''

सा.बाबा 20.02.09 रिवा.

''भूतों को भगाने की बहुत मेहनत करनी है। ... बाप हर बात में समझाते रहते हैं परन्तु नहीं करते हैं तो समझा जाता है कि पूरा योग नहीं है। ... इस योग से ही तुम विश्व के मालिक बनते हो। पढ़ाई है सोर्स ऑफ इन्कम। पढ़ाई से ही तुम नम्बरवार ऊच पद पाते हो।...भाई-भाई समझने के क्रिमिनल दृष्टि नहीं जायेगी।''

सा.बाबा 21.02.09 रिवा.

''बाप कितना प्यार से समझाते रहते हैं। बाप को कितना प्यार से याद करना चाहिए। बाबा से

बातें करनी हैं। बाबा, आपकी तो कमाल है, हम कितने पत्थरबुद्धि थे, आप हमको कितना ऊंच बनाते हो। आपकी मत बिगर हम और किसकी मत पर नहीं चलेंगे।''

सा.बाबा 21.02.09 रिवा.

''तुम जानते हो - अब यह पुरानी दुनिया खत्म होने वाली है, हमने 84 जन्मों का चक्र पूरा किया। अभी हम पुरुषार्थ करते हैं वापस सुखधाम जाने का, वाया शान्तिधाम। शान्तिधाम तो जरूर जाना है।''

सा.बाबा 16.02.09 रिवा.

''याद करने की बहुत मेहनत करनी है, इनको देखते भी नहीं देखो। बाप कहते हैं - भल मैं देखता हूँ, परन्तु मेरे में ज्ञान है कि मैं थोड़े रोज़ का मुसाफिर हूँ। वैसे ही तुम भी यहाँ पार्ट बजाने आये हो, इसलिए इससे ममत्व निकाल दो।''

सा.बाबा 16.02.09 रिवा.

''छोटी सी आत्मा से शरीर कितना बड़ा देखने में आता है। छोटी आत्मा अलग हो जाती है तो फिर कुछ भी नहीं देख सकती। ... इन आंखों से कितना बड़ा धरती-आसमान देखने में आता है। बिन्दी आत्मा निकल जाने से कुछ नहीं रहता है।... ये बहुत विचार करने की बातें हैं।''

सा.बाबा 17.02.09 रिवा.

''यह कितनी वेल्युबुल पढ़ाई है। बाप के पास ही एक्यूरेट नॉलेज है, जो बच्चों को देते हैं। ... तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र फिरता रहता है। हम 84 जन्म लेते हैं। सारी सृष्टि ऐसे चक्र में फिरती रहती है। यह अनादि-अविनाशी बना-बनाया ड्रामा है। इसमें कुछ भी एडीशन-करेक्शन हो नहीं सकती। गायन भी है - बनी-बनाई... चिन्ता ताकी कीजिये, जो अनहोनी होये।''

सा.बाबा 17.02.09 रिवा.

''तुमको कोई भी बात में अफसोस करने की जरूरत नहीं है। सदैव हर्षित रहना है। ... यह तो बेहद का अविनाशी ड्रामा है। ऐसी-ऐसी बातों पर विचार कर पक्का कर लेना चाहिए। ... पार्ट बजाते-बजाते हम सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हैं, फिर सतोप्रधान बनना है।''

सा.बाबा 17.02.09 रिवा.

''इसमें विचार सागर मन्थन करना होता है। बेहद का बाप जो समझाते हैं, उसको ज्यों का त्यों हम धारण कर लें तो बहुत अच्छा पद पा लें। परन्तु सब एक जैसी धारणा नहीं कर सकते हैं। ... ड्रामा को साक्षी होकर देखना होता है। यह नॉलेज तुमको अब मिलती है, फिर कभी नहीं मिलेगी।''

सा.बाबा 17.02.09 रिवा.

''कोई पुरुषार्थ अच्छा करते हैं, कोई कुछ भी नहीं करते। यह भी ड्रामा में नूँध है। कल्प पहले जिन्होंने जितना पुरुषार्थ किया है, उतना ही अब भी करेंगे।''

सा.बाबा 17.02.09 रिवा.

''जो भी वाणी से परे जाने के लिए, गोया घर जाने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं, उनके प्रति रुहानी बाप समझाते हैं। वह सभी आत्माओं का घर है।... मैं आया हूँ तुमको घर ले जाने अर्थ। इसलिए इस देह और देह के सम्बन्धों से उपराम होना है।''

सा.बाबा 10.02.09 रिवा.

''बाप का बनकर विकार में गया और मरा, फिर नये सिर पुरुषार्थ करना पड़े। ... ऐसे नहीं कि उनको एलाउ नहीं करना है। नहीं, उनको समझाना है जो कुछ याद की यात्रा की, पढ़ा वह सब खलास हो गया। ... दो बारी माफी दी, फिर केस होपलेस हो जाता है, तो कहेंगे गेट आउट।''

सा.बाबा 11.02.09 रिवा.

''बाप समझाते तो बहुत अच्छा हैं परन्तु कल्प-कल्प जो जितना पढ़े हैं, वे उतना ही पढ़ते हैं। पुरुषार्थ से सारा मालूम पड़ जाता है। स्थूल सेवा की भी सब्जेक्ट है। मन्सा सेवा नहीं तो वाचा, कर्मणा सेवा करनी चाहिए।... पहले याद की यात्रा में रहना है, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है।''

सा.बाबा 11.02.09 रिवा.

''तुम बच्चों की पक्की आदत पड़ जानी चाहिए कि हम आत्मा हैं, बाप परमात्मा हम आत्माओं को सुनाते हैं। ... महिमा एक निराकार बाप की ही है। विचार किया जाये तो बाप की कितनी महिमा है और कितनी उनकी सर्विस है।''

सा.बाबा 13.02.09 रिवा.

''इन बातों को समझने के लिए अच्छी बुद्धि चाहिए। नई-नई युक्तियाँ निकालनी चाहिए। मेहनत करनी है, रतन निकालना है। इसलिए बाबा कहते हैं - विचार सागर मन्थन करके लिखो, फिर पढ़ो कि क्या-क्या मिस हुआ ?... बाप कल्प पहले वाली नॉलेज सुनाते हैं।''

सा.बाबा 13.02.09 रिवा.

''सतोप्रधान बनने के लिए बहुत मेहनत करनी है। यह पुरुषार्थ भी हम अभी करते हैं। इसमें अन्तर्मुखी होकर विचार सागर मन्थन करना है। घूमने-फिरने जाते हो तो भी बुद्धि में यही होना चाहिए। ... सारे चक्र का ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में भरपूर है तो तुमको कितना हर्षित रहना चाहिए।''

सा.बाबा 6.02.09 रिवा.

''बाप शिक्षा देते हैं - सदैव सबको सुख देते रहो परन्तु यह अवस्था कोई जल्दी नहीं बनती है। सेकेण्ड में बाप का वर्सा तो ले सकते हो बाकी लायक बनने में टाइम लगता है। ... तुम सब विश्व के मालिक थे, अभी फिर से बन रहे हो। यह तो तुम बच्चों को अन्दर में खुशी होनी चाहिए।''

सा.बाबा 7.02.09 रिवा.

''बाबा योग के लिए दिन प्रतिदिन नई-नई बातें भी समझाते हैं। आगे थोड़ेही यह समझाते थे कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। अब बाबा यह बात जोर से उठाते हैं, जिससे भाई-बहन का सम्बन्ध भी हट जाये, सिर्फ भाई-भाई की दृष्टि रह जाये। ... अन्त तक यह पुरुषार्थ चलना है। जब सतोप्रधान बन जायेंगे तो यह शरीर छोड़ देंगे और घर वापस चले जायेंगे।''

सा.बाबा 4.02.09 रिवा.

''बाप तो रास्ता बताते हैं कि ऐसे-ऐसे करो तो विकर्म विनाश होंगे।... यह भी ड्रामा में उनका पार्ट है। इसको ही मदद कहो, कृपा कहो। ड्रामा अनुसार श्रीमत गाई हुई है।... ऐसे नहीं कि मदद दे कर्मातीत अवस्था में ले जायेंगे। नहीं, अपने को आत्मा समझने का बहुत अभ्यास करना है।''

सा.बाबा 2.02.09 रिवा.

''साक्षात्कार हुआ, खुश हो गये। यह तो और ही धोखे में रह जाते हैं कि बाप को याद कर अपने पाप भस्म करो। ... नॉलेज को और बाप को याद करते-करते ड्रामा अनुसार कर्मातीत अवस्था को पा लेंगे। जैसे नंगे आये थे, वैसे ही नंगे जाना है। तुम दैवी संस्कार यहाँ से ही ले जाते हो।''

सा.बाबा 2.02.09 रिवा.

''सारा मदार पढ़ाई पर, दैवी गुणों की धारणा पर है और फिर औरों को भी पढ़ाना है।... बाप साक्षी होकर देखते हैं और बच्चों को भी कहते हैं तुम भी साक्षी होकर देखो। अपने को भी देखो कि हम ठीक रीति पढ़ते हैं वा नहीं, श्रीमत पर चलते हैं वा नहीं, औरों को आप समान बनाने की सर्विस करते हैं वा नहीं।''

सा.बाबा 31.01.09 रिवा.

''माया से युद्ध है। ऐसे नहीं कि फट से माया पर जीत पा लेंगे। इस समय तक एक ने भी माया पर जीत नहीं पाई है। जीत पाने से तो फिर जगतजीत होने चाहिए।... क्लास में मानीटर का रिगार्ड रखते हैं। नम्बरवन सिकीलधा बच्चा तो यह है ना।... इनका देखो बाप से कितना लव है।''

सा.बाबा 31.01.09 रिवा.

''जो बड़ा इम्तहान पास करते हैं, वे कभी अपना समय वेस्ट नहीं करते।... बच्चों को अपने कल्याण के लिए बुद्धि चलानी चाहिए कि हम कैसे पुरुषार्थ कर बाबा से वर्सा लूँ।''

सा.बाबा 31.01.09 रिवा.

''ऐसा कोई न समझे कि हमने धन से मदद की है, इसलिए हमारा पद ऊंचा होगा। यह बिल्कुल भूल है। सारा मदार सर्विस और पढ़ाई पर है।... बाबा देखते हैं कि ये अपने को घाटा डाल रहे हैं, इनको पता नही पड़ता। इसमें ही खुश हो जाते हैं कि हमने पैसे दिये हैं, इसलिए माला में नजदीक आयेंगे। ... योग में नहीं रहते, धारणा नहीं करते, किस पर रहम

नहीं करते तो बाकी बाप को क्या फॉलो करते हैं।''

सा.बाबा 31.01.09 रिवा.

''जो जितनी सर्विस करते हैं, वे अपना ही कल्याण करते हैं। अपनी हड्डियां सर्विस में देते हैं तो अपनी ही कमाई करते हैं।... अपने से आपही पूछना चाहिए कि हम सारे दिन में कितनी सर्विस करते हैं।''

सा.बाबा 31.01.09 रिवा.

''बाप तो सबको एकरस पढ़ाते हैं परन्तु कोई की बुद्धि कैसी और कोई की कैसी होती है। फिर भी पुरुषार्थ तो करना चाहिए ना।... अन्तर्मुखी होकर अपनी अवस्था को देखना है और सुधारने का भी पुरुषार्थ करना है।''

सा.बाबा 31.01.09 रिवा.

''ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन करना है। जो करेंगे सो पायेंगे। वे ही खुशी में आयेंगे और दूसरों को भी खुशी में लायेंगे। औरों पर भी कृपा करनी है, रास्ता बताने की। ... संगमयुग याद रहे तो खुशी का पारा चढ़ा रहे, बाप-टीचर-सत्गुरु याद रहे तो भी खुशी का पारा चढ़ा रहे।''

सा.बाबा 27.01.09 रिवा.

''स्टूडेण्ट्स खुद समझ सकते हैं कि हम कहाँ तक पढ़ते हैं और फिर किसको पढ़ा सकते हैं वा नहीं। ... तुमको बनना है सोने की बुद्धि परन्तु वह उनकी बनेंगी, जो सर्विस में रहेंगे। ... फार्म भराना, हर एक को अलग-अलग समझाना... ये सब युक्तियाँ अपनाओगे तब तुम सर्विस में सक्सेसफुल होते जायेंगे।''

सा.बाबा 28.01.09 रिवा.

''हर एक बच्चे को ईमानदारी से अपनी जाँच करनी हैं - हमारे में क्या-क्या खामी है, जिस कारण से मैं समझता हूँ कि मैं ऊंच पद नहीं पा सकूँगा।... साक्षी होकर अपनी चलन को देखना है, औरों की चलन को भी देख सकते हो परन्तु पहले अपने को देखना है। दूसरों को देखने से अपना भूल जायेंगे।''

सा.बाबा 29.01.09 रिवा.

''हर एक को पहले अपनी सर्विस करनी है। दूसरों की सर्विस करना माना अपनी सर्विस करना। तुम शिवबाबा की सर्विस नहीं करते हो। शिवबाबा तो खुद सर्विस पर आये हैं।'

सा.बाबा 29.01.09 रिवा.

''पिछाड़ी में कोई भी चीज या देहधारी याद न आये, इतना लव से बाप को याद करना है। ... बाप की याद सतानी चाहिए। भूलनी नहीं चाहिए बल्कि और ही याद सतानी चाहिए। ... पुरुषार्थ तो सभी करते हैं परन्तु जो जास्ती पुरुषार्थ करते हैं, वे जास्ती प्राइज़ पाते हैं।''

सा.बाबा 29.01.09 रिवा.

''भक्ति की गीता पर और ज्ञान की गीता पर अच्छी तरह से विचार सागर मन्थन करना है। ... त्रिमूर्ति शिव भगवान से संगमयुग पर गीता सुनने से सद्गति होती है। ऐसी-ऐसी प्वाइन्ट्स पर जब कोई विचार सागर मन्थन करे और सुनाये तब औरों पर भी असर पड़े।''

सा.बाबा 30.01.09 रिवा.

''बच्चे अगर मुख्य-मुख्य प्वाइन्ट्स धारण करें तो भी बहुत सर्विस कर सकते हैं। अगर बाप को जानते हो तो दूसरों को भी परिचय दो। किसको परिचय नहीं देते तो गोया अपने में ही ज्ञान नहीं है। ... कल्याणकारी बाप के बच्चे हैं तो किसका कल्याण करना चाहिए ना।''

सा.बाबा 30.01.09 रिवा.

''आगे चलकर तुमको सब साक्षात्कार होंगे परन्तु उस समय कुछ कर नहीं सकते।... इसलिए बाबा सावधान करते रहते हैं परन्तु सब ऊंच चढ़ जायें, यह तो हो नहीं सकता।... इसमें पुरुषार्थ बहुत अच्छा चाहिए, चित्रों पर समझाने की बहुत प्रैक्टिस करनी चाहिए।''

सा.बाबा 26.01.09 रिवा.

''तुमको नशा रहना चाहिए कि हम किसके बच्चे हैं, भगवान हमको पढ़ाते हैं। ... बाप को याद करते-करते अथवा बाबा-बाबा कहते रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। ... हम कितने भाग्यशाली हैं। ... कहते हैं अतीन्द्रिय सुख उनसे पूछो, जिनको भगवान पढ़ाते हैं।''

सा.बाबा 26.01.09 रिवा.

''ये सब बातें बड़ी समझने की हैं। कोई तो ड्रामा अनुसार कुछ भी धारण नहीं कर सकते हैं। ... ड्रामा अनुसार सभी एक जैसा पुरुषार्थ तो कर नहीं सकते। आगे भी नहीं किया होगा। बाप भी कहते हैं - तुम्हारा कोई दोष नहीं है। तकदीर में नहीं है तो बाप क्या कर सकते।''

सा.बाबा 16.01.09 रिवा.

''अभी जीते जी पुरानी दुनिया से मरकर आकर बाप का बनना है। अपने को आत्मा समझ अपने बाप को याद करना है। पुरानी दुनिया से बुद्धि हट जानी चाहिए। उसके लिए ही पुरुषार्थ करना चाहिए।''

सा.बाबा 18.10.08 रिवा.

''अभी तुम बाप जैसा गुणवान बन रहे हो तो कितना पुरुषार्थ करना चाहिए।... अभी बाप द्वारा सारी दुनिया की उन्नति हो रही है।... कम से कम 8 घण्टा इस गवर्मेन्ट की सर्विस करो। जो भी आये, उसको आत्मा की उन्नति के लिए रास्ता बताओ।''

सा.बाबा 17.1.09 रिवा.

''अब तुम अच्छी रीति पुरुषार्थ करो, तुम धन के पीछे क्यों मरते हो।... अगर कम पुरुषार्थ

किया तो जाकर प्रजा में दास-दासियाँ बनेंगे, कितना घाटा हो जायेगा। अपने घाटे और फायदे का भी विचार करो।''

सा.बाबा 20.01.09 रिवा.

''मैं राजाई नहीं लेता हूँ, मैं तुमको स्वर्ग में भेज देता हूँ। कितना मजे का खेल है। ... इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर पुरुषोत्तम बनने का पूरा-पूरा पुरुषार्थ करना है। बाप को याद करने का पुरुषार्थ करते रहो तो विकर्म विनाश होंगे और जितना जो पढ़ेंगे, वे ऊंच कुल में जायेंगे। बाप कहते हैं अपनी घोट तो नशा चढ़े। ... पढ़ाई एक दिन भी मिस नहीं करना चाहिए। ... पिछाड़ी में कर्मातीत अवसथा होनी है। तुम याद करते-करते अशरीरी बन जायेंगे, तब अनायास ही उड़ेंगे।''

सा.बाबा 21.01.09 रिवा.

''याद का पुरुषार्थ तो इनको भी करना है।... सबसे जास्ती मेहनत इनको करनी पड़ती है। युद्ध के मैदान में महारथी से... जितना बड़ा पहलवान, उतना जास्ती माया परीक्षा लेती है। माया बहुत तूफान लाती है।''

सा.बाबा 20.9.04 रिवा.

''तुम बच्चों को कभी शास्त्रार्थ नहीं करना चाहिए। तुमको तो जाकर बाप का परिचय देना है। ... तुमको ऊंच पद पाने का बहुत पुरुषार्थ करना है। पोजीशन के लिए मनुष्य रात-दिन कितना माथा मारते हैं। यह भी पढ़ाई है।''

सा.बाबा 8.01.09 रिवा.

''तुम्हारे में भी कोई महारथी, कोई घोड़ेसवार, कोई प्यादे हैं। यह भी ड्रामा में पार्ट है। यह तो समझते हो - आखरीन जीत तुम्हारी होनी ही है। जो कल्प पहले बने थे, वे ही बनेंगे। बच्चों को पुरुषार्थ तो करना ही है।''

सा.बाबा 8.01.09 रिवा.

''अभी तुम बाबा के गुणों वाले बन रहे हो, फिर बनेंगे देवताओं के गुण वाले। ... ये सब बातें बाप ही समझाते हैं। तुम्हारी महिमा भी बताते हैं, फिर कहते पुरुषार्थ कर ऐसा बनो। बाप और वर्से को याद करो और दैवी गुण धारण करो।''

सा.बाबा 10.01.09 रिवा.

''यह कहानी है - कैसे राजाई ली और फिर कैसे गँवाई। इसको अच्छी तरह समझना है। हमने ही हार खाई है, हमको ही जीत पहनना है। बहादुर बनना चाहिए। अपनी अवस्था को जमाना चाहिए।''

सा.बाबा 10.01.09 रिवा.

''आत्मिक दृष्टि पक्की होने से और ख्यालात आपही उड़ जायेंगे। यह है नम्बरवन सब्जेक्ट। इसमें दैवी गुण भी ऑटोमेटिकली धारणा होते रहेंगे।... पहले-पहले यह दृष्टि पक्की हो तब समझें कि हम आत्माभिमानी हैं। आत्माभिमानी और देहाभिमानी में रात-दिन का फर्क है।''

सा.बाबा 13.01.09 रिवा.

''मैं बाबा का सिकीलधा बच्चा हूँ, फिर भी सदैव याद ठहरती नहीं है। और-और तरफ

ख्यालात चले जाते हैं। ड्रामा का लॉ नहीं, जो एकदम याद ठहर जाये और कोई ख्याल न आये। ... मैं जानता हूँ कि मैं पहले नम्बर में राजकुमार बनूँगा, फिर भी याद भूल जाती है। अनेक प्रकार के ख्यालात आ जाते हैं। ... सब ख्यालात बन्द तब होंगे, जब कर्मातीत अवस्था होगी।''

सा.बाबा 14.01.09 रिवा.

''आत्मा सम्पूर्ण बन जाये फिर तो यह शरीर रह न सके।... साइलेन्स के बल से हम जब साइन्स पर जीत पाते हैं तब साइन्स भी सुखदाई बन जाती है।... सतयुग में तो सुख ही सुख है, दुख का नाम नहीं। ऐसी बातें सारा दिन बुद्धि में रहनी चाहिए।''

सा.बाबा 14.01.09 रिवा.

''अपने को आत्मा समझ मामेकम् याद करो तो बेड़ा पार हो जायेगा। ... इसमें आशीर्वाद की कोई बात नहीं है। टीचर कभी आशीर्वाद नहीं करते। टीचर तो पढ़ाते हैं। जितना जो पढ़ते, मैनर्स धारण करते, ऐसा पद पाते हैं। अपना रजिस्टर आपेही देखना है।''

सा.बाबा 2.01.09 रिवा.

''इस ज्ञान को समझने से हमारी आत्मा तृप्त हुई है। तृप्त परमात्मा तो नहीं कहा जाता है। ... यह प्रैक्टिस बहुत अच्छी चाहिए। हम आत्मा हैं, हमने इतने जन्म ले पार्ट बजाया है। ... बाबा जो मुरली चलाते हैं, यह है खज़ाना। जब तक बाप दे, तब तक तुम बाप को याद करते रहो।''

सा.बाबा 5.01.09 रिवा.

''जो ऊंच ते ऊंच थे, वे ही फिर अन्त में नीचे तपस्या कर रहे हैं। राजयोग की तपस्या एक बाप ही सिखलाते हैं। ... तुम जानते हो - अभी हमारे ऊपर बृहस्पति की दशा है, तब हम स्वर्ग में जाने का पुरुषार्थ कर रहे हैं।''

सा.बाबा 7.01.09 रिवा.

''तुम जानते हो - सच-सच स्वर्ग में जाने का पुरुषार्थ अभी हम कर रहे हैं। ... बाप तुमको बेहद की बातें सुनाते हैं। तुम बच्चों को बहुत पुरुषार्थ करना चाहिए। तुमको बहुत नशा चढ़ना चाहिए। जिन्होंने कल्प पहले पुरुषार्थ कर जो पद पाया है, वही पायेंगे।''

सा.बाबा 7.01.09 रिवा.

''स्वर्ग के मालिक तो सब बनेंगे, बाकी पद का मदार है पढ़ाई पर। बाबा कहते हैं - पुरुषार्थ करो, मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं। ... अभी हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं।''

सा.बाबा 7.01.09 रिवा.

''यहाँ सुनना भी है और सुनाना भी है। जब तक सुनाने वाले नहीं बनें हैं, तब तक पास हो न सकें।... धारणा कर फिर औरों को करानी है, फॉलोअर्स बनाने हैं।... हर एक को माँ-बाप

समान बनना है। औरों को सुनाये तब पास हो और बाप की दिल पर चढ़े।''

सा.बाबा 11.12.08 रिवा.

''इस समय का पुरुषार्थ कल्प-कल्प का बन जायेगा, गारण्टी हो जायेगी। अब के पुरुषार्थ से पता पड़ेगा कि कल्प पहले भी इसने ऐसे पुरुषार्थ किया था और कल्प-कल्प ऐसा पुरुषार्थ चलेगा। ... यह नॉलेज है तीसरा नेत्र मिलने की।''

सा.बाबा 11.12.08 रिवा.

''ऐसी-ऐसी बातों में रमण करने से फिर यह पुरानी दुनिया भूल जायेगी। आपस में भी ऐसी-ऐसी बातें करनी चाहिए तो तुमको बहुत खुशी रहेगी। ... 84 जन्मों की हिस्ट्री-जॉग्राफी को तुम जानते हो। ... यह हिस्ट्री-जॉग्राफी सबको सुनाते रहो।... इस चक्र को याद करने से तुमको बड़ी खुशी रहनी चाहिए।''

सा.बाबा 12.12.08 रिवा.

''उठते-बैठते, चलते-फिरते तुम लाइट हाउस हो।... अभी तुम सेवा पर उपस्थित हो। तुम सेवाधारियों के बाद में भक्ति मार्ग में मन्दिर बनेंगे।... जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, उस अनुसार वे स्वर्ग के मालिक बनेंगे।''

सा.बाबा 12.12.08 रिवा.

''यह है तुम्हारी रुहानी यात्रा। बाबा की याद में रहना है। समझते हो - यह शरीर जहाँ तक रहेगा, वहाँ तक यह यात्रा चालू है। ... कर्म करते याद करते रहो। अभी हम बाबा के पास जाते हैं, बाबा परमधाम से हमको लेने के लिए आया है।''

सा.बाबा 12.12.08 रिवा.

''हम कहते हैं कि मनुष्य जल्दी पुरुषार्थ करें। नहीं तो ज्ञान सेकण्ड में मिलता है, जिससे तुम उसी सेकेण्ड में जीवनमुक्ति पा लेंगे। परन्तु तुम्हारे सिर पर जो आधा कल्प के पाप हैं, वे थोड़ेही एक सेकण्ड में कटेंगे। उसमें तो टाइम लगता है।''

सा.बाबा 16.04.68 रात्रि क्लास

''अभी जीते जी पुरानी दुनिया से मरकर आकर बाप का बनना है। अपने को आत्मा समझ अपने बाप को याद करना है। पुरानी दुनिया से बुद्धि हट जानी चाहिए। उसके लिए ही पुरुषार्थ करना चाहिए।''

सा.बाबा 18.10.08 रिवा.

''तुमने अनेक बार बाप से वर्सा लिया है और गँवाया है। यह ड्रामा का चक्र बुद्धि में बैठ गया है। ... जिन्होंने कल्प पहले बाप से वर्सा लिया था, उन्हों का ही अब भी पुरुषार्थ चलता है। ... भल बाबा कहते हैं - तुम सर्विस ठण्डी करते हो, परन्तु यह भी समझाते हैं कि कल्प पहले जो तुमने सर्विस की थी, वही अभी भी करते हो। पुरुषार्थ फिर भी करते रहना है।''

सा.बाबा 4.12.08 रिवा.

''अभी सारी दुनिया ब्लाइण्डफेथ में है। अब अन्धों को लाठी चाहिए। तुम अब लाठी बने हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार।... कोई तो बहुत सर्विसएबुल हैं।... काटों को फूल बनाने में मेहनत लगती है।''
सा.बाबा 6.12.08 रिवा.

''गृहस्थ व्यवहार में रहते देह के सर्व सम्बन्धों से बुद्धि निकाल बाप के साथ जोड़ने का ऐसा पुरुषार्थ करना है, जो फिर अन्त समय भी वही याद पड़े, और कोई की याद पड़ी तो सज़ा खानी पड़ेगी और पद भी कम हो जायेगा।''

सा.बाबा 6.12.08 रिवा.

''जैसे बाप की महिमा अपरमपार है, वैसे स्वर्ग की महिमा भी अपरमपार है, जिसका मालिक बनने का तुम अभी पुरुषार्थ कर रहे हो। ... यह मम्मा-बाबा सबसे जास्ती पुरुषार्थ करते हैं। राज्य तो वहाँ बच्चे भी करेंगे।''

सा.बाबा 2.12.08 रिवा.

''स्वर्ग में तो अपरमपार सुख हैं, इसलिए बाप कहते हैं पूरा पुरुषार्थ करो। रेस होती है ना। यह है रुद्र माला में पिरोने की रेस। ... जितना योग लगायेंगे तो समझेंगे कि यह तीखा दौड़ रहा है, उनके विकर्म विनाश होते जायेंगे।''

सा.बाबा 2.12.08 रिवा.

''ये सब बड़ी गुह्य बातें हैं, इन बातों को समझने वाला बड़ा बुद्धिवान चाहिए। जिनका पूरा योग होगा, उनकी बुद्धि पारस बनती जायेगी। भटकने वाले की बुद्धि में यह न ठहर न सके। विद्यार्थी अपनी बुद्धि भी चलाते हैं ना। तो अभी बैठकर लिखो। शुभ कार्य में देरी नहीं करनी चाहिए। हम सागर के बचचे अपने भाई-बहनों को कैसे बचायें।''

सा.बाबा 3.12.08 रिवा.

''अपनी आपही जाँच करनी है कि हम किसको याद करते हैं?... कोशिश कर और तरफ से बुद्धियोग हटाकर एक बाप को ही याद करना है। जितना याद करेंगे, उतना ही पाप कटेंगे।... बाप जानते हैं लिंक टूटेगी, फिर याद करेंगे, फिर टूटेगी। बच्चे नम्बरवार तो पुरुषार्थ करते ही हैं।''
सा.बाबा 12.1.69 रात्रि क्लास

''मुझे याद करने से बहुत फायदा है, बाकी तो नुकसान ही नुकसान है। ... कदम-कदम पर फायदा और कदम-कदम पर घाटा होता है। ... एक-एक दिन होकर 5000 वर्ष बीत गये, घाटा ही हुआ। अभी बाप की याद में रह फायदा करना है।... ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन कर ज्ञान रतन निकालने हैं।''
सा.बाबा 12.1.69 रात्रि क्लास

''आगे ईश्वर की इच्छा कहते थे, अभी ड्रामा कहते हैं। जो कल्प पहले हुआ है, वही होगा। ऐसे

नहीं कि अभी 4 घण्टा याद करते हो तो दूसरे कल्प में जास्ती करेंगे। नहीं, ये तो शिक्षा दी जाती है। अभी अच्छा पुरुषार्थ करेंगे तो कल्प-कल्प अच्छा पुरुषार्थ होगा।''

सा.बाबा 12.1.69 रात्रि क्लास

''मनुष्य कहते हैं हम निष्काम सेवा करते हैं परन्तु किसी भी मनुष्य का कर्म निष्काम होता नहीं है। कोई चाहे न चाहे तो भी उसका उसको फल जरूर मिलता है।... अब तुम पुरुषार्थ करते हो तो जितना पुरुषार्थ करेंगे, उतना भविष्य में ऊंच पद पायेंगे।''

सा.बाबा 13.11.08 रिवा.

''सतयुग-त्रेता में ऐसे नहीं कहेंगे कि यह हमारे पास्ट के कर्मों का फल है। कर्मों का फल 21 जन्मों के लिए अभी तैयार कराया जाता है। संगमयुग के पुरुषार्थ की प्रालब्ध 21 पीढ़ी चलती है। सन्यासी ऐसे कह न सकें कि हम तुम्हारी ऐसी प्रालब्ध बनाते हैं, जो तुम 21 जन्म सुखी रहेंगे।''

सा.बाबा 13.11.08 रिवा.

''कौन-कौन बाबा की सर्विस करते हैं, वह मालूम पड़ जाता है। जब शिवबाबा की दिल पर चढ़े तब रुद्र माला में नजदीक हो और तख्त के लायक बनें।... यह बेहद के बाप का अविनाशी ज्ञान रतनों का धन्धा है। तो धन्धे में मदद देने वाले पर बाप भी राज़ी रहेगा। अविनाशी ज्ञान रतन धारण करना और कराना है।''

सा.बाबा 6.11.08 रिवा.

''देहाभिमान में आने से ही माया की चमाट लगती है। मेहनत है ही देही-अभिमानी बनने की। ... बाप को याद नहीं करेंगे तो माया थप्पड़ लगा देगी, माया उल्टा कर्म करा देगी। इसलिए निरन्तर याद करने का अभ्यास करो।''

सा.बाबा 7.11.08 रिवा.

''सर्विस करने वाला ही बाप की दिल पर चढ़ेगा।... कोई सर्विस नहीं करते, अन्धों की लाठी नहीं बनते हैं। अभी मरने जीने का सवाल है।... पुरुषार्थ से सब देखने में आता है कि किस-किस ने कल्प पहले पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाया है।''

सा.बाबा 3.11.08 रिवा.

''यादव हैं मूसल इन्वेन्ट करने वाले और कौरव-पाण्डव हैं भाई-भाई। वे आसुरी भाई और ये दैवी भाई। यह भी आसुरी थे परन्तु इनको बाप ने ऊंच बनाकर दैवी भाई बनाया है। ... पाण्डवों की जीत हुई और कौरव विनाश हो गये।'' (पाण्डवों को बाबा है तो सबकुछ है और कौरवों को माया है तो सबकुछ है - दादी जानकी)

सा.बाबा 28.10.08 रिवा.

''निराकार बाप इस शरीर का आधार लेकर तुम आत्माओं को पढ़ाते हैं, आत्मा इन कर्मेन्दियों से सुनती है। ... अभी स्वर्ग के रचयिता बेहद के बाप की मत पर पुरुषार्थ करके अनेक जन्मों की प्रालब्ध बना रहे हो। ये बड़ी समझने की बातें हैं।''

सा.बाबा 30.10.08 रिवा.

''बाप कहते हैं - पवित्र बनो, इसमें कोई विघ्न डालता है तो परवाह नहीं करनी चाहिए। अपने आपको अच्छी रीति सम्भालना है। ... महावीर बनना है और औरों को भी महावीर बनाने का पुरुषार्थ करना है।''

सा.बाबा 20.10.05 रिवा.

''यह पढ़ाई है, इसमें अभी फेल हुए तो जन्म-जन्मान्तर और कल्प-कल्पान्तर फेल होते रहेंगे। जो अभी अच्छी रीति पढ़ेंगे, वे कल्प-कल्पान्तर अच्छी रीति पढ़ेंगे। अभी के पुरुषार्थ से सबका समझा जाता है। ... टीचर स्टूडेण्ट्स को समझ तो सकते हैं ना।''

सा.बाबा 23.03.10 रिवा.

''अभी बाप कहते हैं - तुम जो कुछ सीखे हो, वह सब भूल जाओ। तुम जीते जी उस दुनिया से मरकर हमारा बनो। ... तुम नष्टोमोहा बन जाओ और देह के सर्व सम्बन्धों को भूलकर सिर्फ मुझे याद करो। ... मामेकम् याद करो और आसुरी गुण छोड़ो। रोज़ रात्रि को अपना पोतामेल निकालो।''

सा.बाबा 29.03.10 रिवा.

''मैं इन द्वारा तुम बच्चों को सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाता हूँ। पावन बनने की युक्ति बतलाता हूँ। इसमें आशीर्वाद, कृपा आदि की कोई बात नहीं है। इसमें तो बाप के डायरेक्शन पर चलना है।... श्रीमत मिलती है, तुम्हारा काम है याद करना। मैं क्या कृपा करूँगा, हमारे लिए तो सब बच्चे हैं। मैं कृपा करूँ तो सभी तख्त पर बैठ जायें।''

सा.बाबा 30.03.10 रिवा.

''मैं आत्मा हूँ, यह पक्का करो और फिर बाप का परिचय अच्छी रीति बुद्धि में धारण करो। यह अन्तर्मुखी बच्चे ही अच्छी रीति समझ सकते हैं। अभी हम आत्माओं को यह नॉलेज मिल रही है कि मुझ आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है, फिर कैसे आत्मा सतोप्रधान बनती है। ये सब बड़ी अन्तर्मुख हो समझने की बातें हैं।''

सा.बाबा 5.04.10 रिवा.

''विनाश के लिए बॉम्बस आदि बनाते रहते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। गीता में भी मूसल अक्षर है। ... इस विनाश के पहले हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। ... यह हार-जीत का खेल है। तुम जीत पाते हो तो स्वर्ग के मालिक बनते हो और हार खाते हो तो नर्क के मालिक बन जाते हो।''

सा.बाबा 8.04.10 रिवा.

''तुम बच्चे हो बेहद के वैरागी, तुमको इस पुरानी दुनिया में रहते हुए भी इन ऑखों से जो कुछ देखते हो, उसे देखना नहीं है क्योंकि यह सब खत्म हो जायेगा। यह है मुख्य पुरुषार्थ। ... भक्ति के बाद है ज्ञान, ज्ञान मिलने से भक्ति का वैराग्य हो जाता है।''

सा.बाबा 9.14.10 रिवा.

''तुम बच्चों को आत्माभिमानी अवस्था बनाने के लिए बहुत प्रैक्टिस करनी है। मैं आत्मा हूँ, अपने भाई को बाप का सन्देश सुनाता हूँ, हमारा भाई इन आरगन्स द्वारा सुनता है। ऐसी अवस्था जमाओ।... यह है गुप्त मेहनत। अन्तर्मुख होकर इस अवस्था को पक्का करना है।''

सा.बाबा 9.04.10 रिवा.

''तुमको भी योग में रहने का बहुत पुरुषार्थ करना है।... अब जो-जो जितना पुरुषार्थ करेंगे तो फिर अपने धर्म में ऊंच पद पायेंगे, पुरुषार्थ नहीं करेंगे तो कम पद पायेंगे। ... बच्चों को अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट नोट करनी चाहिए, जो किसको समय पर समझा सको। ... जिनको सर्विस का शौक है, वे अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स नोट करते हैं।''

सा.बाबा 15.4.10 रिवा.

''बाप रोज-रोज़ कहते हैं - देह के सब सम्बन्ध छोड़ अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। अभी घर वापस जाना है। आधा कल्प वापस जाने के लिए ही इतनी भक्ति की है। सतयुग में कोई वापस जाने का पुरुषार्थ नहीं करते हैं।''

सा.बाबा 10.03.10 रिवा.

''सबसे सहज पुरुषार्थ है - तुम बिल्कुल चुप रहो। चुप रहने से ही बाप का वर्सा ले सकते हो। चुप रहना है और बाप और चक्र को याद करना है। बाप को याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे।... चक्र को जानने से चक्रवर्ती राजा बनेंगे।''

सा.बाबा 10.03.10 रिवा.

''सन्यासी सुख को काग विष्टा के समान सुख कह देते हैं। वे फिर यहाँ आकर सुख के लिए पुरुषार्थ कर न सकें। वे हैं हठयोगी, तुम हो राजयोगी। तुम्हारा योग है बाप के साथ, उनका योग है तत्व के साथ। यह भी ड्रामा बना हुआ है।''

सा.बाबा 12.03.10 रिवा.

''अभी तुमको देही-अभिमानी बनना है। हम आत्मा हैं, यह पुराना शरीर छोड़ हमको जाये नया लेना है। ... ये तो बड़ी सूक्ष्म महीन बातें हैं। भक्ति में मनुष्य एकान्त में कोठी में बैठ भक्ति करते हैं। तुमको तो गृहस्थ व्यवहार में रहते, धन्धा आदि करते बुद्धि में यह पक्का करना है कि हम आत्मा हैं।'' सा.बाबा 13.03.10 रिवा.

''बाप आकर देही-अभिमानी बनाते हैं। जो अच्छे-अच्छे पुरुषार्थी बच्चे हैं, वे सवेरे-सवेरे उठकर देही-अभिमानी रहने की प्रैक्टिस करेंगे। ... तुम बच्चे जानते हो - शिवबाबा कल्याणकारी है, वे आकर नर्क को स्वर्ग बनाते हैं। नर्क का एकदम विनाश कराकर स्वर्ग बना देते हैं।''

सा.बाबा 13.03.10 रिवा.

''देह सहित सब कुछ भूल देही-अभिमानी बनना है। उठते-बैठते समझो - अब इस शरीर को तो छोड़ना है। हमने पार्ट बजाया, अब जाते हैं अपने घर।... सतोप्रधान से तमोप्रधान कैसे बनते हैं और फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनते हैं, यह बाप ही समझाते हैं। बाप की याद से ही सतोप्रधान बनना है।''

सा.बाबा 27.02.10 रिवा.

''ज्ञान सागर रुहानी बाप ही आकर ज्ञान देते हैं। बाप को समझें तो बाप से वर्सा जरूर लें। तुमको बाप पुरुषार्थ कराते रहते हैं। बाप समझाते हैं - बच्चे, टाइम वेस्ट मत करो। ... किसको ज्ञान नहीं देते हो तो थर्ड क्लास पुरुषार्थी ठहरे। सबूत नहीं देते हो तो बाबा जरूर कहेंगे ना कि तुम्हारा थर्ड क्लास पुरुषार्थ है।''

सा.बाबा 12.03.68

''अभी तुम जो पुरुषार्थ करते हो, उससे सतयुग में जाते हो। ड्रामा प्लेन अनुसार कल्प पहले जिसने जितना पुरुषार्थ किया है, उतना अभी भी करते रहते हैं। हर एक के पुरुषार्थ से बाप समझ सकते हैं कि कौन-कौन अपना कल्याण कर रहे हैं।... आप समान बनाने की सर्विस का शौक जरूर चाहिए।''

सा.बाबा 12.03.68

''सारा दिन बुद्धि में याद रहे कि हम यह लक्ष्मी-नारायण बन रहे हैं तो कोई शैतानी का काम न हो। हम यह बन रहे हैं तो उल्टा काम कैसे कर सकते हैं? परन्तु किसकी तक़दीर में नहीं है तो ऐसी-ऐसी युक्तियाँ भी रचते नहीं, अपनी कमाई नहीं करते हैं। ... घर बैठे सभी को अपनी कमाई करनी है और फिर औरों को भी करानी है।''

सा.बाबा 22.02.10 रिवा.

''भगवान खुद ही आकर अपना परिचय देते हैं कि मैं कौन हूँ। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, दुनिया में कोई नहीं जानते हैं। तुम्हारे में जो बाबा कहते हैं, उनमें भी कोई पक्के हैं, कोई कच्चे हैं। देहाभिमान टूटने में ही मेहनत लगती है। देहाभिमान तोड़कर देही-अभिमानी बनना पड़े।''

सा.बाबा 23.02.10 रिवा.

''जो पढ़ते नहीं, बाप को याद नहीं करते हैं तो उनको वह ताक़त नहीं मिलती है। जिस्मानी पढ़ाई से भी बल मिलता है। पढ़ाई है सोर्स ऑफ इन्कम। ... यहाँ तुम जितना पढ़ेंगे, वह साथ ले जायेंगे क्योंकि उसके आधार पर ही तुम सतयुग-त्रेता में प्रालब्ध पाते हो।''

सा.बाबा 15.02.10 रिवा.

''धनी बाप को भूलें, गोया निधन के बन गये, तो जरूर कुछ न कुछ पाप कर्म कर देंगे। बाप कहते हैं - बाप का बनकर बाप का नाम बदनाम न करो। ... जो तीव्र पुरुषार्थी होते हैं, वे जोर से पढ़ाई में लग जाते हैं। जिनको पढ़ाई का शौक होता है, वे सवेरे उठकर पढ़ाई करते हैं।''

सा.बाबा 15.02.10 रिवा.

''अनेक बार तुमने हार खाई है और अनेक बार जीत पाई है। अभी तुमको स्मृति आई है। ... जो जैसा-जैसा पुरुषार्थ करेंगे, उस अनुसार फिर वहाँ प्रालब्ध पायेंगे।... आत्मा में कैसे 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है, यह किसको भी पता नहीं है। मैं आकर तुमको अपना और रचना का परिचय देता हूँ।''

सा.बाबा 18.02.10 रिवा.

''कोई भी चीज का भान न रहे। माया एक-दो की देह में बहुत फँसाती है, इसलिए बाबा कहते हैं - इस साकार को भी याद नहीं करना है। बाबा कहते हैं - तुमको तो अपनी देह को भी भूलना है और एक बाप को याद करना है।... शरीर में लटकते तो जैसे मेहतर बन पड़ते हैं।''

सा.बाबा 19.02.10 रिवा.

''जितना बहुतों को आप समान बनायेंगे, उतना ही पद मिलेगा। देह को याद करने वाले कभी ऊंच पद पा न सकें।... देह को याद करने वाले कोई पुरुषार्थ नहीं कर सकते हैं। बाप कहते हैं पुरुषार्थ करने वालों को फॉलो करो। यह भी पुरुषार्थी है ना।''

सा.बाबा 19.02.10 रिवा.

''अब इस आसुरी दुनिया को क्या देखना है। इस छी-छी दुनिया से ऑखे बन्द कर लेनी है। इस पुरानी दुनिया को देखते भी नहीं देखना है। अभी अपने शान्तिधाम और सुखधाम को याद करना है।... किसको भी इस चक्र के ऊपर जरूर समझाना है। यह 5 हजार वर्ष का चक्र है, इस चक्र के ऊपर बहुत अटेन्शन देना है। रात के बाद दिन जरूर होना है।''

सा.बाबा 20.02.10 रिवा.

''तुमको फुरना रहना चाहिए अच्छी रीति पढ़कर ऊंच पद पाने का। कोई मरा वा जिया, उसका तुमको क्या फुरना रखना है। तुमको फुरना रखना है कि बाप से वर्सा कैसे पायें। किसको समझाना भी थोड़े में है।''

सा.बाबा 6.02.10 रिवा.

''तुम्हारी बुद्धि में यह सब ज्ञान रहना चाहिए, जो तुम औरों को भी समझा सको। ... किसको भी बोलो - हमारे पास कोई शास्त्रों का ज्ञान नहीं है। यह है रुहानी नॉलेज, जो रुहानी बाप समझाते हैं। ... बेहद का बाप बैठ पढ़ाते हैं तो पढ़ने और पढ़ाने के लिए मेहनत तो करनी होती है ना।''

सा.बाबा 8.02.10 रिवा.

''बाबा अपना भक्ति मार्ग का अनुभव भी सुनाते हैं कि जब बुद्धि इधर-उधर भागती थी तो अपने को चमाट मारता था कि यह याद क्यों आते हैं। ... माया बुद्धियोग तोड़ देती है। ऐसे-ऐसे अपने साथ बातें करनी चाहिए। बाप कहते हैं - बच्चे अब अपना कल्याण करो तो दूसरों का भी कल्याण करो, सेन्टर्स खोलो।''

सा.बाबा 26.01.10 रिवा.

''बाप कहते हैं - मैं कल्प-कल्प तुम बच्चों को यह बेहद की कहानी सुनाता हूँ। ... सभी आत्मायें घर वापस जाकर, फिर नम्बरवार पार्ट बजाने आयेंगी। अभी यह राजधानी स्थापन हो रही है। अभी तुम जो पुरुषार्थ करेंगे, वही पुरुषार्थ तुम्हारा कल्प-कल्प का सिद्ध होगा।''

सा.बाबा 28.01.10 रिवा.

''देहली को परिस्तान कहते थे, अभी तो कब्रिस्तान है। ये सब बातें बच्चों की बुद्धि में आनी चाहिए। ... अभी तुम बच्चों को इन लक्ष्मी-नारायण के समान सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला ... मर्यादा पुरुषोत्तम बनने का पुरुषार्थ करना है। तुम्हारे पुरुषार्थ का लक्ष्य यही है परन्तु अभी तक कोई बना नहीं है। अभी तुम्हारी चढ़ती कला होती जाती है।''

सा.बाबा 28.1.10 रिवा.

''कोई को भी बैज पर समझाना अच्छा है। बोलो बाबा कहते हैं - मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे और तुम पावन बनकर पावन दुनिया में चले जायेंगे। पतित-पावन शिवबाबा ही है। हम सब पुरुषार्थ कर रहे हैं पावन बनने का।... इस बैज के साथ परिचय का एक छोटा पर्चा भी साथ होना चाहिए।''

सा.बाबा 29.01.10 रिवा.

''अभी हम पुरुषार्थ कर रहे हैं पावन बनने का। जब विनाश का समय होगा तो फिर हमारी पढ़ाई पूरी हो जायेगी। कोई भी कहाँ आते-जाते हो तो बैज सदा साथ होना चाहिए, बैज के साथ एक छोटा परिचय का पर्चा भी हो।''

सा.बाबा 29.01.10 रिवा.

''बच्चों को नष्टोमोहा बनने के लिए बड़ी हिम्मत चाहिए। बेहद के बाप से पूरा वर्सा लेना है तो पूरा नष्टोमोहा बनना पड़े। ... ज्ञान का तीसरा नेत्र जो मिला है, उससे अपनी जाँच करते रहो। जो डिफेक्ट हैं, उनको निकाल कर प्योर माइण्ड बनना है।''

सा.बाबा 18.1.10 रिवा.

''अभी बाप नई दुनिया के नये सम्बन्धों के लिए पुरुषार्थ कराते हैं।... एक ही बेहद का बाप है, जो तुमको पुरानी दुनिया के बन्धनों से छुड़ाकर, नई दुनिया अलौकिक सम्बन्ध में ले जाते हैं। यह सदा स्मृति रहे कि अभी हम ईश्वरीय सम्बन्ध में हैं। यह ईश्वरीय सम्बन्ध सदा सुखदाई

है।''

सा.बाबा 18.01.10 रिवा.

''अभी तुम बच्चों को जो ये ज्ञान मिल रहा है, उसको सुमिरण करने की आदत डालो और दूसरों को भी समझाओ। अभी तुम्हारी आत्मा पर बृहस्पति की दशा है। वृक्षपति भगवान तुमको पढ़ा रहे हैं। तो तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए।... अब तुम बच्चों को ज्ञान मिला है, अभी तुम समझते हो शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं।''

सा.बाबा 19.01.10 रिवा.

''जैसे यह बाबा है, इनको ख्यालात रहती है ना। बूढ़ा और बालक समान हो गया, इसलिए इनकी एक्टिविटी भी बचपन मिसल होती है। शिवबाबा की तो एक ही एक्ट है - बच्चों को पढ़ाना, सिखलाना। विजय माला का दाना बनना है तो पुरुषार्थ भी बहुत चाहिए। ... बाप कहते हैं - हम जो सुनाते हैं, उस पर जज करो।''

सा.बाबा 20.01.10 रिवा.

''अभी तुम ईश्वरीय घराने के अथवा ईश्वरीय कुल के हो। ईश्वर आकर घराना स्थापन करते हैं। ... गीता से ब्राह्मण कुल भी बनता है, सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी कुल भी बनता है। ... खुशी भी उनको होगी, जो रुहानी पढ़ाई अच्छी रीति पढ़ते होंगे।''

सा.बाबा 20.01.10 रिवा.

''अभी तुम बच्चे सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो।... बुद्धि बाप के साथ होगी तो फिर अन्त मति सो गति हो जायेगी। इसके लिए बहुत अच्छा पुरुषार्थ करना है। यहाँ तो तुमको बहुत धन मिलता है।''

सा.बाबा 20.01.10 रिवा.

''यह नॉलेज बड़ी वण्डरफुल है। जिनकी तकदीर में है, वे पुरुषार्थ करते रहते हैं। जो जितना पुरुषार्थ करते हैं, वह देखने में आता है।... बाबा हर एक की चलन से समझ जाते हैं कि कौन कितना पुरुषार्थ करते हैं।''

सा.बाबा 22.01.10 रिवा.

''बाप कल्प के संगमयुग पर आते हैं और महाभारत लड़ाई भी संगम पर ही लगती है। ... इसको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है, इसका किसको पता नहीं है। संगम पर ही बाप आकर तुमको हीरे जैसा बनाते हैं। फिर उनमें भी नम्बरवार तो होते ही है। ... बच्चे ने जन्म लिया और वर्से का हक़दार बना। अभी तुम सब पावन दुनिया के हकदार हो। फिर उसमें ऊंच पद पाने के लिए पुरुषार्थ करना होता है।''

सा.बाबा 8.01.10 रिवा.

''इस समय का तुम्हारा पुरुषार्थ कल्प-कल्प का पुरुषार्थ होगा। अभी के पुरुषार्थ से समझा

जाता है कि कल्प-कल्प ऐसा ही पुरुषार्थ करेंगे। इससे जास्ती पुरुषार्थ होगा ही नहीं। अभी के पुरुषार्थ से समझा जाता है कि ये कल्प-कल्पान्तर जन्म-जन्मान्तर ऐसा ही पद पायेंगे।''!

सा.बाबा 8.01.10 रिवा.

''तुम बच्चों ने अभी आत्मा-परमात्मा को जाना है, सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सबकी बुद्धि में एकरस तो बैठ नहीं सकता। ... बाप कहते हैं - मैं इनमें प्रवेश कर तुम बच्चों को यह सारा ज्ञान देता हूँ। बाप कहते हैं - तुम अपने को आत्मा समझो और मुझ बाप को याद करो। परन्तु तुम अपने को आत्मा नहीं समझते हो, इसलिए तुम्हारी नज़र इस शरीर पर चली जाती है।''

सा.बाबा 12.01.10 रिवा.

''अभी सभी आत्माओं को शरीर छोड़कर वापस घर जाना है। पाण्डव और कौरव दोनों को ही शरीर छोड़ना है। तुम इस ज्ञान के संस्कार ले जायेंगे, उस अनुसार तुमको वहाँ नई दुनिया में प्रालब्ध मिलती है। यह भी ड्रामा में नूँध है। वहाँ ज्ञान का पार्ट खत्म हो जाता है, तुम प्रालब्ध भोगते हो।''

सा.बाबा 12.01.10 रिवा.

''भगवान जब स्वर्ग रचते हैं तो माया भी अपना स्वर्ग दिखाती है। अभी इस सबका फॉल होना है। माया कितनी जबरदस्त है। तुमको उससे मुँह मोड़ना है।... गरीब ही बाप से वर्सा लेते हैं, साहूकार तो समझते हैं - हम स्वर्ग में बैठे हैं।''

सा.बाबा 13.01.10 रिवा.

''तुम बच्चों को कितना गुप्त रुहानी फखुर होना चाहिए। रूह को खुशी होनी चाहिए। आधा कल्प तुम देह-अभिमानी थे, अब बाप तुमको कहते हैं - देही-अभिमानी बनो। अपने को अशरीरी आत्मा समझो, अशरीरी बनो। ... देही-अभिमानी बनने में ही बड़ी मेहनत लगती है।''

सा.बाबा 15.01.10 रिवा.

अव्यक्त बापदादा के द्वारा अव्यक्त पार्ट के आदि में उच्चारे

''कोई भी कार्य करने से पहले अपने ईश्वरीय कुल की और भविष्य राज्य की दोनों ही स्मृतियाँ आने से कभी भी निर्बलता आ नहीं सकेंगी। निर्बलता नहीं तो असफलता भी नहीं। ... तो सदा सफलता मूर्त बनने के लिए अपनी स्मृति को शक्तिशाली बनओ, फिर स्वयं ही वह स्वरूप बन जायेंगे।''

अ.बापदादा 30.5.71

''जब तक अपनी चेकिंग का नेचुरल अभ्यास हो जाये, तब तक बार-बार चेकिंग करनी पड़ती है। ... जब ऐसा अभ्यास हो गया फिर तो आपको अपना साक्षात्कार दूसरों के द्वारा भी

होता रहेगा। दूसरे स्वयं वर्णन करेंगे, आपका गुण-गान करेंगे।... यह भी चेक करो कि आज के दिन मेरे विजय की माला में कितने विजयी रत्न बढ़े।''

अ.बापदादा 20.5.71

''जितना-जितना विधाता बनते जायेंगे, उतना ही वरदाता बन वरदान देने की शक्ति बढ़ती जायेगी। तो दोनों ही अनुभव होते हैं वा अभी सिर्फ विधाता का पार्ट है, अन्त में वरदाता का पार्ट होगा ? ... एक होता है नॉलेज को देना, दूसरा है वरदान रूप में देना। तो विधाता हो या वरदाता हो ? ... विधाता अर्थात् ज्ञान देने वाले तो बनते ही हो लेकिन कहाँ विधाता के साथ-साथ वरदाता भी बनना पड़ता है।''

अ.बापदादा 20.5.71

''यह तिलक और छाप एक सर्टीफिकेट है। यह भविष्य वा वर्तमान पद की प्राप्ति वा सफलता का सर्टीफिकेट है। ... कभी भी माया के अधीन यानि वश होकर पुरुषार्थ में अलबेलापन नहीं लाना। ... अगर पुरुषार्थ में अलबेलापन लाया तो रावण अन्दर ही अन्दर इस सर्टीफिकेट को चुरा लेगा और आप स्टेटस पा नहीं सकेंगे।''

अ.बापदादा 20.04.71

''अपने ओरिजिनल अथवा सतोप्रधान स्थिति के संस्कारों को दबाना - यह भी हिंसा है।... सारे दिन में दान भी करते रहो, पुण्य का कर्म भी करो और अहिंसक भी बनो।... ऐसी महीनता में जाने वाले, सम्पूर्ण स्थिति में स्थित रहने वाले महान आत्माओं के आगे सभी जरूर सिर झुकायेंगे।''

अ.बापदादा 18.04.71

''हर एक के मन के भाव को समझने से उसकी जो चाहना है अथवा जिस प्राप्ति की इच्छा है, वही मिलने से क्या होगा ? आप जो उनको बनाने चाहते हो, वह बन जायेंगे अर्थात् सर्विस की सफलता बहुत जल्दी निकलेगी क्योंकि उनकी चाहना प्रमाण उनको प्राप्ति हो गयी।... उस प्राप्ति से अविनाशी पुरुषार्थी बन जायेंगे।''

अ.बापदादा 18.04.71

''मन्सा के महादानी दूसरों को भी शान्ति का अनुभवी बना सकते हैं लेकिन टेम्प्रेरी टाइम के लिए क्योंकि उनका अपना पुरुषार्थ नहीं होता है। (कर्म और फल के विधि-विधान अनुसार किसी भी आत्मा को अविनाशी अर्थात् स्थाई प्राप्ति अपने पुरुषार्थ से ही होती है।)''

अ.बापदादा 15.04.71

''वाणी से ज्ञान-दान करने वाले सदा सन्तुष्ट और खुशी में रहेंगे।... उनको खुशी के लिए पुरुषार्थ नहीं करना होता है, पुरुषार्थ तो वाणी द्वारा दान करने का करते हैं।''

अ.बापदादा 15.04.71

''ऐसी अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर फिर स्थूल स्टेज पर आओ। इससे क्या अनुभव होगा? संगठन के बीच भी अलौकिक आत्मायें दिखाई देंगी। ... साधारण रूप में होते असाधारण स्थिति वा अलौकिक स्थिति होने से संगठन के बीच जैसे कि अल्लाह लोग दिखाई देंगे। ... स्टेज सेक्रेटरी आपका परिचय न दे लेकिन आपकी स्टेज स्वयं ही आपका परिचय दे।''

अ.बापदादा 9.04.71

''सर्वोत्तम पुरुषार्थी के विशेष लक्षण होते हैं कि उनका सोचना, बोलना, करना तीनों ही समान होते हैं। वे यह नहीं कहेंगे कि सोचते तो थे कि यह नहीं करें लेकिन कर लिया। नहीं, सोचना, बोलना, करना तीनों ही एक समान हों और बाप समान हों।''

अ.बापदादा 9.4.71

''हर सेकेण्ड, हर संकल्प में अटेन्शन और एक्यूरेट रहना है। नहीं तो बापदादा को प्रत्यक्ष करने का श्रेष्ठ पार्ट बजा नहीं सकेंगे। ... बापदादा को प्रत्यक्ष करने का पार्ट प्ले करने जा रहे हो, यह लक्ष्य रखकर जाना। ... ऐसे भी नहीं कि सिर्फ वाणी द्वारा प्रत्यक्ष करना है लेकिन हर समय के हर कर्म द्वारा प्रत्यक्ष करना है।''

अ.बापदादा 18.3.71

''अपनी स्मृति और स्थिति को ऐसा पॉवरफुल बनाकर स्टेज पर आओ, ऐसे समझो कि अपने कई समय के पुकारते हुए भक्तों को अपने द्वारा बाप का साक्षात्कार कराने के लिए आई हूँ। ... सिर्फ भाषण की तैयारी नहीं करनी है लेकिन भाषण की तैयारी ऐसी करो, जो भाषण द्वारा भाषा से भी परे स्थिति में ले जाने का अनुभव कराओ।''

अ.बापदादा 11.2.71

'''विश्व कल्याणकारी, मास्टर दुखहर्ता, सुखकर्ता' की स्थिति की स्टेज पर ठहर कर स्पीच करने वाले को कहते हैं - श्रेष्ठ स्पीकर।... अपनी ऐसी स्थिति की स्टेज सदैव तैयार रहे, उसके लिए भी इतना ही पुरुषार्थ करते हो?''

अ.बापदादा 11.02.71 टीचर्स

''अनेक लोग आपके कदम को फॉलो करेंगे, इसलिए टीचर्स को जो भी कदम उठाना है, वह ऐसा सोचकर उठाना है।... जिम्मेवारी का ताज धारण किया है। जितनी बड़ी जिम्मेवारी, उतना बड़ा ताज।... ताज व तख्तधारी बनने के बाद अलबेलापन समाप्त हो जाता है। अलबेलापन अर्थात् पुरुषार्थ में अलबेलापन।''

अ.बापदादा 11.02.71 टीचर्स

''कई कहते मेरी यह आदत है। ऐसे ही यह अव्यक्त स्थिति वा इस अभ्यास की भी आदत

बन जाये तो फिर न चाहते हुए भी यह अव्यक्त स्थिति की आदत अपनी तरफ आकर्षित करेगी। यह आदत आपको अदालत में जाने से बचायेगी।''

अ.बापदादा 11.3.71

''यहाँ न्यारा बनना है ज्ञान सहित। सिर्फ बाहर से न्यारा नहीं बनना है लेकिन मन का लगाव न हो। जितना-जितना न्यारा बनेंगे, उतना-उतना प्यारा अवश्य बनेंगे। जब अपनी देह से भी न्यारे हो जाते हो तो वह न्यारेपन की अवस्था अपने आपको भी प्यारी लगती है।''

अ.बापदादा 11.3.71

''ताज और तख्त तो सबको मिला है लेकिन कोई कितना समय ताज व तख्तनशीन बनते हैं, यह हर एक का अपना पुरुषार्थ है। ... तो ऐसे ही आप जब ताज व तख्त छोड़ देते हो तो ये कर्मेन्द्रियाँ आपका आर्डर नहीं सुनती हैं। जब तख्तनश्शीन होते हो यही कर्मेन्द्रियाँ जी हजूर करती हैं।''

अ.बापदादा 1.02.71

''बापदादा वतन में आने का निमन्त्रण देते हैं। निमन्त्रण देने वाला तो निमन्त्रण देता है, आने वालों का काम है पहुँचना। ... अव्यक्त स्थिति का अनुभव कुछ समय लगातार करो तो ऐसे अनुभव होंगे जैसे साइन्स द्वारा दूर की चीज़ें सामने दिखाई देती हैं। ऐसे ही अव्यक्त वतन की एक्टिविटी यहाँ स्पष्ट दिखाई देगी।''

अ.बापदादा 21.7.71

''वतन में आने की दिल तो सभी की होती है लेकिन अपने आप से पूछो जो ब्राह्मणपन के कर्तव्य करने हैं, वे सभी किये हैं? सर्व कर्तव्य सम्पन्न करने के बाद ही सम्पूर्ण बनेंगे। अभी का समय ऐसा चल रहा है जो एक-एक कदम अटेन्शन रखकर चलने का है। अटेन्शन न होने के कारण पुरुषार्थ के भी टेन्शन में रहते हैं।''

अ.बापदादा 21.7.71

''एक तरफ वातावरण का टेन्शन रहता है, दूसरे तरफ पुरुषार्थ का भी टेन्शन रहता है, इसलिए सिर्फ एक शब्द एड करो - अटेन्शन। फिर यह बहुरूप एक ही सम्पूर्ण रूप बन जायेगा।''

अ.बापदादा 21.7.71

''पढ़ाई के समय क्लास में सुनाने वाले व्यक्ति को नहीं देखो, लेकिन बोलने वाले बोल किसके हैं, उसको सामने देखो। व्यक्त में अव्यक्त बाप और निराकारी बाप को देखो।''

अ.बापदादा 31.12.70

''साधनों के आधार पर साधना ऐसे समझो जैसे रेत के फाउण्डेशन के ऊपर बिल्डिंग खड़ी कर रहे हो।... विनाशी साधनों के आधार पर अविनाशी साधना हो नहीं सकती।... साधना सिद्धि को प्राप्त करायेगी। साधनों की आकर्षण में सिद्धि स्वरूप को नहीं भूल जाओ।''

अ.बापदादा 31.12.70

''अभी रह गया सोना। सोना अर्थात् सोने की दुनिया में सोना। सोने को भी परिवर्तन करो। बेड पर नहीं सोओ ... बाप की याद की गोदी में सोयेंगे, फरिश्तों की दुनिया में स्वप्नों में सैर करो। तो स्वप्न भी परिवर्तन करो तो सोना भी परिवर्तन करो। आदि से अन्त तक परिवर्तन करो।''

अ.बापदादा 31.12.70

''प्राप्ति की लेकिन ऐसी प्राप्ति की जो सर्व तृप्त हो जायें। जितना तृप्त बनेंगे, उतना ही इच्छा मात्रम् अविद्या होगी। इच्छामात्रम् अविद्या बनने से कामना के बजाये सामना करने की शक्ति आयेगी। ... समय और स्वयं दोनों की पहचान अच्छी तरह से स्पष्ट मालूम है।''

अ.बापदादा 5.12.70

''हर एक अपने से पूछे कि मैं कितना नॉलेजफुल बना हूँ और कितना पॉवरफुल बना हूँ। उसमें भी मुख्य है कैचिंग पॉवर, वह हर एक में कितनी पॉवरफुल है, वह देख रहे हैं। पुरुषार्थ का मुख्य आधार है कैचिंग पॉवर पर।''

अ.बापदादा 9.12.70

''हर एक को इन दो नयनों से दो स्वरूप का साक्षात्कार होगा। कौनसे दो स्वरूप ? निराकारी और दिव्यगुणधारी। फरिश्ता स्वरूप और दैवी स्वरूप।... चलता फिरता लाइट हाउस और माइट हाउस हो। ऐसे अपने स्वरूप का साक्षात्कार होता है ?''

अ.बापदादा 9.12.70

''जब 5000 वर्ष की बात को कैच कर सकते हो, अनुभव कर सकते हो तो इस अन्तिम स्वरूप (फरिश्ता) का अनुभव नहीं होता है ? ... जैसे सतयुगी आत्मायें जब प्रवेश करती हैं तो उनको इस पुरुषार्थी जीवन की बिल्कुल ही नॉलेज नहीं होती है। ऐसे आप लोगों को कमजोरियों और कमियों की नॉलेज मर्ज हो जाये।''

अ.बापदादा 9.12.70

''पुरुषार्थ करते-करते कहाँ-कहाँ पुरुषार्थ अच्छा करने के बाद प्रालब्ध यहाँ ही भोगने की इच्छा रखते हैं। ... प्रलब्ध जमा करनी है ... भोगने की इच्छा से जमा होने में कमी कर देते हैं। ... प्रालब्ध की इच्छा को खत्म कर सिर्फ अच्छा पुरुषार्थ करो। ... इच्छा स्वच्छता को खत्म कर देती है।''

अ.बापदादा 30.11.70

''उम्मीदवार भी हो, हिम्मतवान भी हो लेकिन एक बात एड करनी है - सहनशक्तिवान बनना है। फिर उममीदवार से सफलतामूर्त बन जायेंगे। ... सम्पूर्णता के समीपता की निशानी है सफलता। जितना-जितना अपने को सफलता मूर्त देखते जाओ, उतना समझो सम्पूर्णता के नज़दीक हैं।''

अ.बापदादा 30.11.70

''निराकारी और अलंकारी बनने से सामना करने की सर्वशक्तियाँ प्राप्त हो जायेंगी। जब तक कोई स्थूल व सूक्ष्म कामना है, तब तक सामना करने की शक्ति नहीं आ सकती। कामना, सामना करने नहीं देती। ... ब्राह्मणों का अन्तिम सम्पूर्ण स्वरूप इच्छा मात्रम् अविद्या गाया हुआ है। ... जब ऐसी स्थिति बनेंगी तब जजयकार भी होगा और हाहाकार भी होगा।''

अ.बापदादा 3.12.70

''कोई भी अहंकार अलंकारहीन बना देता है। इसलिए निरहंकारी और निराकारी फिर अलंकारी कहा जाता है। इस स्थिति में स्थित हो, सर्व आत्माओं के कल्याणकारी बनने वाले ही विश्व के राज्याधिकारी बनते हैं। जब सर्व के कल्याणकारी बनते हो तो क्या ... वह अपना कल्याण नहीं कर सकता है। सदैव अपने को विजयी रतन समझ कर हर संकल्प और कर्म करो।''

अ.बापदादा 3.12.70

''सिर्फ अन्तर शब्द याद रखो। अन्तर में दोनों रहस्य आ जाते हैं। अन्तर कन्ट्रॉस्ट को भी कहा जाता है और अन्तर अन्दर को भी कहा जाता है। जैसे कहते हैं - अन्तर्मुख वा अन्तर्यामी। ... अन्तर शब्द यद आने से एक तो हरेक बाप का कन्ट्रॉस्ट करेंगे कि यह श्रेष्ठ है वा नहीं और दूसरा अन्तर की स्थिति में रहने से वा अन्तर स्वरूप में स्थित होने से आपका गुप्त स्वरूप प्रत्यक्ष हो जायेगा।''

अ.बापदादा 1.11.70

''कम्पलीट बनने में व्यर्थ संकल्पों के तूफान विघ्न डालते हैं।... इसको मिटाने के लिए रोज़ अमृतवेले सारे दिन की अपनी अपाइन्टमेन्ट की डायरी बनाओ। अगर अपने मन को हर समय अपाइन्टमेन्ट में बिज़ी रखेंगे तो बीच में व्यर्थ संकल्प समय न ले सकेंगे।''

अ.बापदादा 5.11.70

''भल बाप के स्नेही बने हो लेकिन साथी नहीं बनाया है। हाथ पकड़ा है, साथ नहीं लिया है। इसलिए माया द्वारा घात होता है। गलतियों का कारण है - गफलत। गफलत गलतियाँ कराती है। अगर रूह को न देख रूप तरफ आकर्षित होते हैं तो समझो मुर्दे से प्रीत कर रहे हैं। ... मुर्दाघाट पर कार्य करना होगा। ... जो कार्य करते, संकल्प करते हो, उसके लिए लक्ष्य और प्राप्ति अर्थात् एम एण्ड आब्जेक्ट को सामने रखो।''

अ.बापदादा 23.10.70

''हर कदम बापदादा को फॉलो करते चलना है। हर संकल्प को और हर कर्म को अव्यक्त बल से अव्यक्त रूप द्वारा वेरीफाय कराओ। जैसे साकार में साथ होता है तो वेरीफाय कराने के बाद प्रैक्टिकल में आते हैं, वैसे ही बापदादा को अव्यक्त रूप में सदैव सम्मुख रख हर संकल्प और हर कार्य को वेरीफाय कराकर करने से कोई व्यर्थ कर्म नहीं होगा।''

अ.बापदादा 23.10.70

''जब आप सम्पूर्ण मूर्त प्रत्यक्ष होंगे तब तो आप के भक्त प्रत्यक्ष रूप में अपने इष्ट को पा सकेंगे। ... एक तरफ आसुरी आत्माओं की आवाज़ और भी आकर्षक तथा फुल फोर्स में होगी, दूसरी तरफ आपके भक्तों की आवाज़ भी कई प्रकार से और फुल फोर्स में होगी। ... उसको परखना भी बुद्धि का काम है।''

अ.बापदादा 22.10.70

''ऐसे नहीं समझो कि बापदादा तो अव्यक्त है, हम व्यक्त में क्या भी करें। लेकिन नहीं। हर एक के एक-एक सेकेण्ड के संकलप का चित्र अव्यक्त वतन में स्पष्ट होता रहता है। इसलिए बेपरवाह नहीं बनना है। ईश्वरीय मर्यादाओं में बेपरवाह नहीं बनना है, आसुरी मर्यादाओं वा माया से बेपरवाह बनना है।''

अ.बापदादा 22.10.70

''दृष्टि से सृष्टि रचने आती है?... यह जो कहावत है कि दृष्टि से सृष्टि बनेंगी। ऐसी दृष्टि, जिससे सृष्टि बदल जाये। ... दृष्टि धोखा भी देती है और दृष्टि पतितों को पावन भी करती है। दृष्टि बदलने से सृष्टि बदल ही जाती है।... दृष्टि क्या बदलनी है, यह मालूम है? आत्मिक दृष्टि बनानी है।''

अ.बापदादा 6.08.70

''पुरानी बीती बातों को बार-बार वर्णन करना, सोचना, इसको कहा जाता है व्यर्थ। जैसे साकार रूप में उदाहरण बने ना, ऐसे फॉलो फादर।''

अ.बापदादा 30.07.70

''अपने को ऐसा चेन्ज करो, जो दूसरों पर अपना प्रभाव पड़े। धक से चेन्ज करना है। एकदम न्यारे बनो तो औरों का लगाव भी खुद ही टूटता जायेगा।'' (सम्बन्धियों का लगाव हमारे से क्यों नही टूटता क्योंकि हम न्यारे नहीं बने हैं।)

अ.बापदादा 30.07.70

''वर्तमान समय अनुसार संकल्प और कर्म साथ-साथ होना ही आवश्यक है। अभी-अभी संकल्प किया और अभी-अभी कर्म में लाया।... महारथियों की निशानी है सर्व में महानता। ... उनके संकल्प ही ऐसे उत्पन्न होंगे, जो संकल्प उठा और सिद्ध हुआ। इससे अपनी स्टेज को परख सकते हो।''

अ.बापदादा 30.07.70

''अन्तर्मुखी और एकान्तवासी यह लक्षण धारण करने से जो लक्ष्य रखा है, उसकी सहज प्राप्ति हो सकती है। साधन से सिद्धि होती है ना। सर्विस में सदैव सम्पूर्ण सफलता के लिए विशेष किस गुण को सामने रखना पड़ता है। साकार रूप में देखा... जितना उदारचित्त, उतना सर्व के उद्धार करने के निमित्त बन सकते हैं।''

अ.बापदादा 27.07.70

''चलते-फिरते बिन्दु रूप की स्थिति का भी अभ्यास करना चाहिए। बीच-बीच में एक-दो मिनट भी निकाल कर इस बिन्दी रूप की प्रैक्टिस करनी चाहिए। ... स्टॉप कर लेते हैं। आप भी कोई भी कार्य करते हो वा बात करते हो तो बीच-बीच में यह संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप करना चाहिए।''

अ.बापदादा 24.07.70

''एक मिनट के लिए भी मन के संकल्पों को चाहे शरीर द्वारा चलते हुए, कार्य को बीच-बीच में रोक कर भी यह प्रैक्टिस करना चाहिए। अगर अभी यह प्रैक्टिस नहीं करेंगे तो बिन्दुरूप की पॉवरफुल स्टेज कैसे और कब ला सकेंगे! इसलिए ये अभ्यास अभी करना आवश्यक है।''

अ.बापदादा 24.07.70

''शक्तियाँ एक सेकेण्ड में और एक संकल्प से भी किसका कल्याण कर सकती हैं। इसलिए शक्तियों को कल्याणी कहते हैं। जैसे बापदादा कल्याणकारी है, वैसे बच्चों का भी कल्याणकारी नाम प्रसिद्ध है। अब इतना हिसाब देखना पड़े कि हमारे कितने सेकण्ड और कितने संकल्प सफल हुए और कितने असफल हुए?''

अ.बापदादा 2.07.70

''सर्च-लाइट वे बन सकेंगे, जो स्वयं को सर्च कर सकते हैं। जितना जो स्वयं को सर्च कर सकेंगे, उतना ही सर्च-लाइट बनेंगे। ... अभी पॉवरफुल भी नहीं लेकिन विल-पॉवर वाला बनना है। अपने में विल-पॉवर और वाइड पॉवर चाहिए। विल-पॉवर और वाइड-पॉवर अर्थात् बेहद की तरफ दृष्टि-वृत्ति।''

अ.बापदादा 2.07.70

''आजकल बापदादा बच्चों को बुद्धि की ड्रिल कराने आते हैं। अभी मैदान पर प्रत्यक्ष होना है, अब गुप्त रहने का समय नहीं है। जितना स्वयं प्रत्यक्ष होंगे, उतना बापदादा को प्रख्यात करेंगे।''

अ.बापदादा 2.7.70

''जो एक ही स्थान पर सर्विस करते, बेहद में चक्कर नहीं लगाते हैं, तो उनको भविष्य में भी एक इण्डिविजुअल राजाई मिल जायेगी। ... विश्व का राजा वे बनेंगे, जो विश्व की हर आत्मा से सम्बन्ध जोड़ेंगे और सहयोगी बनेंगे। जैसे बापदादा विश्व के स्नेही और सहयोगी बनें, ऐसे बच्चों को भी फॉलो फादर करना है।''

अ.बापदादा 2.07.70

''त्याग-तपस्या और सेवा याद आ जाती है। मधुबन तपस्या भूमि भी है। ... मधुबन है ही त्यागी-वैरागी बनाने वाला। जब बेहद के वैरागी बनेंगे, तब बेहद की सर्विस कर सकेंगे। कहाँ भी लगाव न हो। अपने आपसे भी लगाव नहीं लगाना है, तो औरों की तो बात ही छोड़ो।''

अ.बापदादा 2.7.70

''कामधेनु का अर्थ ही है सर्व की मनोकामनायें पूरी करने वाली। जिनकी अपनी सर्व कामनायें पूरी होंगे, वे ही औरों की कामनायें पूरी कर सकेंगी। सदैव यही लक्ष्य रखो कि हमको सर्व की कामनायें पूर्ण करने वाली मूर्ति बनना है। सर्व की इच्छायें पूर्ण करने वाले स्वयं इच्छा मात्रम् अविद्या होंगे। अभी ऐसा अभ्यास करना है।''

अ.बापदादा 2.7.70

''प्राप्ति-स्वरूप बनने से ही औरों को प्राप्ति करा सकते हो। तो सदैव अपने को दाता अथवा महादानी समझना है। महाज्ञानी बनने के बाद महादानी का कर्तव्य चलता है। महाज्ञानी की परख महादानी बनने से होती है। ... जो जितना स्वयं बुद्धि की सैर करेंगे, वे उतना ही औरों को भी बुद्धियोग से सैर करायेंगे।''

अ.बापदादा 2.7.70

''बापदादा से मुलाकात करते समय बिन्दु रूप की स्थिति में स्थित रह सकते हो? ... बिन्दुरूप स्थिति जब एकान्त में बैठते हो तब हो सकती या चलते-फिरते भी हो सकती है? अन्तिम पुरुषार्थ याद का ही है। इसलिए याद की स्टेज वा अनुभव को भी बुद्धि में स्पष्ट समझना आवश्यक है।''

अ.बापदादा 24.7.70

''बिन्दुरूप स्थिति क्या है और अव्यक्त स्थिति क्या है, दोनों का अनुभव क्या-क्या है? क्योंकि जब नाम दो कहते हैं तो जरूर दोनों के अनुभव में भी अन्तर होगा।... फरिश्ता रूप की स्थिति अर्थात् अव्यक्त स्थिति जिसकी सदाकाल रहती है, वह बिन्दुरूप में भी सहज स्थित हो सकेगा। ... कार्य करते बीच-बीच में समय निकालकर इस फाइनल स्टेज अर्थात् बिन्दुरूप का पुरुषार्थ करना चाहिए।''

अ.बापदादा 24.7.70

''वैसे भी कोई भी बात, कोई दृश्य, कोई भी चीज परिवर्तन तो होनी ही है। यह ड्रामा ही परिवर्तनशील है। ... इस प्रकार हर बात परिवर्तित होनी है लेकिन जिस समय आपके सामने वह बात विघ्न रुप बन जाती है उस समय अपनी शक्ति के आधार से एक सेकेण्ड में परिवर्तित कर दिया तो उस पुरुषार्थ करने का फल आपको प्राप्त हो जायेगा।''

अ.बापदादा 24.12.72

''सेवा करते हो आप समान भी नहीं लेकिन बाप समान बनाना है। आप समान बनायेंगे तो जो आप में कमी होगी, वह उनमें भी आ जायेगी। इसलिए अगर सम्पूर्ण बनाना है तो आप समान भी नहीं लेकिन बाप समान बनाना है।''

अ.बापदादा 29.6.70

''जैसे बाप ने बच्चों को अपने से भी ऊंचा बनाया, वैसे अपने से भी ऊंचा बाप समान बनायेंगे तो गोया फॉलो फादर किया। ... इसलिए लक्ष्य सदैव सम्पूर्णता का रखना है। जो सम्पूर्णमूर्त प्रत्यक्ष प्रख्यात हो चुके हैं, उसका ही लक्ष्य रखना है। जो अभी गुप्त हैं, प्रत्यक्षता में नहीं आये

हैं, उनका भी लक्ष्य नहीं रख सकते हैं।'' अ.बापदादा 29.6.70

''जैसी एम, वैसा आब्जेक्ट होता है। तो एम को श्रेष्ठ रखेंगे तो प्राप्ति भी श्रेष्ठ होगी। अब तीसरी ऑख सदैव ऊपर निशाने पर एक टिक लटकी हुई होनी चाहिए। ... एक टिक अर्थात् एक में ही टिका हुआ, मगनरूप देखने में आये।''

अ.बापदादा 29.6.70

''सदैव समझो कि हमारे भक्त हर समय हमारा साक्षात्कार कर रहे हैं, तब ही साक्षात्कार मूर्त अर्थात् स्थिरमूर्त होंगे। ... स्पष्ट साक्षात्कार कराने के लिए स्थिरबुद्धि और एकटिक स्थिति आवश्यक है। समझा। अभी से ही भक्त लोग एक-एक का साक्षात्कार करेंगे।''

अ.बापदादा 29.6.70

''अभी सिर्फ प्रजा नहीं बनानी है लेकिन साथ-साथ भक्तों में भी वह संस्कार भरना है। कितनी प्रजा बनी है, कितने भक्त बने हैं, वह भी मालूम पड़ेगा।... सब साक्षात्कार होगा। यह भी एक गुप्त रहस्य है कि किन्हों के भक्त ज्यादा होते हैं और किन्हों की प्रजा जास्ती बनती है। जैसे कोई की राजधानी बड़ी होते भी सम्पत्ति कम होती है और कोई की राजधानी छोटी होती हे परन्तु सम्पत्ति ज्यादा होती है।'' अ.बापदादा 29.6.70

''बापदादा से कब विदाई नहीं होती है। विदाई होती है माया से। बापदादा से तो मिलन होता है। यह थोड़े समय का मिलन सदा का मिलन करने के निमित्त बन जाता है। बाप के साथ गुण और कर्तव्य का मिलना, यही मिलन है।'' अ.बापदादा 19.6.70

''चेकर, मेकर और रूलर - जब अपने को इन तीन रूपों में स्थित करेंगे तो फिर छोटी-छोटी बातों में समय नहीं जायेगा। ... रूलर्स जो होते हैं, वे किसके अधीन नहीं होते हैं, अधिकारी होते हैं। ... वे फिर माया के अधीन कैसे होंगे।... अधिकारी न समझने से अधीन हो जाते हैं।'' अ.बापदादा 25.6.70

''यह रुहानी स्नेह एक धागा है, जो 21 जन्मों के सम्बन्ध को जोड़ता है। सो भी अटूट स्नेह ... इस संगमयुग का एक-एक संकल्प एक-एक कर्म 21 जन्म के लिए बैंक में जमा होगा। एक संकल्प भी व्यर्थ न हो। ... संकल्प भी व्यर्थ न जाये, समय तो छोड़ो। अब पुरुषार्थ इस सीमा पर पहुँच रहा है।'' अ.बापदादा 19.6.70

''ज्ञानी तू आत्मा वत्सों में माया लास्ट नम्बर अर्थात् सुस्ती के रूप से शुरू होती है। ... इस पर बहुत ध्यान देना है। इस छटे रूप से माया भिन्न-भन्न प्रकार से आने की कोशिश करती है। ... अब इसके चेकर बनो। कोई भी रॉयल रूप में माया पीछे तो नहीं हटाती है?''

अ.बापदादा 25.6.70

''अब यह चेक करना है कि तीव्र पुरुषार्थी बनने में वा हाई जम्प देने में किस रूप में माया सुस्त बनाती है। ... अपने को चेन्ज करेंगे तब ही लॉ मेकर्स वा पीस मेकर्स बन सकेंगे और न्यू वर्ल्ड के मेकर्स बन सकेंगे। जब तक स्वयं को न्यू नहीं बनायेंगे, तो न्यू वर्ल्ड के मेकर कैसे बनेंगे क्योंकि आगे चलकर ऐसी सर्विस होगी, जिससे दूरांदेशी दुद्धि और निर्णय शक्ति की बहुत आवश्यकता होगी।... अब सम्पूर्ण बनकर औरों को भी सम्पूर्ण बनाना बाकी रह गया है। जो बनता है, वह फिर सबूत भी देता है। अभी बनाने का सबूत देना है। इस कार्य के लिए इस व्यक्त देश में रहना है।''

अ.बापदादा 25.6.70

''बापदादा एक सेकेण्ड में अव्यक्त से व्यक्त में आ गये, वेसे ही बच्चे भी एक सेकेण्ड में व्यक्त से अव्यक्त हो सकते हैं? जैसे जब चाहते तब मुख से बोलते और जब चाहते तब मुख को बन्द कर लेते - ऐसे होता है ना। ऐसे ही अपनी बुद्धि को भी जब चाहें तब चलायें और जब न चाहें तब न चले। ... अगर इस बात का अभ्यास मजबूत होगा तो अपनी स्थिति भी मजबूत बना सकेंगे।''

अ.बापदादा 18.6.70

''ज्ञान के विस्तार में आना भी जानते हो लेकिन ज्ञान के विस्तार को समाकर ज्ञान स्वरूप बन जाना, बीज रूप बन जाना, इसकी प्रैक्टिस कम है। अधिक विस्तार में जाने से समय और संकल्प व्यर्थ जाते हैं, इसलिए जो शक्ति जमा होनी चाहिए, वह नहीं होती।''

अ.बापदादा 18.6.70

''कोई भी कार्य की सिद्धि के लिए पहले प्रतिज्ञा होती है, फिर प्लॉन होता है, फिर होता है प्रैक्टिकल। प्रैक्टिकल के बाद फिर होती है चेकिंग कि यह हुआ, यह नहीं हुआ। चेकिंग के बाद बीती सो बीती, आगे उन्नति का साधन (पुरुषार्थ) रखते हैं।''

अ.बापदादा 18.6.70

''ज्ञान के विस्तार को समाकर ज्ञान स्वरूप बन जाना, बीजरूप बन जाना, इसकी प्रैक्टिस कम है।... सेन्स भी अच्छा चाहिए और इसेन्स निकालना भी आना चाहिए। कोई-कोई में सेन्स बहुत है लेकिन इसेन्स में टिकना नहीं आता है। दोनों का ही अभ्यास चाहिए।''

अ.बापदादा 18.6.70

''आप लोगों का कर्तव्य ही है नेचर क्योर करना। वे नेचर क्योर वाले फास्ट रखाते हैं। ... तुम फास्ट जाने के लिए फास्ट रखो। कौनसी फास्ट? टाइम टेबुल बनाओ कि आज इस बात की फास्ट रखेंगे। प्रतिज्ञा करो। ... पुरुषार्थ में जो भी नुकसानकारक बातें हैं, उनकी फास्ट रखो। फिर उसको चेक करो।''

अ.बापदादा 18.6.70

''समस्या समाप्त होगी तो फिर करूँगा, अब यह संस्कार खत्म करो। समेटना और समाना सीखो।

पुराने संस्कार समाना है, उसकी प्रतिज्ञा करो, फास्ट रखो। ... करके ही छोडूंगा, बनकर ही छोडूंगा। जब इतना निश्चयबुद्धि बनेंगे, तब विजयी बनेंगे। बाप में निश्चय है लेकिन अपने में भी निश्चयबुद्धि होकर कार्य करो तो फिर विजय ही विजय है।''

अ.बापदादा 18.6.70

''संकल्पों को कैच करने की प्रैक्टिस होगी तो संकल्प रहित भी सहज बन सकेंगे। ज्यादा संकल्प तब चलाना पड़ता है, जब किसके संकल्प को परख नहीं सकते हैं।... व्यर्थ संकल्प ज्यादा नहीं चलेंगे और सहज ही एक संकल्प में एकरस स्थिति में एक सेकण्ड में स्थित हो जायेंगे। संकल्पों को रीड करना - यह भी एम्पूर्णता की एक निशानी है।''

अ.बापदादा 7.6.70

''जितना अभ्यक्त भाव में स्थित होगे, उतना हर एक के भाव को सहज समझ जायेंगे। ... अव्यक्त स्थिति एक दर्पण है। जब आप अव्यक्त स्थिति में स्थित होते हो तो कोई भी व्यक्ति के भाव अव्यक्त स्थिति रूपी दर्पण में बिल्कुल स्पष्ट देखने में आयेगा। ... जितना अव्यक्त स्थिति होती है, उतना दर्पण साफ और शक्तिशाली होता है।''

अ.बापदादा 7.6.70

''साधारणता को श्रेष्ठता में बदली करो, हर कार्य में सहनशीलता को सामने रखो और अपने चेहरे पर, वाणी पर सरलता को धारण करो। फिर देखों सर्विस वा कर्तव्य की सफलता कितनी श्रेष्ठ होती है। ... अगर स्थिति में प्लेन हो जायेंगे फिर प्लॉन और प्रैक्टिकल एक हो जायेंगे। ... सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।''

अ.बापदादा 7.6.70

''जब कोई बात का साहस रखा जाता है तो साहस के साथ और कुछ भी करना पड़ता है। कई बातें सामना करने के लिए आती हैं। साहस रखा और माया का सामना करना शुरू हो जाता है, इसलिए सामना करने के लिए हिम्मत भी पहले से ही अपने में रखनी है।''

अ.बापदादा 28.5.70

''इस भट्ठी से ऐसा होकर निकलना है, जो कोई कैसा भी हो, जहाँ भी हो, जैसी भी परिस्थिति हो, उन सभी का सामना कर सकें। क्योंकि समस्याओं को मिटाने वाले बनकर निकलना है, न कि खुद समस्या बन जाना है।... कभी कायर नहीं बनना, कमजोरी नहीं दिखाना।''

अ.बापदादा 28.5.70

''व्यक्त स्थिति में पुरुषार्थ करने से चलते-चलते उलझन और निराशा आती है, इसलिए अव्यक्ति स्थिति से सर्व प्राप्ति के अनुभव को बढ़ाओ। अव्यक्तमूर्त को सामने देख समान बनने

का प्रयत्न करना है। ... अन्तर को अन्तर्मुख होकर मिटाना है। ... जितना चेक करेंगे, उतना जल्दी चेन्ज होंगे।''

अ.बापदादा पर्सनल

''जैसे बीज बोने के बाद उसको जल दिया जाता है, तब वह बीज वृक्षरूप में फलीभूत होता है। ... प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के लिए संग भी चाहिए और साथ-साथ अपनी हिम्मत भी। संग और हिम्मत दोनों के आधार से पार हो जायेंगे।''

अ.बापदादा 28.5.70

''आजकल साइन्स वाले भी विस्तार को समेटने का ही पुरुषार्थ कर रहे हैं। ... जैसे-जैसे यहाँ रिफाइन होते जाते हैं, वैसे ही साइन्स भी रिफाइन होती जाती है।... आवाज़ में आना जितना सहज है, उतना ही आवाज़ से परे जाना सहज हो। इसको ही सम्पूर्ण स्थिति के समीप की स्थिति कहा जाता है।''

अ.बापदादा 5.4.70

''इस ज्ञान की आवश्यक बातें हैं, वे ही इसेन्स हैं। अगर वे आवश्यक बातें धारण कर लो तो सर्व आवश्यकतायें पूरी हो जायेंगी। अभी कोई न कोई आवश्यकतायें हैं। लेकिन इन आवश्यकताओं को सदा के लिए पूर्ण करने के लिए दो आवश्यक बातें हैं, वे हैं आकारी और अलंकारी।''

अ.बापदादा 5.4.70

''अभी विस्तार को समाने की जादूगरी सीखना है। विस्तार में जाते, फिर वहाँ ही समाने का पुरुषार्थ करो। जिस समय देखो कि बुद्धि बहुत विस्तार में गई हुई है, तो उसी समय ही अभ्यास करो कि इतने विस्तार को समा सकती हूँ। तब बाप के समान बनेंगे।''

अ.बापदादा 5.4.70

''कितने भी कारोबार में हो लेकिन बीच-बीच में एक सेकेण्ड निकाल कर आवाज़ से परे जाने का अभ्यास करो। जितनी यह प्रैक्टिस करेंगे, उतना प्रेक्टिकल रूप बनता जायेगा। ... जितना-जितना स्वयं पुरुषार्थ में सन्तुष्ट और स्पष्ट होंगे, उतना और उनके आगे स्पष्ट दिखाई देंगे।''

अ.बापदादा 2.4.70

''बोलते हुए भी बोलने से परे की स्थिति हो सकती है?... वा जब न बोलें तब परे अवस्था हो सकती है। ... प्रैक्टिस अभी शुरू हो सकती है या कारोबार में नहीं हो सकती है? अगर हो सकती है तो अब से ही हो सकती है। जो महारथी कहलाये जाते हैं, उनकी प्रैक्टिस और प्रैक्टिकल साथ-साथ होना चाहिए।''

अ.बापदादा 26.3.70

''सर्विसएबुल बच्चों का पुरुषार्थ सफलता सहित होता है।... जो सोचेंगे, वही कहेंगे और वही करेंगे। ... बापदादा कब व्यर्थ रचना नहीं रचते हैं और बच्चे व्यर्थ रचना रचकर फिर उनको हटाने और मिटाने का पुरुषार्थ करते हैं। ... अब व्यर्थ संकल्पों की रचना को बेक लगाना

है।'' अ.बापदादा 26.3.70

''अनेक तरफ से स्नेह तोड़ना और एक तरफ जोड़ना है। बिना तोड़े कब जुट नहीं सकता। अभी अपनी कमी को भर सकते हो, फिर भरने का समय खत्म - ऐसे समझकर हर कदम को आगे बढ़ाना है। ... ऐसी स्थिति बनानी है, जो संकल्प में भी माया से हार न हो। इसको कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थी।'' अ.बापदादा 26.1.70

''अपने गुण की याद देना - यह है चेतन्य यादगार बनाना। कभी कहीं जाओ तो यही लक्ष्य रखना है कि जहाँ जायें, वहाँ यादगार कायम करें। यहाँ से विशेष स्नेह अपने में भरकर जायेंगे तो वह स्नेह पत्थर को भी पानी कर देगा। यह आत्मिक स्नेह की सौगात साथ ले जाना।'' अ.बापदादा 25.1.70

''संगम का एक सेकण्ड कितना बड़ा है। अपने समय और संकल्प दोनों को सफल करना है।... सेकण्ड में बहुत को परिवर्तन करना - यह है पुरुषार्थ में जम्प देना।''

अ.बापदादा 25.1.70

''परिस्थिति कैसी भी हो, वायुमण्डल कैसा भी हो लेकिन कमजोर न बनें, उसको कहा जाता है शूरवीर। वायुमण्डल का असर नाजुक को होता है, तन्दुरुस्त को नहीं।''

अ.बापदादा 25.1.70

''जो भी पुराने संस्कार हैं, पुरानी नेचर है, सब बदल कर ईश्वरीय बन जाये। ... सदैव यही कोशिश करनी है कि हमारी चलन द्वारा कोई को भी दुख न हो। मेरी चलन, संकल्प, वाणी, हर कर्म सुखदायी हो। यह है ब्राह्मण कुल की रीति... न्यारे और प्यारे रहना - यह है पुरुषार्थ।'' अ.बापदादा 25.1.70

''अन्तर्मुख, होकर भी कार्य कर सकते हो, ऐसे नहीं कि अन्तर्मुखी होने से कार्य नहीं कर सकते हैं। ... अन्तर्मुखी होकर कार्य करने से एक तो विघ्नों से बचाव, दूसरा समय का बचाव और तीसरा संकल्पों का बचाव अर्थात् बचत हो जायेगी।... अन्तर्मुखी होकर बाहरमुखता में आने से भी अन्तर्मुख, हर्षितमुख और आकर्षण मूर्त भी रहेंगे। कर्म करते हुए यह प्रैक्टिकस करनी है।'' अ.बापदादा 24.6.71

''बुद्धि एक सेकण्ड में कहाँ से कहाँ जाकर आ भी सकती है।... इसके लिए खास समय निकालने की भी आवश्यकता नहीं है। कोई भी स्थूल कार्य जो भल अधिक बुद्धि वाला हो, उसको करते हुए भी यह अपना प्रोग्राम सेट कर सकते हो। ... स्थूल कारोबार का प्रोग्राम चेक करते हैं कि कहाँ तक हुआ और कहाँ तक नहीं हुआ। इसी रीति से यह भी प्रोग्राम बनाकर फिर बीच-बीच में चेक करो।'' अ.बापदादा 24.6.71

''जो तीव्र पुरुषार्थी हैं, उनके मुख से कभी शब्द नहीं निकलेगा। वे सदैव अभी कहेंगे और सिर्फ कहेंगे भी नहीं लेकिन अभी-अभी करके दिखायेंगे। यह है तीव्र पुरुषार्थ। ... तीव्र पुरुषार्थी का अर्थ ही है कि जो भी बात कमजोरी वा कमी की दिखाई दे, उसको अभी-अभी खत्म कर दे।''

अ.बापदादा 22.6.71

''ऐसा पुरुषार्थ करने के लिए दिन-प्रतिदिन जो शिक्षा मिलती है, उसको स्वरूप बनाते जाओ। शिक्षाओं को शिक्षा की रीति से बुद्धि में नहीं रखो, लेकिन हर शिक्षा को स्वरूप बनाओ ... तो ज्ञान स्वरूप, प्रेम स्वरूप, आनन्द स्वरूप स्थिति बन जायेगी। प्वाइन्ट की रीति से प्वाइन्ट बुद्धि में नहीं रखो लेकिन प्वाइन्ट को प्रैक्टिकल स्वरूप बनाओ।''

अ.बापदादा 22.6.71

''कहा जाता है - अगर कोई अकर्तव्य कार्य होते भी देखता है तो देखने का भी असर हो जाता है। उसका भी हिसाब बन जाता है। इस हिसाब से सोचो तो पुराने संस्कार व अशुद्ध संकल्प बुद्धि में भी टच होते हैं तो भी सम्पूर्ण वैष्णव वा सम्पूर्ण प्योरिटी नहीं कहेंगे। पुरुषार्थ का लक्ष्य कहाँ तक रखा है?''

अ.बापदादा 22.6.71

''बोझ उतारने वा मुश्किल को सहज करने का साधन है बाप का हाथ और साथ। ... बाप की स्मृति आयेगी तो साथ में दादा की भी रहेगी ही और दादा की स्मृति से बाप की स्मृति भी रहेगी। अलग नहीं हो सकते। अगर साकार स्नेही बन जाते हो तो भी और सभी से बुद्धि टूट जायेगी ना। साकार स्नेही बनना भी कम बात नहीं है।''

अ.बापदादा 4.07.71

''जिस समय दूसरों की सर्विस करते तो ध्यान रखना कि दूसरों की सर्विस साथ अपनी भी सर्विस करनी है। आत्मिक स्थिति में अपने को स्थित रखना - यह है अपनी सर्विस। ... अपनी सर्विस नहीं तो दूसरों की सर्विस में सफलता नहीं होगी।''

अ.बापदादा 10.06.71

''प्लॉन बनाने से पहले प्लेन बनना है। ... प्लेन बनने से ही प्लॉन ठीक चल सकेगा। ... याद रखना हम सब एकमत हैं अर्थात् एक की ही मत पर एकमत। दूसरी बात वाणी में भी सदैव एक का ही नाम बार-बार अपने को वा दूसरों को स्मृति में दिलाना है। तीसरी बात - चलन अथवा कर्म में इकॉनामी हो।''

अ.बापदादा 10.06.71

अव्यक्त बापदादा के द्वारा वर्तमान समय में उच्चारे

''देह-भान खत्म हो जाये और देही-अभिमानी की नेचर नेचुरल बन जाये। ... जहाँ स्वमान होगा, वहाँ देह-भान स्वत: खत्म हो जाता है। ... रोज चलते-फिरते भी अपना चार्ट देखना। चेक करेंगे तो चेन्ज करेंगे। अगर चेक ही नहीं करेंगे तो चेन्ज कैसे करेंगे।''

अ.बापदादा 31.12.09

''आजकल बापदादा सभी बच्चों में एक बात देखना चाहते हैं। जानते हो कौनसी ? ... सबका लक्ष्य है बाप समान बनने का, तो बापदादा लक्ष्य के साथ लक्षण भी देखना चाहते हैं। ... दूर से ही आपकी चलन और चेहरे से लक्ष्य के समान लक्षण दिखाई दें।... देही-अभिमानी बनने की नेचर नेचुरल हो। ... जब देहाभिमान नेचुरल रहा तो देही-अभिमानी बनने में मेहनत क्यों?''

अ.बापदादा 31.12.09

''जब देहाभिमान नेचुरल रहा तो देही-अभिमानी बनने में मेहनत क्यों ? बापदादा को बच्चों की मेहनत अच्छी नहीं लगती है। बापदादा बच्चों को मेहनत-मुक्त देखना चाहते हैं। देही-अभिमानी की नेचर नेचुरल बन जाये, इसको कहा जाता है लक्ष्य और लक्षण समान। फिर बाप समान बनना बहुत सहज और नेचुरल लगेगा।''

अ.बापदादा 31.12.09

''शुद्ध संकल्प को व्यर्थ संकल्प कट जरूर करेगा लेकिन दृढ़ संकल्प वाले का साथी बाप है, उसके मस्तक पर विजय का तिलक सदा ही है। ... करते तो हैं लेकिन होता नहीं है, यह व्यर्थ भी वायुमण्डल को कमजोर बनाता है। होना ही है, दृढ़ता रखो।... पहले स्व के ऊपर अटेन्शन। स्व का अटेन्शन ही टेन्शन को खत्म करेगा।''

अ.बापदादा 14.04.94

''स्नेह ही सर्व बच्चों को ब्राह्मण जीवन प्रदान करने का मूल आधार है।... स्नेह में पास नहीं होते तो पास नहीं आते। पास आना सिद्ध करता है कि पास हैं। स्नेह का अर्थ ही है पास रहना, पास होना और हर परिस्थिति को बहुत सहज पास करना है।... पास रहने में तो आनन्द ही आनन्द है लेकिन पास करना, इसमें नम्बरवार हैं।''

अ.बापदादा 14.04.94

''इस वर्ष विशेष व्यर्थ से इनोसेन्ट बनो।... जब व्यर्थ की अविद्या हो गई तो दिव्यता स्वत: और सहज ही अनुभव होगी और अनुभव करायेगी। अभी तक यह नहीं सोचो कि पुरुषार्थ तो कर ही रहे हैं ... पुरुषार्थ अर्थात् मैं पुरुष इस रथ द्वारा कर्म कर रहा हूँ।''

अ.बापदादा 14.04.94

''आज समर्थ बाप अपने समर्थ बच्चों को देख रहे हैं क्योंकि हर एक बच्चा स्नेह से बाप समान बनने का पुरुषार्थ बहुत लगन से कर रहे हैं। बापदादा बच्चों को देखकर खुश होते हैं और दिल में बच्चों के गीत गाते हैं - वाह बच्चे वाह! क्योंकि बच्चे बाप के भी सिर के ताज हैं। ... बच्चे नम्बरवार तो हैं लेकिन पुरुषार्थ का लक्ष्य आगे बढ़ा रहा है।''

अ.बापदादा 15.12.09

''सम्बन्ध, सम्पत्ति और सेहत तीनों वरदान वरदाता बाप से मिले हुए हैं। तो वरदानों को समय पर कार्य में लगाओ। सिर्फ वरदान सुनकर खुश नहीं हो जाओ ... लेकिन समय पर वरदान को काम में लगाने से वरदान कायम रहते हैं। अगर वरदानों को समय पर काम में नहीं लगाया तो वह वरदान फल नहीं देता।''

अ.बापदादा 3.04.94

''वरदान तो अविनाशी बाप का है लेकिन वरदान को फलीभूत करना है। बीज तो है लेकिन उससे फल कितना निकालते हो, वह आपके हाथ में है। कोई सिर्फ वरदान के बीज को देखकर खुश होते रहते हैं कि वरदान बहुत अच्छा है ... लेकिन वरदान को फलदायक बनाओ। बार-बार स्मृति का पानी दो, वरदान के स्वरूप में स्थित होने की धूप दो। फिर देखो वरदान सदा फलीभूत होता रहेगा।''

अ.बापदादा 3.04.94

''समय पर वरदान को काम में लगाने से वरदान कायम रहते हैं।... वरदान को बार-बार स्मृति का पानी दो, वरदान के स्वरूप में स्थित होने की धूप दो।... वरदानों को जितना समय पर कार्य में लगायेंगे, उतना वरदान और श्रेष्ठ स्वरूप दिखाता रहेगा।''

अ.बापदादा 3.04.94

''बापदादा देखते हैं कि कहाँ-कहाँ चलते-चलते माया अलबेलापन और आलस्य, रॉयल आलस्य और अलबेलापन तीव्र पुरुषार्थ में कमी डालता है।... बापदादा ऐसा अभ्यास कराना चाहते हैं, जो सभी से हाथ उठवायें तो सभी एवर-रेडी।''

अ.बापदादा 30.11.09

''बलि चढ़ाना और व्रत धारण करना - ये दोनों विशेषतायें इस दिवस की हैं। ... आपका है ब्राह्मण जीवन का व्रत और भक्तों का है एक दिन का व्रत। ... सदा अज्ञान नींद से जागरण का व्रत लिया ना कि थोड़ा-थोड़ा नींद करेंगे, यह व्रत लिया है?... आप सबने भी शुद्ध भोजन का व्रत लिया। ... तो यह अपना नियम पक्का रखते हो?''

अ.बापदादा 09.03.94

अब तीव्रगति से तीव्र पुरुषार्थ की आवश्यकता है। ... अब रॉयल रूप के अलबेलेपन और आलस्य से मुक्त बन आगे उड़ो और उड़ाओ।

अ.बापदादा का सन्देश 31.07.09

''बालक और मालिक अर्थात् सर्विस के सम्बन्ध में बालकपन और अपने पुरुषार्थ की स्थिति में मालिकपन। सर्विस और सम्पर्क में बालकपन, याद की यात्रा और मन्थन करने में मालिकपन हो। ..यह है युक्तियुक्त चलना।''

अ.बापदादा 19.07.09 रिवा.

''अगर माननीय बनना है तो मान माँगो नहीं। मान देने वाला माननीय बनता है। ... लास्ट जन्म तक माननीय हो क्योंकि बाप के साथ आपने मान दिया है। ... विशेष आपके यादगार मूर्तियों के आगे कहते क्षमा करना। ... शिक्षा देने से पहले खीमियाँभाव धारण करो, फिर शिक्षा दो।''

अ.बापदादा 22.04.09

''बापदादा ने टोटल में कह दिया कि वायुमण्डल को किसी भी रूप में दूषित नहीं करना है। बाप के प्यार के आगे ये तन्त्र-मन्त्र करना महापाप के भागी बनना है। ये अपने स्वमान को कम करना है। ... कोई करता है तो दिल में समझे और विचार करे कि मैं यह पाप करता हूँ या पुण्य करता हूँ।''

अ.बापदादा 22.04.09

''आप सबकी सेवा है - विश्व की आत्माओं की समस्या का कारण निवारण करना। निवारण करके ही सबको निर्वाणधाम में ले जाना है क्योंकि आप सभी मुक्तिदाता हो। जब औरों को भी मुक्ति दिलाने वाले हो तो स्वयं भी कारण को निवारण करेंगे, तब तो औरों को मुक्ति दिला सकेंगे, निर्वाण में भेज सकेंगे।''

अ.बापदादा 7.04.09

''बाबा अभी चाहता है कि आपका चेहरा और चलन ऐसा स्पष्ट दिखाई दे कि ये मुक्तिदाता के बच्चे मुक्ति देने वाले हैं। ... सिर्फ सुनाने से नहीं लेकिन चेहरे से ही अनुभव हो। ... यह अनुभव चेहरे और चलन से दिखाओ।''

अ.बापदादा 7.04.09

''पुरुषार्थ में कोई कोई समस्या रूप बनता है, तो उसका कारण है - बेहद के वैराग्य वृत्ति में कमी। अब बेहद का वैराग्य चाहिए। बेहद का वैराग्य सदा काल चलता है ? अगर समय पर होता है तो समय नम्बरवन हो जाता है, आप नम्बर टू में हो जाते हो क्योंकि समय ने आपको वैराग्य दिलाया।''

अ.बापदादा 7.04.09

''एक तरफ उमंग-उत्साह, खुशी और दूसरे तरफ बेहद का वैराग्य। बेहद का वैराग्य सदाकाल न रहने का कारण है - देहाभिमान। ... देहाभिमान किस बात में आता है ? सम्बन्ध,

पदार्थ, देह के संस्कार देही-अभिमान स्थिति से देहाभिमान में ले ही आते हैं।''

अ.बापदादा 7.04.09

''अभी आवश्यकता है इस देह-भान की नेचर को पॉवरफुल देही-अभिमानी की शक्ति से वंश सहित नाश करने की।... अंश है तो वंश होकर निकल आता है। ... वंश सहित खत्म होगा बेहद की वैराग्य वृत्ति से।... जैसे सेवा की फलक-झलक लोगों को दिखाई देती है, अनुभव होता है, ऐसे बेहद की वैराग्य वृत्ति का प्रभाव हो (अनुभव हो)।''

अ.बापदादा 7.04.09

''आजकल सेवा द्वारा आपकी प्रशंसा बढ़ेगी, प्रकृति आपकी दासी होगी ... साधन बढ़ेंगे लेकिन बेहद की वैराग्य वृत्ति से साधन और साधना का बैलेन्स रहे। ... सेवा की वृद्धि के साथ बेहद की वैराग्य वृत्ति भी आवश्यक है। सिर्फ योग में बैठने के टाइम नहीं, भाषण करने के टाइम नहीं लेकिन चलते-फिरते अनुभव करें कि ये विशेष आत्मायें हैं। चलते-फिरते भी आपके मस्तक से शान्ति, शक्ति, खुशी की अनुभूति हो।... आज विशेष बापदादा एक तो बेहद के वैराग्य तरफ इशारा दे रहा है।''

अ.बापदादा 7.04.09

''अभी आने वाले भी अगर तीव्र पुरुषार्थ करें तो बापदादा वा ड्रामा उन्होंको लॉस्ट सो फास्ट, फास्ट सो फर्स्ट - यह भी आगे नम्बर दे सकता है। चान्स है, चान्सलर बनो। ... बाबा की नज़र में, दिल में हर एक बच्चा दिल तख्तनशीन है ... दिलतख्त निवासी देख रहे हैं।''

अ.बापदादा 7.04.09

''ऐसे ब्राह्मण नेचर अर्थात् विशेषता की नेचर भी नेचुरल होनी चाहिए।... अपने ब्राह्मण जन्म की विशेषता को नेचुरल नेचर बनाना - इसको ही सहज पुरुषार्थ कहा जाता है। सिर्फ एक बात 'मैं विशेष आत्मा हूँ', इस स्मृति स्वरूप में स्थित हो जाओ तो बाप समान बनना अति सहज अनुभव करेंगे क्योंकि स्मृति स्वरूप सो समर्थी स्वरूप बन जाते हैं।''

अ.बापदादा 25.1.94

''जितनी प्रकृति की हलचल, उतनी आपकी अचल सथिति प्रकृति को परिवर्तन करेगी। ... 'नथिंग न्यू' अपनी अचल स्थिति के लिए तो ठीक है लेकिन... आत्माओं के रहम की पुकार आप लोगों को पहुँचती तो है ना! ये छोटी-छोटी आपदायें और अधिक तड़पाती हैं। ... तो रहम पड़ता है या नहीं?''

अ.बापदादा 25.01.94 दादियों से

''ब्राह्मण सम्पन्न हो जाओ तो दुख की दुनिया सम्पन्न हो जाये। ... चिल्लाते-चिल्लाते मरना

और एक धक से परिवर्तन होना, फर्क तो है ना। महाविनाश और निहर्सल का विनाश में फर्क है। महाविनाश अर्थात् महान परिवर्तन। उसके निमित्त आप हो। आप सम्पन्न बनेंगे तो समाप्ति होगी।''

अ.बापदादा 25.01.94 दादियों से

''परिवर्तन की शुभ भावना को तीव्र करना अर्थात् अपने को तीव्र गति से सम्पन्न बनाना।... रहम की भावना इमर्ज करो, चाहे स्व-प्रति, चाहे सर्व आत्माओं के प्रति। जहाँ रहम होगा, वहाँ तेरा-मेरा की हलचल नहीं होगी।... संकल्प में होगा तो वाणी और कर्म में स्वत: ही हो जायेगा।''

अ.बापदादा 25.01.94 दादियों से

''खज़ाने बढ़ाने का साधन क्या है? बढ़ाने का साधन है, जो खज़ाने मिले वे समय पर जो परिस्थिति आती है, उस परिस्थिति अनुसार कार्य में लगाना। जो कार्य में लगाकर स्थिति द्वारा परिस्थिति को बदल देते हैं, उनका जमा होता है। जो कार्य में नहीं लगाते हैं, उनका जमा नहीं होता है। तो हर एक अपने से पूछो कि समय पर अपने प्रति वा दूसरों के प्रति कार्य में लगाते हैं?''

अ.बापदादा 24.3.09

''चेक करो और अपने आपसे पूछो कि ये सारे खज़ाने जमा हैं और बढ़ाने का साधन समय पर कार्य में लगाते हैं, अनुभव की अथॉरिटी बढ़ती जाती है? क्योंकि अथॉरिटी में अनुभव की अथॉरिटी सबसे ज्यादा श्रेष्ठ गाई जाती है। तो हर एक को अपना खाता बढ़ाना है। चेक करना है क्योंकि अभी समय है चेक करके अभी खज़ाने बढ़ा सकते हो। अभी चान्स है, फिर चान्स भी खत्म हो जायेगा। चाहोगे कि खज़ाना बढ़ायें लेकिन बढ़ा नहीं सकोगे।''

अ.बापदादा 24.3.09

''भरपूर नहीं होगा तो हलचल होगी।... जितना खज़ाना भरपूर होगा, उतना ही भरपूर अवस्था में अचल-अडोल होंगे। बापदादा यही चाहता है कि एक-एक बच्चा सम्पन्न हो, कम नहीं हो क्योंकि यह चान्स बाप द्वारा अविनाशी खाता जमा करने का सिर्फ अभी होता है। इसीलिए कहा हुआ है - 'अभी नहीं तो कभी नहीं।' यह संगम समय के लिए ही गायन है।''

अ.बापदादा 24.3.09

''सबसे सहज पुरुषार्थ स्नेह है। ... बापदादा जानते हैं कि यह एक-एक आत्मा अनेक बार स्नेही बनी है, अभी भी बनी है और हर कल्प यही आत्मायें स्नेही बनेंगी। तो नशा है, खुशी है कि हम ही हर कल्प के अधिकारी आत्मायें हैं। बापदादा ऐसे अधिकारी आत्माओं को देख दिल की दुआयें दे रहे हैं। सदा अथक बन उड़ते चलो।''

अ.बापदादा 24.3.09

''जैसे शरीर की ड्रेस बदली करते हो, ऐसे ही आत्मा का स्वरूप फरिश्ता बार-बार अनुभव

करो। ... जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त फरिश्ता रूप में वतन में बैठे हैं, ऐसे आप सब भी बाप समान चलते-फिरते फरिश्ता रूप में अपने को अनुभव करो।... ऐसे अपने तीन रूप याद करो। ब्राह्मण सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता।''

अ.बापदादा 24.3.09

''सेकेण्ड में स्नेह की गोदी में समा जाओ तो मेहनत से बच जायेंगे, सेकण्ड में उड़ती कला द्वारा बापदादा के पास पहुँच जाओ तो किसी भी स्वरूप में आई माया दूर से भी आपको छू नहीं सकेगी क्योंकि परमात्म-छत्रछाया के अन्दर तो क्या लेकिन दूर से भी माया की छाया आ नहीं सकती।... बच्चा बनने का अर्थ ही है मात-पिता के स्नेह में समा जाना।''

अ.बापदादा 18.1.94

''आपके जड़ चित्र भी वरदान दे रहे हैं।... कभी ये नहीं सोचो कि ये तो सुनने वाले नहीं हैं, ये तो चलने वाले नहीं हैं। नहीं, आप रहमदिल बनो, देते जाओ।... कोई सीज़न का फल होता है, कोई सदा का फल होता है। सीज़न का फल सीज़न पर ही फल देगा।... आप बीज डालते चलो, समय पर सर्व आत्माओं को जगना ही है।''

अ.बापदादा 18.1.94 पार्टी

''गालियाँ भी खाद का काम करेंगी। ... जितनी गालियाँ देंगे, उतना आपके गुण गायेंगे। इसलिए हर आत्मा को दाता बन देते जाओ।... लेने की इच्छा नहीं रखो कि वह अच्छा बोले, अच्छा माने तो दें। नहीं, दाता के बच्चे मास्टर दाता बनो।''

अ.बापदादा 18.1.94 पार्टी

''आत्मा का रंग अपवित्रता से पवित्र बन गया क्योंकि आप सबने परमात्मा को अपना कम्पेनियन बना लिया, कम्पनी बना लिया, इसलिए कम्बाइण्ड हो गये। ... ये कम्बाइण्ड रूप कभी भी अलग नहीं हो सकता है। ... माया अकेले करने की कोशिश करती है लेकिन जो सदा कम्बाइण्ड रहने वाले हैं, वे कभी अलग हो नहीं सकते।''

अ.बापदादा 9.03.09

''माया अकेले करने की कोशिश करती है... क्योंकि माया अलग करके फिर पुराने संस्कारों को इमर्ज करती है और पुराने संस्कार जब इमर्ज हो जाते हैं, तो शुद्ध संस्कार मर्ज हो जाते हैं। पुराने संस्कार हैं अलबेलेपन और आलस्य के। ये भिन्न-भिन्न रूप में इमर्ज होने से कम्बाइण्ड रूप अलग हो जाता है।'' (Q. कम्बाण्ड रूप अलग होता है, तब अलबेलापन और आलस्य आता है या अलबेलापन और आलस्य आने से कम्बाइण्ड रूप अलग हो जाता है?)

अ.बापदादा 9.03.09

''चाहते नहीं लेकिन मेरे संस्कार हैं - यह शब्द आज दृढ़ संकलप की विधि से समाप्त कर लो। ... संकल्प नहीं, यह दृढ़ संकल्प करने की हिम्मत है? हाथ उठाओ। ... तो बापदादा आपको पदम पदम गुणा मुबारक दे रहे हैं होली को हो ली मनाने की।''

अ.बापदादा 9.03.09

''होलीहंस अर्थात् निर्णय शक्ति वाले होलीहंस। कोई भी काम करो तो एक सीट फिक्स कर लो। पहले उस सीट पर सेट होकर फिर निर्णय करो। वह सीट जानते हो? वह सीट है त्रिकालदर्शी की सीट। पहले त्रिकालदर्शी की सीट पर सेट होकर तीनों कालों को देखो, सिर्फ वर्तमान नहीं, आदि-मध्य-अन्त तीनों कालों को देखो। तीनों कालों में फायदा है या नुकसान? उसको देखो, फिर करो।''

अ.बापदादा 9.03.09

''बाप को याद दिलाते हैं ... मेरे को सुनाकर खत्म कर दो। लेकिन महसूसता से सुनाकर खत्म कर लो। एक अक्षर पक्का करते हो, सुना तो देते हो लेकिन पहले दृढ़ संकल्प से स्व को परिवर्तन करके फिर सुनाओ। बाप को रिझाते बहुत हैं।''

अ.बापदादा 9.3.09

''मम्मा ने पूछा - इन्तजार करना हमारा काम है, आप एडवान्स स्टेज वालों का क्या पार्ट है? हम तो इन्तजार कर रहे हैं, आपका काम है इन्तजाम करना।... आप सब बाबा के बच्चे जब बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न बनेंगे, तब इन्तजाम होगा।''

अ.बापदादा 9.03.09

''दीदी ने कहा - मेरी तरफ से पूछो - आप सभी जानते भी हो और कहते भी हो एवर-रेडी। तो सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने में एवर-रेडी हो? ... दादी ने कहा - मेरे से जब कोई मिलता था, तो कहता था दादी आपको तो कर्मातीत बनना है, कर्मातीत बनना है, यही तात लगी हुई है, हम भी तो साथ चलेंगे ना। ... तो कर्मातीत कब बनना है? तो कब को अब में कब बदली करेंगे?''

अ.बापदादा 9.03.09

''आप सारे दिन में बीच-बीच में फरिश्ता ड्रेस बदली करके वतन का टेस्ट लो।... फरिश्ता ड्रेस बदली करो इमर्ज करो कि बापदादा कभी ज्ञान की, कभी शक्तियों की, कभी गुणों का रंग डाल रहे हैं। ... ऐसी फरिश्ता ड्रेस पहनने से नशा भी चढ़ेगा और फरिशत बनने में मदद भी मिलेगी। बापदादा बच्चों को यह फरिश्ता ड्रेस होली की सौगात दे रहें हैं।... यह फरिश्ता ड्रेस भी बदली करके अनुभव करते रहो।''

अ.बापदादा 9.03.09

''अमृतवेले विशेष एडवान्स पार्टी से सेवा कराते हैं क्योंकि उस समय सारी दुनिया तो सोई हुई

होती है और ये ड्रेस बदलकर वतन में आ जाते हैं। ... यह ड्रिल भूलना नहीं, बार-बार वस्त्र बदली करना। दिन में जितना बार फरिशता ड्रेस में बैठ सको, बैठो। चाहे तीन मिनट बैठो, लेकिन बैठो जरूर। अभी से संस्कार डालो। फरिश्ता बनने के बिना देवता बन नहीं सकते।''

अ.बापदादा 9.03.09

''ऐसी टीचर्स, जो अपने फीचर्स, चलन और चेहरे से सभी को फ्युचर जो फरिश्ता है ... वह फीचर्स अर्थात् चलन और चेहरे से स्पष्ट दिखाई दे।... जैसे शुरू-शुरू में आपसे लाइट का ताज और कभी मस्तक में चमकता हुआ बिन्दु दिखाई देता था, ऐसा दिखाई दे।''

अ.बापदादा 9.03.09

''संगदोष में नहीं आओ, हद की प्राप्तियों के आकर्षण में नहीं आओ क्योंकि बापदादा को तरस पड़ता है। कहता मेरा बाबा और करता क्या है ? इसलिए आज होली का दिन है ते ऐसी-ऐसी बातें समझदार बनकर जला दो। ... बापदादा मदद करेगा, लेकिन सच्ची दिल वाले को। ... सच्ची दिल हो और मुराद हासिल नहीं हो, ये हो नहीं सकता।''

अ.बापदादा 9.03.09

''निमित्त भाव नहीं छोड़ना, मैंपन नहीं लाना। मैंपन काला साँप है, जो हप कर लेता है। मैं निमित्त हूँ, करावनहार करा रहा है, चलाने वाला चला रहा है और कम्बाइण्ड रहना, अकेले नहीं बनना। अकेले बने माना माया का दरवाज़ा खोला।''

अ.बापदादा 9.03.09 फॉरेन की टीचर्स

''लास्ट नम्बर वाला भी बाबा का बच्चा है। बाबा को सामने लाओ, उसकी गलती को सामने नहीं लाओ, परिवार का है, उसे भी उमंग-उत्साह में लाओ। चलो गलतियाँ भी करते हैं। बापदादा को मालूम है क्या-क्या गलतियाँ करते हैं, वे छिपती नहीं हैं।''

अ.बापदादा 9.03.09

''श्रीमत के पहिये लगने से स्वत: ही पुरूषार्थ की रफ्तार तेज हो जायेगी। सदा ऐसे सेवाधारी बनकर चलो। जरा भी बोझ महसूस नहीं करो। करावनहार जब बाप है तो बोझ क्यों ? इसी स्मृति से सदा उड़ती कला में जाते रहो।'' अ.बापदादा 17.5.83

''अपने ब्राह्मण जन्म की विशेषता को नेचुरल नेचर बनाना - इसको ही सहज पुरुषार्थ कहा जाता है। सिर्फ एक 'मैं विशेष आत्मा हूँ' - इस स्मृति स्वरूप में स्थित हो जाओ तो बाप समान बनना अति सहज अनुभव करेंगे।'' अ.बापदादा 25.1.94

''लक्ष्य सभी का नम्बरवन का है लेकिन लक्षण नम्बरवार हैं।... पढ़ाने वाला एक है, फिर भी प्रत्यक्ष जीवन में लक्षण नम्बरवार क्यों ?... नम्बरवार होने का विशेष आधार एक ही शब्द

'पॉइन्ट' है। पॉइन्ट स्वरूप को अनुभव करना, दूसरा कोई भी संकल्प, बोल वा कर्म व्यर्थ है, उसको पॉइन्ट लगाना अर्थात् बिन्दी लगाना और तीसरा ज्ञान की वा धारणा की हर पॉइन्ट्स को मननकर स्व-प्रति और सेवा प्रति समय पर कार्य में लगाना।''

अ.बापदादा 10.1.94

''नम्बरवार होने का विशेष आधार एक ही शब्द 'पॉइन्ट' है।... स्मृति सबको रहती है लेकिन स्मृति को स्वरूप में लाना, इसमें नम्बरवार हो जाते हैं।... नॉलेज इज़ लाइट, नॉलेज इज़ माइट कहा जाता है। तो जहाँ लाइट भी है और माइट भी है, वहाँ यह होना चाहिए, नहीं होता ('होना चाहिए' नहीं, होता है)।''

अ.बापदादा 10.1.94

''राँग समझते भी राँग कर्मों के वा संकल्पों के वा स्वभाव-संस्कार के वशीभूत हो जाये तो इसको क्या कहा जायेगा?... बापदादा समय की गति को देखकर सभी बच्चों को बार-बार अटेन्शन दिलाते हैं कि 'अटेन्शन' शब्द को डबल लण्डरलाइन करो।''

अ.बापदादा 10.1.94

''प्रकृति के विकराल रूप को जानना सहज है लेकिन भिन्न-भिन्न विकराल हलचल में अचल रहना, इसमें और अटेन्शन चाहिए।... माया ऐसा रॉयल रूप रखती है, जो राँग को राइट अनुभव कराती है।... महसूसता की शक्ति को गायब कर देती है।''

अ.बापदादा 10.1.94

''महसूसता की शक्ति को गायब कर देती है। ... बापदादा अटेन्शन दिला रहे हैं कि माया के सूक्ष्म रूप की छाया से सदा अपने को सेफ रखो। ... अगर कोई भी विशेष आत्मायें इशारा देती हैं तो अच्छी तरह से माया की इस छाया से निकलकर बाप की छत्रछाया में अपने को, विशेष मन-बुद्धि को इस छत्रछाया के सहारे में लाओ।''

अ.बापदादा 10.1.94

''माया का मन-बुद्धि पर प्रभाव न पड़े, उसके लिए पहले से ही सेफ्टी के साधन विशेष अपनाओ। वह विशेष साधन है 'बिन्दी' (तीनो रूप से बिन्दी को यूज़ करो) ... ये वकालत नहीं चलेगी। अब जज बनो, माया के वकील नहीं बनो।''

अ.बापदादा 10.1.94

''पहला माया के रूप को जानने में धोखा खा लेते, ... दूसरा माया की वकालत करते। जज बनो, माया का वकील नहीं बनो। ... तीसरा विशेष कमजोरी के स्वभाव-संस्कार, सम्बन्ध-सम्पर्क में आ जाते।''

अ.बापदादा 10.1.94

''बापदादा ने पहले ही कह दिया कि अभी चलने का समय समाप्त हुआ, अभी उड़ने का समय है। पुरुषार्थ का समय पूरा हुआ लेकिन तीव्र पुरुषार्थ का समय है। यह भी थोड़ा है।''

अ.बापदादा 22.2.09

''बापदादा तीन शब्द समय प्रति समय याद दिलाता है। एक अचानक, दूसरा एवर-रेडी और तीसरा बहुत समय का खाता जमा। ... जब सबको यह सन्देश देते हो तो अपना पुरुषार्थ भी ऐसा तीव्र कर बहुत समय खाता जमा करना चाहिए, जो अपने राज्य में फर्स्ट जन्म से 21 जनम तक फुल राज्य भाग्य के अधिकारी बनें।''

अ.बापदादा 22.2.09

''अगर कोई लास्ट वाला भी फास्ट पुरुषार्थ करे तो फर्स्ट डिवीजन में आ सकते हैं। फर्स्ट नम्बर नहीं, वह तो प्रसिद्ध हो गये हैं लेकिन फर्स्ट डिवीजन में आ सकते हैं। ... एक-एक स्वांस, एक-एक संकलप पर अटेन्शन रखे, हर स्वांस और संकल्प समर्थ हो, व्यर्थ न हो।''

अ.बापदादा 22.2.09

''आप तीव्र पुरुषार्थियों को स्वप्न में वा संकल्प में व प्रैक्टिकल कर्म में व्यर्थ क्या होता है, उसकी समाप्ति हो।... उसके लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है।... दृढ़ संकल्प को टाइट करने का स्क्रू ड्राइवर है प्रतिज्ञा।''

अ.बापदादा 22.2.09

''अभी प्रत्यक्षता का कार्य रहा हुआ है, इसका ही पुरुषार्थ कर रहे हो ना। मेरा बाबा आ गया। ... तो जितनी जागरण की, व्रत लेने की प्रतिज्ञा पक्की करेंगे तो प्रत्यक्षता जल्दी से जल्दी होगी। प्रत्यक्षता चाहते हो ना! तो समय को समीप लाने वाले कौन ? आप सब सेवाधारी बच्चे हो ना।''

अ.बापदादा 22.2.09

''इस नये वर्ष में नया चार्ट रखना। ... चारो ही सब्जेक्ट में रोज़ कोई न कोई नवीनता लानी है। ... ज्ञान में जो कमी है, उसको धारण किया तो नवीनता हुई ना। योग के प्रयोग में हर रोज़ कोई न कोई नया अनुभव करो। ... औरों को सहजयोगी बनाने और परसेन्टेज बढ़ाने में नवीनता।''

अ.बापदादा 31.12.93

''नवीनता से स्वत: ही तीव्र पुरुषार्थ के समीपता की अनुभूति होती रहेगी। ... ज्ञान के सर्व खज़ानों में, समय में, संकल्प में, सम्पत्ति, सबमें इकॉनामी और एकनामी। ... तीन मास का चार्ट साक्षी होकर चेक करना और शॉर्ट में समाचार देना।''

अ.बापदादा 31.12.93

''रोज अमृतवेले यह स्लोगन इमर्ज करना कि 'सदा उमंग-उत्सारह में उड़ना है और दूसरों को भी उड़ाना है।' ... दिन में बीच-बीच में चेक करो, इमर्ज करो कि उमंग-उत्साह के बजाये

कोई और रास्ते पर तो नहीं चले गये ?''

अ.बापदादा 31.12.93

''पवित्रता का अर्थ ही है - सदा संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में तीन बिन्दु का महत्व हर समय धारण करना। कोई भी ऐसी परिस्थिति आये तो सेकण्ड में फुल स्टॉप लगाने में स्वयं को सदा पहले ऑफर करो। ... ऐसे ऑफर करने वाले को स्वयं की दुआयें अर्थात् खुशी मिलती है, बाप की और ब्राह्मण परिवार तीनों की दुआयें मिलती हैं।''

अ.बापदादा 23.12.93

''तो फुल स्टॉप लगाने के पुरुषार्थ को वा कन्ट्रोलिंग पॉवर द्वारा परिवर्तन शक्ति को तीव्र गति से बढ़ाओ। अलबेलापन नहीं लाओ - ये तो होता ही है, ये तो चलना ही है ... ये हैं अलबेलेपन के संकल्प। अलबेलापन परिवर्तन कर अलर्ट बन जाओ।''

अ.बापदादा 23.12.93

''आपके लिए तूफान, तूफान नहीं लेकिन तोहफा है क्योंकि बापदादा के वरदान का हाथ सभी पुरुषार्थी बच्चों के माथे पर है। जिन्होंने दृढ़ संकल्प अर्थात् दृढ़ता की चाबी कार्य में लगाई है, उन्होंने रिजल्ट प्रमाण अभी भी सफलता प्राप्त की है लेकिन सदा काल के लिए तूफान को तोहफा बनाये, समस्या को समाधान का रूप दे आगे बढ़ते चलो।''

अ.बापदादा 18.1.09

''अव्यक्त पालना के 40 वर्ष पूरे हुए हैं ... उसमें जीरो-हीरो सदा याद रहे और बाकी जो 4 है, उसमें चार बातें नेचुरल जीवन में करनी है, दृढ़ता पूर्वक करनी हैं। ... एक बात सदा शुभ-चिन्तक, ... दूसरा है शुभ-चिन्तन। ... तीसरा है शुभ-वृत्ति। ... और चौथा है शुभ वायुण्डल बनाना।''

अ.बापदादा 18.1.09

''चौथा है शुभ वायुमण्डल बनाना। हर एक को यह जिम्मेवारी लेनी है कि मुझे, मेरा काम है खास, दूसरे को नहीं देखना है। मेरा काम है शुभ वायुमण्डल बनाना। ... साधारण और अशुभ वायमण्डल को बदलना ही है।''

अ.बापदादा 18.1.09

''त्याग किसका करेंगे ? सबसे बड़े से बड़ा त्याग क्या है ?... मैंपन का त्याग। मैंने किया, मैं यह जानती हूँ, ... इस मैंपन के अभिमान का त्याग करना है। मैं के बजाये बापदादा की सुनाई हुई ज्ञान की बातों को वर्णन करो। मैं यह जानती हूँ नहीं, बापदादा द्वारा यह जाना है। ज्ञान में चलने के बाद स्व-अभिमान आ जाता है, उसका भी त्याग। ... तब विश्वपति बन विश्व की सर्विस कर सकेंगे।''

अ.बापदादा 11.6.70

''जैसे वस्त्र उतारना और पहनना सहज है कि मुश्किल ? इस रीति न्यारे होंगे तो शरीर के भान में आना और शरीर के भान से निकलना भी सहज लगेगा। ... मुख्य पुरुषार्थ आज इस विशेष बात पर करना है। ... यह बिन्दी लगाना कितना सहज है, ऐसे ही बिन्दी रूप हो जाना सहज है।''

अ.बापदादा 1.02.09 रिवा. पार्टी

''जो जितना विदेही होगा, वह उतना ही स्नेही होगा। ... इस देह में रहते विदेही रहने वाले सर्व के स्नेही रहते हैं। ... ऐसे ही जो भी कमजोरियां हैं, उनका भी स्वप्न में संकल्प नहीं रहना चाहिए। ऐसा पुरुषार्थ करना है।''

अ.बापदादा 1.02.09 रिवा. पार्टी

''अकेले रहते भी शिवबाबा के साथ का अनुभव हो - यह अभ्यास जरूर करना चाहिए और साथ रहते (संगठन में) भी अकेला समझे - यह भी अभ्यास चाहिए। दोनों अभ्यास चाहिए। साथ भी रह सकें और अकेला भी रह सकें। अकेला अर्थात् न्यारा और संगठन अर्थात् प्यारा।''

अ.बापदादा 1.02.09 रिवा. पार्टी

''जो सदा अपनी स्व-स्थिति में रहते हैं तो उनका पूजन भी सदा होता है और जो सदा एकरस रहने वाले हैं, उनका पूजन एकरस होता है।... पुरुषार्थ में कब कहेंगे तो उनकी पूजा भी कब-कब होगी। इसलिए किसी भी बात में कब देखेंगे, नहीं लेकिन अब दिखाऊंगा, इसको कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थी।''

अ.बापदादा 1.02.09 रिवा. पार्टी

''हिम्मत वाले को मददजरूर मिलती है। मदद मांगने से नहीं मिलती है। मदद के लिए हिम्मत रखनी पड़ती है। जो पूरी हिम्मत रखते हैं, उनको मदद बहुत मिलती है। हिम्मत है तो सर्व बातें में मदद है। सदैव हिम्मतवान बनना है, फिर बापदादा और दैवी परिवार की मदद आपही मिलेगी।''

अ.बापदादा 1.02.09 रिवा. पार्टी

''सभी को परिवर्तन करने की जो शक्ति मिली है, वह समय पर कार्य में लगायें तो कोई मेहनत नहीं है। सभी को अनुभव है कि कभी भी, किसी भी प्रकार की हार होती है तो उसके कारण दो शब्द हैं, वे दो शब्द हैं - मैं और मेरा। ये दो शब्द गिराने वाले भी हैं और चढ़ाने वाले भी हैं। ... अब इन दो शब्दों को परिवर्तन करो।''

अ.बापदादा 15.12.08

''अब तीव्रगति के पुरुषार्थ की आवश्यकता है। ... बापदादा ने सुना दिया है कि अन्तिम घड़ी का कोई भरोसा नहीं है। अचानक के खेल होने हैं। ... बापदादा ने कह दिया है कि बहुत समय का पुरुषार्थ चाहिए।''

अ.बापदादा 15.12.08

''बापदादा के तीन शब्द सदा याद रखो - एक अचानक, दूसरा एवर-रेडी और तीसरा बहुत

काल। ... कब और कहाँ भी किसका अन्त काल हो सकता है। ... इसलिए बहुत काल के पुरुषार्थ से फुल 21 जन्म का वर्सा प्राप्त करना ही है। यह तीव्र पुरुषार्थ स्मृति में रखो।''

अ.बापदादा 15.12.08

''तो अभी चेक करना और अपने राज्य के संस्कार अभी से धारण करने ही हैं। ... चलो कोई की भी कोई कमजोरी देखते भी हो तो याद रहे कि पुरुषार्थी तो सब हैं, नहीं तो ब्राह्मण जीवन से चले जाते। पुरुषार्थी हैं तब तो ब्राह्मण जीवन में चल रहे हैं ना।''

अ.बापदादा 15.12.08

''सिर्फ अमृतवेला नहीं लेकिन बीच-बीच में अन्तर्मुखी होकर 5 मिनट निकाल कर ये अभ्यास करो। दिन-रात यह अभ्यास चाहिए। ... रात को उठकर यह ट्रायल करो। और काम के लिए भी तो उठते हो ना। तो यह अभ्यास भी करो, तब ही आपकी पूजा होगी।''

अ.बापदादा 15.12.08

''समय की गति की तीव्रता के अनुसार पुरुषार्थ की गति भी तीव्र हो ... उड़ती कला की निशानी है सदा डबल लाइट। ... थोड़ा भी बोझ नीचे ले आता है।... तीव्र पुरुषार्थी सभी बातों को ऐसे क्रॉस करते हैं जैसे कुछ है ही नहीं। मेहनत नहीं, मनोरंजन अनुभव करेंगे। ऐसी स्थिति को कहा जाता है - उड़ती कला।''

अ.बापदादा 9.12.93 पार्टी 1

''जब खुला भण्डार है, अखुट खज़ाना है, जितना लेना चाहो ले सकते हो फिर भी अखुट है। अखुट खज़ाने के मालिक हो। बालक सो मालिक हो।... दुख की लहर स्वप्न में भी नहीं आ सकती। संकल्प तो छोड़ो लेकिन स्वप्न में भी नहीं आ सकती है, इसको कहा जाता है नम्बरवन।''

अ.बापदादा 9.12.93 पार्टी 1

''तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् संकल्प और कर्म समान हो, तब ही बाप समान कहेंगे। खुश हैं और सदा खुश रहेंगे। यह पक्का निश्चय है ना। सदा खुश रहने वाले ही खुशनसीब हैं।... रोज अमृतवेले यह पक्का करो कि कुछ भी हो जाये लेकिन खुश रहना है और खुश करना है।''

अ.बापदादा 9.12.93 पार्टी 1

''15-20 दिन दृढ़ता रहती है, फिर धीरे-धीरे अलबेलापन आ जाता है। तो अलबेलेपन को खत्म करो। ... जो संकल्प में भी किसी बात की धारणा में भी जो कमजोरी है, उसको समाप्त करेंगे - वे हाथ उठाओ। ऑटोमेटिक दिल में यह रिकार्ड बजना चाहिए - 'अब घर चलना है।' सिर्फ चलना नहीं हे लेकिन राज्य में भी आना है।''

अ.बापदादा 30.11.08

''नम्बरवन आत्मा की निशानी है - हर श्रेष्ठ कार्य में मुझे निमित्त बन औरों को सिम्पुल बनने के लिए सेम्पुल बनना है।... दूसरों को देखकर बनना कि पहले यह बने तो मैं बनूँ तो नम्बरवन वह हो गया, जो पहले बना।... वह सदा सेवा में लगा रहता है, उसे व्यर्थ दुखने-सुनने वा करने की फुर्सत ही नहीं। ... खण्डित को सम्पूर्ण नहीं कहा जाता है।''

अ.बापदादा 2.12.93

''अगर ज्ञान के साथ बाप के साथ स्नेह थोड़ा भी कम है ... पुरुषार्थ में युद्ध करनी पड़ती है। इसलिए निरन्तर याद, निरन्तर लव में लीन होने वाली आत्मा सदा ही पहाड़ को भी राई बनाने वाली होती है ... जहाँ मोहब्बत है, वहाँ मेहनत कम, अगर मोहब्बत अथवा स्नेह कम है तो मेहनत लगती है।''

अ.बापदादा 15.11.08

''अलबेलापन पुरुषार्थ को तीव्र बनाने के बजाए ढीला कर देता है। ... यह अलबेलापन समय पर जो वायदा किया है कि बाबा हम साथ हैं और साथ चलेंगे, हाथ में हाथ देकर चलेंगे, परन्तु सिवाए समान के साथ कैसे चलेंगे?''

अ.बापदादा 15.11.08

''अगर ज्ञान के साथ बाप के साथ स्नेह थोड़ा भी कम है ... पुरुषार्थ में युद्ध करनी पड़ती है। इसलिए निरन्तर याद, निरन्तर लव में लीन होने वाली आत्मा सदा ही पहाड़ को भी राई बनाने वाली होती है ... जहाँ मोहब्बत है, वहाँ मेहनत कम, अगर मोहब्बत अथवा स्नेह कम है तो मेहनत लगती है।''

अ.बापदादा 15.11.08

''आत्मिक स्वरूप के और ज्ञान की हर प्वाइन्ट के अनुभवी हर परिस्थिति में अचल-अउल रहते हैं। ... अगर अनुभव की अथॉरिटी है तो हर शक्ति, ज्ञान की हर प्वाइन्ट, हर गुण अपने आर्डर में होंगे। जिस शक्ति का या गुण का आवाह्न करो और वह सेकेण्ड में सहयोगी बनेगी।''

अ.बापदादा 15.11.08

''हर एक अपने आपको देखे कि अनुभव की अथॉरिटी के तख्त पर वा सीट पर सदा रहते हैं? अनुभव की सीट पर सेट रहने वाले अर्थात् संकल्प किया और हुआ, मेहनत नहीं करनी पड़ेगी, समय नहीं लगाना पड़ेगा।''

अ.बापदादा 15.11.08

''अलबेलापन पुरुषार्थ को तीव्र बनाने के बजाए ढीला कर देता है। ... यह अलबेलापन समय पर जो वायदा किया है कि बाबा हम साथ हैं और साथ चलेंगे, हाथ में हाथ देकर चलेंगे, परन्तु सिवाए समान के साथ कैसे चलेंगे?''

अ.बापदादा 15.11.08

''आज का या जब तक फिर आना हो तब तक का होम वर्क देते हैं। ... हर आत्मा को उसके ओरिजिनल रूप में देखो। ... दृष्टि में भी उसी दृष्टि से देखो, तो यह जो विघ्न पड़ते हैं, जिसके कारण पुरुषार्थ में तीव्रता नहीं आती है, दृष्टि-वृत्ति बदलने से वह समाप्त हो जायेगी।''

अ.बापदादा 31.3.10

''आप ब्राह्मण आत्मा के एक-एक का फर्ज है शुभ भावना, शुभ कामना देना और शुभ भावना और शुभ भावना लेना। ... एक और बात कहाँ-कहाँ संगठन में आ जाती कि कभी-कभी परदर्शन, परचिन्तन और परमत के तरफ आकर्षीत हो जाते हैं। अभी इन तीन पर काटकर एक पर रखो, वह एक पर है पर-उपकार। पर-उपकार करना है, पर-उपकारी हैं। ब्राह्मणों का स्वभाव है पर-उपकारी, पर-दर्शन नहीं।''

अ.बापदादा 31.3.10

''आपके भक्त आपको ही पुकार रहे हैं। ... आप नहीं जानते हो कि हमारे भक्त कौन से हैं लेकिन भक्त तो जानते हैं ना। आप हर ब्राह्मण आत्मा के भक्त हैं। ... क्योंकि जड़ में बैठे हो ना तो आपका सकाश का पार्ट है। तो मन्सा सेवा को बढ़ाओ। जितना बिजी रहेंगे, उतना निर्विघ्न रहेंगे। ... अगर कभी-कभी करते हैं तो उसको रेग्युलर करो और अगर थोड़ी करते हैं तो उसको और बढ़ाओ।''

अ.बापदादा 31.3.10

''खज़ानों की लिस्ट तो जानते हो ना! ... एक सेकेण्ड भी वेस्ट गया तो ज्ञान का, शक्तियों का, गुणों का, संकल्प का, इनर्जी का, स्वांस का कितना खज़ाना सफल के बजाये असफलता में गया। ... एक सेकेण्ड नहीं गया लेकिन एक सेकेण्ड भी कितना भारी हो गया। हर समय अपने जमा का खाता बढ़ाते चलो। ... बापदादा भी बच्चों के जमा के खाते को चेक करते रहते हैं।''

अ.बापदादा 14.12.94

''व्यर्थ ही समर्थ बनने में रुकावट डालता है। तो आज बापदादा व्यर्थ संकल्पों की समाप्ति करने के लिए सभी चारो ओर के बच्चों को हिम्मत दे रहे हैं कि अभी से ही व्यर्थ को समाप्त कर सदा समर्थ बन समर्थ बनाओ। सिर्फ सन्देश नहीं दो लेकिन समर्थ बनाओ। समर्थ बनो और समर्थ बनाओ, व्यर्थ का समाप्ति दिवस मनाओ।''

अ.बापदादा 15.3.10

''जो समझते हैं - अभी समाप्ति के समय को समीप लाना है, उसके लिए व्यर्थ को समाप्त करना ही है। करना है नहीं, करना ही है। स्वप्न में भी व्यर्थ न आये। ... वे हाथ उठाओ। मन का हाथ उठा रहे हो ना!''

अ.बापदादा 15.3.10

''बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल बनाओ ... सिर्फ दिमाग़ तक ये बेहद की वैराग्य वृत्ति नहीं लेकिन दिल तक पहुँचे। सबके दिल में तो है कि यह होना चाहिए, करना चाहिए लेकिन दिल में ये लहर उत्पन्न हो जाये, इसकी आवश्यकता है।''

अ.बापदादा 5.12.94

''योग स्वरूप का अर्थ है कर्मेन्द्रियों जीत बनना। हर कर्मेन्द्रिय पर स्वराज्यधारी। ... ऐसे अगर योगयुक्त हैं तो उनमें गुणों की धारणा ऑटोमेटिकली होगी। उनसे सेवा हर समय ऑटोमिटिक होगी। समय अनुसार चाहे मन्सा सेवा करे, चाहे वाचा करे, चाहे कर्मणा करे, चाहे स्नेह सम्बन्ध में करे लेकिन सेवा अखण्ड चलती रहेगी।''

अ.बापदादा 30.1.10

''फर्स्ट डिवीजन में आना ही है - यह दृढ़ निश्चय भाग्य को निश्चित कर देता है। पता नहीं ... ऐसा व्यर्थ संकल्प कभी भी नहीं करना। सर्वशक्तिवान बाप साथ है तो माया तो उसके आगे पेपर टाइगर है, इसलिए कब घबराना नहीं। ... साथ का अनुभव सदा ही सहज और सेफ रखता है, बाप को भूल जाते हो तो मुश्किल हो जाता है।''

अ.बापदादा 17.11.94

''पहली बारी आने वाले बच्चों को बापदादा आने की बहुत-बहुत मुबारक दे रहे हैं और वरदान दे रहे हैं कि तीव्र पुरुषार्थी बन आप चाहो तो आगे से आगे आ सकते हो। ... पहली बार आने वालों को बापदादा खुशखबरी सुना रहे हैं कि लास्ट सो फास्ट, फास्ट सो फर्स्ट।''

अ.बापदादा 18.1.10

''निरन्तर योगयुक्त अवस्था सहज रहे, इसके लिए बापदादा सहज आसन बता रहे हैं, व है कमलपुष्प का आसन। ... कमलपुष्प के आसन पर बैठने के लिए अपने को लाइट बनाना पड़े। लाइट अर्थात् हल्का और लाइट अर्थात् प्रकाश स्वरूप।''

अ.बापदादा 3.6.71

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501
राजस्थान, भारत
मोबाईल: 9414 15 1879, 9414 00 3497,
9414 08 2607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org